यथादुष्टेनदोषेणयथाचानुविसर्प्पता ॥ निर्वृत्तिरामय स्यासौ संप्राप्तिर्जातिरागतिः १० संख्याविकल्पप्राधान्यं बलकालविशेषतः ॥ साभिधत्तेयथात्रैव वक्ष्यंतेष्टौ ज्वराइति ११ दोषाणांसमवेतानां विकल्पोंशांशकल्पना ॥ स्वातंत्र्यापारतंत्र्याभ्यां व्याधेःप्राधान्यमादिशेत् १२ हेत्वादिकात्स्न्यावयवैर्बलाबलविशेषणम् ॥ नक्तं दिनर्त्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालोयथामलम् १३ इतिप्रोक्तोनिदानार्थस्सव्यासेनोपदेक्ष्यते ॥ सर्वेषामेवरोगाणां निदा

विहार इन तीनोंके दुःकारक उपयोगको अनुपशय कहतेहैं उसी का व्याध्यसात्म्य भी नाम है ६ जो वातादि दोषों की दुष्टता से अपने स्थानको छोड़कर इधर उधर नीचे ऊँचे फैलती चली जाती है और रोगको उत्पन्न करती है उसका सम्प्राप्तिनाम है उसीको जाति व आगतिभी कहतेहैं १० संख्या,विकल्प,प्राधान्य, बल व काल ये सब सम्प्राप्तिके भेदहैं संख्या जैसे इसीग्रन्थमें ८ प्रकार के ज्वर कहे हैं इसको संख्या विशेष सम्प्राप्ति कहतेहैं ११ वात पित्त कफोंके दोष जब एकही संगहों चाहे समान अंशों से चाहे न्यूनाधिक अंशों से तो उसे विकल्प सम्प्राप्ति कहते हैं व जहां व्याधि अपने अधीन हो उसे प्राधान्य सम्प्राप्ति कहते हैं जहाँ रोग अपनेअधीन न हो उसे अप्राधान्य सम्प्राप्ति कहतेहैं १२ हेतु आदि जब संपूर्ण अंगोंसे विद्यमानहों तो रोगको बलवान् जानना चाहिये व जो सब अंगोंसे युक्त नहो थोड़ेही हों तो रोग को निर्बल जानना चाहिये रात्रि, दिन, ऋतु, आहार इन के अंशोंसे रोगका काल समझना चाहिये इसीको कालरूप सम्प्राप्ति कहते हैं रात्रि दिनके तीन २ भागकरके कफ पित्त वात का काल जानना चाहिये ऐसेही बसन्त ऋतु कफका समय शरद् पित्तका वर्षा वात का काल जानना चाहिये १३ निदानका अर्थ

नंकुपितामलाः १४ तत्प्रकोपस्यतुप्रोक्तं विविधाहित सेवनम् ॥ निदानार्थकरोरोगो रोगस्याप्युपलक्ष्यते १५ तद्यथाज्वरसंतापाद्रक्तपित्तमुदीर्यते ॥ रक्तपित्ताज्ज्वर स्ताभ्यां श्वासश्चाप्युपजायते १६ प्लीहाभिवृद्ध्याजठरं जठराच्छोफएवच ॥ अर्शोभ्योजाठरंदुःखं गुल्मश्चाप्यु पजायते १७ प्रतिश्यायादथोकासः कासात्संजायतेक्ष यः ॥ क्षयोरोगस्यहेतुत्वे शोषस्याप्युपजायते १८ तेपूर्वं केवलारोगाः पश्चाद्धेत्वर्थकारिणः ॥ कश्चिद्धिरोगोरो गस्य हेतुर्भूत्वाप्रशाम्यति १९ नप्रशाम्यतिचाप्यन्योहे

संक्षेप रीति से कहा अब विस्तार सहित कहते हैं सब रोगों के कारण कोपकियेहुये वात पित्त कफही होतेहैं १४ व इनका कोप विविध प्रकार के अहित अपथ्यों के सेवन से होता है रोग के अर्थ का निदान रोगही से होताहै अर्थात् रोगही से रोग उत्पन्न होताहै १५ जैसे कि ज्वर के सन्तापसे रक्तपित्त रोग उत्पन्नहोता है व रक्तपित्तसे ज्वर होता है और ज्वर रक्तपित्त दोनों से श्वास उत्पन्न होता है १६ व पिलही के बढ़ने से उदर रोग होताहै व उदर रोगसे शोथ रोग होता है व अर्श अर्थात् ववासीर से जठररोग व वायुगोलादि गुल्म रोग उत्पन्न होते हैं १७ प्रतिश्याय अर्थात् पीनस रोग से व नासिका वहने शरदी होने से खांसी रोग होताहै व खांसीसे होते २ क्षयीरोग होता है यह क्षयरोग सब रोगों का हेतु है व सब रोगों का राजा है इस के होने से सब अंग सूखजाते हैं १८ वे सब रोग प्रथम केवल रोग रहते हैं फिर अपथ्यादि करनेसे वेही अन्यरोगोंके कारी होजाते हैं कोई रोग ऐसा होताहै कि किसी रोगका कारण होकर आप फिर शान्त होजाताहै १९ व कोई ऐसा होता है कि अन्यरोग को उत्पन्न करदेता है व आपभी बनारहता है शान्त नहीं होता

त्वर्थंकुरुतेपिच ॥ एवंकृच्छ्रतमानृणां जायंतेरोगसंकराः २० तस्माद्यत्नेनसद्वैद्यैरिच्छद्भिःसिद्धिमुत्तमाम् ॥ ज्ञात व्योवक्ष्यतेसोयं ज्वरादीनांविनिश्चयः २१ दक्षापमान संक्रुद्ध रुद्रनिश्वाससंभवः ॥ ज्वरोष्टधापृथग्द्वंद्व संघाता गंतुजःस्मृतः २२ मिथ्याहारविहाराभ्यांदोषाह्यामाशया श्रयाः ॥ बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरदाःस्यूरसानुगाः २३ स्वेदावरोधःसंतापः सर्वांगग्रहणंतथा ॥ युगपद्यत्ररोगेतु तज्ज्वरोह्युपदिश्यते २४ श्रमोरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यंनयन प्लवः ॥ इच्छाद्वेषोमुहुश्चापि शीतवातातपादिषु २५ जृ

इसप्रकार रोग एकदूसरेसे मिलकर मनुष्योंको वड़े२ कष्टदेते हैं २० इससे उत्तमसिद्धिकी इच्छा कियेहुये अच्छे वैद्योंको चाहिये कि ज्वरादिकों का निदान जो कहेंगे उसको अच्छे प्रकारजानें २१ दक्ष प्रजापतिके अपमानसे क्रोध कियेहुये रुद्रजी के निश्वास से उत्पन्नज्वर आठप्रकार का होताहै वातज, पित्तज, कफज, व तीन द्वन्द्वज अर्थात् वात पित्तादिकों के दो २ के मिलने से उत्पन्न व एक इनतीनों के मिलने से जिसे सन्निपात कहते हैं व एक आगन्तुक वस ये ८ हुये २२ मिथ्याआहार व मिथ्या विहार से वातादिक दोष उत्पन्न होतेहैं वे आमाशय में मिलकर कोठे के अग्निको वाहर निकालकर फिर धातुरस में मिलकर ज्वरको उत्पन्न करते हैं २३ ज्वरके लक्षण—जिसरोगमें पसीना रुँककर सव अंगों में सन्तापहो व सब अंगोंमें पीड़ाहोनेलगे यह एका-एकी एकही संग हो उसरोगको ज्वर कहते हैं २४ ज्वरका पूर्व रूप विनाश्रमकिये थकाईलगे किसी वस्तुमें प्रीतिनरहे शरीरमें ग्लानिहो स्वादु मुखमें न विदित हो नेत्रोंमें आँशुभरआवें शीत वात घामआदि की क्षणमें तो इच्छाहो व फिर क्षणमात्रही में इनसे अप्रीतिहो २५ जँभोईआना अंगमर्दन की इच्छा शरीरमें

म्भांगमर्दोगुरुता रोमहर्षोरुचिस्तमः ॥ अप्रहर्षश्चशी तंच भवंत्युत्पत्स्यतिज्वरे २६ सामान्यतोविशेषात्तुजृ म्भात्यर्थंसमीरणात् ॥ पित्तान्नयनयोर्दाहःकफान्नान्नाभि नन्दनम् २७ वेपथुर्विषमोवेगः कंठोष्ठमुखशोषणम् ॥ नि द्रानाशःक्षवस्तंभो गात्राणांरौक्ष्यमेवच २८ शिरोहृद्गात्र रुग्वक्त्र वैरस्यंवद्धविट्कता ॥ शूलाध्मानेजृम्भणंचभवं त्यनिलजेज्वरे २९ वेगस्तीक्ष्णोतिसारश्च निद्राल्पत्वंत थावमिः ॥ कंठोष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ३० प्रलापोवक्त्रकटुता मूर्च्छादाहोमदस्तृषा ॥ पीतविण्मूत्र नेत्रत्वक्पैत्तिकेभ्रमएवच ३१ स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआ लस्यंमधुरास्यता ॥ शुक्लमूत्रपुरीषत्वक्स्तंभस्तृप्तिरथा

गरुआपन रोम खड़े होना अरुचि अँधियारासा विदित होना चित्त की अप्रसन्नता जाड़ेका लगना वस जब ज्वर होने पर होता है तब ये सब लक्षण होते हैं २६ यह सामान्य सब ज्वरों का लक्षण है अब विशेष कहते हैं वातज्वर में विशेष अत्यन्त वार २ जंभोई आती है व पित्तज्वर में नेत्रों में विशेष जलन होतीहै व कफज्वरमेंअन्नकीरुचिनहींहोती २७ वातज्वरकालक्षण शरीरकांपना, कभीबहुत शरीरजलना कभीकमहोना गल ओठ मुखकासूखना निद्रा न आना छींक न आना व अंगोंमें रुखाई २८ शिर हृदय व देहभर में पीड़ा मुखफीका बहुत कड़ादस्त होना पेटकी पीड़ा व पेटफूलना जँभोई आना ये सब वातज्वरमें होते हैं, २९ पित्तज्वर के लक्षण—बड़े वेगसे ज्वरहोना अधिक दिशा होना थोड़ी नींदआनी डाकना गल ओठ मुख नाक पकजाना पसीना होना ३० अनर्थ बकना मुखकडूरहना मूर्च्छा आना सदाजलनवनीरहनी उन्मत्तता पिपासाधिकता मल, मूत्र, नेत्र, खाल इनकापीलाहोना व भ्रमहोना येसब पित्तज्वरमेंहोते हैं ३१

पिच ३२ गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोतिनिद्रता ॥ स्रो तोरोधोरुगल्पत्वंप्रसेकोवहुमूत्रता ३३ नात्युष्णगात्रता छर्दिर्लालास्रावोविपाकता ॥ प्रतिश्यायोरुचिःकासःक फजेक्ष्णोश्चशुक्लता ३४ तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहः स्वप्न नाशःशिरोरुजा ॥ कंठास्यशोषोवमथू रोमहर्षोरुचिस्त मः ३५ पर्वभेदश्चजृम्भाच वातपित्तज्वराकृतिः ॥ स्तै मित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच ३६ शिरोग्रहःप्रतिश्या यःकासःस्वेदाप्रवर्त्तनम् ॥ संतापोमध्यवेगश्चवातश्ले ष्मज्वराकृतिः ३७ लिप्ततिक्तास्यतातंद्रामोहःकासोरुचि

कफज्वरकेलक्षण-देहपानीसे भीगासावनारहे ज्वरका वेगमन्दरहे आलस्यरहे मुखमीठाबनारहे मलमूत्रखाल उजलेरहें शरीरजक ड़ासा भोजनकरनेकी इच्छानहोना ३२ शरीरगरूरहना जाड़ाव हुत लगना उकलाई का होना रोमांच होना वहुत सोना नसों का रुँकना अंग में थोड़ीपीड़ा पसीनाहोना वहुत पेशाव होना ३३ देहमें वहुतगर्म्मीका नहोना डाकना लारवहना शरीरपकासा विदितहोना नाकवहना अरुचिहोना खांसी नेत्रों में शुक्लतावस ये कफज्वरके लक्षणहैं ३४ वात पित्तज्वरके लक्षण-प्यास मूर्च्छा आना चित्तभ्रमहोना जलनहोना नींदकानाश होना शिरमेंपीड़ा होना गलमुखका सूखना वान्तहोना रोमखड़ेहोना अरुचि अँधि यारा दिखाईदेना ३५ सब सन्धियोंमें पीड़ा जँभोईआना वसये वात पित्तज्वर के लक्षण हैं अब कफवातज्वर के लक्षण कहते हैं-देह गीलेकपड़े से पोंछासा विदितहो सब सन्धियोंमें पीड़ाहो नींदवहुत आवे शरीर गरुआरहे ३६ शिरमेंपीड़ा शरदी के मारे नासिकावहती रहे खांसीआवे पसीनाथोड़ाहो देहमें दाहबनारहे ज्वरका मध्यम वेगहो वस येही वात कफज्वर के लक्षण हैं ३७ कफ पित्तज्वरके लक्षण-चटचटाहट के साथ मुखकडूहोना आ,

स्तृषा॥ मुहुर्दाहोमुहुःशीतं श्लेष्मपित्तज्वराकृतिः ३८
क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसंधिशिरोरुजा॥ सस्रावेकलुषे
रक्ते निर्भुग्नेचापिलोचने ३६ सस्वनौसरुजौकर्णौकं
ठःशूकैरिवावृतः ॥ तंद्रामोहःप्रलापश्च कासःश्वासोरु
चिर्भ्रमः ४० परिदग्धाखरस्पर्शा जिह्वास्रस्तांगतापरम्॥
ष्ठीवनंरक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्यच ४१ शिरसोलो
ठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा ॥ स्वेदमूत्रपुरीषाणांचि
राद्दर्शनमल्पशः ४२ कृशत्वंनातिगात्राणामततंकंठकूज
नम् ॥ स्फोटानांश्यावरक्तानांमंडलानांचदर्शनम् ४३मू
कत्वंश्रोतसांपाको गुरुत्वमुदरस्यच ॥ चिरात्पाकश्चदो
षाणां सन्निपातज्वराकृतिः ४४ दोषेविवृद्धेनष्टेग्नौ सर्व

लस्य होना मोह खांसीआना अरुचि प्यास बार २ दाह बार २ शरीर ठएढाहोजाना वस कफ पित्तज्वर के येहीलक्षणहैं ३८ सन्निपातज्वरके लक्षण-क्षण में अतिदाह क्षणमें अति शीतहोजाना हड़फूटन सबजोड़ों में पीड़ा शिरबहुत पीड़ितहोना नेत्रआंशुओं से भरे मैले लाल तिरछे बनेरहैं ३६ कानोंमें संसनाहट व पीड़ा बनीरहै गले में काँटे से गड़ें आलस्य मोह अनर्थबकना खाँसी दम सबवस्तुओं में अरुचि भ्रम ४० जिह्वाजलतीसी व खरखरी छूनेसे शरीरमें पीड़ाविदितहो रक्तपित्त मिलेहुये कफका थूँकना ४१ इधर उधर शिर घुमाते रहना अधिकप्यास लगना नींद न आना मनमें पीड़ा पसीना मूत्र मल बहुत देरमें कभी थोड़ासा दिखाईदेना ४२ देहकाबहुत दुर्ब्बल न होना जलताहुआ गला घुर्घुरातारहना काले व लाल फोड़े व चकधोंका शरीर में पड़ जाना ४३ बोलनसकना कान नाक जीभ गलापकजाना पेटका भारीबनारहना वात पित्त कफादिकों के दोषोंका बहुत दिनों में परिपाक होना ये सब सन्निपात ज्वरके लक्षण हैं ४४ बात पित्त

पूर्णलक्षणः ॥ सन्निपातज्वरोसाध्यं कृच्छ्रसाध्यस्ततोन्यथा ४५ सन्निपातज्वरस्यांतेकर्णमूलेसुदारुणः ॥ शोफः संजायतेतेन कश्चिदेवप्रमुच्यते ४६ अभिघाताभिचाराभ्यामभिषंगाभिशापतः ॥ आगंतुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतं विभावयेत् ४७ श्यावास्यताविषकृतेदाहोतीसारएवच ॥ भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चसहमूर्च्छया ४८ औषधाघ्राणजेमूर्च्छाशिरोरुग्वमथुःक्षवः ॥ कामजेचित्तविभ्रंश

कफके दोषोंके बहुत बढ़जानेपर जब अग्नि बनाय मन्द होजाय व ऊपर कहेहुये सब लक्षणहों वह सन्निपात ज्वर असाध्य होता है व जब इसकेविपरीतहो सबलक्षण नमिलें कुछमिलें कुछ न मिलें मन्दाग्नि न हों तब वह सन्निपात बड़ेकष्टसे साध्यभी होजाता है ४५ सन्निपात इसग्रन्थके व अन्यग्रन्थों के मत से तेरहप्रकार के होते हैं उनके लक्षण व नामादि ग्रन्थके अन्तमें कहेंगे सन्निपात ज्वरके अन्तमें कानोंके मूलमें जब अति दारुण शोथ होता है उसके होने से फिर कोई सैकड़ों में एक आधा बचता है नहीं तो मृतकही होजाता है ४६ अस्त्र शस्त्रादि के लगनेसे मन्त्रादि के विरुद्धकरनेसे सरसों आदि के हवन करनेसे अतिमैथुन करने से भूतादि लगनेसे ब्राह्मण वृद्धादिकों के शापसे आगन्तुक ज्वर उत्पन्न होताहै जिसमें शस्त्रादिकों में से जिसका लक्षण पाया जाय उसे उसीका आगन्तुक ज्वर जानना चाहिये ४७ विषसे उत्पन्न आगन्तुकज्वरका लक्षण—विषसे उत्पन्नज्वरमें मुखकाला होजाता है शरीरमें दाह होताहै दस्त होते हैं भोजनादिमें अरुचिहोती है प्यास लगती है शरीरमें मानोंकोई कोंचता है व मूर्च्छा होआती है ४८ किसी विषारी औषधके सूँघने से उत्पन्न ज्वरके लक्षण इसमें मूर्च्छा आजाती है शिरमें पीड़ाहोती है ओकाईआती छींकबहुतआती हैं कामसे उत्पन्न ज्वरके लक्षण यह

स्तंद्रालस्यमभोजनम् ४९ हृदयेवेदनाचास्यगात्रंचप
रिशुष्यति ॥ भयात्प्रलापःशोकाच्चभवेत्कोपाच्चवेपथुः
५० अभिचाराभिघाताभ्यांमोहस्तृष्णाचजायते॥ भूता
भिषंगादुद्वेगोहास्यरोदनकंपनम्५१ कामशोकभयाद्वायुः
क्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः॥ भूताभिषंगात्कुप्यंतिभूतसामान्य
लक्षणाः ५२ दोषोल्पोऽहितसंभूतोज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः॥
धातुमन्यतमंप्राप्यकरोतिविषमज्वरम् ५३ यस्यादनिय
तात्कालाच्छीतोष्णाभ्यान्तथैवच ॥ वेगतश्चापिविषमो

ज्वर किसी स्त्रीमें चित्तलगनेपर उसके न मिलनेपर प्रायःउत्प-
न्नहोताहै इसमें चित्तभ्रम होजाताहै शरीर तवाँयाकरता आल-
स्य होतीहै किसी वस्तुके भोजनकी रुचिनहीं रहती ४९ हृदय
में पीड़ा व सब अंगसूखते रहते हैं भय शोक व कोपसे उत्पन्न
ज्वरोंके लक्षण भयसे उत्पन्न ज्वरमें प्राणी अनर्थ वचन बकता
रहताहै व शोकसे उत्पन्नमें भी ऐसाही बकताहै व कोपसे उत्प-
न्न वालेमें काँपता है ५० अभिचार व अभिघात से उत्पन्नज्वर
में मोह होता व प्यास अधिक लगती है भूतप्रेतादिकोंसे उत्पन्न
ज्वरमें चित्तकी उद्विग्नता हँसना रोना व काँपना होताहै ५१
कामशोक व भयसे वायु कोपकरताहै व क्रोधसे पित्त कोपताहै
व भूतज्वर में वातपित्त कफ तीनों दोष कोपकरते हैं व भूतके
लक्षण और वातादिकों के दोषोंके भी लक्षण इसमें होतेहैं ५२
विषमज्वरकी सम्प्राप्तिका लक्षण—ज्वर आकरछूटजानेपर दिनमें
सोजाने आदि अपथ्योंके कारण अल्पदोष भी अपथ्यके हेतुअन्य
धातुमें पैठकर फिर विषमज्वरको उत्पन्न कराताहै समयबदलता
हुआ तीसरे चौथे दिन अति वेगसे आने लगताहै व फिर नित्य
ज्वरको भी उत्पन्न करता है ५३ जिसज्वर का कोई काल
नियत नहो व शीत उष्ण दोनोंके संग आवे व जब आवे बड़े वेग

ज्वरस्सविषमस्स्मृतः ५४ संततःसततोन्येद्युस्तृतीयक चतुर्थकौ ॥ संततोरसरक्तस्थःसोन्येद्युःपिशिताश्रितः५५ मेदोगतस्तृतीयेह्निस्त्वस्थिमज्जागतःपुनः ॥ कुर्य्याच्चातुर्थकंघोरमंतकंरोगसंकरम् ५६ सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा ॥ संतत्यापोविसर्गस्स्यात्संततः सनिगद्यते ५७ अहोरात्रेसततकोद्वौकालावनुवर्त्तते ॥ अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रमेककालंप्रवर्त्तते ५८ तृतीयकस्तृतीये

सेही आवे व पूर्व्व के लक्षणसे भी जो आवे उसज्वरको विषम ज्वर कहतेहैं ५४ विषमज्वर के नाम-सन्तत सतत अन्येद्युतृतीयक चतुर्थक ये पांचप्रकारके विषमज्वर होतेहैं जिसका सदा एकसावेग बनारहता वहसन्तत कहाताहै व चढ़ता उतरतारहताहै उसकासततनामहै व जोआंतरिआआताहै उसेअन्येद्यु कहते हैंतीसरेदिन आने वालेको तृतीयक वा तिजरिया कहते हैं चौथे दिनआनेवाले को चतुर्थक चातुर्थिक वा चौथिया कहतेहैं रसमे प्राप्त होकर दोप सन्तत ज्वरको उत्पन्न करताहै व रक्त में प्रविष्ट होकर सततज्वरको व मांस में दोप प्रवृत्त होकर अन्येद्युज्वर कौ ५५ मेदा में दोप पहुंचकर तृतीयक ज्वरको हड्डी व मज्जामें जब दोप प्राप्त होता है तो चातुर्थिक ज्वर को उत्पन्न करता है यह ज्वर बड़ा घोर होताहै इससे मरणही करदेता व बहुत से रोग इसमें मिले हुये होते हैं ५६ सन्ततज्वर के लक्षण सात दिन तक दशदिनतक अथवा बारह दिनतक जो बराबर चढ़ारहै किसी समय न उतरे उसको सन्तत ज्वर कहते हैं इसमें बात का सन्तत ज्वर सातदिनतक पित्तकादशदिन व कफका बारह दिन रहता है ५७ सततज्वर के लक्षण-रात्रिहीमें वा दिनही में वा रात्रि दिन दोनों मिलाकर जो दो समयों में आता है उसको सतत ज्वर कहतेहैं व अन्येद्युनाम ज्वर रात्रिमें वा दिनमें एक

ह्नि चतुर्थेह्नि चतुर्थकः ॥ (अहोरात्रादहोरात्रं स्थाना त्स्थानंप्रपद्यते ॥ ततश्चामाशयंप्राप्य करोतिविषम ज्वरम्) केचिद्भूताभिषंगोत्थं वदंतिविषमज्वरम् ५६ कफपित्तात्त्रिकग्राही पृष्ठाद्वातकफात्मकः ॥ वातपित्ता च्छिरोग्राही त्रिविधःस्यात्तृतीयकः ६० चातुर्थिकोदर्श यति प्रभावंद्विविधंज्वरः ॥ जंघाभ्यांश्लेष्मिकःपूर्वं शिर स्तोनिलसंभवः ६१ विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकविप र्ययः ॥ समध्येज्वरयत्यह्नी आद्यन्तेचविमुञ्चति ६२ नित्यंमंदज्वरोरूक्षः शूनकस्तेनसीदति ॥ स्तब्धाङ्गः

हीवार आता है ५८ तृतीयक वा तिजरिया तीसरे दिन आता है व चतुर्थक वा चौथिया चौथेदिन आता है सोभी ये दोनों एकही एकवार आते हैं कोई २ आचार्य्य भूतादिकों के संगसे उत्पन्न विषमज्वरको बताते हैं ५६ कफ पित्त के दोषसे उत्पन्न तृतीयक ज्वर पीठ रीढ़ व कटि तीन स्थानों में पीड़ा करताहै व वात कफसे उत्पन्न तृतीयक केवल पीठमें पीड़ा करता है व वात पित्त से उत्पन्न तृतीयक शिरमें पीड़ा करताहै इस रीतिसे तृती- यक तीनप्रकारका होताहै ६० व चातुर्थिक वा चौथिया ज्वर दोप्रकार का प्रभाव दिखाता है जो कफका होता वह फीलियों में पीड़ा करताहै व वातज चातुर्थिक शिर में पहिले पीड़ा क- रता फिर सब शरीर में फैलताहै ६१ विषम ज्वर के भेद-चौ- थिया ज्वरही उलटाहोकर दूसरा विषमज्वर होजाताहै वह आदि अन्तके अर्थात् पहिले चौथेदिनोंको छोड़ बीचवाले दूसरे तीसरे दिनों में आताहै ऐसेही तृतीयक पहिले तीसरे दिनको छोड़ दूसरे दिन आने लगताहै तो दूसरा विषम ज्वर होजाता है ६२ वात बलासकनाम ज्वर का लक्षण-नित्यमन्द ज्वर बना रहना देहमें रुखाई शोथ होना ग्लानि अंगों का टूटना कफकी अधिक

श्लेष्मभूयिष्ठो नरोवातवलासकी ६३ प्रलिप्तन्निवगात्रा णि घर्मेणगौरवेणच ॥ मंदज्वरविलेपीचसशीतःस्यात् प्रलेपकः ६४ विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते ॥ तेनार्द्धंशीतलंदेहमर्द्धंचोष्णंप्रजायते ६५ कायेपित्तंय दादुष्टं श्लेष्माचांतेव्यवस्थितः ॥ तेनोष्णत्वंशरीरस्य शीतत्वंहस्तपादयोः ६६ कायेश्लेष्मायदादुष्टः पि त्तंचांतेव्यवस्थितम् ॥ शीतत्वंतेनगात्राणामुष्णत्वंहस्त पादयोः ६७ त्वक्स्थौश्लेष्मानिलौशीत मादौजनयतो ज्वरम् ॥ तयोःप्रशांतयोःपित्तमंतेदाहंकरोतिच ६८ करो त्यादौतथापित्तं त्वक्स्थंदाहमतीवच ॥ तस्मिन्प्रशांते

वृद्धियेइसज्वरवालेकोहोतेहैं ६३ प्रलेपकज्वरकेलक्षण-इसज्वरमें पसीनेसे वा गरुभाईसे शरीरमेंज्वरके पीछे कुछचटचटीसीशरदी विदितहोती है व उसीसे मन्दज्वर कुछठण्ढासा विदितहोनेलग- ताहै इसीसे इसका प्रलेपक नामभीहै ६४ विषमज्वरका विशेष लक्षण-अन्नकारसदुष्टहोकर व शरीरमें कफपित्तभी जबदुष्टहोकर टिकतेहैं तो कफकेकारण आधाशरीर तो बनायशीतल होजाताहै वआधापित्तके कारण बहुतगर्म्म रहताहै ६५ जब देहमें पित्तदुष्ट होजाताहै व कफहाथों पैरोंमें दुष्टहोकर रहताहै तो उसपित्तकी दुष्टतासे अन्यअंगोंमें उष्णता व कफकीदुष्टतासे हाथोंपैरोंमें शी तलता होजातीहै ६६ इसीकाउलटा दूसराज्वर कोठेमें जब कफ दुष्टहोकर रहताहै व दुष्टहोकर पित्तहाथों पैरोंमें व्यापरहताहै तो कफकी दुष्टतासे अन्यअंगोंमें शीतलता व पित्तकीदुष्टतासे हाथों पैरोंमें उष्णता होजाती है ६७ शीतपूर्व्वक ज्वर अर्थात् पहिले जाड़ा लगकर फिर ज्वरहोना खालमें टिककरकफ व वात पहिले शीतज्वर को उत्पन्न करते हैं जब कफ वातशान्त होजाते हैं तो पित्तदेहको जलाने लगताहै ६८ दाहपूर्व्वक ज्वर अर्थात् पहिले

त्वितरौ कुरुतःशीतमंततः ६९ द्वावेतौदाहशीतादीज्व रौसंसर्गजौस्मृतौ ॥ दाहपूर्वस्तयोःकष्टः कृच्छ्रसाध्यतम श्चसः ७० गुरुताहृदयोत्क्लेशस्सदनंछर्द्यरोचकौ ॥ रसस्थेतुज्वरेलिंगं दैन्यंचास्योपजायते ७१ रक्तनिष्ठी वनंदाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ ॥ प्रलापःपिडिकातृष्णारक्त प्राप्तेज्वरेनृणाम् ७२ पिडिकोद्वेष्टनंतृष्णा सृष्टमूत्रपुरीष ता ॥ उष्णांतर्दाहविक्षेपौ ग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे ७३ पिडिकाजान्वधोभागे मांसपिंडस्यवेष्टनम् ॥ दण्डादि पीडनेनेव पीडामूत्रपुरीषयोः ७४ भृशंस्वेदस्तृषामूर्च्छा

तापहोकर फिर जूड़ी आना पहिले त्वचामें टिकाहुआ पित्त अ- त्यन्त तापको उत्पन्नकराताहै जब वहशान्त होजाताहै तो कफ व वात दोनों मिलकर सबअंगों को शीतल करदेते हैं ६९ दाह- पूर्व्वक व शीतपूर्व्वक येदोनों ज्वर त्रिदोषसे होते हैं उनमें दाह- पूर्व्वक बड़ाकष्टदायी होताहै व बड़ेकष्टसे मिटसकाहै७० रसगत ज्वरके लक्षण-शरीरगरुआवनारहै हृदय में क्लेश शरीर का टूटना ओकाईआना सबवस्तुओंमें अरुचि किसीको न पहिचानना चित्त में दीनता बस ये सब चिह्न रसस्थ ज्वर के हैं ७१ रक्तगत ज्वर के लक्षण-रुधिर का डाकना जलन चित्त बिगड़ना बार २ ओ- काईआना किसीको न पहिचानना आदि विभ्रम अनर्थ वचन बकना फोड़ाफुंसी आदि होजाना अधिकप्यास लगना येसबरक्त में प्राप्त ज्वरमें होते हैं ७२ मांसगत ज्वर के लक्षण-फोड़ाफुंसि- योंका होना प्यास मलमूत्रकी अधिकता अन्तःकरणका जलना हाथ पैरफटकना व ग्लानि येसबमांसगतज्वरमें होतेहैं ७३ मेदा में प्राप्त ज्वर के लक्षण-बहुत पसीना होना प्यास लगना मूर्च्छा आना अनर्थ बकना डाकना मुखादिमें दुर्गन्धिका आना अरुचि होना ग्लानि देहसे पीड़ाका न सहना येसब मेदाके ज्वरमें होते

प्रलापःछर्दिरेवच ॥ दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदस्थेचास हिष्णुता ७५ मेदोस्थनांकूजनंश्वासो निरेकःछर्दिरेवच॥ विक्षेपणंचगात्राणामेतदस्थिगतेज्वरे ७६ तमःप्रवेशनं हिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा ॥ अंतर्दाहोमहाश्वासोम र्मच्छेदश्चमज्जगे ७७ मरणंप्राप्नुयात्तत्र शुक्रस्थानगते ज्वरे ॥ शेफसस्तब्धतामोक्षः शुक्रस्यतुविशेषतः ७८ वर्षाशरद्वसंतेषु वाताद्यैःप्राकृतःक्रमात् ॥ वैकृतोन्यस्स दुःसाध्यःप्राकृतश्चानिलोद्भवः ७९ वर्षासुमारुतोदुष्टः पित्तश्लेष्मान्वितोज्वरम् ॥ कुर्यात्पित्तंचशरदि तस्यचा

हैं७४अस्थिगतज्वरके लक्षण—हड्डफूटनकांखना वा कहरना दम चढ़ना मलअधिक आना वमनहोना अंगोंकाफटकना ये लक्षण हड्डीमेंप्राप्तज्वरकेहैं७५ मज्जागतज्वरकेलक्षण-सबअंधेरादिखाई देना हुचकीआना खांसीठण्ढालगना वमनहोना अन्तर्दाह होना बड़े वेगसे श्वासआना कलेजे आदि सुकुमार स्थानोंमें छेदना येसब मज्जागत ज्वरमें होते हैं ७६ कामगतज्वरकेलक्षण—रसा- दि सातधातुओं में पैठते २ जबज्वर काममें पैठजाताहै तबरोगी मृतकही होजाताहै क्योंकि लिंगसेशिथिल होजाताहै उससे पत ला होकर वीर्य्य वा रुधिरवहने लगताहै७७प्राकृत वैकृत ज्वर के लक्षण—वर्षा शरद व वसंतमेंक्रमसे वात पित्त व कफज्वरप्रा- कृतिकज्वर कहातेहैं वर्षामेंवातज्वर शरदमें पित्तज्वर व वसंतमें कफज्वर और इनके विपरीत जो ज्वरहोता है वह वैकृत ज्वर कहाता है वैकृत बड़े दुःखसे साध्यहोताहै व वातज्वर प्राकृतिक भी दुस्साध्य होताहै ७८ पित्तकफ युक्त होकर वायु दुष्टहो वर्षा में ज्वरको उत्पन्न कराता है ऐसेही वर्षाकाल का इकट्ठा हुआ पित्त दुष्ट होकर शरदमें ज्वरको कराता है उस शरदमें पित्तकफ से सम्बन्ध रखता है ७९ इस शरद ऋतुके ज्वर में जुल्लाबदेने

ज्वरःक्षीणस्यशूलस्यगंभीरोदैर्घ्यरात्रिकः॥ असाध्योबल वानूयश्च केशसीमंतकृज्ज्वरः ६२ गंभीरस्तुज्वरोज्ञेयो ह्यंतर्दाहेनतृष्णया॥ आनद्धत्वेनदोषाणांश्वासकासोद्गमेनच ६३ आरम्भाद्विषमोयस्य यस्यवादैर्घ्यरात्रिकः॥ क्षीणस्यचातिरूक्षस्य गंभीरोहंतियस्यतम् ६४ विसंज्ञस्ताम्यंतेयस्तु शेतेनिपतितोपिवा॥ शीतार्दितोंतरुष्णश्च ज्वरेणम्रियतेनरः ६५ योहृष्टरोमारक्ताक्षो हृदिसंघातशूलवान् ॥ वक्त्रेणचैवोच्छ्वसिति तंज्वरोहंतिमानव

दूसरा लक्षण—क्षीण व शोथे पुरुष के शरीर में जो ज्वर होता वह असाध्यही होता है व जो ज्वर धातुओं के भीतर पैठकर अति गुरु होजाता है व जो वहुत रात्रियों तक रहता है ६१ व जो ज्वर बहुत वलवान् हो और उसके कारणरोगीके वार चकिने होजायँ यह ज्वरअसाध्यहै गम्भीर ज्वरके लक्षण—अन्तर्दाह व अति प्यास से युक्त ज्वर गम्भीर ज्वर कहाताहै ६२ इसके साथ ही जो मल वहुत बँधाहुआहो व खांसी दमभी आनेलगेतो अति गम्भीर ज्वर होजाता है गम्भीर ज्वरका असाध्य लक्षण—जो ज्वर प्रारम्भही से विषम हो वहुधा कोई समय न नियत हो वा जो वहुतदिनोंतक वनारहै ६३ व जिस पुरुषके हो वह अतिक्षीण हो अथवा उसका शरीर वहुत रूखाहो तो वह ज्वर उसे मारही डालताहै दूसरा असाध्य गम्भीर ज्वरकालक्षण—जोज्वरवालामूर्च्छितहो मोहमें पड़ारहै व विस्तरापर पड़ेहुये सोताही रहे विना उठाये उठनसके ६४ वऊपरसेवहुतजाड़ेसे पीड़ितरहे औरअन्तःकरण में दाह वनारहै यह ज्वर असाध्य होताहै इससे इसमें प्राणी नहींजीता मरिजाताहै और असाध्यका लक्षण—जिसज्वर वाले के रोम सदा खड़ेरहें व नेत्रलाल वनेरहें व हृदय में कुछ गाँठसी बँधकर पीड़ाकरे ९५ व मुखसे श्वासेंअधिक निकलें उस

म् ९६ हिक्काश्वासतृषायुक्तं मूढंविभ्रांतलोचनम् ॥ संततोच्छ्वासिनंक्षीणं नरंक्षपयतिज्वरः ९७ हतप्रभेन्द्रियक्षाममरोचकनिपीडितम् ॥ गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तं ज्वरितंपरिवर्ज्जयेत् ९८ दाहःस्वेदोभ्रमःतृष्णा कम्पोविड्भिदसंज्ञता ॥ कूजनंचातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे ९९ स्वेदोलघुत्वंशिरसः कण्डूःपाकोमुखस्यच ॥ क्षवथुश्चान्नकांक्षाच ज्वरमुक्तस्यलक्षणम् १०० ॥

इतिज्वरनिदानम् ॥

पुरुष को वह ज्वर मारडालता है जिस ज्वरवाले को हुचकी श्वास पिपासाहो व वह मोह युक्त बनारहे नेत्र इधर उधर घुमायाकरे ९६ व निरन्तर वेगसे श्वास लेतारहे व शरीर उसका बहुत क्षीणहोगयाहो तो वह मनुष्य मृतरूही होजाताहै जिस पुरुषकी प्रभाव इन्द्रियाँ नष्टहोगईहों व बहुतही दुर्ब्बल होगया हो व अरुचिसे सबअंगोंसे पीड़ितहो ९७ गम्भीर व तीक्ष्णबेगसे अत्यन्त पीड़ितहो वैद्यको चाहिये कि ऐसे ज्वरवाले को छोड़दे औषध न करे ज्वर छूटजाने के पूर्वरूपका लक्षण—शरीरमें दाह होना पसीनाहोना कुछ भ्रमरहना प्यासलगना कुछ काँपना मल का पतला न होना ९८ काँखना वा कहरना देहमेंगन्धि न होना यह ज्वर छूटनेका लक्षणहै ज्वरछूटजानेका और लक्षण—पसीना का होना शरीर हलकाहोना शिरखजुआना मुखपकजाना ९९ छींकेंआना अन्नखाने को मनहोना ये सब ज्वरछूटजाने के लक्षण हैं १०० ॥

इतिश्रीमाधवीयेभाषानुवादेज्वरनिदानम्प्रथमम् १ ॥

ज्वरःक्षीणस्यशूलस्यगंभीरोदैर्घ्यरात्रिकः॥ असाध्योबल वान्यश्च केशसीमंतकृज्ज्वरः ९२ गंभीरस्तुज्वरोज्ञेयो ह्यंतर्दाहेनतृष्णया ॥ आनद्धत्वेनदोषाणांश्वासकासोद्ग मेनच ९३ आरम्भाद्विषमोयस्य यस्यवादैर्घ्यरात्रिकः ॥ क्षीणस्यचातिरूक्षस्य गंभीरोहंतियस्यतम् ९४ विसंज्ञ स्ताम्यंतेयस्तु शेतेनिपतितोपिवा ॥ शीतार्दितोंतरुष्ण श्च ज्वरेणम्रियतेनरः ९५ योहृष्टरोमारक्ताक्षो हृदिसंघा तशूलवान् ॥ वक्त्रेणचैवोच्छ्वसिति तंज्वरोहंतिमानव

दूसरा लक्षण—क्षीण व शोथे पुरुष के शरीर में जो ज्वर होता वह असाध्यही होता है व जो ज्वर धातुओं के भीतर पैठकर अति गुरु होजाता है व जो वहुत रात्रियों तक रहता है ९१ व जो ज्वर बहुत बलवान् हो और उसके कारणरोगीके बार चिक- ने होजायँ यह ज्वर असाध्यहै गम्भीर ज्वरके लक्षण—अन्तर्दाह व अति प्यास से युक्त ज्वर गम्भीर ज्वर कहाताहै ९२ इसके साथ ही जो मल बहुत बँधाहुआहो व खांसी दमभी आनेलगेतो अति गम्भीर ज्वर होजाता है गम्भीर ज्वरका असाध्य लक्षण—जो ज्वर प्रारम्भही से विषम हो वहुधा कोई समय न नियत हो वा जो वहुतदिनोंतक बनारहै ९३ व जिस पुरुषके हो वह अतिक्षीण हो अथवा उसका शरीर बहुत रूखाहो तो वह ज्वर उसे मारही डालताहै दूसरा असाध्य गम्भीर ज्वरकालक्षण—जोज्वरवालामू- र्च्छितहो मोहमें पड़ारहै व बिस्तरापर पड़ेहुये सोताही रहै विना उठाये उठनसके९४ वऊपरसेबहुतजाड़ेसे पीड़ितरहै औरअन्तः- करण में दाह बनारहै यह ज्वर असाध्य होताहै इससे इसमें प्राणी नहींजीता मरीजाताहै और असाध्यका लक्षण—जिसज्वर वाले के रोम सदा खड़ेरहैं व नेत्रलाल बनेरहैं व हृदय में कुछ गाँठसी बँधकर पीड़ाकरे ९५ व मुखसे श्वासैंअधिक निकलैं उस

म् ६६ हिक्काश्वासतृषायुक्तं मूढंविभ्रांतलोचनम् ॥ संततोच्छ्वासिनंक्षीणं नरंक्षपयतिज्वरः ६७ हतप्रभेन्द्रियक्षाममरोचकनिपीडितम् ॥ गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तं ज्वरितंपरिवर्ज्जयेत् ६८ दाहःस्वेदोभ्रमःतृष्णा कम्पोविड्भिदसंज्ञता ॥ कूजनंचातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे ६६ स्वेदोलघुत्वंशिरसः कण्डूःपाकोमुखस्यच ॥ क्षवथुश्चान्नकांक्षाच ज्वरमुक्तस्यलक्षणम् १०० ॥

इतिज्वरनिदानम् ॥

पुरुष को वह ज्वर मारडालता है जिस ज्वरवाले को हुचकी श्वास पिपासाहो व वह मोह युक्त बनारहै नेत्र इधर उधर घुमायाकरे ६६ व निरन्तर वेगसे श्वास लेतारहै व शरीर उसका बहुत क्षीणहोगयाहो तो वह मनुष्य मृतकही होजाताहै जिस पुरुषकी प्रभाव इन्द्रियाँ नष्टहोगईहों व बहुतही दुर्ब्बल होगया हो व अरुचिसे सबअंगोंसे पीड़ितहो ६७ गम्भीर व तीक्ष्णवेगसे अत्यन्त पीड़ितहो वैद्यको चाहिये कि ऐसे ज्वरवाले को छोड़दे औषध न करे ज्वर छूटजाने के पूर्व्वरूपका लक्षण—शरीरमें दाह होना पसीनाहोना कुछ भ्रमरहना प्यासलगना कुछ काँपना मल का पतला न होना ६८ काँखना वा कहरना देहमेंगन्धि न होना यह ज्वर छूटनेका लक्षणहै ज्वरछूटजानेका और लक्षण—पसीना का होना शरीर हलकाहोना शिरखजुआना मुखपकजाना ६९ छींकेंआना अन्नखाने को मनहोना ये सब ज्वरछूटजाने के लक्षण हैं १०० ॥

इतिश्रीमाधवीयेभाषानुवादेज्वरनिदानम्प्रथमम् १ ॥

ज्वरःक्षीणस्यशूलस्यगंभीरोदैर्घ्यरात्रिकः॥ असाध्योबल वानूयश्च केशसीमंतकृज्ज्वरः ९२ गंभीरस्तुज्वरोज्ञेयो ह्यंतर्दाहेनतृष्णया ॥ आनद्धत्वेनदोषाणांश्वासकासोद्ग मेनच ९३ आरम्भाद्विषमोयस्य यस्यवादैर्घ्यरात्रिकः ॥ क्षीणस्यचातिरूक्षस्य गंभीरोहंतियस्यतम् ९४ विसंज्ञ स्ताम्यंतेयस्तु शेतेनिपतितोपिवा ॥ शीतार्दितोंतरुष्ण श्च ज्वरेणम्रियतेनरः ९५ योहृष्टरोमारक्ताक्षो हृदिसंघा तशूलवान् ॥ वक्त्रेणचैवोच्छ्वसिति तंज्वरोहंतिमानव

दूसरा लक्षण—क्षीण व शोथे पुरुष के शरीर में जो ज्वर होता वह असाध्यही होता है व जो ज्वर धातुओं के भीतर पैठकर अति गुरु होजाता है व जो बहुत रात्रियों तक रहता है ९१ व जो ज्वर बहुत बलवान् हो और उसके कारणरोगीके बार चकि- ने होजायँ यह ज्वरअसाध्यहै गम्भीर ज्वरके लक्षण—अन्तर्दाह व अति प्यास से युक्त ज्वर गम्भीर ज्वर कहाताहै ९२ इसके साथ ही जो मल बहुत बँधाहुआहो व खांसी दमभी आनेलगेतो अति गम्भीर ज्वर होजाता है गम्भीर ज्वरका असाध्य लक्षण—जो ज्वर प्रारम्भहीं से विषम हो बहुधा कोई समय न नियत हो वा जो बहुतदिनोंतक बनारहै ९३ व जिस पुरुषके हो वह अतिक्षीण हो अथवा उसका शरीर बहुत रूखाहो तो वह ज्वर उसे मारही डालताहै दूसरा असाध्य गम्भीर ज्वरकालक्षण—जोज्वरवालामू- र्च्छितहो मोहमें पड़ारहै व बिस्तरापर पड़ेहुये सोताही रहे बिना उठाये उठनसके९४ वऊपरसेबहुतजाड़ेसे पीड़ितरहै औरअन्तः- करण में दाह बनारहै यह ज्वर असाध्य होताहै इससे इसमें प्राणी नहींजीता मरजाताहै और असाध्यका लक्षण—जिसज्वर वाले के रोम सदा खड़ेरहें व नेत्रलाल बनेरहें व हृदय में कुछ गाँठसी बँधकर पीड़ाकरे ९५ व मुखसे श्वासेंअधिक निकलें उस

म् ६६ हिक्काश्वासतृषायुक्तं मूढंविभ्रांतलोचनम् ॥ संततोच्छ्वासिनंक्षीणं नरंक्षपयतिज्वरः ६७ हतप्रभेन्द्रियक्षामम रोचकनिपीडितम् ॥ गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तं ज्वरितंपरिवर्ज्जयेत् ६८ दाहःस्वेदोभ्रमःतृष्णा कम्पोविड्भिदसंज्ञता ॥ कूजनंचातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे ६६ स्वेदोलघुत्वंशिरसः कण्डूःपाकोमुखस्यच ॥ क्षवथुश्चान्नकांक्षाच ज्वरमुक्तस्यलक्षणम् १०० ॥

इतिज्वरनिदानम् ॥

पुरुष को वह ज्वर मारडालता है जिस ज्वरवाले को हुचकी श्वास पिपासाहो व वह मोह युक्त बनारहै नेत्र इधर उधर घुमायाकरे ६६ व निरन्तर वेगसे श्वास लेतारहै व शरीर उसका बहुत क्षीणहोगयाहो तो वह मनुष्य मृतकही होजाताहै जिस पुरुषकी प्रभाव इन्द्रियाँ नष्टहोगईहों व बहुतही दुर्ब्बल होगया हो व अरुचिसे सबअंगोंसे पीड़ितहो ६७ गम्भीर व तीक्ष्णवेगसे अत्यन्त पीड़ितहो वैद्यको चाहिये कि ऐसे ज्वरवाले को छोड़दे औषध न करे ज्वर छूटजाने के पूर्व्वरूपका लक्षण–शरीरमें दाह होना पसीनाहोना कुछ भ्रमरहना प्यासलगना कुछ काँपना मल का पतला न होना ६८ काँखना वा कहरना देहमेंगन्धि न होना यह ज्वर छूटनेका लक्षणहै ज्वरछूटजानेका और लक्षण–पसीना का होना शरीर हलकाहोना शिरखजुआना मुखपकजाना ६९ छींकआना अन्नखाने को मनहोना ये सब ज्वरछूटजाने के लक्षण हैं १०० ॥

इतिश्रीमाधवीयेभाषानुवादेज्वरनिदानम्प्रथमम् १ ॥

गुर्वतिस्निग्धरूक्षोष्ण द्रवस्थूलातिशीतलैः॥ विरुद्धा ध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चापिभोजनैः १ स्नेहाद्यैरतियुक्तै श्च मिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः ॥ शोकदुष्टाम्बुमद्याति पानैः सात्म्यर्तुपर्ययैः २ जलातिरमणैर्वेग विघातैःकृमिदोष तः ॥ नृणाम्भवत्यतीसारो लक्षणन्तस्यवक्ष्यते ३ सं शम्याऽपान्धातुरग्निम्प्रवृद्धो वर्चोमिश्रोवायुनाधःप्रण न्नः ॥ सार्य्यैताम्रीवातिसारंतमाहुर्व्याधिंघोरंषड्विधंतं वदंति ४ एकैकशःसर्वशश्चापिदोषैः शोकेनान्यःष

दोहा ॥ दुसरेमहँ कह सकल अतिसार निदान विचारि ॥
देखहिं सज्जन चित्तदै जिमि वरणयो निरधारि १

अतीसार निदानकहते हैं गरुई वस्तुओंका भोजन जो शीघ्र नहीं पचतीं अति चिकनी वस्तुओं का भोजन अतिरूखे पदार्थ अतिउष्ण अतिपतली वस्तु अत्यन्तगाढ़ी अत्यन्त शीतल विरुद्ध वस्तुओंका एकसंग भोजनकरना(अध्यशन)प्रथमका भोजनपचा न हो उसके ऊपर और भोजनकरना अजीर्ण में खाना विषम समयका भोजन कभीसवेरे कभी दोपहर कभी तीसरेपहर आदि व प्रमाणसे अधिक खालेनेसे १ स्नेहादिकों के अत्यन्त करने से व कमकरने से स्थावरादि विषों के भोजनसे भयसे शोकसे दुष्ट जल पीने से बहुत मदिरा पीनेसे ऋतुओंके विपरीत खानेपीने से २ जलमें अति क्रीड़ाकरने से मलमूत्रके वेगके रोंकने से अ थवा कृमियों के दोषसे मनुष्योंके अतीसार रोगहोता है उसका लक्षण कहते हैं ३ अतीसार की सम्प्राप्ति का वर्णन—जल धातु शान्तहो दुष्टहन अग्नि को मन्दकरके मल मिश्रितहो वायुसे बड़े ज़ोरसे प्रेरित होकर गुदकीद्वारा गिरावे उसको अतीसार रोग कहतेहैं यहमहाघोर व्याधिहै और ६ प्रकारकाहोताहै ४ वातादि एक २ दोषोंसे तीन जैसे वातातीसार पित्तातीसार कफातीसार

ष्ठआमेनचोक्तः ॥ हृन्नाभिपायूदरकुक्षितोदगात्रावसादा
निलसन्निरोधाः ॥ विड्संगमाध्मानमथाविपाको भविष्य
तस्तस्युपुरस्सराणि ५ अरुणंफेनिलंरूक्षमल्पमल्पंमुहु
र्मुहुः ॥ शकृदामंसरुक्शब्दं मारुतेनातिसार्य्यते ६ पि
त्तात्पीतन्नीलमालोहितंवात्तृष्णामूर्च्छादाहपाकोपपन्नं ॥
शुक्लंसान्द्रंश्लेष्मणाश्लेष्मयुक्तं विस्रंशीतंहृष्टरोमामनु
ष्यः ७ वाराहस्नेहमांसांबु सदृशंसर्वरूपिणम् ॥ कृच्छ्रसा
ध्यमतीसारंविद्याद्दोषत्रयोद्भवम् ८तैस्तैर्भावैःशोचतोल्पा

तीन ये व चौथा इनतीनों दोषोंके मिलने से सन्निपातातीसार पाँचवाँ शोकातीसार व छठाँ आमातीसार द्वन्द्वज अतीसार कभी होताहीनहीं अतीसारोंका पूर्वरूप ऐसाहोताहै हृदय, नाभी, गुद पेट, कोखि इनमेंव्यथाहोना कोंचना देहका अस्वस्थरहना पवन की रुँकावट मल की रुँकावट पेटफूलारहना अन्नका परिपाक नहोना अतीसार होनेके प्रथम येसब लक्षणहोते हैं ५ वातातीसार के लक्षण—लालरंग फेनासहित रूखा थोड़ा २ मल बार २ आवे सो भी कच्चामल व उसके बीच २ में पीड़ासहित वायुका शब्द होताजाय व मड़ोरा देकरही मल कष्टसे निकले वातातीसार का यही लक्षण है ६ पित्तातीसार के लक्षण—पीला, नीला वा कुछललाई लिये दस्तहो पिपासा बहुतलगे मूर्च्छा आजाया करे पकजाने के समान गुद में पीड़ा हो ये पित्त के अतीसार के लक्षण हैं कफातीसार के लक्षण—उजला बहुत कड़ा कफ सहित कच्चे सड़े मांस अन्न आदि की गन्धिके समान गन्धियुक्त व ठण्ढा मलहो व रोगी के रोम खड़े होजाया करें पित्तातीसार के ये ही लक्षण हैं ७ सन्निपातातीसार का लक्षण—शूकरकी बसाके समान चिकना वा मांसके धोने के जल के समान जलभ्रूर दस्तहो यह सन्निपातातीसार बड़े कष्टसे साध्य

नाशयेत् १९ बालेवृद्धेत्वसाध्योयंरूपैरेतैरुपद्रुतः ॥ अपियूनामसाध्यःस्यादतिदुष्टेषुधातुषु २०) शोथंशूलं ज्वरंतृष्णांश्वासंकासमरोचकं ॥ छर्दिमूर्च्छांचहिक्कांच दृष्ट्वातिसारिणंत्यजेत् २१ ॥ अथरक्तातीसारप्रवाहिकाच ॥ पित्तकृतियदात्यर्थं द्रव्याण्यश्नातिपैत्तिके ॥ तदोपजायतेऽभीक्ष्णं रक्तातीसारमुल्वणम् २२ वायुःप्रदुष्टोनिचितंबलासंनुदत्यधस्तादहिनाशनस्य ॥ प्रवाहतोल्पंबहुशोमलाक्तांप्रवाहिकांतांप्रवदंतितज्ज्ञाः २३ प्रवाहिकावातकृतासशूला पित्तात्सदाहासकफाकफाच्च ॥ सशोणि

को छोड़दो ऐसे अतीसारवालेको भी वैद्यछोड़दे १८ अतीसारके उपद्रव ये हैं शोथ शूल ज्वर अधिकप्यास खाँसी अधिकश्वास भोजनमें अरुचि वमनहोना मूर्च्छाआना हुचकी इनउपद्रवों से युक्त अतीसार वालेको देखकर वैद्यको चाहिये कि उसे छोड़ दे औषधनकरे १९ श्वास शूल पिपासासे पीड़ित अतिक्षीण ज्वर से अति पीड़ित फिर वृद्धशरीर ऐसे को अतीसार विशेष करके मारडालता है २० यह रोग बालक व वृद्ध के जब होता है तो असाध्यही होता है जब वह ऊपरके उपद्रवों से युक्तहोता है व जो धातुओं में पैठजाताहै तो युवाअवस्थावालोंमें भी असाध्य होजाता है २१ रक्तातीसार के लक्षण—जब पित्तके अतीसार में पित्तकारी पदार्थोंको पुरुष बहुत भोजन करताहै तब महाभयंकर रक्तातीसार उत्पन्नहोताहै २२ प्रवाहिका अतीसारका लक्षण अपथ्य भोजन करनेवाले मनुष्यको एकत्र कियाहुआ कुपित वायु बारबार थोड़ा थोड़ा मल गिराकर कष्टदेताहै वह जो बहुधा बहाही करताहै मलयुक्तही रहताहै बस वैद्यलोग इसी को प्रवाहिका रोग कहते हैं २३ प्रवाहिकाके भेद वातकी की हुई प्रवाहिका शूलसहित होती है पित्तकी दाहयुक्त होती कफकी

ताशोणितसम्भवाच्चताःस्नेहरूक्षप्रभवामतास्तु २४ (क्षु तेरक्तेपुरीषेच वायुनाविड्विवर्ज्जितम् ॥ प्रवाहिका तदाख्यातायत्फेनाधःप्रवर्त्तते २५ सफेनपिच्छंसरुजं सविबन्धंपुनःपुनः ॥अल्पत्वमल्पमल्पंसाह्यविबन्धाप्रवा हिका २६ तासामतीसारवदादिशेत्र लिंगंक्रमाञ्चापिवि पक्वतांच) यस्योच्चारंविनामूत्रं सम्यग्वातश्चगच्छति॥ दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य गतस्तस्योदरामयः २७ (ज्वरा तिसारयोरुक्तं निदानंयत्पृथक्पृथक् ॥ तस्माज्ज्वराति सारस्य तेननात्रोदितंपुनः २८) ॥ इतिषड्तिसारनिदानम् ॥

अतीसारेनिवृत्तेपिमन्दाग्नेरहिताशिनः ॥ भूयःसंदूषि तोवह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत् १ एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्य

कफयुक्त होती हैं व रक्तसे उत्पन्न प्रवाहिका रक्तसहित होती है स्नेहसे कफकी प्रवाहिका रुखाई से बातकी तीक्ष्ण व खट्टेपदार्थ से पित्तकी होतीहै २४ अतीसार निवृत्तहोनेका लक्षण–जिसको विनादस्तके पेशाबहोनेलगे व पवनभी विनादस्तके अलग खुल- नेलगे व अग्नि प्रज्वलितहो जो खायपचनेलगे कोठा हलका होजाय बस जानो उस मनुष्यका अतीसार अब जाता रहा २५

इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादेऽतीसार निदान न्द्वितीयम् २ ॥

दोहा ॥ तिसरे महँ ग्रहणी प्रथित रोगनिदान कहेव ॥
जामें अन्न पचै नहीं बहुल तासु हैं भेव १

अबग्रहणीआदिके लक्षण कहतेहैं अतीसार निवृत्तहोने परभी मन्दअग्निवालापुरुष जब अपथ्य भोजन करताहै–तो फिरदूषित होकर अग्नि ग्रहणी को दूपितकरताहै अर्थात् ग्रहण करनेवाली शक्तिको बिगाड़ताहै १ ग्रहणी के सामान्य लक्षण अलग २ वात पित्तकफ के दोषों से वा एकत्र होकर सब अत्यन्त प्राप्त वाता-

थेमूर्च्छितैः॥ सादुष्टावहुशोभुक्तमाममेवविमुंचति २पक्कं चासरुजंपूतिमुहुर्वद्धंमुहुर्द्रवम् ॥ ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ३ पूर्वरूपंतुतस्येदन्तृष्णालस्यंबलक्षयः॥ विदाहोऽन्नस्यपाकश्च चिरात्कायस्यगौरवम् ४ कटुतिक्तकषायातिरूक्षसन्दुष्टभोजनैः ॥ प्रमितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ५ मारुतःकुपितोवह्निं संछाद्यकुरुतेगदान् ॥ तस्यान्नंपच्यतेदुःखं शुष्कपाकंखरांगता ६ कंठास्यशोषःक्षुत्तृष्णा तिमिरंकर्णयोःस्वनः ॥ पाश्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविषूचिका ७ हृत्पीडाकार्श्यदौर्बल्ये वैरस्यंपरिकर्त्तिका॥ गृद्धिःसर्वरसानांच मनसःसदनंतथा८

दिकोंसे दुष्टहोकर वह ग्रहणी भोजनकिये हुये अन्नको ग्रहणनहीं करती नपकातीहै केवल आमही करकेगिराती है २ वजो कच्चेवा कुछ पक्के अन्नको पीडाके व दुर्गन्धि के साथ वार २ गाढ़ा करके मलको गिरातीहै वैद्यलोगउसे ग्रहणीकहते हैं ३ ग्रहणी केपूर्वरूपके लक्षण—प्यासलगना आलस्यहोना बलकानाश दाहहोना बड़ीदेरमें अन्नका पचना शरीर गरूरहना ये सब ग्रहणीहोने पर होतीहैतो होतेहैं ४ वातसे उत्पन्न ग्रहणी का हेतु कडू तीत कसैला अतिरूखातमयके विरुद्ध भोजनकरना अप्रमाण भोजनकरना बहुतमार्ग चलना मूत्रपुरीषके वेगका रोकना बहुतमैथुन करना ५ वस इनसब कारणों से कोपकरके पवन अग्निको आच्छादित करकेग्रहणीरोगको करताहै फिरग्रहणी जिन २ रोगोंको उत्पन्न करतीहै उनको दिखातेहैं ग्रहणीकेरोगी को बड़े क्लेशसे अन्नपचताहै उसकापाक सूखारहताहै अंगों में रुखाई आजाती है ६ गला व मुखसूखता रहता है भूँख प्यास अधिक लगती है तिमिर लगने लगता है कानों में संसनाहट सदा होती है पशुरी जंघा हड्डियोंके जोड़ोंमें गलेमें इनसब स्थानोंमें वार २

जीर्णेजीर्यं तिचाध्मानं भुक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच ॥ सवात गुल्महृद्रोगप्लीहाशंकीचमानवः ९ चिराद्दुःखंद्रवंशुष्कं तन्वामंशब्दफेनवत् ॥ पुनःपुनःसृजेद्वर्चःकासश्वासा र्दितोनिलात् १०कट्वजीर्णविदाह्यम्लक्षाराद्यैःपित्तमुल्व णम् ॥ आप्लावयन्हंत्यनलंतप्तंजलमिवानलम् ११ सो जीर्णनीलपीताभं पीताभःसार्य्यतेद्रवम् ॥ सधूमोद्गा रहृत्कण्ठ दाहारुचितृडर्दितः १२ गुर्वतिस्निग्धशी- तादि भोजनादतिभोजनात् ॥ भुक्तमात्रस्यचस्वप्ना-

पीड़ाहोतीहै व दस्त वमन दोनोंहोते हैं ७ हृदयमें पीड़ाहोती है शरीर दुर्ब्बलहोजाता बड़ी कृशता आजातीहै मुखमें रसका स्वाद नहीं जानपड़ता फीकासा बनारहता है गुदमानों कोई कतरेलिये जाताहै सब रसोंके खानेकी इच्छाहोती है मनमें ग्लानि बनीरहतीहै ८ अन्नपचनेके समय पेटफूलजाताहै भो- जन करनेपर चित्त स्वस्थहोताहै बायुगोला वा पिलहीकी उस- को शंकाहोती है क्योंकि इनदोनोंरोगोंके समान पेटमें पीड़ाहोने लगती है ९ व बायुकेयोगसे मनुष्यके खाँसी व श्वाससे पीड़ित होके कभीबहुतकभी थोड़ाशब्द व फेना सहित बड़ेदुःखसे गीला वा सूखा बड़ीदेरमें मलहोताहै १० पित्तकी ग्रहणीके लक्षण कडू खानेसे अजीर्णहोने से दाहकरनेवाली वस्तुके खानेसे अम्ली व खारी चीजोंके खानेसे पित्त अत्यन्त उष्णहोकर उदरकेअग्निको बुझादेताहै जैसे कि उष्णभी जल अग्निको बुझाताहै ११ तब उसमनुष्यका रंगपीलाहो जाताहै व उसके बिनापचाहुआ नीले पीले रंगका मलगिरने लगता है व धुआँइधआती हृदय बगलेमें दाहहोता सब बस्तुओंमें अरुचिहोजाती व प्यास सदालगीरह- तीहै १२ कफकी ग्रहणीका निदान गरिष्ठ अतिचिकनी बहुत ठण्ढी इत्यादि बस्तुओंके भोजन करनेसे व दिनमें भोजनके

(संसृष्टाव्याधयोयस्य प्रतिलोमानुलोमगाः ॥ व्याप न्नग्रहणींप्राप्य ऊर्द्धंसान्नतुजीवति) लिङ्गैरसाध्योग्र हणीविकारोयैस्तैरतीसारगदोनसिद्ध्येत् ॥ वृद्धस्यनूनंग्र हणीविकारोहत्वातनुंयोविनिवर्त्ततेच६ ॥ इतिग्रहणीनिदानम्॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्च शोणितात्सहजानिच ॥ अर्शां सिषट्प्रकाराणि विद्याद्गुदवलित्रये १ दोषास्त्वङ्मां समेदांसि संदूष्यविविधाकृतीन् ॥ मांसांकुरानपानादौ कुर्वंत्यर्शांसिताञ्जगुः २ कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतल घूनिच ॥ प्रमितात्पाशनंतीक्ष्णंमद्यंमैथुनसेवनम् ३ लं

संग्रहणी रोग असाध्य होताहै ५ जिन २ लक्षणों से अतीसार रोगनहीं सिद्धहोता नहीं मिटताहै उन २ लक्षणोंके होनेसे यह संग्रहणी वा ग्रहणीरोगभी असाध्यहोजाताहै यदि यह रोग किसी वृद्ध मनुष्यकोहो तो उसके देहको नाशही को पहुँचादे ६ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेसंग्रहणीरोगनिदानंचतुर्थम् ४ ॥

दोहा ॥ साध्यासाध्य विचार सब ववासीर के जोय ॥
पँचयें महँ वर्णनकिये और रोगनहिं कोय १

(अर्शः) ववासीर रोगके लक्षण वात पित्त कफ इनतीनोंसे अलग २ तीन व इनतीनोंके मिलनेसे एक व एक रक्तसे व एक सहज अर्थात् जन्मके साथही उत्पन्न होताहै ये ६ प्रकारके अर्शरोग होते हैं व गुदाकी त्रिवलीमें होते हैं इन त्रिवलियों के नाम ये हैं प्रवाहिणी सर्जनी व ग्राहिणी १ वात पित्त कफके दोप त्वचा मांस व मेदाको दूपितकरके गुदआदि स्थानों में मांस के अंकुर उत्पन्न करतेहैं बस उन्हींमांसके अंकुरोंको अर्शकहतेहैं सो गुदहीमें नहीं कभी २ नाक नेत्र लिंग व तोंदीमेंभी मांसके अंकुर अर्थात् मसेहो जातेहैं २ वातसे उत्पन्न अर्शके हेतु कहते हैं कसैली कडू तीत रूपी ठण्ढी अतिहलकी वस्तुओंकेखानेपीने

घनंदेशकालौच शीतोष्व्यायामकर्मच ॥ शोकोवातातप स्पर्शोहेतुर्वातार्शसांमतः ४ कट्वम्लवणोष्णानि व्या यामाग्न्यातपश्रमाः ॥ देशकालावशिशिरौ क्रोधोमद्यम सूयनम् ५ विदाहितीक्ष्णमुष्णंच सर्वपानान्नभेषजम् ॥ पित्तोल्वणानांविज्ञेयःप्रकोपेहेतुरर्शसाम् ६ मधुरस्निग्ध शीतानि लवणाम्लगुरूणिच ॥ अव्यायामदिवास्वप्नश य्यासनसुखेरतिः ७ प्राग्वातसेवाशीतौच देशकालाव चिंतनम् ॥ श्लैष्मिकाणांसमुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ८ हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वन्द्वोल्वणानिच॥सर्वोहेतुस्त्रिदो षाणांसहजैर्लक्षणैःसमम् ९ विष्टम्भोऽन्नस्यदौर्बल्यंकुक्षेरा

आदिसे उष्ण भोजनकरनेसे थोड़े तौलेहुये खानेसे तीक्ष्णमदिरा पीने से व अधिक मैथुनकरनेसे ३ बहुधा लंघन करनेसे शीत देशकालके अतिसेवनसे व दण्ड मुद्गरादि बहुत कसरतकरने से शोकसे उष्ण पवन घामआदि जलाक लगनेसे वस बातका अर्श इनसेहोताहै ४ पित्तके अर्शकेकारण कडुई अम्ली खारी बहुत उष्णवस्तुओंके खाने पीनेआदिसे दण्डादि करनेसे अग्नि व घामके बहुतसेवनकरनेसे अधिक श्रमकरनेसे उष्णदेशकालके अतिसेवनसे क्रोधकरनेसे मद्यपीनेसे किसीकागुणन सहसकनेसे यह होताहै ५।६ कफके अर्शकेकारण मीठी, चिकनी,ठण्ढी,खारी खट्टी,गरुई वस्तुओं का खानापीना आदि व जोरनकरना दिनमें सोनावहुधाखाटपर पड़ेरहना७पुरवाई पवनकासवेरेसेवन शीत देशकाल का अतिसेवन व वहां अस्वस्थ रहना वस कफके अर्शों का यहीकारणहै ८ दो २ के कारण मिलेहुये अर्श के कारण जि- समें वात पित्तकफ इनमें से दो २ के लक्षण मिलेहों उसे द्वन्द्वज अर्शकहते हैं त्रिदोपज अर्शके कारण जिसमें बातपित्तकफ तीनों के सब लक्षण पायेजायँ वह त्रिदोषज वा सन्निपातज अर्श क-

टोपएवच ॥ काश्यमुद्गारबाहुल्यं सविषादोल्पविट्क ता १० ग्रहणीरोगपांडुत्वर्ति राशंकाचोदरस्यच ॥ पूर्व रूपाणिनिर्दिष्टान्यर्शसामभिवृद्धये ११ गुदांकुराःब्रह्मनि लाःशुष्काश्चिमचिमान्विताः ॥ म्लानाश्यावारुणास्त ब्धाविशदाःपरुषाःखराः १२ मिथोविसदृशावक्रास्ती क्ष्णाविस्फुरिताननाः ॥ विंबीकर्कंधुखर्जूरकर्पासीफलसं निभाः१३केचित्कदंबपुष्पाभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः॥ शिरःपार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः १४ क्षवथू द्गारविष्टंभहृद्ग्रहारोचकप्रदाः ॥ कासश्वासाग्निवैषम्य कर्णनादभ्रमावहाः १५ तैरार्तोग्रथितंस्तोकमशब्दंसप्र वाहिकम् ॥ रुक्फेनपिच्छानुगतंविवद्धमुपवेश्यते १६

हाताहै व सहज अर्शके लक्षणोंके समान जिसमें लक्षण हों वह भी त्रिदोषज कहाता है ६ ववासीर के पूर्वरूपका निदान वायु का न छूटना अंगों का दुर्बल होना कोठका गुड़गुड़ाना कृशता डकारें आना जांघों में हड़फूटन थोड़ा दस्त होना १० ग्रहणी पाण्डुरोग पेटमें किसीरोग के होनेकीशंकाये सब अर्शरोग वढ़ने के पूर्वरूपके लक्षण हैं ११ बातकी ववासीर के लक्षण—गुद के मसे बहुतमोटे सूखे चुन्नेकी पीड़ासेयुक्त मुरझायेहुये काले वा लाल पोढ़े नुकीले उठे हुये कड़े खरखरे १२ एक दूसरेसे मिले हुये नहीं टेढ़े तीखे मुहँखुलेहुये कुँदरू बेर खजूर कपासके फलों के समान १३ कोई कदम्बके पुष्पके आकारके कोई सरसों के तुल्य इनकेहोने के कारण शिर पशुली कन्धे कमर जाँघ फीली रीड़में अधिकपीड़ा १४ छींकआना डकारआना मलकीरुकावट हृदयका जकड़ना अरुचिहोना खांसी हांपना अग्निकी विषमता से अन्नका न पचना कानोंका संसनाना भ्रमहोना १५ इनअर्श रोगोंसे पीड़ित मनुष्य बहुत थोड़ा कड़ा शब्द सहित अर्थात्

कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रश्चजायते॥ गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासंभवस्ततएवच १७ पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतासितप्रभाः ॥ तन्वस्रस्राविणोविस्रास्तनवोमृदवः श्लथाः १८ शुकजिह्वायकृत्खंडजलौकावक्त्रसंनिभाः ॥ दाहपाकज्वरस्वेदतृण्मूर्च्छारतिमोहदाः १९ सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः॥ यवमध्याहरित्पीतहारिद्रत्वङ्नखादयः २० श्लेष्मोल्वणामहामूला घनामंदरुजः सिताः ॥ उत्सन्नोपचिताः स्निग्धाः स्तब्धवृत्तगुरुस्थिराः २१ पिच्छिलाःस्तिमिताःश्लक्ष्णाःकंड्वाढ्याःस्पर्शनप्रि-

कहरनेके साथ वातप्रवाहिका के लक्षणों से युक्त शूलसहित फेनयुक्त चिकने व रुँक २ करहोनेवाले मलको करताहै १६ व उसके त्वचानख विष्ठा मूत्र नेत्र व मुख कालेहोजातेहैं व वायुकीगांठ पिलही पेटमें गुमरियाँ होजातीहैं १७ पित्तके बवासीर वा अर्श के लक्षण—पित्त अधिकवाले बवासीर में गुदकेमसोंकामुखनीला होताहै उससे लाल पीला वा काला रुधिर निकलताहै कच्चेसड़े अन्नकीसी गन्धि आती है व मसे छोटे २ नरम होते हैं १८ व तोतेकी जीभके डौलके यकृत्के खण्डके तुल्य जोकके मुखकी नाईं होते व दाह पकना ज्वर पसीना प्यास मूर्च्छा अरुचि मोह ये उपद्रव रोगीको होते हैं १९ छूनेसे उष्ण जानपड़ते व गुदसे पतला नीला उष्ण पीला लाल आम सहित मल उतरताहै व वह नीचे यवके पेटकी मुटाईके समानहोताहै व फुनगी पतली होतीहै व उसरोगीके नख नेत्र शरीरका चमड़ा हरिताल वा हरदीके रंगके होजाते हैं २० कफके अर्शके लक्षण—कफसेउल्वण अर्शरोगके मसे भीतरसे बड़ी दूरसे जड़ बाँधे हुये होते हैं कड़े व थोड़ी २ पीड़ा करतेहैं उजले होते लम्बे चिकने खड़े वा गोल होते व गुदके चारों ओर घेरे स्थिर रहते हैं २१ बहुत चिकने

याः ॥ करीरपनसास्थ्याभास्तथागोस्तनसन्निभाः २२ वं क्षणानाहिनःपार्श्ववस्तिनाभ्यवकर्षिणः ॥ सकासश्वास हल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः २३ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्य शिशिरज्वरकारिणः ॥ क्लैब्याग्निमार्दवच्छर्दिरामप्रायवि कारदाः २४ वसाभाःसकफप्रायपुरीषाःसप्रवाहिकाः ॥ नस्रवंतिनभिद्यन्तेपांडुस्निग्धत्वगादयः २५ सर्वैःसर्वा त्मकान्याहुर्लक्षणैःसहजानिच ॥ रक्तोल्वणागुदेकीलाः पित्ताकृतिसमन्विताः २६ वटप्ररोहसदृशागुंजाविद्रुमसं निभाः ॥ तेत्यर्थंदुष्टमुष्णञ्चगाढ़विट्कप्रपीडिताः २७

अचल गुलगुले खजुली समेत होतेहैं इससे छूनेपर बहुतसुख सा विदित होताहै करीर और कटहल के बीजोंके समान वा गायकी चूँचीके आकारके मसे होतेहैं २२ सब जोड़ोंको खींचते रहते हैं पशुरी अण्डकोश व गुदके बीच के सीनेको व नाभिको खींचते रहते हैं खाँसी श्वास मुहमें पानीछूटने लार बहाने अ- रुचि व पीनसकोभी करते हैं २३ प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मस्तककी गरुआई व शीतज्वरको करते हैं नपुंसकता अग्निमन्दता वमन आमके सम्बन्धी अतीसारादिरोगोंकोभीकराते हैं २४ चर्बीकी नाईं कफ मिलेहुये मलको गिराते प्रवाहिकाको करते रक्तादिकों को नहीं चुआते न पीड़ाको करतेहैं त्वचा नखनेत्रादिक उज्वले व चिकने होजातेहैं २५ सन्निपात व सहजअर्शके लक्षण—सब वात पित्त कफोंके मिलेहुये लक्षण जिस बवासीर वालेकेहोंतो उसके सन्निपातका अर्श जानना चाहिये व येही लक्षण सहज अर्शकेभी होते हैं क्योंकि सहजभी वातादि तीनों दोषों सेही होते हैं रक्तके अर्श के लक्षण—रक्तकी अधिकता वाले अर्श के मसे पित्तके अर्शके मसोंके डौलसे मिले हुये होतेहैं २६ व वे बरगदके गँखुयेकी तरहके वा घुँघचीसे अथवामूँगे के आकारके

स्रवंतिसहसारक्तंतस्यचातिप्रवृत्तितः ॥ भेकाभःपीड्यते दुःखैःशोणितक्षयसंभवैः २८ हीनवर्णबलोत्साहोहतौ जाःकलुषेन्द्रियः ॥ विड्श्यावंकठिनंरूक्षमधोवायुर्नवर्त्त ते २९ तनुचारुणंवर्णचफेनिलंचासृगर्शसाम् ॥ कट्यूरु गुदशूलंचदौर्बल्यंयदिवाधिकम् ३० तत्रानुबन्धोवातस्य हेतुर्यदिचरूक्षणम् ॥ शिथिलंश्वेतपीतंचविट्स्निग्धंगुरु शीतलम् ३१ यद्यर्शसांघनंचासृक्तंतुमत्पांडुपिच्छलम् ॥ गुदंसपिच्छंस्तिमितंगुरुस्निग्धंचकारणम् ३२ श्लेष्मानु बन्धोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसांबुधैः ॥ पश्चात्मामारुतःपित्तं

होते हैं व वे गाढ़े गरम रुधिरको गिराते और पीड़ा करते हैं २७ उन मसों से बहुत एकाएकी रक्त बहने के कारण शरीर में रुधिरका नाशहोने के हेतु मनुष्य के देहका रंग मेंडुके के रंगका होजाताहै २८ व उस रोगी के शरीर का बल रंग उत्साह पराक्रम जाता रहता है सब इन्द्रियां व्याकुल होजाती हैं विष्ठाकड़ी व रूपी होने लगती है व नीचे वायु नहीं छूटता २९ रक्त के अर्शे में बात कफादिकों के भेदों के लक्षण—रक्तके अर्शों में पतला लाल व फेना सहित रक्तगिरताहै कटि मोटी जांघें व गुदमें शूलहोती है अथवा दुर्बलता अधिक होजाती है ३० जब इन लक्षणों से युक्त रुपाई लिये यह रोग होतो वात सम्बन्धी रक्तार्श जानना चाहिये कफसम्बन्धी रक्तार्शके लक्षण—जिसमें ढीला उजला वा पीला चिकना गरू व शीतल मल गिरताहै ३१ व यदि अर्शोंमें गाढ़ारुधिर बहै व उसमें सूतसे दिखाई दें व उजले और चिकने हों व गुदमें चिकनई के कारण चटचटी बनी रहै व निश्चलताहो गरुआपन विदितहो और चिकनापन अत्यन्तहो बस कफसम्बन्धी रक्तकेअर्शोंके यही लक्षण हैं ३२ केवल गुद स्थानमेंही रोग के होने से दुर्बलतादि जिस प्रकार

रुग्ज्वरः ॥तृष्णागुदस्यपाकश्चनिहन्युर्गुदजानरम् ४०
तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रस्रुतशोणितम् ॥ शोथातीसार
संयुक्तमर्शांसिक्षपयंतिहि ४१ मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यंतेयथा
स्वंनाभिजानितु ॥ गंडूपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदू
निच४२व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्थस्त्वचोबहिः ॥
कीलोपमंस्थिरखरंचर्मकीलंतुतंविदुः ४३ वातेनतोदः
पारुष्यंपित्तादसितरक्तता ॥ श्लेष्मणास्निग्धतातस्यग्रं
थितत्वंसवर्णता ४४ इत्यर्शोनिदानम् ॥

मंदस्तीक्ष्णोथविषमः समश्चेतिचतुर्विधः ॥ कफपि-

पीड़ा ज्वर अनारहना प्यासलगना गुद व मुखपकजाना बस ये
लक्षण जिस बवासीर वालेके हुये जानो रोगीको मारलेंगे ४०
अन्य असाध्य लक्षण--जिस अर्शके रोगीके प्यास अधिकलगे
अरुचिहो पीड़ायुक्त रुधिर बहुत गिरे शोथहो व अतीसार भी
होताहै बस ऐसेरोगीको बवासीर मारही लेताहै ४१ लिंगादि-
कोंमें आदि शब्दसे नाक कानमेंभी केचुवाके मुखके चिकने व
गुलगुले मसे होतेहैं येभी असाध्य होते हैं ४२ चर्मकीलनाम
सम्प्राप्तिके लक्षण--व्यानवायु यद्यपि सब शरीरमें रहताहै पर
गुदमें रहनेवाला व्यान कफको ग्रहणकरके खालके ऊपर मसों
को उत्पन्न करताहै वे कीलकी तरहके होतेहैं व स्थिर और खर-
खरे होते हैं इनमसोंको चर्मकील कहते हैं ४३ वात के कारण
उस चर्मकीलमें व्यथा व कड़ापन रहताहै व पित्तके कारण
उसका रंगकाला लाल मिलाहुआ होताहै व कफके कारण चि-
कना व गैंठीला व रंग चमड़ेकासा होताहै ४४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽर्शोरोगनिदानम्पञ्चमम् ५ ॥

दोहा ॥ छठये महँ मन्दाग्नि अरु कहे अजीर्ण निदान ॥
देखहिं सुजन लगाय चित वर्णित सहित विधान १

त्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोनलः १ विषमोवा
तजान्रोगान्तीक्ष्णपित्तनिमित्तजान् ॥ करोत्यग्निस्तथा
मंदोविकारान्कफसंभवान् २ समासमाग्निरशितामात्रा
सम्यग्विपच्यते ॥ स्वल्पापिनैवमंदाग्नेर्विषमाग्नेस्तुदे
हिनः ॥ कदाचित्पच्यतेसम्यक्कदाचिन्नविपच्यते ३ मा
त्रातिमात्राप्याशितासुखंयस्यविपच्यते ॥ तीक्ष्णाग्निरि
तितंविन्द्यात्समाग्निःश्रेष्ठउच्यते ४ आमंविदग्धंविष्ट
ब्धंकफपित्तानिलैस्त्रिभिः ॥ अजीर्णंकेचिदिच्छंतिचतुर्थं

अग्निकी मन्दता के लक्षण—मन्द तीक्ष्ण विषम सम अग्नि चारप्रकारका होताहै कफकी अधिकतासे मन्द पित्तकी से तीक्ष्ण वायुकीसे विषम व इन तीनोंकी समानता से सम पेटका अग्नि रहताहै १ इनके लक्षण—विषम अग्नि बातसे उत्पन्न रोगों को करताहै व तीक्ष्ण अग्नि पित्तके कारणसे उत्पन्न रोगोंको करता है व मन्दाग्नि कफसे उत्पन्न विकारोंको करताहै बातजरोग ८० होते हैं पित्तज ४० कफज २०—२ सम अग्नि के लक्षण—सम अग्निसे जिन पुरुषोंकी मात्रासमान होती है उनका अन्न अच्छी तरह पचताहै व मन्दाग्नि पुरुषको थोड़ीभी मात्रा अर्थात् खुराक नहीं पचती व विषम अग्निवाले प्राणीकी मात्रा कभीपचतीहै कभी नहीं पचती ३ व जिस पुरुषको बड़ीसेभी बड़ीमात्रा जितनाही खाय पचजाती है उसको तीक्ष्णाग्नि कहना चाहिये इन सब अग्नियोंमें सम अग्नि श्रेष्ठकहाताहै ४ मन्दाग्निकेनिदानकहे अब अजीर्णके कारण कहते हैं—कफ पित्त व बायु इन तीनोंकी अधिकतासे यथाक्रम आम विदग्ध व विष्टब्ध ये तीन प्रकारके अजीर्ण होतेहैं अर्थात् कफाधिक्यसे अन्नपचताही नहीं कच्चा रहजाताहै पित्ताधिक्यसे अधिक जलजाताहै व बाताधिक्यसे अन्न बँधजाता वा लपटजाता बस अजीर्ण होजाताहै व

रसशेषतः ५ अजीर्णंपंचमंकेचिन्निर्दोषंदिनपाकिच॥ वदंतिषष्ठंचाजीर्णंप्राकृतंप्रतिवासरम् ६ अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाद्वासंधारणात्स्वप्नविपर्य्ययाद्वा ॥ कालेपिसात्म्यंलघुचापिभुक्तमन्नन्नपाकंभजतेनरस्य ७ ईर्षाभयक्रोधपरिक्षतेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीडितेन ॥ प्रद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नन्नसम्यक्परिणाममेति ८ (मात्रयाप्यभ्यवहृतंतथ्यंचान्नंनजीर्य्यते ॥ चिन्ताशोकभयक्रोधदुःखशय्याप्रजागरैः) तत्रामेगुरुतोत्क्लेदःशोफोगंडाक्षिकूटजः ॥ उद्गारश्चयथाभुक्तमविदग्धःप्रवर्त्तते ९ विदग्धभ्रमतृण्मूर्च्छाःपित्ताच्चविविधारुजः ॥उद्गारश्चसधूमाम्लाःस्वेदोदाहश्चजायते १० विष्टब्धशूलमाध्मानंविविधा

चौथा भोजनके रस सूखजानेसे होताहै ५ किसी२ के मतसे जो दिनभरमें अन्नपचता है वह पाँचवां अजीर्णहै यद्यपि इसमें पेट नहीं फूलता पर दिनभरमें पचनेके कारण अजीर्णही है जिसमें स्वभावही से अजीर्ण बनारहै पेटमें गरुआपन जानपड़े उसे छठां अजीर्ण कहते हैं ६ बहुत पानीपीनेसे नियतसमयपर भोजन न करनेसे मलमूत्रके वेगके रोकने से दिनके सोनेसे रात्रिके जागनेसे चाहे फिर समयपरभी अपनी इच्छाके अनुकूल वा लघुही भोजन करे, पर उसपुरुषका अन्न नहीं पचता ७ ईर्ष्या भय क्रोधसेयुक्त लोभ शोक दीनतासेयुक्त व किसीसे अप्रसन्न रहने वाले पुरुषका अन्न नहीं पचता ८ आमादिकके अजीर्णों के लक्षण—आमाजीर्णमें अंगोंमें गरुआई ओकाई गालों व नेत्रोंमें शोथ व जैसा अन्न भोजन कियाहो डकारआने के साथ वैसाही निकलना ये लक्षण होते हैं ९ विदग्धाजीर्णका लक्षण—विदग्धाजीर्णमें जो पित्ताधिक्यसे होताहै चित्तभ्रम तृषा मूर्च्छा व पित्तके नानाप्रकारके रोगधुआंइध आमिलचुकी के साथ डाकना पसीना

वातवेदनाः ॥ मलवाताप्रवृत्तिश्चस्तम्भोमोहोङ्गपीडनम् ११ रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवेः॥मूर्च्छाप्रलापोवमथुःप्रसेकःसदनंभ्रमः ॥ उपद्रवाभवंत्येतेमरणंचाप्यजीर्णतः १२ अनात्मवंतःपशुवद्भुंजतेयेप्रमाणतः॥रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णंप्राप्नुवंतिहि १३ अजीर्णमामंविष्टब्धंविदग्धंचयदीरितम् ॥ विषूच्यलसकौतस्माद्भवेच्चापिविलंबिका १४सूचीभिरिवगात्राणितुदन्संतिष्ठतेनिलः ॥ यत्राजीर्णेनसावैद्यैर्विषूचीतिनिगद्यते १५ नतांपरिमिताहारालभंतेविदितागमाः ॥ मूढास्तामजितात्मानोलभंतेशनलोलुपाः १६ मूर्च्छातिसारौवमथुःपिपासाशूलभ्रमोद्वेष्ट

व दाह होताहै १० विष्टब्धाजीर्णके लक्षण-विष्टब्धाजीर्ण में जो कि वाताधिक्यसे होताहै शूलउठना बहुत पेटफूलना वातरोगों की विविध पीड़ा मल न उतरना अधोवायुका न छूटना अंगोंका स्तम्भ मोह व अंगों में पीड़ा बस ये लक्षणहैं ११ रसशेषाजीर्ण के लक्षण—रसशेषाजीर्णमें अरुचि हृदयकी अशुद्धता अर्थात् जीमचलाना शरीरका भारीपन बस येलक्षण होतेहैं अजीर्णके उपद्रव-मूर्च्छाआना अनर्थबकना डाकना मुख में पानीछूटनाग्लानिहोना भ्रमहोना किंतो अजीर्णमें ये उपद्रव होतेहैं अथवा मरणही होजाताहै १२ जिन लोगोंकी इन्द्रियां उनके आधीन नहीं हैं इससे पशुओंके समान अप्रमाण भोजन करतेहैं वे रोग समूहकी जड़ अजीर्णरोगको प्राप्त होते हैं १३ आमअजीर्ण विष्टब्धअजीर्ण व विदग्ध अजीर्ण ये तीनों जो कहआये हैं इनसे विषूची अलसक व विलम्बिका ये तीनोंरोग होतेहैं १४ विषूची के लक्षण-जिसअजीर्ण रोगमें सूइयोंकीनाईं कोंचताहुआ पवन पेटमें टिकताहै उसे वैद्यलोग विषूची कहते हैं यह शीतरसका भेदहै १५ परन्तु यह विषूचीरोग उनलोगों को कभी नहींहोता

नजृम्भदाहाः ॥ वैवर्ण्यंकंपौहृदयेरुजश्चभवंतितस्यां शिरसश्चभेदाः १७ कुक्षिरानह्यतेत्यर्थंप्रताम्येत्परिकूजति ॥ निरुद्धोमारुतश्चापिकुक्षावुपरिधावति १८ वातवर्चोनिरोधश्चयस्यात्यर्थंभवेदपि॥तस्यालसकमाचष्टे तृष्णोद्गारौचयस्यतु १९ दुष्टंतुभुक्तंकफमारुताभ्यांप्रवर्त्ततेनोर्द्ध्वमधश्चयस्य।विलंबिकांतांभृशदुश्चिकित्स्या

जो प्रमाणसहित बँधाहुआ अन्नखातेहैं व जो वैद्यक शास्त्रपढ़े हैं उसके अनुसार खातेपीतेहैं उनकोभी नहींहोता व जो लोगमूढ़ व अजितेन्द्रिय हैं भोजनके बड़ेलोभीहैं अच्छा अन्नपाकर अप्रमाण खाते चलेजाते हैं उन्हींको विपूची होती है १६ इस रोगमें मूर्च्छा आती अतीसार होता वमनहोता प्यास बार २ लगती शूर उठती चित्तभ्रम होता हाथ पैरों का ऐंठना जँभोई आना दाह होना शरीरकाविवर्ण होना औरका औरहोना कम्प उठना हृदयमें पीड़ाहोना शिरमें अत्यन्त पीडा ये सब विपूची वा विपूचिका रोगके लक्षण हैं इसी को महामारी व शीतरस व लोकमें हैजाभी कहते हैं १७ आलसक के लक्षण ये हैं कोखि फूलकर बहुत बँधजातीहै पेटघलघलानेलगताहै इसप्रकार बँधा हुआ वायु कोखिके ऊपरको दौड़ने लगताहै १८ वायु व मल दोनों रुकजाते हैं यहांतककि गलेतक अत्यन्त पेटफूल आताहै प्यास लगती है व वमन होनेलगताहै जिसअजीर्ण रोगमें ऐसा होताहै उसे आलसक कहतेहैं १६ विलम्बीके लक्षणयेहैं-कफ व वायुके कारण भोजन कियाहुआ अन्नऐसा दुष्टहोजाताहै कि न ऊँचेको जाने पाता न नीचे आनेपाता अर्थात् न वमनहोनेपाता न झाड़ा होनें पाताहै वस पुराने वैद्यक शास्त्रवेत्ता इसे विलम्बिका कहतेहैं क्योंकि इसमें बड़ीदेरतक अन्नएकही स्थानपर रहताहै इसरोगकी चिकित्सा बहुत कठिन होतीहै आलसक व विलम्बिका दोनों समान रोग होते हैं आलसक में शूलादि अ-

माचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः २० (भुक्तान्नंप्रहरात्पूर्वंदूचंक्रत्वोर्द्धमानयेत् ॥ यासाविशूचिकाप्रोक्ताधोनयेत्साविलंविका) यत्रस्थमामंविरुजेत्तमेवदेशंविशेषेणविकारजातैः ॥ दोषेणयेतावततंशरीरंतल्लक्षणैरामसमुद्भवैश्च २१ यःश्यावदंतौष्ठनखोल्पसंज्ञोवम्यर्दितोभ्यंतरजातनेत्रः ॥ क्षामस्वरःसर्वविमुक्तसंधिर्यायान्नरोसौपुनरागमाय २२ उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोचितः ॥ लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् २३ (अग्निनाशोरुचिःकंपोमूत्राघातोविसंज्ञता ॥ अमीउपद्रवाःघोराःविषूच्यांपंचदारुणाः ॥ प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णंजायते नृणाम् ॥ तन्मूलोरोगसंघातस्तद्विनाशाद्विनश्यति)

इत्यजीर्णनिदानम् ॥

कृमयस्तुद्विधाप्रोक्ताबाह्याभ्यंतरभेदतः ॥ वहि

धिक होते हैं व विलम्बिकामें नहीं पर पवन व मल दोनों में ऊँचे नीचे नहीं जानेपाते २० जिस स्थान पर आम रहजाता है वात कफके दोषों से उसीस्थानमें पीड़ा कियाकरता है व उसी विना पचेहुयेअन्नके रहगयेहुये स्थानमें फोड़ाआदि उत्पन्नहोते हैं २१ विषूचिका व आलसक रोगके असाध्यलक्षण—जिसमेंदांत ओठ व नखकाले पड़जायँ व ज्ञानठीक न रहै व मनसे अत्यन्त पीड़ितहो आंखें भीतरको बैठजायँ बोलनाधीरा होजाय व सब जोड़ शिथिलहोजायँ बसफिर वह प्राणीमृतकही होजाताहै २२ पचेहुये अन्नके लक्षण—शुद्धडकारआना देहप्रसन्नहोना भोजनके प्रमाणमलमूत्रहोना पेटकाहलकापन भूंखप्यासका लगना बस अन्नपचजानेके ये लक्षणहैं २३ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽग्निमांद्याजीर्णनिदानंपष्ठम् ६ ॥

मलकफासृग्विट्जन्मभेदाश्चतुर्विधाः १ नामतोविंशतिविधावाह्यास्तत्रमलोद्भवाः ॥ तिलप्रमाणसंस्थानवर्णाःकेशांवराश्रयाः २ वहुपादाश्चसूक्ष्माश्चयूकालिक्षाश्चनामतः ॥ द्विधातेकोठपिडिकाकंडूगंडान्प्रवर्त्तते ३ अजीर्णभोजीमधुराम्लनित्योद्रवप्रियःपिष्टगुडोपभोक्ता। व्यायामवर्जीचदिवाशयश्च विरुद्धमुग्रांलभतेकृमींस्तु ४ माषपिष्टान्नलवणगुडशाकैःपुरीषजाः ॥ मांसमाषगुडक्षीरदधिशुक्तैःकफोद्भवाः ॥ विरुद्धाजीर्णशाकाद्यैःशोणि

दोहा ॥ सतयेंमहँ कृमि उदरके सकलकहेविधिपूर्व ॥
देखहिंसुजन विचारिकै जोसवभांति अपूर्व १

कृमि दोप्रकारके होतेहैं एकवाहरी दूसरे भीतरी उन में एक वाहरके मलपसीना व मैलसे उत्पन्न व भीतरवाले कफरक्त और विष्ठामें उत्पन्न होतेहैं ये वाहरी भीतरी चारप्रकार के होतेहैं १ उनकेनाम वीसप्रकारके होते हैं उनदोनों में वाहरी कृमि वाहर के मलसे होते हैं इनका प्रमाण तिलके समान वर्णभी काले वा उजलेतिलोंके समान होताहै व वे वालों में और वस्त्रोंमें रहतेहैं २ इनके पैर वहुत होतेहैं सो भी बहुत छोटे होते हैं येयूक अर्थात् जुआँ व लिक्ष अर्थात् लीख कहाते हैं इससे दो प्रकार के हुये इनके काटनेसे देह में छोटे २ फुटके खजुली दानेसे होजाते हैं ३ कृमिहोने के कारण—अजीर्णमें भोजनकरनेसे नित्य मीठी खट्टी वस्तुखानेसे कढ़ी लप्सीआदि वहुत पतली वस्तुखानेसे पीठी से वनी हुई वस्तु व गुड़के खानेसे दण्ड कुश्ती आदि न करने से दिन में प्रतिदिन सोने से दूधकेसाथ मछली आदि विरुद्ध भोजन करने से कृमि प्राणी के होजाते हैं ४ उर्द पीठी भात अधिकखारी गुड़ व शाकके खानेसे विष्ठा में कृमि उत्पन्न होतेहैं व मांस उर्द गुड़ दूध दधि व सिरकाखाने से कफज कृमि

तोत्थाभवंतिहि ५ ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःछर्दनंभ्रमः ॥ भक्तद्वेषोतिसारश्चसंजातकृमिलक्षणम् ६ कफादामाशये जाताद्वृद्धाःसर्पंतिसर्वतः ७ पृथुवर्द्धनिभाःकेचित्केचित् गंडूपदोपमाः ॥ रूढधान्यांकुराकारास्तनुदीर्घास्तथाण वः ८ श्वेतास्ताम्रावभासाश्चनामतःसप्तधातुके ॥ अं त्रादाउदरावेष्टाःहृदयादामहाकुहाः ९ चुरवोदर्भकुसुमाः सुगंधास्तेचकुर्वंते ॥ हृल्लासमास्यश्रवणमविपाकमरो चकम् १० मूर्च्छाछर्दिज्वरानाहकार्श्यक्षवथुपीनसान्॥ र क्तवाहिशिरास्थानाद्रक्तजाजंतवोणवः ११ अपादावृत्त

होते हैं जो जिसमें न मिलानाचाहिये उसमें उसको मिलाकर खानेसे अजीर्ण में भोजन करनेसे शाकादि खानेसे रकसे उत्पन्न कृमि होते हैं ५ पेटमें कृमि उत्पन्न होनेके लक्षण—ज्वर देह रंग वदलना शूल उठना हृदयमें पीड़ा वमनहोना चित्तभ्रमहोना भो जनसे अप्रीति अतीसारहोना वस जिसके पेट में कृमिहोजाते हैं उसके येही लक्षण होते हैं ६ कफसे उत्पन्न कृमि के लक्षण— कफसे उत्पन्नकृमि आमाशयमें जाकर वढते हैं व सब ओर रेंग- ते फिरते हैं उनमें कोई२ तो चमड़ेके पतले नाथाके आकारके कोई केंचुओंके आकारके कोई २ अन्नके अंकुरके आकारके कोई वहुतलम्बे कोई वहुतहीछोटे पतलेहोते हैं ७।८ कोई उजले कोई लाल उनके सात येनामहैं अन्त्राद उदरावेष्ट हृदयाद महाकुह ९ चुरु दर्भकुसुम व सुगन्ध ये कृमि जब पेटमें होजाते हैं तो जीमचलाने लगताहै मुहँमें पानी छूटता अन्ननहींपचता अरुचि होती है १० मूर्च्छाआती वमनहोता ज्वरआता दुर्बलताहोती छींकेंआतीं पीनसरोगहोता वा नाकसदाभयिकवहाकरती है रक्त- ज कृमिकेलक्षण-रक्तवाहिनी नसों में रक्तसे उत्पन्न छोटे २ कृमि होतेहैं उनकेपैरनहींहोते गोले वतामड़ेरंगकेहोते हैं व अत्यन्तछोटे

ताम्राश्चसौक्ष्म्यात्केचिद्दर्शनाः॥ केशादालोमविध्वंसा लोमद्वीपाउदुंबराः १२ षट्तेकुष्ठैककर्माणःसहसौरसमातरः॥ पक्वाशयेपुरीषोत्थाजायंतेधोविसर्पिणः १३ वृद्धास्सन्तोभवेयुश्च तेयदामाशयोन्मुखाः॥ तदास्योद्गारनिःश्वासविड्गन्धानुविधायिनः १४ पृथुवृत्ततनुस्थूलाःश्यावपीतसितासिताः॥तेपंचनाम्नाकृमयःककेरुकमकेरुकाः १५सौसुरादामलूनाख्याःलेलिहाजनयन्तिते॥ विड्भेदशूलविष्टम्भकार्श्यपारुष्यपाण्डुताः १६ रोमहर्षाग्निसदनंगुदकण्डूविमार्गगाः॥ इतिकृमि निदानम्॥

पाण्डुरोगाःस्मृताःपंचवातपित्तकफैस्त्रयः॥ चतुर्थः

होनेसे कोई २दिखाई भी नहींदेते ११ वे ६ होते हैं केशाद लोम विध्वंस रोमद्वीप उदुम्बर सौरस माता इन कृमियों का मुख्यकर्म्म कुष्ठरोग करना है जो कृमि पके हुये मल में उत्पन्न होते हैं व मलकेसंग नीचेगिरतेहैं वे अधिकबढ़जाने पर जब आमाशयकी ओरको चलते हैं १२।१३ तब उसपुरुषके डकारलेने व निःश्वास लेनेमें विष्ठाकीसी गन्धि उत्पन्नकरते हैं व वे कृमि मोटेगोलेलंबे काले पीले उजलेनीले होतेहैं १४ उन कृमियोंके पाँचनाम होते हैं ककेरुक मकेरुक सौसुराद शूल लेलिह ये कृमि इन२रोगोंको उत्पन्नकराते हैं १५ मलपतला शूल कबुजसी दुर्बलता कड़ापन पांडुरोग देहपीली रोमोंकाखड़ाहोना अग्निमन्द गुदमें खजुली इतने उपद्रव करते हैं १६॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेकृमिनिदानंसप्तमम् ७॥

दो०॥ अठयेंमहँ कह बहुत विध पांडुरोग के भेद॥
देखहिं वैद्यप्रवीण तिन होहिं लषत विनखेद १

पांडुरोग के निदान-पांडुरोग पाँच प्रकार के होते हैं एकवात से दूसरा पित्तसे तीसरा कफ से चौथा सन्निपात सेव पाँचवाँ

सन्निपातेन पंचमोभक्षणान्मृदः १ व्यवायमम्लंलव णानिमद्यम्मृदन्दिवास्वप्नमतीवतीक्ष्णम् ॥ निषेवमा णस्यविदूष्यरक्तंकुर्वंतिदोषास्त्वचिपाण्डुभावम् २ त्व क्स्फोटनिष्ठीवनगात्रसादमृद्भक्षणप्रेक्षणकूटशोफाः ॥ वि ण्मूत्रपीतत्वमथाविपाको भविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ३ त्वङ्मूत्रनयनादीनांरूक्षकृष्णारुणप्रभाः ॥ वातपाण्डा मयेकंपतोदानाहभ्रमादयः ४ पीतमूत्रशकृन्नेत्रोदाहतृ ष्णाज्वरान्वितः ॥ भिन्नविट्कोतिपीताभः पित्तपांड्वा मयीनरः ५ कफप्रसेकश्वयथुतन्द्रालस्यातिगौरवैः ॥ पा

मिट्टीखाने से १ पाण्डुरोग की सम्प्राप्ति के कारण—अति मैथुन करनेसे अतिखट्टी वस्तु खानेसे अतिखारी पदार्थ खानेसे बहुत मदिरापीने से मिट्टीखानेसे दिनमें बहुधा सोनेसे अत्यन्ततीक्ष्ण झराती हुई वस्तुके खानेसे दोष रक्तचर्म्म व मांसमें जाकरइन सबोंको पीले करदेते हैं उन्हीं को पाण्डुरोग कहते हैं २ पाण्डु रोगका पूर्वरूप—त्वचा फटीसी थूँकना शरीर में ग्लानि मिट्टी खानेकीइच्छा नेत्रोंके गोले में शोथ मल व मूत्रमें पीलापन अन्नका न पचना ये लक्षण जब पाण्डुरोग होनेपर होता है तब पहिले होतेहैं ३ वातज पाण्डुरोगके लक्षण—वातज पाण्डुरोग में त्वचा मूत्रनेत्रादिकों में रुपाई आजाती है व इनकारंगकाला व लाल मिलाहुआ होजाताहै शरीर कांपता कोंचने के समान पीड़ाहोती है पेट फूलता है चित्तभ्रम आदि होतेहैं ४ पित्त के पाण्डुरोग के लक्षण—पित्तके पाण्डुरोगवाले मनुष्य के मूत्रमल व नेत्रपीले होजाते हैं दाह प्यास व ज्वर होते हैं मल पतला होजाताहै शरीरकारंग बहुत पीलाहोजाताहै ५ कफके पांडुरोग के लक्षण—कफ के पाण्डुरोगी के मुख से कफ गिराकरता शोथ होता झँपानसा मुखपर पड़ा रहता अलसई आती शरीर गरू

पाण्डुरोगीकफाच्छुक्लैस्त्वङ्मूत्रनयनाननैः ६ ज्वरारोचकहृल्लासच्छर्दितृष्णाक्लमान्वितः ॥ पाण्डुरोगीत्रिभिर्दोषैस्त्याज्यःक्षीणोहतेन्द्रियः ७ मृत्तिकादनशीलस्य कुप्यत्यन्यतमोमलः॥कषायामारुतंपित्तमूषरामधुराकफम् ८ कोपयेन्मृद्रसादींश्चरौक्ष्याद्भुक्तंचरूक्षयेत ॥ पूरयत्यविपक्वैवस्रोतांसिनिरुणद्ध्यपि ९ इन्द्रियाणांबलंहत्वा तेजोवीर्य्यौजसीतथा ॥ पाण्डुरोगंकरोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् १० शूनाक्षिकूटगण्डभ्रूःशूनपान्नाभिमेहनः ॥ कृमिकोष्ठोतिसार्य्येत मलंसासृक्कफान्वितम् ११ पाण्डु

जानपड़ता व त्वचा मूत्रमुख व नेत्र बहुतउज्ज्वलेहोजाते व जिसमें बात पित्त कफ तीनोंके लक्षणहों वह सन्निपातका पाण्डुरोग कहाताहै ६ व जिस सन्निपात के पाण्डुरोगी के ज्वर अरुचि मुखमें पानीछूटना वमनकरना अतिप्यास लगना चित्त व्याकुलता अतिदुर्ब्बलता इन्द्रिय शिथिलता ये उपद्रवहों उस असाध्य सन्निपात रोगीको वैद्यछोड़दे औषध न करे ७ मिट्टीखानेसे उत्पन्नपाण्डुरोग केलक्षण-मिट्टी खानेवाले मनुष्यके वातादिक अलग कोप करते हैं जैसे कसैली मिट्टीके खाने से बायुकोप करताहै खारीके खानेसे पित्त सपेदमीठी मिट्टीके खानेसे कफकुपितहोताहै ८ फिर वह खाई हुई मिट्टी रसादिक सात धातुओंको कुपित कराके रूपकरदेती है उस रूपपनसे फिर वह प्राणी जो कुछ अन्न खाताहै वह भी रूपाहोजाताहै व वह मिट्टी वैसी कच्ची बनी रहकर सब मार्गोंको रोंकदेतीहै ९ व इन्द्रियों के बलको मारकर तेजवीर्य्य पराक्रम को भी मारतीहै व बल वर्ण अग्नि के नाशनेवाले पाण्डुरोग को बहुतही शीघ्र करती है १० सब पाण्डुरोगों में जब कोठे में कृमि होजाते हैं तो नेत्रके गोले गाल भौंहें पैर नाभि व लिंगमें शोथ होआताहै व रुधिर कफस

रोगश्चिरोत्पन्नः खरीभूतोनसिध्यति ॥ कालप्रहर्षाच्छू नांगो योवापीतानिपश्यति १२ बहुलंविद्सहरितंसक फंयोतिसार्य्यते ॥ दीनःश्वेतातिदिग्धांगश्छर्दिमूर्च्छातृड न्वितः १३ सनास्त्यसृक्क्षयाद्यस्तुपांडुश्वेतत्वमाप्नुया त् ॥ पांडुदन्तनखोयश्च पांडुनेत्रश्चयोभवेत् १४ पांडु संघातदर्शीच पांडुरोगीविनश्यति १५ अन्तेषुशूनंपरि हीनमध्यंम्लानंतथान्तेषुचमध्यशूनम् ॥ गुदेथशेफस्य थमुष्कयोश्चशूनम्प्रनाम्यंतमसंज्ञकल्पम् १६ विवर्जये

हित पतलामल गुदमार्ग होकर बाहर आताहै ११ बहुतदिनका पांडुरोग अति तीक्ष्ण होजानेके कारण असाध्य होजाताहै सिद्ध नहीं होता वा बहुत दिन होनेसे जिस पाण्डुरोगीका शरीर शोथ आवे अथवा जिस रोगीको सब पीलाही पीला दिखाई दे तो वह भी रोगी असाध्यही होताहै १२ व जो रोगी हरा कफसहित बहुत विष्ठाकरे वह भी असाध्यही होता व जो पीड़ाके मारे दुःखी रहता व उजली खौलीसी उसके शरीर पर विदित होती वमन मूर्च्छा व प्यासस्रे युक्त रहता वह भी असाध्य होता है १३ व जो रक्त नाश होजानेके कारण पीला उजला होगया हो वह जानों अब इस संसारमें नहीं है व जिस पाण्डुरोगी के दांत नख पीले होगये हों व जिसके नेत्र भी पीले होगये हों व जिसे सब पीलोंकेसमूह दिखाई देतेहों वह पाण्डुरोगी मृतकही होजाताहै १४ जिसपाण्डुरोगीके हाथ पैर जंघाआदि शोथ आये हों व बीचका धड़ सूखगयाहो यह रोगी असाध्यहोता व जिसके हाथ पैर जंघाआदि सूखजायँ व मध्यकाशरीर छाती पेटआदि शोथआवे वहभी असाध्यहीहोताहै१५ गुद लिंग व पोतोंमें जिसके सूजनहोतीहै वहभी असाध्यहोताहै व जिसके ऊपर झँपानदिन रात्रिपड़ारहै वनाय चैतन्यता जातीरहै वहभी असाध्यही होता है व जिस पाण्डुरोगीके ज्वर अतीसार संगही हों उसको यश

त्पांडुकिनंयशोथींतथातिसारज्वरपीडितंच ॥ पाण्डुरोगी तुयोत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते ॥ तस्यपित्तमसृग्मांसंदग्ध्वा रोगायकल्पते १७ हारिद्रनेत्रःसभृशंहारिद्रत्वग्नखान नः ॥ रक्तपित्तशकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेंद्रियः १८ दाहावि पाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः ॥ कामलाबहुपित्तैषाको ष्ठशाखाश्रयामता १९ कालांतरात्खरीभूता कृच्छ्रास्या त्कुम्भकामला ॥ कृष्णपीतशकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः २० सरक्ताक्षीमुखच्छर्दिविण्मूत्रोयश्चताम्यति ॥ दाहा रुचितृडानाहतन्द्रामोहसमन्वितः॥नष्टाग्निसंज्ञःक्षिप्रंहि

चाहनेवाला वैद्य तुरन्त छोड़दे क्योंकि वह महा असाध्य होताहै १६ पाण्डुरोगके अन्तर्गत कामल पांडु अर्थात् काँवरि रोगके लक्षण–जो पाण्डुरोगी अत्यन्त पित्तकरनेवाली खटीतीखी आ- दिवस्तुओंका सेवनकरताहै उसकापित्त रक्त मांसको जलाकर कामलरोगको उत्पन्नकरताहै १७ इसरोगमें नेत्रहरिद्राके समा- न पीलेहोजातेहैं त्वचा नख मुखभी हरिद्राहीके रंगके होजाते हैं मूत्र व मल लाल पीला मिला होजाताहै मेड़कके समान देहका रंग पीला होजाताहै सबइन्द्रियाँ हतहोजातीहैं १८ सदा दाह अन्न न पचना दुर्बलता ग्लानि अरुचि इनसे पीड़ितरह- ताहै बहुत पित्तहीसे कामलाहोती है यह प्रथम कोठेमें रहती है फिर उसकी शाखा रक्तादि धातुओंमें प्रविष्ट होजाती है १६ इसी कामला वा काँवरिकाभेद कुम्भकामला है यहीकामल बहुत कालतक रहनेसे अतितीक्ष्ण होकर कुम्भकामलाहोजाती है यह बड़ेकष्टसे साध्यहोतीहै इसके असाध्य लक्षण–मलमूत्र काला पीला मिलाहोजाता है अंग अत्यन्त शोथआते हैं नेत्र मुख वमन विष्ठा मूत्र लालहोजाते हैं व सदामानो झँपानसा पड़ारहता है २० दूसरे असाध्यके लक्षण–जिसकामलावाले

कामलावान्विपद्यते २१ छर्द्यरोचकहृल्लासज्वरक्लमनिपीडितः ॥ नश्यतिश्वासकासार्तोविड्भेदीकुम्भकामली २२ यदातुपाण्डुवर्णःस्याद्धरितस्यावपीतकः ॥ बलोत्साहक्षयस्तन्द्रा मन्दाग्नित्वस्मृदुज्वरः २३ स्त्रीष्वहर्षोङ्गमर्दश्च सादस्तृष्णारुचिभ्रमः ॥ हलीमकन्तदातस्य विद्यादनलपित्ततः २४ ॥ इतिपाण्डुरोगनिदानम् ॥

घर्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरतिसेवितैः ॥ तीक्ष्णो

रोगीके दाह अरुचि प्यास पेटफूलना झँपान व मोह सदाबना रहै व अग्नि चैतन्यता जातीरहे ऐसारोगी शीघ्रही मरताहै २१ कुम्भ कामलाके असाध्य लक्षण—जिस कुम्भ कामलावाले के वमन होता अरुचिरहती जीमचलाता ज्वरहोता विना परिश्रम के थकना श्वास कास आना पतला दस्त आना ये सब लक्षण होते हैं वह मृतकही होजाताहै २२ पांडुरोगही के अन्तर्गत हलीमक रोगके लक्षण—जब पांडुरोगी का रंग हरा नीला वा पीला होजाय बल व उत्साह जातेरहें झँपान पड़ारहे अग्नि मन्द हो जाय कुछ थोड़ा हलका ज्वर बनारहे २३ स्त्रीके संगकरने की इच्छा वनाय जातीरहे शरीर टूटाकरे ग्लानि बनीरहे प्यास अधिकलगे अरुचि व चित्तभ्रमहो तो इसरोगका हलीमक नाम जानना चाहिये यह वात पित्तसे मिलकर होता है—पाण्डुही के भेद पानकी रोगके लक्षण—अंगोंमें सन्ताप पतला मल गिरना बाहरभीतर सब पीला होजाना दोनों नेत्रोंमें पीलापन ये जिसके हों उसके पानकी रोगके लक्षण जानो २४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेपाण्डुकामलाहलीमकरोगनिदानमष्टमम् ८ ॥

दोहा ॥ नवयें महँ कह रक्तपित रोग निदान अनेक ॥
साध्यासाध्य विचारिके औषध करियसटेक १

रक्तपित्तरोगके लक्षण—अत्यन्त घाम में चलने फिरने से

त्पांडुकिनंयशोर्थीतथातिसारज्वरपीडितंच ॥ पाण्डुरोगी तुयोत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते ॥ तस्यंपित्तमसृग्मांसंदग्ध्वा रोगायकल्पते १७ हारिद्रनेत्रःसभृशंहारिद्रत्वग्नखान नः ॥ रक्तपित्तशकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेंद्रियः १८ दाहावि पाकदौर्बल्यसदनारुच्चिकर्षितः ॥ कामलावहुपित्तैषाको ष्ठशाखाश्रयामता १९ कालांतरात्खरीभूता कृच्छ्रास्या त्कुम्भकामला ॥ कृष्णपीतशकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः २० सरक्ताक्षीमुखच्छर्दिविण्मूत्रोयश्चताम्यति ॥ दाहा रुचितृडानाहतन्द्रामोहसमन्वितः॥नष्टाग्निसंज्ञःक्षिप्रंहि

चाहनेवाला वैद्य तुरन्त छोड़दे क्योंकि वह महा असाध्य होताहै १६ पाण्डुरोगके अन्तर्गत कामल पांडु अर्थात् काँवरि रोगके लक्षण—जो पाण्डुरोगी अत्यन्त पित्तकारनेवाली खट्टीतीखी आ-दिवस्तुओंका सेवनकरताहै उसकापित्त रक्त मांसको जलाकर कामलरोगको उत्पन्न करताहै १७ इसरोगमें नेत्रहरिद्राके समा-न पीलेहोजातेहैं त्वचा नख मुखभी हरिद्राहीके रंगके होजाते हैं मूत्र व मल लाल पीला मिला होजाताहै मेड़कके समान देहका रंग पीला होजाताहै सबइन्द्रियाँ हतहोजातीहैं १८ सदा दाह अन्न न पचना दुर्बलता ग्लानि अरुचि इनसे पीड़ितरह-ताहै वहुत पित्तहीसे कामलाहोती है यह प्रथम कोठेमें रहती है फिर उसकी शाखा रक्तादि धातुओंमें प्रविष्ट होजाती है १९ इसी कामला वा काँवरिकाभेद कुम्भकामला है यहीकामल वहुत कालतक रहनेसे अतितीक्ष्ण होकर कुम्भकामलाहोजाती है यह बड़ेकष्टसे साध्यहोतीहै इसके असाध्य लक्षण—मलमूत्र काला पीला मिलाहोजाता है अंग अत्यन्त शोथआते हैं नेत्र मुख वमन विष्ठा मूत्र लालहोजाते हैं व सदामानो झँपानसा पड़ारहता है २० दूसरे असाध्यके लक्षण—जिसकामलावाले

कामलावान्विपद्यते २१ छर्द्यरोचकहृल्लासज्वरक्लमनिपीडितः ॥ नश्यतिश्वासकासार्तोविड्भेदीकुम्भकामली २२ यदातुपाण्डुवर्णःस्याद्धरितस्यावपीतकः ॥ बलोत्साहक्षयस्तन्द्रा मन्दाग्नित्वम्मृदुज्वरः २३ स्त्रीष्वहर्षोऽङ्गमर्दश्च सादस्तृष्णारुचिभ्रमः ॥ हलीमकन्तदातस्य विद्यादनलपित्ततः २४ ॥ इतिपाण्डुरोगनिदानम् ॥

घर्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरातिसेवितैः ॥ तीक्ष्णो

रोगीके दाह अरुचि प्यास पेटफूलना झँपान व मोह सदावना रहै व अग्नि चैतन्यता जातीरहे ऐसारोगी शीघ्रही मरताहै २१ कुम्भ कामलाके असाध्य लक्षण—जिस कुम्भ कामलावाले के वमन होता अरुचिरहती जीमचलाता ज्वरहोता विना परिश्रम के थकना श्वास कास आना पतला दस्त आना ये सब लक्षण होते हैं वह मृतकही होजाताहै २२ पांडुरोगही के अन्तर्गत हलीमक रोगके लक्षण—जब पांडुरोगी का रंग हरा नीला वा पीला होजाय बल व उत्साह जातेरहें झँपान पड़ारहे अग्नि मन्द हो जाय कुछ थोड़ा हलका ज्वर बनारहे २३ स्त्रीके संगकरने की इच्छा बनाय जातीरहे शरीर टूटाकरे ग्लानि बनीरहे प्यास अधिकलगे अरुचि व चित्तभ्रमहो तो इसरोगका हलीमक नाम जानना चाहिये यह वात पित्तसे मिलकर होता है—पाण्डुही के भेद पानकी रोगके लक्षण—अंगोंमें सन्ताप पतला मल गिरना वाहरभीतर सब पीला होजाना दोनों नेत्रोंमें पीलापन ये जिस के हों उसके पानकी रोगके लक्षण जानो २४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेपाण्डुकामलाहलीमकरोगनिदानमष्टमम् ८ ॥

दोहा ॥ नवयें महँ कह रक्तपित रोग निदान अनेक ॥
साध्यासाध्य विचारिके औषध करियसटेक १

रक्तपित्तरोगके लक्षण—अत्यन्त घाम में चलने फिरनें से

ष्णैःक्षारलवणैरम्लैःकटुभिरेवच १ पित्तंविदग्धंस्वगुणै विदहत्याशुशोणितम् ॥ ततःप्रवर्त्ततेरक्तमूर्ध्वंवाधोद्विधा पिवा२ऊर्ध्वंनासाक्षिकर्णास्यैर्मेढ्योनिगुदैरधः ॥कुपितंरोम कूपैश्चसमस्तैस्तत्प्रवर्त्तते३ (आमाशयाद्व्रजेदूर्ध्वमधःप क्काशयाद्व्रजेत् ॥विदग्धयोर्द्वयोश्चापिद्विधाभागंप्रवर्त्तते) सदनंशीतकामित्वंकण्ठधूमायनंवमिः॥ लोहगंधिश्चनि श्वासोभवत्यस्मिन्भविष्यति ४सांद्रंसपांडुसस्नेहंपिच्छि लंचकफान्वितम्॥ श्यावारुणंसफेनंचतनुरूक्षंचवातिक म्५रक्तपीतकषायाभंकृष्णंगोमूत्रसंनिभम्॥ मेचकागार

अतिदण्ड कुश्ती आदि खेलनेसे अतिशोक करने से बहुत मार्ग चलने से अतिमैथुन करने से अतितीक्ष्ण अतिउष्ण अतिक्षार अतिसलोने अतिखट्टे व अति कडुवे पदार्थोंके सेवनकरने से १ पित्त अति जलकर अपनेगुणों से बहुत शीघ्र रुधिरको बहुत गरमकरदेताहै इसलिये रुधिर ऊँचे नीचे दोनोंओर से वह निकलताहै२ ऊँचे को तो नाक नेत्र कान व मुखके मार्गसे निकलनेलगता है व नीचे लिंग व गुदकीद्वारा और स्त्रीके भग व गुद की द्वारा नीचेको व ऊपर को जिन मार्गों से पुरुषके निकलता है व जब अत्यन्त कोप करता है तो सबरोमों की भी निकलने लगताहै३ रक्त पित्तके पूर्वरूपके लक्षण—ग्लानि शीतपदार्थों की इच्छा गले से धुआँइंधसी निकलनी वमनहोना तपायेहुये लोह की महक के समान श्वास की गन्धि जब रक्त पित्त होने पर होताहै तब ये सब होतेहैं ४ कफ युक्त रक्तपित्तके लक्षण—गाढ़ा कुछ पीलापन लिये चिकनाई लुये बुल्ला बुल बुलाता हुआ रुधिर जिसमें गिरताहै वह कफयुक्त रक्त पित्त कहाताहै वात मिश्रित रक्त पित्तके लक्षण-नीला कुछ ललाईलिये फेना सहित पतला व रूखारुधिर जिसमें गिरताहै वह वातमिश्र रक्त-

धूमाभमंजनाभंचपैत्तिकम्६संसृष्टलिंगंसंसर्गात्त्रिलिंगं सान्निपातिकम्॥ऊर्ध्वगंकफसंसृष्टमधोगंमारुतानुगम्७ द्विमार्गंकफवाताभ्यामुभाभ्यामनुवर्त्तते॥ऊर्ध्वंसाध्यमधो याप्यमसाध्यंयुगपद्गतम् ८ एकमार्गंबलवतोनातिवेगंन वोत्थितम्॥रक्तपीतंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम्९ए कदोषानुगंसाध्यंद्विदोषंयाप्यमुच्यते॥ यत्त्रिदोषमसाध्यं

पित्त कहाताहै ५ पित्तके रक्तपित्तके लक्षण—जिस रक्तपित्तमेंगेरू के रँगे वस्त्रके समान रक्तकारंगहो कालाहो अथवा गोमूत्रके रंग काहो वा मोरके पक्षके रंगकाहो वा अंगारसाहो वा धूमकेरंगका हो वा अञ्जन सा रंगहो तो उसरक्त पित्तको पित्त सम्बन्धी जानना चाहिये ६ दो २ दोषों से उत्पन्नके लक्षण—जिसमें दोदोषों के लक्षण मिलेहुये पायेजायँ उसे द्विदोषजरक्त पित्त जानना चाहिये जिसमें तीनों दोषोंका संसर्गहो उसे त्रिदोषज वा सान्निपातिक रक्तपित्त जानो जिस में मुखनासिकादि ऊपरके छिद्रों से रक्तवहे उसे कफका रक्त पित्त जानना चाहिये जिसमें गुदलिंग योनिआदि नीचेके छिद्रों से रुधिर निकले उसे वायु का रक्त पित्त जानो ७ जिसमें ऊँचे नीचे दोनों मार्गों से रक्त निकले उसे कफवात दोनोंसे उत्पन्न रक्तपित्तजानो इनके साध्यासाध्यके लक्षण—ऊपरके मार्गों होकर रुधिरवहनेवाला रक्त पित्त साध्यहोताहै क्योंकि कफ मिश्रितहोताहै नीचे के मार्गों से जिसमें रुधिर वहताहै वह याप्यअर्थात् साध्यअसाध्य दोनों होताहै व जो नीचे ऊँचे दोनोंओर की वहता है वह असाध्यही होताहै ८ साध्यहोने के हेतु जो रक्तपित्त बलवान् पुरुष के एक ऊपरकेही मार्गसे रुधिर निकालता है सो भी अति वेगसे नहीं व थोड़ेही दिनोंसे सो भी शिशिर हेमन्तादि सुखके कालमें वह भी उपद्रव रहितहो तो वह रक्तपित्त साध्यहोताहै ९ दोष भेद से साध्य असाध्य के लक्षण—एकदोषसेयुक्त रक्तपित्त साध्यहोता

स्यान्मंदाग्नेरतिवेगतः ॥ व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यानश्नतश्चयत् १० दौर्बल्यंश्वासकासज्वरवमथुमदापांडुतादाहमूर्च्छाभुक्तेघोरोविदाहस्त्वधृतिरपिसदाहृद्यतुल्याचपीडा ॥ कृष्णाकोष्ठस्यभेदःशिरसिचतपनंपूतिनिष्ठीवनत्वं भक्तद्वेषाविपाकोविकृतिरपिभवेद्रक्तपित्तोपसर्गः ११ मांसप्रक्षालनाभंक्वथितमिवचयत्कर्दमांभोनिभंवामेदःपूयास्रकल्पंयकृदिवयदिवापक्वजंबूफलाभम् ॥ यत्कृष्णंयच्चनीलंभृशमतिकुणपंयत्रचोक्ताविकारा स्तद्वर्ज्यंरक्तपित्तंसुरपतिधनुषायच्चतुल्यंविभाति १२ येनचोपहतं

है व दोदोषोंसे मिलाहुआ याप्य अर्थात् कष्टसाध्य होनेसे साध्य असाध्य दोनों होताहै व जो तीनों दोषों से उत्पन्नहोता है वह असाध्यही होताहै व मन्दाग्नि पुरुषके जो अतिवेगसे रुधिरआता है वह भी असाध्यहोता है व्याधि से क्षीण देहवाले अतिवृद्ध व जिसकाअन्न छूटगयाहो उसका भी रक्तपित्त असाध्यही होता है १० रक्तपित्तके उपद्रव–दुर्बलता श्वासआना खांसी आना ज्वर होनाओकाईलगना मदचढ़ारहना देहकापाण्डुरंग होजाना दाह मूर्च्छा भोजनकरनेपर घोरदाह गण्डहीजलना अधीरहोना सदा हृदय में विषमपीड़ा प्यासलगना मलकापतला होना शिरका जलना थूकने में दुर्गन्धिका आना अरुचि अन्नका न पचना व शरीर की आकृतिका बदलजाना बस रक्तपित्तके ये उपद्रवहैं ११ असाध्य रक्तपित्तके लक्षण–जिसरक्त पित्तरोगमें रुधिर मांस के धोवनके रंगकाहो वा काढ़ेके रंगकाहो वा कीचड़ मिले हुये जल के रंगका हो वा चर्व्बी और पीवमें मिले हुये रुधिरके रंगकाहो वा यकृत् करेजीके खण्डके रंगकाहो अथवापकेहुये फरेंदे के रंग का हो वा काला नीलाहो वामुर्देकी दुर्गन्धि के समान जिस रुधिर में अति दुर्गन्धि आवे अथवा जिसमें इन्द्रधनुष के रंगों

रक्तंरक्तपित्तेनमानव.॥पश्येद्दृश्यंवियच्चोपितद्वासाध्यमसंशयम् १३ लोहितंछर्दयेद्यस्तुबहुशोलोहितेक्षणः ॥ लोहितोद्गारदर्शीचम्रियतेरक्तपैत्तिकः १४ इति रक्त पित्त निदानम्॥

वेगरोधात्क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशनात् ॥ त्रिदोषो जायतेयक्ष्मागदोहेतुचतुष्टयात् १ क्षयश्शोषोराजयक्ष्मा रोगराडितिकीर्तितः ॥ राज्ञश्चन्द्रमसोयस्मादभूदेषकिलामयः ॥ तस्मात्तंराजयक्ष्मेति केचिदाहुर्मनीषिणः २ कफप्रधानैर्दोषैस्तु रुद्धेषुरसवर्त्मसु ॥ अतिव्यवायिनोवा

के समान अनेक रंगका रक्त गिरे ये सब विकारजिसमेंहों वा इन में से एकही कोई होतो वैद्यको चाहिये इस रक्त पित्तको असाध्यसमझ कर छोड़ देवे १२ अन्य असाध्यके लक्षण—जिस रक्त पित्तरोगसे उपहत होकर मनुष्य सब घटपटमठादि दृश्यपदार्थों को व आकाशको लाल देखे वह भी रोगी असाध्यही है इसमें संशय नहींहै १३ अन्य असाध्यके लक्षण—जोरक्त पित्तका रोगी लालही वमनकरे व जिसके नेत्र वहुत लालबने रहतेहों अथवा जिसको डकार में बड़ी गएडही आवे व डकार आने के समय लालही दिखाई दे वह भी असाध्यही होताहै १४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादेरक्तपित्तनिदानन्नवमस् ९ ॥

दोहा ॥ दशयें महँ कह क्षयी प्रथ रोगनिदानविचारि ॥
जोअसाध्यवहुभांतिसों साध्यअल्पनिरधारि १

राजयक्ष्मा अर्थात् क्षयीरोगके निदान दिशापेशाव अधोवायु के रोकनेसे मैथुनादि अतिकरनेसे अधिक धातुक्षयहोनेसे साहस करनेसे व कुसमयपर कभी सन्ध्या कभी तीसरेपहर कभी रात्रि में भोजन करनेसे वस इनचारों कारणों से तीनों वात पित्त कफ कोप करते हैं इसीसे राजयक्ष्मा रोग उत्पन्न होताहै १ क्षय शोष राजयक्ष्मा रोगराज ये चार इसी यक्ष्माके नामहैं जिससे कि यह रोगराजाचन्द्रमाकेहुआथा इसीसे इसेकोई २ पण्डितलोग राज-

पि क्षीणेरेतस्यनन्तराः ३ क्षीयन्तेधातवःसर्वे ततःशुष्यतिमानवः ४ श्वासांगसादकफसंश्रवतालुशोष छर्द्यग्निसादमदपीनसकासहिक्काः॥ शोषेभविष्यतिभवन्तिसचापिजन्तुः शुक्लेक्षणोभवतिमांसपरोरिरंसुः ५ स्वप्नेषुकाकशुकशल्लकनीलकण्ठ गृध्रास्तथैवकपयःकृकलाशकाश्च ॥ तंवाहयन्तिसनदीर्विजलाश्चपश्येत्शुष्कांस्तरून्पवनधूमदवार्दितांश्च ६ अंसपार्श्वाभितापश्चसंतापः
यक्ष्माकहतेहैं नहींतो यक्ष्मातो इसको नामहीहै २ जब कफादिक दोषरसोंकेमार्गोंको रोकलेतेहैं रुधिर वहानेवालीनसोंसे यथावस्थितरक्त सबकहीं नहींजाता केवलहृदयमेंही रहताहैतबजलकर वहरुधिर अनेकरूपसे मुखकी गिरताहै अथवा अति मैथुनकरनेसे जब बीज क्षीण होजाताहै उसके पीछे यह रोगहोता है ३ क्योंकि जब वीर्य्य क्षीणहोजाताहै तब सब अन्य छःधातुभी नष्ट होजाते हैं तब मनुष्य सूखजाताहै धातुओंका राजा शुक्रही है इससे उसकीरक्षा सदाकरनीचाहिये क्योंकि उसके क्षीणहोतेही अन्यधातु क्षीणहोजातेहैं ४ क्षयरोगका पूर्व्वरूप–श्वासअधिक माना वा हाँपना अंगोंका ढीलाहोना मुखसे अधिक थूँकगिरना तालुसूखना डाकना अग्निकीमन्दता नशासा चढ़ारहना नाक अधिकबहना वा पीनसरोगहोजाना खाँसीआना हुचकी आनाजब शोषरोग होनेपरहोताहै तो प्रथम येऊपरलिखेहुयेदोष होते हैं व उसपुरुषकेनेत्र उजलेहोजाते हैं व उसे मांसखाने व मैथुनकरनेकी इच्छा अधिक होतीहै ५ व वह पुरुष स्वप्नमेंदेखता है कि कौआ, तोता, साही, मोर, गीध, वानर, गिरगिट में इनके ऊपरचढ़ाहूँ व वह विनाजलकी नदियोंको देखताहै व सूखेवृक्षों को देखता वा वायु धुआँ व दावानलसे पीड़ित वृक्षोंको देखता है ६ कन्धा पशुरियोंका जलना हाथ पैरोंका अधिकजलना व सब अंगोंमें सदाज्वर बनारहना ये तीन लक्षण राजयक्ष्मा के

करपादयोः ॥ ज्वरःसर्वांगगश्चेति लक्षणंराजयक्ष्मणः ७ (भक्तद्वेषोज्वरःश्वासः कासःशोणितदर्शनम् । स्वरभेद श्चजायन्ते षड्रूपेराजयक्ष्मणि) स्वरभेदोनिलाच्छूलं संकोचश्चांसपार्श्वयोः ॥ ज्वरोदाहोतिसारश्च पित्ताद्रक्त स्यचागमः ८ शिरसःपरिपूर्णत्वमभुक्तिश्छर्दिरेवच ॥ का शःकण्ठस्वरध्वंसो विज्ञेयःकफकोपतः ९ एकादशभिरे तैर्वा षड्भिर्वापिसमन्वितम् ॥ काशातिसारपार्श्वार्त्तिस्वर भेदारुचिज्वराः १० त्रिभिर्व्वापीडितंलिंगैर्ज्वरकाशा सृगामयैः ॥ जह्याच्छोषान्वितंजंतुमिच्छन्सुविपुलंयशः ११ सर्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्वापिलिंगैर्मांसबलक्षयैः ॥ युक्तोवर्ज्यः चिकित्स्यस्तु सर्वरूपोप्यतोन्यथा १२ महाशिनंक्षीयमा

मुख्य हैं ७ यद्यपि राजयक्ष्मा वातादि तीनोंदोषों के मिलजानेही से होताहै पर उनके विकारोंसे अलग२ उपद्रव कहते हैं—वायुके दोषसे बोल और प्रकारका होजाताहै कन्धे व पशुरियोंमें शूरउ- ठती व वे खिंचीसी जानपड़ती हैं व पित्तके दोष से सदाज्वर बनारहता है अंगोंमें दाहहोता अतीसारहोता व रक्तमुखसे गिरता है ८ व कफके कोपसे शिरभारीरहता अरुचि खाँसी स्वरभेद होताहै ९ इनग्यारहोंसे वा छः से युक्त शोषरोग होताहै खाँसी आना अतीसारहोना पशुरियोंमें पीड़ा स्वरभेद अरुचि व ज्वर इन छः से १० वा ज्वर खाँसी व रक्तगिरना इन तीनों से युक्त यह रोग रहता है बस जो वैद्यअपना बहुत यशचाहताहो उसे चाहिये कि इसराजयक्ष्मावाले रोगीकोछोड़दे औषध न करे ११ असाध्य साध्यका विचारकहतेहैं—जब ऊपरके लिखेहुये ग्यारह दोषों से युक्तहो वा छः से युक्तहो वा तीनही से युक्तहो परबल मांसरहितहो तो वह रोगी असाध्य है यदि सबदोषों से युक्त है परबल मांसयुक्त है तो औषध करना चाहिये १२ असाध्य के

पि क्षीणेरेतस्यनन्तराः ३ क्षीयन्तेधातवःसर्वे ततःशुष्य तिमानवः ४ श्वासांगसादकफसंश्रवतालुशोप छर्द्यग्नि सादमदपीनसकासहिक्काः॥ शोषेभविष्यतिभवन्तिसचा पिजन्तुः शुक्केक्षणोभवतिमांसपरोरिरंसुः ५ स्वप्नेषुका कशुकशल्लकनीलकण्ठ गृध्रास्तथैवकपयःकृकलाशका श्च ॥ तंवाहयन्तिसनदीर्विजलाश्चपश्येत्शुष्कांस्तरू न्पवनधूमदवार्दितांश्च ६ अंसपार्श्वाभितापश्चसंतापः

यक्ष्माकहतेहैं नहींतो यक्ष्मातो इसको नामहीहै २जब कफादिक दोपरसोंकेमार्गोंको रोकलेतेहैं रुधिर वहानेवालीनसोंसे यथाव- स्थितरक्त सबकहीं नहींजाता केवलहृदयमेंही रहताहैतबजलकर वहरुधिर अनेकरूपसे मुखकी गिरताहै अथवा अति मैथुनकरने से जब बीज क्षीण होजाताहै उसके पीछे यह रोगहोता है ३ क्योंकि जब वीर्य्य क्षीणहोजाताहै तब सब अन्य छःधातुभी नष्ट होजाते हैं तब मनुष्य सूखजाताहै धातुओंका राजा शुक्रही है इससे उसकीरक्षा सदाकरनीचाहिये क्योंकि उसके क्षीणहोतेही अन्यधातु क्षीणहोजातेहैं ४ क्षयरोगका पूर्वरूप—श्वासअधि- क आना वा हाँपना अंगोंका ढीलाहोना मुखसे अधिक थूँकगि- रना तालुसूखना ढाकना अग्निकीमन्दता नशासा चढ़ारहना नाक अधिकवहना वा पीनसरोगहोजाना खाँसीआना हुचकी आनाजब शोपरोग होनेपरहोताहै तो प्रथम येऊपरलिखेहुयेदोप होते हैं व उसपुरुषकेनेत्र उजलेहोजाते हैं व उसे मांसखाने व मैथुनकरनेकी इच्छा अधिक होतीहै ५ व वह पुरुष स्वप्नमेंदेखता है कि कौआ, तोता,साही, मोर, गीध, वानर, गिरगिट में इनके ऊपरचढ़ाहूँ व वह विनाजलकी नदियोंको देखताहै व सूखेवृक्षों को देखता वा वायु धुआँ व दावानलसे पीड़ित वृक्षोंको देखता है ६ कन्या पशुरियोंका जलना हाथ पैरोंका अधिकजलना व सब अंगोंमें सदाज्वर बनारहना ये तीन लक्षण राजयक्ष्मा के

करपादयोः ॥ ज्वरःसर्वांगगश्चेति लक्षणंराजयक्ष्मणः ७ (भक्तद्वेषोज्वरःश्वासः कासःशोणितदर्शनम् । स्वरभेद श्चजायन्ते षड्रूपेराजयक्ष्मणि) स्वरभेदोनिलाच्छूलं संकोचश्चांसपार्श्वयोः ॥ ज्वरोदाहोतिसारश्च पित्ताद्रक्त स्यचागमः ८ शिरसःपरिपूर्णत्वमभुक्तिश्छर्दिरेवच ॥ का शःकण्ठस्वरध्वंसो विज्ञेयःकफकोपतः ९ एकादशभिरे तैर्वा षड्भिर्वापिसमन्वितम् ॥ काशातिसारपार्श्वार्त्तिस्वर भेदारुचिज्वराः १० त्रिभिर्व्वापीडितंलिंगैर्ज्वरकाशा सृगामयैः ॥ जह्याच्छोषान्वितंजंतुमिच्छन्सुविपुलंयशः ११ सर्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्वापिलिंगैर्मांसबलक्षयैः ॥ युक्तोवर्ज्यः चिकित्स्यस्तु सर्वरूपोप्यतोन्यथा १२ महाशिनंक्षीयमा

मुख्यहैं ७ यद्यपि राजयक्ष्मा वातादि तीनोंदोषों के मिलजानेही से होताहै पर उनके विकारोंसे अलग२ उपद्रव कहते हैं—वायुके दोषसे बोल और प्रकारका होजाताहै कन्धे व पशुरियोंमें शूरउठती व वे खिंचीसी जानपड़ती हैं व पित्तके दोष से सदाज्वर बनारहता है अंगोंमें दाहहोता अतीसारहोता व रक्तमुखसे गिरता है ८ व कफके कोपसे शिरभारीरहता अरुचि खाँसी स्वरभेद होताहै ९ इन्ग्यारहोंसे वा छः से युक्त शोषरोग होताहै खाँसी आना अतीसारहोना पशुरियोंमें पीड़ा स्वरभेद अरुचि व ज्वर इन छः से १० वा ज्वर खाँसी व रक्तगिरना इन तीनों से युक्त यह रोग रहता है बस जो वैद्यअपना बहुत यशचाहताहो उसे चाहिये कि इसराजयक्ष्मावाले रोगीकोछोड़दे औषध न करे ११ असाध्य साध्यका विचारकहतेहैं—जब ऊपरके लिखेहुये ग्यारह दोषों से युक्तहो वा छः से युक्तहो वा तीनही से युक्तहो परबल मांसरहितहो तो वह रोगी असाध्य है यदि सबदोषों से युक्त है परबल मांसयुक्त है तो औषध करना चाहिये १२ असाध्य के

णमतीसारनिपीडितम्॥शूनमुष्कोदरञ्चैवयक्ष्मिणंपरिव
र्जयेत् १३ ज्वरानुबन्धरहितम्बलवन्तंक्रियासहम् ॥
उपक्रमेदात्मवंतंदीप्ताग्निमकृशंनरम् १४ शुक्लाक्षमन्नद्वे
ष्टारमूर्ध्वश्वासनिपीडितम् ॥कृच्छ्रेणबहुमेहंतंयक्ष्माहन्ती
हमानवम्१५व्यवायशोकवार्द्धक्यव्यायामाध्वप्रशोषिता
न्॥व्रणोरःक्षतसंज्ञौचयक्ष्मणोलक्षणैःशृणु१६ व्यवायशो
षीशुक्रस्य क्षयलिंगैरुपद्रुतः ॥ पाण्डुदेहोयथापूर्वं क्षीय
न्तेचास्यधातवः १७ प्रध्मानशीलस्स्रस्तांगः शोकशो

लक्षण–जो रोगी भोजन बहुत करताहो पर प्रतिदिन दुर्ब्ब-
लहोताजाता हो व अतीसार से पीड़ितहो पेट व पोतोंमें शोथ
आगयाहो ऐसे यक्ष्मावाले को छोड़देनाचाहिये क्योंकि वह अ-
साध्य होताहै १३ व जो क्षयीरोगवाला ज्वरसे अति पीड़ित न
हो बलवान्हो औषधों को सहसकाहो इन्द्रियों की शक्तिसेयुक्त
हो अग्नि प्रदीप्त हो व दुर्ब्बल न होगयाहो ऐसे रोगी को औषध
देनाचाहिये १४ असाध्य का अन्यलक्षण-जिसरोगी के नेत्रब-
हुत उजले होगयेहों अन्नमें अरुचिहोगईहो ऊर्ध्वश्वासें आती
हों व बड़े कष्टके साथ बहुतमूतताहो ऐसे रोगीको यक्ष्मा मारही
डालता है १५ केवल अति मैथुन करने से धातुक्षीण होजानेही
से यह शोषरोग नहींहोता किन्तु अन्यकारणोंसेभी होता है अति-
मैथुन करनेसे सूखेहुये शोकसे सूखेहुये वृद्धता से दण्डआदि अ-
धिककरने से बहुत मार्ग चलने से घावसे वा कलेजे के घावसे
सूखे हुये शोष रोगीके लक्षण अलग २ सुनो १६ अति मैथुन
करने से सूखे हुये के लक्षण-अति मैथुन करने से जो पुरुष
सूख जाताहै वह धातुक्षय के उपद्रवों से युक्त होताहै जैसे कि
उसका शरीर पीला होजाताहै लिंग व अण्डों में पीड़ा होती है
मैथुन करने की शक्ति जाती रहती है धातु बहुत कम गिरने

ष्यपितादृशः ॥ विनाशुक्रक्षयकृतैर्विकारैरुपलक्षितः १८ जराशोषीकृशोमन्दवीर्य्यबुद्धिबलेंद्रियः ॥ कम्पनोरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्ररुतस्वरः १९ ष्ठीवतिश्लेष्मणाहीनंगौरवारुचिपीडितः ॥ संप्रस्रुतास्यनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः २० अध्वप्रशोषीस्रस्तांगः संभ्रष्टपरुषच्छविः ॥ प्रसुप्तगात्रावयवःशुष्कक्लोमगलाननः २१ व्यायामशोषीभूयिष्ठमेभिरेवसमन्वितः ॥ लिंगैरुरःक्षत

लगताहै इत्यादि दोष होते हैं १७ शोकसे सूखे हुये के लक्षण शोकसे शुष्क पुरुष बहुत चिन्ता करता रहताहै हाथ पैर आदि अंगढीले पर जाते हैं इस रोगी के धातुक्षय तो नहीं होता जो कि अति मैथुन करने वालेके लक्षणमें कहाहै परन्तु अन्य सब उसी के लक्षण इस के भी होते हैं १८ वृद्धता से सूखे हुये के लक्षण-वृद्धताके कारण पुरुष दुर्ब्बल होजाताहै क्योंकि उसके वीर्य्य बलबुद्धि व इन्द्रियहत होकर मन्द होजातेहैं शरीर कांपने लगताहै अन्नमें अरुचि होजातीहै फूटे हुये कांसेके पात्रके शब्द के समान उसका बोलना होजाताहै १९ थूंकनेमें कफ नहीं गिरता देह भारी लगताहै व अति अरुचिसे पीड़ित रहता है मुख नेत्रनाक बहा करते हैं मलकड़ा होजाता है व शरीर में रुखाई के कारण शोभा नहीं रहती २० अधिक मार्गचलने से सूखेहुये के लक्षण-मार्गचलने से सूखे हुये पुरुषके हाथपैर आदिअंग ढीले पड़जाते हैं शरीरकी शोभा कड़ी व भ्रष्टहोजातीहै सबअंग सोयेसे जानपड़तेहैं हृदय गल व मुख सदा सूखे बनेरहतेहैं २१ अधिक दण्ड आदि परिश्रम करनेसे सूखेहुये के लक्षण—जो लक्षण अधिक मार्ग्ग चलनेसे सूखेहुये के कहे हैं वेही अधिकपरिश्रमसे सूखेहुये के भीहैं व छातीमें घावलगनेसे सूखेहुयेपुरुष के भी लक्षण युक्तरहते हैं परन्तु इसरोगीकी छाती में घावनहीं

णमतीसारनिपीडितम्॥ शूनमुष्कोदरञ्चैवयक्ष्मिणंपरिव र्जयेत् १३ ज्वरानुबन्धरहितम्बलवन्तंक्रियासहम् ॥ उपक्रमेदात्मवंतंदीप्ताग्निमकृशंनरम् १४ शुक्लाक्षमन्नद्वेष्टारमूर्ध्वश्वासनिपीडितम् ॥कृच्छ्रेणबहुमेहंतंयक्ष्माहन्तीहमानवम् १५ व्यवायशोकवार्द्धक्येव्यायामाध्वप्रशोषितान्॥व्रणोरःक्षतसंज्ञौचयक्ष्मणोलक्षणैःशृणु १६ व्यवायशोषीशुक्रस्य क्षयलिंगैरुपद्रुतः ॥ पाण्डुदेहोयथापूर्वं क्षीयन्तेचास्यधातवः १७ प्रध्मानशीलस्स्रस्तांगः शोकशो

लक्षण–जो रोगी भोजन बहुत करताहो पर प्रतिदिन दुर्बलहोताजाता हो व अतीसार से पीडितहो पेट व पोतोंमें शोथ आगयाहो ऐसे यक्ष्मावाले को छोड़देनाचाहिये क्योंकि वह असाध्य होताहै १३ व जो क्षयीरोगवाला ज्वरसे अति पीड़ित न हो बलवान्हो औषधों को सहसक्ताहो इन्द्रियों की शक्तिसेयुक्त हो अग्नि प्रदीप्त हो व दुर्बल न होगयाहो ऐसे रोगी को औषध देनाचाहिये १४ असाध्य का अन्यलक्षण-जिसरोगी के नेत्रबहुत उजले होगयेहों अन्नमें अरुचिहोगईहो ऊर्ध्वश्वासें आती हों व बड़े कष्टके साथ बहुतमूततातहो ऐसे रोगीको यक्ष्मा मारही डालता है १५ केवल अति मैथुन करने से धातुक्षीण होजानेही से यह शोषरोग नहींहोता किन्तु अन्यकारणोंसेभी होता है अतिमैथुन करनेसे सूखेहुये शोकसे सूखेहुये वृद्धता से दण्डआदि अधिककरने से बहुत मार्ग चलने से घावसे वा कलेजे के घावसे सूखे हुये शोष रोगीके लक्षण अलग २ सुनो १६ अति मैथुन करने से सूखे हुये के लक्षण-अति मैथुन करने से जो पुरुष सूख जाताहै वह धातुक्षय के उपद्रवों से युक्त होताहै जैसे कि उसका शरीर पीला होजाताहै लिंग व अण्डों में पीड़ा होती है मैथुन करने की शक्ति जाती रहती है धातु बहुत कम गिरने

ष्यपिताहशः ॥ विनाशुक्रक्षयकृतैर्विकारैरुपलक्षितः १८ जराशोषीकृशोमन्दवीर्य्यबुद्धिबलेंद्रियः ॥ कम्पनोरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्ररुतस्वरः १९ ष्ठीवतिश्लेष्मणाहीनंगौरवारुचिपीडितः ॥ संप्रस्रुतास्यनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः २० अध्वप्रशोषीस्रस्तांगः संभ्रष्टपरुषच्छविः ॥ प्रसुप्तगात्रावयवःशुष्कक्लोमगलाननः २१ व्यायामशोषीभूयिष्ठमेभिरेवसमन्वितः ॥ लिंगैरुरःक्षत

लगताहै इत्यादि दोष होते हैं १७ शोकसे सूखे हुये के लक्षण शोकसे शुष्क पुरुष बहुत चिन्ता करता रहताहै हाथ पैर आदि अंगढीले पर जाते हैं इस रोगी के धातुक्षय तो नहीं होता जो कि अति मैथुन करने वालेके लक्षणमें कहाहै परन्तु अन्य सब उसी के लक्षण इस के भी होते हैं १८ वृद्धता से सूखे हुये के लक्षण-वृद्धताके कारण पुरुष दुर्ब्बल होजाताहै क्योंकि उसके वीर्य्य बलबुद्धि व इन्द्रियहत होकर मन्द होजातेहैं शरीर कांपने लगताहै अन्नमें अरुचि होजातीहै फूटे हुये कांसेके पात्रके शब्द के समान उसका बोलना होजाताहै १९ थूंकनेमें कफ नहीं गिरता देह भारी लगताहै व अति अरुचिसे पीड़ित रहता है मुख नेत्रनाक बहा करते हैं मलकड़ा होजाता है व शरीर में रुखाई के कारण शोभा नहीं रहती २० अधिक मार्गचलने से सूखेहुये के लक्षण-मार्गचलने से सूखे हुये पुरुषके हाथपैर आदिअंग ढीले पड़जाते हैं शरीरकी शोभा कड़ी व भ्रष्टहोजाती है सबअंग सोयेसे जानपड़तेहैं हृदय गल व मुख सदा सूखे बनेरहतेहैं २१ अधिक दण्ड आदि परिश्रम करनेसे सूखेहुये के लक्षण—जो लक्षण अधिक मार्ग्ग चलनेसे सूखेहुये के कहे हैं वेही अधिकपरिश्रमसे सूखेहुये के भीहैं व छातीमें घावलगनेसे सूखेहुयेपुरुष के भी लक्षण युक्तरहते हैं परन्तु इसरोगीकी छाती में घावनहीं

कृतेःसंयुक्तश्चक्षतंविना २२ रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवा हारयंत्रणात् ॥ व्रणितस्यभवेच्छोपो यस्यासाध्यतमोम तः २३ धनुराकर्षतोनित्यं भारमुद्वहतोगुरुम् ॥ युध्य मानस्यबलिभिःपततोविषमोच्चतः २४ वृषंहयंवाधाव न्तं दम्यंचान्यंनिगृह्णतः ॥ शिलाकाष्ठाश्मनिर्घातान् क्षिपतोनिघ्नतःपरान् २५ अधीयानस्यचात्युच्चैर्दूरंवा व्रजतोद्रुतम् ॥ महानदींवातरतोहयैर्वासहधावतः २६ सहसोत्पततोदूरं तूर्णंचातिप्रनृत्यतः ॥ तथान्यैःकर्मभिः क्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यवा २७ ताडितेवक्षसिव्याधिर्बलवा नूसमुदीर्य्यते ॥ स्त्रीषुचातिप्रसक्तस्य रूक्षाल्पप्रमिता शिनः २८ उरोविरुज्यतेत्यर्थं भिद्यतेथविभज्यते ॥ प्र

होजाताहै २२ तीनप्रकार के व्रण अर्थात् घावोंके लक्षण—जो पुरुष रक्तक्षय होनेसे वा अन्य पीड़ाओंसे व कम भोजन पानेके कारण घाव होजानेसे सूखजातेहैं वे अत्यन्त असाध्य होजाते हैं २३ निदान सहित छाती के घावके लक्षण—बड़े जोर से धन्वा खींचनेसे बहुत गरुआ बोझा उठाने से अपने से बलाधिकों से कुश्ती आदि लड़नेसे बड़े ऊँचे किसी स्थानपर से गिरपड़ने से २४ दौड़तेहुये बैल घोड़े वा बछड़े ऊँट आदि के पकड़नेसे बड़ी शिला काष्ठ बड़े पत्थर के फेंकने से वा शत्रुको झपटकर मारने से २५ वा बड़े ज़ोरसे चिल्लाकर पढ़ने से बहुत दूरतक दौड़ने से बड़ी नदियोंको तैरकर उतरने से वा घोड़ोंके साथ दौड़नेसे २६ एकाएकी बड़े ऊँचे के कूदनेसे बहुत जल्दी २ नाचनेसे अथवा अन्यकुश्ती आदि क्रूर कर्म्मोंके करनेसे अत्यन्त थकजानेसे २७ पुरुषकी छाती में बलवान् घावयुक्त व्याधि होजाताहै व अत्यन्त स्त्रियों में प्रसक्त होजानेसे रूखा अन्न खानेसे वा बहुत खटाई खाने से व लघु भोजनकरनेसे वा कुसमयपर खाने से हृदय में

पीड्यतेततःपार्श्वे शुष्कत्यंगंप्रवेपते २९ क्रमाद्वीर्य्यंबलं वर्णोरुचिरग्निश्चहीयते ॥ ज्वरोव्यथामनोदैन्यं विड्भेदोग्निवधस्तथा ३० दुष्टःश्यावोबहुर्गंधःपीतोविद्ग्रंथितोबहु ॥ काशमानस्यचातीक्ष्णं कफस्रावःप्रवर्त्तते ३१ सक्षतीक्षीयतेत्यर्थंतथाशुक्रौजसःक्षयात् ॥ अव्यक्तंलक्षणंतस्यपूर्वरूपमितिस्मृतम् ३२ उरोरुक्शोणितच्छर्दिः काशोवैशेषिकःक्षतः ॥ क्षीणेसरक्तमूत्रत्वं पार्श्वपृष्ठकटीग्रहः ३३ अल्पलिंगस्यदीप्ताग्नेस्साध्योबलवतोनवः ॥

रोगहोताहै २८ ऐसे पुरुपकी छाती अत्यन्त पीड़ित होने लगती है वा फटतीसी जानपड़तीहै व फटकर दो टुकड़ेहोतीहुई जान पड़ती है व फिर दोनों ओर की पशुलियां पिराने लगतीहैं अंग सूखजाता है व कॉपने लगताहै २९ क्रमसे वीर्य्य बल शरीरका रंग रुचि व अग्निहीन होजाते हैं ज्वर होने लगता व्यथाहोती मनकी मलिनता मलपतला व अति मन्दाग्नि होजाताहै ३० दुष्टकाला दुर्गन्धि युक्त पीला वा गांठें युक्त व बहुत मलहोताहै व जब वह खांसताहै तोबहुत और रक्तसहित मल होताहै ऐसा रोगी अत्यन्त क्षीण होजाताहै व ऐसेही वीर्य्य व पराक्रमेक्षय से भी छातीका रोगी होताहै ३१ इसउरःक्षत अर्थात् छाती के घाववाले रोगका पूर्व्वरूप इसरोग का अप्रकट लक्षण इसके पूर्व्वरूपके वर्णन में कहचुके हैं ३२ अबक्षतक्षीणके असाध्य लक्षण कहतेहैं--इसक्षतरो छातीमें पीड़ाहोतीहै रुधिरही वमन होताहै व खांसीमें काला पीला आदि रुधिरडाकता हैव क्षीणहोकर रक्तमूतने लगताहै पशुलियोंमें कटि व पीठमें जकड़सी होजाती है ३३ इसके साध्य लक्षण—जिस मनुष्य में थोड़े से लक्षणहों व उसके उदरका अग्नि प्रदीप्त बनाहो मन्द न हुआ होय वह बलवान्हो रोगभी थोड़े दिनोंकाहो तो साध्य सम-

परिसंवत्सरोयाप्यः सर्वलिंगंविवर्जयेत् ३४ (सर्वैस्तंदृ हणैर्हाल्यशक्यश्चप्रायशोभवेत् ॥ नान्यार्थशमनोपायोभृशशक्यश्चकर्शनम् ॥ परंदिनसहस्रंतुयदिजीवतिमानवः ॥ सुभिषग्भिरुपाक्रांतस्तरुणश्शोकपीडितः)

इतिराजयक्ष्म निदानम् ॥

धूमोपघाताद्रजसस्तथैव व्यायामरूक्षान्ननिषेवणाच्च ॥ विमार्गगत्वादथभोजनस्य वेगावरोधात्क्षवथोस्तथैव १ प्राणोह्युदानानुगतः प्रदुष्टस्संभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः ॥ निरेतिवक्त्रात्सहसासदोषो मनीषिभिःकासइतिप्रदिष्टः २ पंचकासास्स्मृतावातपित्तश्लेष्मक्षतक्ष-

झना चाहिये व जो लक्षणकमहों पर वर्षदिनसे अधिकका रोग हो तो याप्य अर्थात् कष्टसाध्यजानो व जिसमें सबपूरेलक्षणहों उसे तोवैद्यकोचाहिये कि छोड़दे क्योंकि वहमहाअसाध्यहै ३४॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेक्षयरोगनिदानन्दशमम् १० ॥

दोहा ॥ ग्यरहेंमहँ कहकासके साध्यासाध्य निदान ॥
खांसीजाको कहतहैं देखहिं लोग महान १

कास अर्थात् खांसीरोगके निदान इसरोगके कारण सम्प्राप्ति व निरुक्तितीनों कहतेहैं—नाक मुखमें धुआं व धूलिपैठनेसे बहुत बलकरनेसे रूखे अन्नके खानेसे बहुत जल्दीके साथ भोजनकरनेसे मलमूत्रके वेगके रोकनेसे व छींकके रोकनेसे १ प्राणवायु जो कि हृदयमें रहताहै वह दुष्टहोकर कण्ठमें रहनेवाले उदान वायुके संगमिलकर और दुष्टहोजाताहै फिर कफपित्तकेसंग सुखकी एकाएकी बाहर निकलने लगताहै व फूटेहुये कांसेकेपात्र के शब्दके समान शब्दहोने लगताहै व दोषसहित मुखसे निकलने लगताहै बस इसी रोगको पंडितलोग कास वा खांसी कहते हैं २ बात पित्त कफ क्षत व क्षयसे उत्पन्नहोने के कारण खांसी

येः ॥ क्षयायोपेक्षितास्सर्वेबलिनश्चोत्तरोत्तरम३पूर्वरूपं भवेत्तेषांशूकपूर्णगलास्यता ॥ कंठकंडूश्चभोज्याना मव रोधश्चजायते ४ हृच्छंखपार्श्वोदरमूर्द्धशूली क्षामाननः क्षीणबलस्वरौजाः ॥ प्रसक्तवेगस्तुसमीरणेन भिन्नस्वरः कासातिशुष्कमेव ५ उरोविदाहज्वरवक्त्रशोषैरभ्यर्दित स्तिक्तमुखस्तृषार्त्तः ॥ पित्तेनपीतानिवमेत्कटूनि कासे त्सपांडुःपरिदह्यमानः६प्रलिप्यमानेनमुखेनसीदन्शिरो रुजार्तःकफपूर्णदेहः ॥ अभ्यक्तरुग्गौरवकंडुयुक्तः कासे

पांचप्रकार की होती है यदिशीघ्रही इसके मिटाने का औषध न किया जाय तो यहरोग रोगीको मारहीडालताहै इन में वातसे पित्त प्रबलहोताहै पित्तसे कफ कफसे क्षत क्षत सेक्षय प्रबलहो-ताहै ३ खांसीका पूर्व्वरूप—यह कासरोग जबहोने पर होताहै तो गले व मुखमें धान वा गोहूंके सींकुर के समानकांटे से गड़ने लगतेहैं व गलेमें खजुलीहोने लगतीहै इससे गलासहराने ल-गताहै व अन्नआदि भोजनके पदार्थ भीतर नहीं जाने पाते ४ वातज खांसीका पूर्व्वरूप—हृदय कनपटी पशुली पेट व शिरमें पीड़ाहोने लगतीहै मुखसूखने लगता बल स्वर व पराक्रमक्षी-णहोजातेहैं व सूखीखांसी आतीहै खँखार कुछभीनहीं आता५ पित्तकी खांसीके लक्षण—पित्तकी खांसीमें छातीजलती रहतीहै ज्वरहोता मुखसूख जाताहै इससे पीड़ित पुरुषका मुख तिक्त होजाताहै व प्याससे अति पीड़ितहोताहै व कडू पित्तों को डाकता है रोगी पीलाहोजाताहै व उसके सब अंग जलते से रहते हैं ६ कफकी खांसी के लक्षण—कफज कासरोगमें मुख में सबकहीं कफ लपटा रहताहै बनाय तारसा बंधजाताहै इससे बड़ी ग्लानिहोती है शिरमें पीड़ा होती कफ से देह पूर्ण होजाताहै अरुचि होतीहै बड़ी गरोई के साथ खजुली उठती व जब खांसता है बहुतगाढ़ा

द्रूभृशंसान्द्रकफःकफेन ७ अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्व गजविग्रहैः ॥रूक्षस्योरःक्षतंवायुर्गृहीत्वाकासमावहेत् ८ सपूर्वंकासतेशुष्कंततःष्ठीवेत्सशोणितम् ॥ कंठेनरुजतात्यर्थंविरुग्नेनेवचोरसा ९ शूचीभिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना ॥ दुःखस्पर्शेनशूलेनभेदपीडाभिनापिना १० पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्य्यपीडितः ॥ पारावत इवाकूजन्कासवेगात्क्षतोद्भवात् ११ विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात्॥ घृणिनांशोचतांनृणां व्यापन्नेग्नौत्रयोमलाः १२ कुपिताःक्षयजंकासं कुर्युर्देहक्षय-

कफ गिरताहै ७ क्षतजकासकालक्षण—अतिमैथुन करने गरूभारउठाने वहुत मार्गचलने बलवान् से कुश्तीकरने हाथीघोड़े आदि के संग विग्रहकरने वा दौड़ने से रूखाहोकर पवन छाती में रोग करके खांसी को उत्पन्न करताहै ८ इस क्षतज खांसी वाला पुरुष प्रथम तो सूखा खांसताहै फिर रक्त सहित थूकता है गले में अत्यन्त पीड़ाहोती है वजानो. उसकी छातीफटीजातीहै ९ व छातीमें अतितीक्ष्ण सूइयों के कोचने कीसी पीड़ा होने लगतीहै इससे छातीमें छूनहीं जाता मानों कोई फाड़ेहीडालताहै ऐसी पीड़ासे पीड़ित होजाताहै १० सबजोड़ों में पीड़ाहोती ज्वरहोता ऊपरको श्वासचढ़ती प्यासलगती बोल बदलकर खरखराने लगता व खांसी के वेग के मारे कबूतर के समान गूं २ करने लगता है ये सब लक्षण क्षतज खांसी के हैं ११ क्षयी की खांसी के लक्षण—विषम समय में वह भी कभी वहुत कभी थोड़ा भोजन करने से अति मैथुनकरने से मलमूत्र के रोकने से व घिनघिनी वस्तुओं के शोच करने से अग्नि के मन्द होजाने पर वात पित्त कफ तीनों कुपित होकर क्षयी की खांसी को उत्पन्न करते हैं जो कि शरीर के नाशनेवाली होती

प्रदम् ॥ सगात्रशूलज्वरदाहमोहान् प्राणक्षयंचोपलभे तकाशी ॥ शुष्कंविनिष्ठीवतिदुर्वलस्तुप्रक्षीणमांसोरु धिरंचपूयम् १३ तंसर्वलिंगभृशदुश्चिकित्स्यंचिकित्सि तज्ञाक्षयजंवदंति १४ इत्येवंक्षयजःकासःक्षीणानांदेह नाशनः ॥ साध्योवलवतांवास्यात्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थि तः १५ नवौकदाचित्साध्येतामपिपादगुणान्वितौ ॥ स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्तितः १६ त्रीन्पू र्वान्साधयेत्साध्यान् पथ्यैर्याप्यांस्तुयापयेत् ॥ पूयाभ

है १२ क्योंकि इस खांसीवाला प्राणी अंगों के सूजने शूल उठने ज्वर दाह होने चित्तभ्रम आदि को प्राप्तहोताहै जिनसे प्राणों काही नाशहोताहै व सूखा थूँकताहै अतिदुर्व्वल होजाता है मांस रुधिर व पीव सब क्षीणहोजातेहैं ऐसेतीनोंदोषोंके चिह्नों से युक्त अत्यन्त कष्टसे चिकित्साकरनेके योग्यरोगीको वैद्यलोग क्षयीकी खांसीसे युक्त कहतेहैं१३–१४ साध्य असाध्यके लक्षण- यह क्षयरोगसे उत्पन्न खांसी क्षीण पुरुषोंका तो नाशही करदेती है व बलवानों के लिये साध्य असाध्य भी होती है क्षतजकी खांसीवालेका भी यही हालहोताहै १५ यदि दोनोंकासोंके रोगी युवावस्थाको प्राप्तहों व वैद्य अपनी विद्यामें अतिचतुर हो सब रसादि उसके पास शुद्ध विद्यमानहों तो कदाचित् इन दोनों खांसियोंके रोगी साध्यभी होजायँ नहीं असाध्य तो होतेही हैं वृद्धलोगों के लिये सब क्षयी की खांसी असाध्यही होतीहै अन्य सबप्रकार की खांसियां वृद्धके लिये याप्य अर्थात् साध्य असाध्य दोनों होसक्ती हैं प्रथम की तीन वात पित्त कफ वाली खांसियां साध्य होती हैं इससे औषधसे अच्छी होजातीहैं इससे उनको औषधों से दूरकरना चाहिये १६ व जो खांसी वाला पीवके रंग का लाल वा काला हरा पीला वा नीला थूँकताहै व जिसका

मरुणंश्यावंहरितन्नीलपीतकम् ॥ निष्ठीवेच्छ्वासकासार्त्तोनजीवतिहतस्वरः १७ इतिकासनिदानम् ॥

विदाहिगुरुविष्टंभीरूक्षाभिष्यंदिभोजनैः ॥ शीतपानाशनास्थानरजोधूमातपानिलैः १ व्यायामकर्मभाराध्ववेगघातापतर्पणैः ॥ हिक्काश्वासश्चकासश्चनृणांसमुपजायते २ मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनोयकृत्प्लिहान्त्राणिमुखादिवाक्षिपम् ॥ सघोषवानाशुहिनस्त्यसून्यतस्ततस्तुहिक्केत्यभिधीयतेवुधैः ३ अन्नजांयमलांक्षुद्रांगंभीरां

वोल वदलकर खरखराने लगताहै वह फिर किसी प्रकार नहीं जीसक्ता है १७ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेकासनिदानमेकादशम् ११ ॥

दोहा ॥ बरहैं महँ कह पंचविध हुचकी केर निदान ॥
साध्यासाध्य विचारिकै करहिं वैद्य परमान १

दाह करनेवाले भारी पेट फुलानेवाले रूखे मांस महिषी दुग्धादि गरिष्ठ वस्तु खानेसे वहुत ठण्ढे पानीके पीनेसे ठण्ढेही भोजनकरनेसे वहुत शीतल जलमें स्नानकरनेसे अतिठण्ढे स्थानमें रहने से नाकमुखमें धूलि व धुवां भरहोनेसे प्रचण्ड पवन लगने से १ दण्ड आदि अति परिश्रम करने से अधिकभार उठाने से वहुत मार्ग्गचलनेसे मलमूत्ररोकने से व उपवास करने से मनुष्यों के हुचकी दम व खांसी ये तीनरोग उत्पन्न होतेहैं २ हुचकीके स्वरूपके लक्षण—प्राण वायु वार २ ऊँचेको शब्द सहित चलताहै व कलेजा पिलही आंतों में धकेदेता हुआ वाहर निकलताहै व अधिक शब्दयुक्तहो जिससे वह पवन प्राणोंको हरलेताहै इससे पण्डितलोग उसे हिक्का अर्थात् हुचकी कहते हैं ३ अव हुचकी के भेदों व उसकी सम्प्राप्ति के लक्षण कहते हैं अन्नजा यमला क्षुद्रा गम्भीरा व महती इन पांचप्रकारकी हुच-

महतींतथा ॥ वायुःकफेनानुगतःपंचहिक्काःकरोतिहि ४ कंठोरसोर्गुरुत्वंचवदनस्यकषायता ॥ हिक्कानांपूर्वरूपाणिकुक्षेराटोपएवच ५ पानान्नैरतिसंयुक्तैःसहसापीडितोनिलः ॥ हिक्कयत्यूर्ध्वगोभूत्वातांविद्यादन्नजांभिषक् ६ चिरेणयमलैर्वेगैर्याहिक्कासंप्रवर्त्तते ॥ कंपयेच्चशिरोग्रीवांयमलांतांविनिर्दिशेत् ७ प्रकृष्टकालैर्य्यावेगैर्म्मन्दैस्समभिवर्त्तते ॥ क्षुद्रिकानामसाहिक्काजत्रुमूलात्प्रधावति ८ नाभिप्रवृत्तायाहिक्काघोरागंभीरनादिनी ॥ अनेकोपद्रववतीगंभीरानामसास्मृता ९ (विकृष्टकालैर्यावेगैर्मन्दैःसमभिवर्त्तते ॥ क्षुद्रिकानामसाज्ञेयाजत्रुमूलात्प्रधाविता) मर्माण्यपीडयंतीवसततंयाप्रवर्त्तते॥ महाहिक्केतिसाज्ञेया

कियोंको पवन कफ में आकर उत्पन्न करताहै ४ हुचकीका पूर्वरूप कण्ठ व छाती की जकड़ाहट मुखमें कसैलापन व कुक्षिका फूलारहना येसबहुचकी जब आनेपर होती हैं तब प्रथमसे होते हैं ५ अन्नजानामहुचकीकेलक्षण—अति भोजनकरने व पानीपीनेसे एकाएकी पीड़ितहोकरपवनऊपरकोचलकरअव्यक्तशब्दहिक् कराने लगताहै उसको वैद्य अन्नजा हुचकीजाने ६ यमलानामहुचकीके लक्षण—जिस हुचकीमें बड़ीदेरमेंएकहीबारमें दो २ बार हुचकीआवे व शिर और गलेको कँपावे उसको यमला हुचकी कहते हैं ७ क्षुद्रानाम हुचकीके लक्षण—जो हुचकी बहुत जल्द२ आवे पर धीरे२ही आवे उसे क्षुद्राहुचकी कहते हैं व वह दोनों हँसियोंकी जड़से गलेतक दौड़ती रहती है ८ गम्भीरानामहुचकीके लक्षण—जोहुचकी बड़े घोरनादसेनाभिसे उत्पन्नहोती है व उसमें अनेक उपद्रव जुड़ेहोतेहैं उसे गम्भीरा हुचकी कहते हैं ९ महतीनाम हुचकी के लक्षण—जो हुचकीनाभि आदि सुकुमार अंगोंको पीड़ित करतीहुई बार २ आती है व सबअंगों को कँपा

वविपद्यते ६ ऊर्ध्वश्वसितियोदीर्घं नचप्रत्याहरत्यधः ॥ श्लेष्मावृतमुखंश्रोताक्रुद्धगन्धवहार्दितः ७ ऊर्ध्वदृष्टिर्विपश्यंश्च विभ्रान्ताक्षइतस्ततः ॥ प्रमुह्यद्वेदनार्त्तश्च शुष्कास्योह्यतिपीडितः ८ ऊर्ध्वश्वासेप्रकुपितेह्यधःश्वासो निरुध्यते ॥ मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्ध्वश्वासस्तस्यैवहंत्यसून् ९ यश्चश्वसितिविच्छिन्नं सर्वप्राणेनपीडितः ॥ नवाश्वसितिदुःखार्तो मर्मच्छेदरुगर्दितः १० आनाहस्वेद मूर्च्छार्त्तो दह्यमानेनवस्तिना ॥ विप्लुताक्षःपरिक्षीणःश्वसन्रक्तैकलोचनः ११ विचेताःपरिशुष्कास्यो विवर्णःप्र

वसइस रोगको महाश्वासकहतेहैं इससेयुक्तपुरुषशीघ्रहीमरजाताहै ६ऊर्ध्वश्वासके लक्षण—जोरोगी ऊपरको तो बड़ेज़ोरसे श्वास खींचताहोवनीचेको फिर न लौटासकाहो व मुख औरनसोंके मुखकफसे घिरेरहतेहों व कोपकियेहुये वायुसे पीड़ितरहताहो ७ बहुधाऊपरहीको दृष्टिकियेरहैचंचलनेत्रहोनेके कारण इधरउधर घबरायासा देखाकरै पीड़ासे पीड़ितहोमोहितरहै मुखसूखतारहै किसी वस्तुमें उसका चित्त न लगै—बस जिसमें ये लक्षण होते हैं उसे ऊर्ध्वश्वास कहतेहैं ८ इसश्वासके कारण जबऊर्ध्वश्वास कोपकरताहै तो नीचेका रुँकजाताहै इससे रोगी मोहित होता व तवाँने लगताहै बस तब ऊर्ध्वश्वास उसरोगीके प्राणोंको हरलेताहै ९ छिन्नश्वासकेलक्षण—जोप्राणीरह२करश्वासलेताहो व सबप्राणोंसे पीड़ितहो वा किसी कष्टसे पीड़ितहोने पर श्वास न ले सक्ताहो हृदयमें ऐसी पीड़ाहो मानों कोई चीड़ेही डालता है इससे पीड़ितरहै १० पेट फूला रहै पसीना अधिक हो मूर्च्छा आने से पीड़ितरहै पेड़ूजलासा विदित हो नेत्र सजलहो घूमते रहैं बनांय क्षीण होजाय श्वासलेते २ एक नेत्र बहुत लाल होजाय ११ चित्त बिगड़ासा बनारहै मुख सूखाही बनारहै रंग

लपञ्जरः ॥ छिन्नश्वासेनवैक्षीणः सशीघ्रंविजहात्यसून् १२ प्रतिलोमंयदावायुः स्रोतांसिप्रतिपद्यते ॥ ग्रीवांशिरश्चसंगृह्यश्लेष्माणंसमुदीर्य्यच १३ करोतिपीनसंतेन रुद्धोघुर्घुरकन्तथा ॥ अतीवतीव्रवेगंच श्वासम्प्राणप्रपीडकम् १४ प्रताम्यतिसवेगेन त्रस्यतेसन्निरुध्यते ॥ प्रमोहंकासमानश्चसगच्छतिमुहुर्मुहुः १५ श्लेष्मणामुच्यमानेन भृशम्भवतिदुःखितः ॥ तस्यैवचविमोक्षान्ते मुहूर्त्तंलभतेसुखम् १६ तस्योध्वंश्वसतेकण्ठः कृच्छ्राच्छक्नोतिभाषितुम् ॥ नचापिनिद्रांलभतेशयानः श्वासपीडितः १७ पार्श्वेतस्यावगृह्णातिशयानस्यसमीरणः ॥ आसीनोलभतेसौख्यमुष्णंचैवाभिनन्दति १८ उच्छ्रि

देहका बिरंग होजाय अनर्थ वचन बकता रहै इस छिन्नश्वास रोगसे जो पुरुष विच्छिन्न होजाताहै इससे सब अंगढीलेहोजाते हैं बस वह रोगी शीघ्रही प्राणोंको छोड़ देताहै १२ तमकश्वास के लक्षण—जववायु ग्रीवा व शिरको जकड़के व कफको ऊपर को उभाड़कर नसोंमें उलटाचढ़ताहै १३ तबकफर्ककरपीनस रोगको करतावगला घुर्घुराने लगताहै वअत्यन्त पीड़ाकरनेवाले अतिवेगवान् श्वासको चलानेलगताहै १४ व वेगसे तवॅनेलगता है भयसे व्याकुलहोजाता श्वासको रुँक २ करलेनेलगताहै मोह होता बीच २ में खाँसीभी आनेलगती है ऐसावार २ होतारहता है १५ खाँसीआनेपर कफ गिरतेसमय वड़ादुःखपाताहै परन्तु उसके गिरजानेके पीछे एक दो घड़ी फिर सुखपाताहै १६ व उसरोगीके कण्ठसे ऊपरहीको श्वासचलता व गला खरखराया करताहै व बडेकष्टसे बोलसक्ताहै निद्राउसको नहींआती श्वासों से पीड़ितयोंहीं पड़ारहताहै १७ जब वह लेटताहै तो पशुरियों को पवन जकड़ादेताहै बैठनेपर कुछ सुखपाताहै व उष्णवस्तु

ताक्षोललाटेन खिद्यताभृशमार्त्तिमान् ॥ विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहुश्चैवावधम्यते १९मेघांबुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चविवर्द्धते ॥ सयाप्यस्तमकःसाध्योयदिवास्यान्नवोत्थितः २० ज्वरमूर्च्छापरीतस्यविद्यात्प्रतमकन्तुतम्॥ उदावर्त्तरजोजीर्णक्लिन्नकायनिरोधतः २१ तमसावर्द्धतेत्यर्थं शीतैश्चाशुप्रशाम्यति ॥ मज्जतस्तसीवास्य विद्यात्प्रतमकन्तुतम् २२ रूक्षायासोद्भवःकोष्ठे क्षुद्रोवातमुदीरयेत् ॥ क्षुद्रश्वासोनसोत्यर्थंदुःखेनांगप्रबाधकः २३ हिनस्तिनसगात्राणि नदुःखाययथेतरे ॥ नचभोजनपा

की चाहना सदारखताहै १८ नेत्रऊपरको तनेसे रहतेहैं शिरकी पीड़ासे अत्यन्त पीड़ितरहताहै मुखसूखाकरता वार२श्वासआते हैं व वार २ उसकादेह हिलतारहताहै १९यहश्वासरोगबदरीबूँदी शीतकाल वा ठण्ढीवस्तुओंके खानेसे पुरवईहवालगनेसे बढ़ताहै यह तमकनाम श्वास यदि थोड़े दिनोंका होतो साध्य होताहै पर यदि बहुतदिनोंका होजाताहै तो साध्य असाध्य दोनोंहोताहै २०. इसी तमकश्वासवालेके जब ज्वर और मूर्च्छा आनेलगे तो उसीका प्रतमकनाम होजाताहै प्रतमकके और लक्षण व कारण ऐसे होते हैं—ऊपरको श्वासचढ़ने से धूलिनाकमें जानेसे अजीर्ण होनेसे बहुतभीगनेसे मलमूत्ररोकनेसे यहरोग बहुत बढ़ताहै २१ यह श्वासक्रोधादि तमोगुण युक्त होनेसे अधिक बढ़ताहै व शीत पदार्थोंसे शान्तरहताहै व रोगीमानों तमोगुणमें डूबाहीकरताहै वस जब ये लक्षणहों तो उसे प्रतमक नाम श्वासजानो २२ क्षुद्रनाम श्वासके लक्षण—रूखे पदार्थ खाने व अधिक परिश्रम करनेसे कुछ छोटासा पवनऊपरको उठताहै उसीको क्षुद्रश्वास कहते हैं यह अतिदुःखसे अंगोंको नहीं बाधितकरताहै २३ व न अंगोंको तोड़ही डालताहै व न इसमें वैसादुःखही होताहै जैसा

नानांनिरुणद्ध्युचितांगतिम् २४ नेंद्रियाणांव्यथान्नापिकांचिदापादयेद्रुजम् ॥ससाध्यउक्तोबलिनस्सर्वेचाव्यक्तलक्षणाः २५ क्षुद्रःसाध्यतमस्तेषां तमकः कृच्छ्रउच्यते ॥ त्रयःश्वासानसिद्ध्यन्ति. तमकोदुर्बलस्यच २६ कामम्प्राणहरारोगाबहवोनतुतेतथा ॥ यथाश्वासश्चहिक्का च हरतःप्राणमाशुवै २७ ॥ इतिश्वासनिदनम् ॥

अत्युच्चभाषणविषाध्ययनाभिघात सन्दूषणैःप्रकुपिताःपवनादयस्तु ॥ स्रोतस्सुतेस्वरवहेषुगतःप्रतिष्ठां हन्युस्स्वरम्भवतिचापिहिषड्विधःसः १ वातेनकृष्णनय

कि शोरोंमें होताहै व भोजन पानादिकोंके मार्गोंकोभी यह नहीं रोंकता २४ इन्द्रियोंको व्यथित नहींकरता न कुछ पीड़ाही उत्पन्न करताहै यह यदि बलीपुरुषकेहो अवश्यही साध्यहो क्योंकि इसके सब लक्षण साध्यहीके होतेहैं २५ बस सबोंमेंसे क्षुद्रनाम श्वास अतिशय साध्यहोताहै व तमक कष्टसे साध्यहोताहै वाकी तीनकभी सिद्धनहींहोते असाध्यहीहोते हैं व यदि दुर्बल पुरुषकेहोता है तो तमकभी असाध्यही होजाता है २६ जैसे श्वास व हुचकी ये दोनों रोग शीघ्रही प्राणहरलेते हैं इसप्रकार इतनी जल्दीकोई भी रोग प्राणोंको नहींहरताहै २७ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेश्वासनिदानन्त्रयोदशम् १३ ॥

दोहा ॥ कह स्वरभेद निदान सब चौदहयें महँ ठीक ॥
देखहिं लोग सुजानसब जो सबभाँति प्रवीन १

स्वरभेदका निदान—बड़े ऊँचेशब्दके बोलनेसे—विषखाने से बड़ेजोरसे वेदादि पढ़नेसे कण्ठमें लाठीआदिके चोटलगजानेसे वात पित्त कफादिक कुपितहोकर स्वर निकलनेवाली नाड़ियोंमें जाकर स्वरको नाशकरदेते हैं वह स्वरभेद वात पित्त कफ सन्निपात क्षय व मेद इनभेदोंसे ६ प्रकारका होताहै १ वात से

नाननमूत्रवर्चाभिन्नंशनैर्वदतिगर्द्दभवत्स्वरंच ॥ पित्तेन पीतनयनाननमूत्रवर्चाब्रूयाद्गलेनसविदाहसमन्वितेन २ ब्रूयात्कफेनसततंकफरुद्धकण्ठःस्वल्पंशनैर्वदतिचापिदिवाविशेषात् ॥ सर्वात्मकंभवतिसर्वविकारसम्पत्तंचाप्यसाध्यमृषयःस्वरभेदमाहुः ३ धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमाप्नुयाच्चवाक्येपुचापिहतवाक्परिवर्जनीयः ॥ अन्तर्गतंस्वरमलक्ष्यपदंचिरेणमेदोन्वयाद्वदतिदिग्धगलस्तृषार्त्तः ४ क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापि चिरोत्थितोयः सहजोपजा

उत्पन्न स्वरभेद के लक्षण—वायुके स्वरभेदमें नेत्र मुख मूत्र मल ये सब रोगीके कालेहोजाते हैं व रोगी फटेहुये स्वरसे वा गदहे के समान बोलने लगता है पित्तके स्वरभेदके लक्षण—पित्तकेस्वरभेदमें रोगीके नेत्र मुख मूत्र व मल सब पीलेहोजाते हैं व बोलनेके समय उसकागला जलनेलगताहै २ कफके स्वरभेदकेलक्षण—कफके स्वरभेदमें कफसे गला रूँधउठताहै व थोड़ा वहभी धीरेसेरोगी बोलसक्ताहै वहभी दिनमें बहुत कमबोलताहै सन्निपातजस्वरभेद के लक्षण—सन्निपातके स्वरभेदमें वात पित्त कफ तीनों के सबलक्षणहोते हैं इसी से ऋषियों ने इस स्वर भेदको असाध्यकहाहै ३ क्षयसे उत्पन्न स्वरभेद के लक्षण—धातुक्षयसे उत्पन्न स्वरभेदवालेके बोलनेके समय मुखसे धुआँ निकलनेलगताहै व धातुभी क्षयहोजाताहै व बोलनेके समय वाणीहत हो जाती है अच्छेप्रकार बोलानहीं जाताहै ऐसा रोगी असाध्यहोता है इससे इसकी औषध न करनी चाहिये मेद अर्थात् चर्बी से उत्पन्न स्वरभेदके लक्षण—इस स्वरभेद में भीतर से बड़ी देर में स्वरबाहर निकलताहै व रोगी के गलेमें चर्बी आकर लपटजाती इससे प्यास अधिकलगती है व बोलनहींसक्ता ४ इसके असाध्यलक्षण अतिक्षीण वृद्ध दुर्बल के जब यह रोगहो और बहुत

तः ॥ मेदस्विनःसर्वसमुद्भवश्च स्वरामयोयःसनासिद्धि मेति ५   ॥ इतिस्वरनिदानम् ॥

वातादिभिः शोकभयातिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूप गंधैः ॥ अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदंतकषायवक्त्रश्चमतो निलेन १ कट्वम्लमुष्णंविरसंचपूति पित्तेनविद्याल्लव णंचवक्त्रम् ॥ माधुर्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यविबद्धसम्बद्ध युतंकफेन २ अरोचकेशोकभयानिलोभ क्रोधाद्यहृद्याशुचिगन्धजेस्यात् ॥ स्वाभाविकंचास्यमथारुचिश्चत्रिदोषजेनैकरसंभवेत्तु ३ हृच्छूलपीडनयुतंपवनेनपित्तात्तृड्

दिनों का होजाय वा जन्मके संगही से उसकेरोग उत्पन्नहुआहो चर्वी के स्वरभेद वाले को वा सन्निपातज स्वर भेद्रवाले को जब स्वरभेद रोगहोताहै महा असाध्यहीहोता है ५ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादे स्वरभेदनिदानञ्चतुर्दशस् १४ ॥

दोहा ॥ पन्दरहेंमहँ कह अरोचक निदान बहुभांति ॥
देखहिंसुजन विचारिकै निजमनगुनि२पांति १

अरोचक के निदान वातादिकों से अलग २ वा तीनों के मिलने से सन्निपात से शोक भय अतिलोभ क्रोध मनविनाने वाले अन्न रूप व गन्ध इन्हीं सबप्रकारोंसे अरोचकहोतेहैं उनमें वायुसे उत्पन्न अरोचक में दांत गोंठिले व मुखकसैला होजाता है १ व पित्तके अरोचकमें कडुआ खट्टाउष्ण रसरहित व दुर्गंधियुक्तमुखहोताहै व कफके अरोचकमें खारी मीठा फेना सहित गरुआ ठण्ढा बंधासा कफभराहुआ मुखहोजाताहै २ शोकादि के अरोचक के लक्षण–शोक भय अतिलोभ क्रोधअपवित्र दुर्गंधयुक्त अरोचक में मुखजैसाका तैसा स्वाभाविक बनारहताहै व सन्निपात के अरोचक में एकरसमुख का नहींरहता किन्तु खट्टा मीठा कसैला आदि अनेक प्रकारका रस मुखमें होजाता है ३

नाननमूत्रवर्चाभिन्नंशनैर्वदतिगर्द्दभवत्स्वरंच ॥ पित्तेन पीतनयनाननमूत्रवर्चाब्रूयाद्गलेनसविदाहसमन्वितेन २ ब्रूयात्कफेनसततंकफरुद्धकण्ठःस्वल्पंशनैर्वदतिचापिदिवाविशेषात् ॥ सर्वात्मकंभवतिसर्वविकारसम्पत्तंचाप्यसाध्यमृषयःस्वरभेदमाहुः ३ धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमाप्नुयाच्चवाक्येषुचापिहतवाक्परिवर्जनीयः ॥ अन्तर्गतंस्वरमलक्ष्यपदंचिरेणमेदोन्वयाद्वदतिदिग्धगलस्तृषार्त्तः ४ क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापि चिरोत्थितोयः सहजोपजा

उत्पन्न स्वरभेद के लक्षण—वायुके स्वरभेदमें नेत्र मुख मूत्र मल ये सब रोगीके कालेहोजाते हैं व रोगी फटेहुये स्वरसे वा गदहे के समान बोलने लगता है पित्तके स्वरभेदके लक्षण—पित्तकेस्वर भेदमें रोगीके नेत्रमुख मूत्र व मल सब पीलेहोजाते हैं व बोलनेके समय उसकागला जलनेलगताहै २ कफके स्वरभेदकेलक्षण—कफके स्वरभेदमें कफसे गला रूँधउठताहै व थोड़ा वहभी धीरेसेरोगी बोलसक्राहै वहभी दिनमें बहुत कमबोलताहै सन्निपातजस्वरभेद के लक्षण—सन्निपातके स्वरभेदमें वात पित्त कफ तीनों के सबलक्षणहोते हैं इसी से ऋषियों ने इस स्वर भेदको असाध्यकहाहै ३ क्षयसे उत्पन्न स्वरभेद के लक्षण—धातुक्षयसे उत्पन्न स्वरभेदवालेके बोलनेके समय मुखसे धुआँ निकलनेलगताहै व धातुभी क्षयहोजाताहै व बोलनेके समय वाणीहत होजाती है अच्छेप्रकार बोलानहीं जाताहै ऐसा रोगी असाध्यहोता है इससे इसकी औषध न करनी चाहिये मेद अर्थात् चर्बी से उत्पन्न स्वरभेदके लक्षण—स्वरभेद में भीतर से बड़ी देर में स्वरबाहर निकलताहै व रोगी के गलेमें चर्बी आकर लपटजाती इससे प्यास अधिकलगती है व बोलनहींसका ४ इसके असाध्यलक्षण अतिक्षीण वृद्ध दुर्बल के जब यह रोगहो और बहुत

तः ॥ मेदस्विनःसर्वसमुद्भवश्च स्वरामयोयःसनासिद्धि मेति ५ ॥ इतिस्वरनिदानम् ॥

वातादिभिः शोकभयातिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूप गंधैः ॥ अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदंतकषायवक्रश्चमतो निलेन १ कट्वम्लमुष्णांविरसंचपूति पित्तेनविद्याल्लव णंचवक्त्रम् ॥ माधुर्य्यपैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यविबद्धसम्बद्ध युतंकफेन २ अरोचकेशोकभयातिलोभ क्रोधाद्यहृद्याशु चिगन्धजेस्यात् ॥ स्वाभाविकंचास्यमथारुचिश्चत्रिदो षजेनैकरसंभवेत्तु ३ हृच्छूलपीडनयुतंपवनेनपित्तात्तृड्

दिनों का होजाय वा जन्मके संगही से उसकेरोग उत्पन्नहुआहो चर्वी के स्वरभेद वाले को वा सन्निपातज स्वर भेदवाले को जब स्वरभेद रोगहोताहै महा असाध्यहीहोता है ५ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादे स्वरभेदनिदानञ्चतुर्दशम् १४ ॥

दोहा ॥ पन्दरहेंमहँ कह अरोचक निदान बहुभांति ॥
देखहिंसुजन विचारिकै निजमनगुनि२पांति १

अरोचक के निदान वातादिकों से अलग २ वा तीनों के मिलने से सन्निपात से शोक भय अतिलोभ क्रोध मनघिनाने वाले अन्न रूप व गन्ध इन्हीं सबप्रकारोंसे अरोचकहोतेहैं उनमें वायुसे उत्पन्न अरोचक में दांत गोंठिले व मुखकसैला होजाता है १ व पित्तके अरोचकमें कडुआ खट्टाउष्ण रसरहित व दुर्गंधि-युक्तमुखहोताहै व कफके अरोचकमें खारी मीठा फेना सहित गरुआ ठण्ढा बंधासा कफभराहुआ मुखहोजाताहै २ शोकादि के अरोचक के लक्षण—शोक भय अतिलोभ क्रोधअपवित्र दुर्गंध-युक्त अरोचक में मुखजैसाका तैसा स्वाभाविक बनारहताहै व सन्निपात के अरोचक में एकरसमुख का नहींरहता किन्तु खट्टा मीठा कसैला आदि अनेक प्रकारका रस मुखमें होजाता है ३

दाहचोषबहुलंसकफप्रसेकम् ॥ श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहु भिश्चविद्याद्वैगुण्यमोहजडताभिरथापरंच ४ ॥

॥इत्यरोचक निदानम् ॥

दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्बीभत्सालोकनादिभिः ॥ छर्दयःपंचविज्ञेयास्तासांलक्षणमुच्यते १ अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि ॥ अकालेचातिमात्रैश्चतथासात्म्यैश्चभोजनैः २ श्रमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्क्रिमिदोषतः ॥ नार्य्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः ३ बीभत्सैर्हेतुभिश्चान्यैर्द्रुतमुत्क्लेशतोबलात् ॥ छादयन्नाननंवेगैरर्दय

वायुके अरोचकमें हृदयमें शूल व पीड़ा होतीहै व पित्तसेउत्पन्न अरोचक में प्यास लगती दाहहोता व चोंकना होताहै व कफके अरोचक में मुखसे कफ गिराकरता है व सन्निपात के अरोचक में पीड़ाअधिकहोतीहै मनकीव्याकुलता मोहजड़तातभीहोतीहैं ४॥
इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽरोचकनिदानम्पञ्चदशम् १५॥

दोहा ॥ सोलहयें महँ छर्दि के कहे निदान विचारि ॥
जाहि वमन डाकन कहत सकल वैद्यनिर्द्धारि १

छर्दि अर्थात् डाकने के निदान अलग अलग दुष्टदोषों से वा मिले हुये दोषोंसे वा बहुत घिनघिने सड़ेघाव आदि के देखने से पांच प्रकारके वमनडाक वा रदहोतेहैं उनसवोंके लक्षण कहते हैं १ बहुत पतले पदार्थों के पीने खानेसे भति चिकने जिन के खाने को जी नहीं चाहता बहुत खारी अकालमें भोजन करने से वहुत खालेनेसे व जो अन्नादि अपने को न पचताहो उससे खानेसे२श्रमसे भयसे उबनेसे अजीर्णसे क्रमियोंके दोपसे गर्भवती स्त्रीके लड़केके होनेका समय आजानेसे व बहुतजल्द खाने से३ वा अन्य वीभत्स घिनघिनेकारणोंसे जैसे कि पीवमज्जारुधिर अभक्ष्यमांसादिकों के देखनेसे उकलाई लगआती है बस मनुष्य

ङ्गभंजनैः ॥ निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावंति ४ (अत्यतामपरीतस्यच्छर्देर्वंसंभवोध्रुवम्) हृल्लासोद्गार रोधश्चप्रसेकोलवणस्तनुः ॥ द्वेषोन्नपानेचभृशंवमीनां पूर्वलक्षणम् ५ हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्तिकास स्वरभेदतोदैः ॥ उद्गारशब्दप्रबलंसफेनंविच्छिन्नकृष्णंत नुकंकषायम् ६ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनार्त्तोनिलाच्छ र्दयतीहदुःखम् ॥ मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्द्धताल्वक्षिसं तापतमोभ्रमार्त्तः ७ पीतंभृशोष्णंहरितंसतिक्तंधूम्रंचपि

के मुख गले को भीतरका मल आच्छादित कर लेता है अंगों को मानोंतोड़ने लगताहै व मुखके मलको गिराने लगता है इसी रोग को छर्दि वमन वान्त डाकना वा रद करना कहते हैं ४ छर्दिके पूर्वरूपके लक्षण—वमन जब होने पर होता है तो मुँहमें पानी छूटने लगताहै डकारना वन्दहोजाताहै मुखमें नुनखारा पानी छूटने लगताहै पसीना होभाताहै खाने पीनेमें अरुचि होजाती है यह सब प्रकारके वमनोंका पूर्व लक्षण है ५ वातज छर्दि के लक्षण-हृदय व पशुलियोंमें पीड़ाहोती मुख सूखतारहताहै मुखमें व नाभिमें पीड़ाहोती खाँसी आती स्वर भेदहोजाता कोचने कीसी पीड़ाहोने लगती है वान्त करनेके समय अधिक ओ २ करनेलगताहै फेनासहित डाकताहै थँभ २ करथोड़ा २ वमनहोता वा कसैला रदहोता ६ बड़े कष्टसे थो- ड़ासा वमनहोता पर वेगबड़ाभारी होताहै इसप्रकार वायु वाला बड़ेदुःखसे डाकताहै पित्तके वमनके लक्षण—मूर्च्छा आती प्यास लगती मुख सूखता जाता शिर तालू नेत्रजलने लगते आगे अँधेरासाहोजाता भ्रमहोता व पीड़ाहोतीहै ७ पीला अति गरम हरा तीत व धुमैंसा जलताहुआ वमन पित्तवाला करता है कफकी छर्दिके लक्षण—तवाँतारहना मुहँमीठाबनारहना कफका

दाहचोषबहुलंसकफप्रसेकम् ॥ श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहु भिश्चविद्याद्वैगुण्यमोहजडताभिरथापरंच ४ ॥

इत्यरोचक निदानम् ॥

दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्बीभत्सालोकनादिभिः ॥ छर्दयःपं चविज्ञेयास्तासांलक्षणमुच्यते १ अतिद्रवैरतिस्निग्धैर हृद्यैर्लवणैरपि ॥ अकालेचातिमात्रैश्चतथासात्म्यैश्चभो जनैः २ श्रमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्क्रमिदोषतः ॥ ना र्य्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः ३ बीभत्सैर्हेतु भिश्चान्यैर्द्रुतमुत्क्लेशतोबलात् ॥ छादयन्नाननंवेगैरर्दय

वायुके अरोचकमें हृदयमें शूल व पीडा होतीहै व पित्तसेउत्पन्न अरोचक में प्यास लगती दाहहोता व चोंकना होताहै व कफके अरोचक में मुखसे कफ गिराकरता है व सन्निपात के अरोचक में पीड़ाअधिकहोतीहै मनकीव्याकुलता मोहजड़तातभीहोतीहैं ४॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽरोचकनिदानम्पञ्चदशम् १५॥

दोहा ॥ सोलहयें महँ छर्दि के कहे निदान विचारि ॥
जाहि वमन डाकन कहत सकल वैद्यनिर्द्धारि १

छर्दि अर्थात् डाकने के निदान अलग अलग दुष्टदोषों से वा मिले हुये दोषोंसे वा वहुत घिनघिने सड़ेघाव आदि के देखने से पांच प्रकारके बमनडाक वा रदहोतेहैं उनसबोंके लक्षण कहते हैं १ वहुत पतले पदार्थों के पीने खानेसे अति चिकने जिन के खाने को जी नहीं चाहता बहुत खारी अकालमें भोजन करने से बहुत खालेनेसे व जो अन्नादि अपने को न पचताहो उससे खानेसे२श्रमसे भयसे ऊवनेसे अजीर्णसे कृमियोंके दोषसे गर्भ- वती स्त्रीके लड़केके होनेका समय आजानेसे व बहुतजल्द खाने से३ वामन्य बीभत्स घिनघिनेकारणोंसे जैसे कि पीवमज्जारुधिर अभक्ष्यमांसादिकों के देखनेसे उकलाई लगआती है वस मनुष्य

ङ्गभंजनैः ॥ निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावति ४ (अत्यतामपरीतस्यछर्देर्वैसंभवोध्रुवम्) हृल्लासोद्गार रोधश्चप्रसेकोलवणस्तनुः ॥ द्वेषोन्नपानेचभृशंवमीनां पूर्वलक्षणम् ५ हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्तिकास स्वरभेदतोदैः ॥ उद्गारशब्दप्रबलंसफेनंविच्छिन्नकृष्णंत नुकंकषायम् ६ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनार्त्तोनिलाच्छ र्दयतीहदुःखम् ॥ मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्द्धताल्वक्षिसं तापतमोभ्रमार्त्तः ७ पीतंभृशोष्णंहरितंसतिक्तंधूम्रंचपि

के मुख गले को भीतरका मल आच्छादित कर लेता है अंगों को मानोंतोड़ने लगताहै व मुखके मलको गिराने लगता है इसी रोग को छर्दि वमन बान्त डाकना वा रद करना कहते हैं ४ छर्दिके पूर्वरूपके लक्षण–वमन जब होने परहोता है तो मुँहमें पानी छूटने लगताहै डकारना बन्दहोजाताहै मुखमें नुनखारा पानी छूटने लगताहै पसीना होमाताहै खाने पीनेमें अरुचि होजाती है यह सब प्रकारके वमनोंका पूर्व लक्षण है ५ वातज छर्दि के लक्षण-हृदय व पशुलियोंमें पीड़ाहोती मुख सूखतारहताहै मुखमें व नाभिमें पीड़ाहोती खाँसी आती स्वर भेदहोजाता कोचने कीसी पीड़ाहोने लगती है वान्त करनेके समय अधिक ओ २ करनेलगताहै फेनासहित डाकताहै थँभ २ करथोड़ा २ वमनहोता वा कसैला रदहोता ६ बड़े कष्टसे थोड़ासा वमनहोता पर वेगबड़ाभारी होताहै इसप्रकार वायु वाला बड़ेदुःखसे डाकताहै पित्तके वमनके लक्षण–मूर्च्छा आती प्यास लगती मुख सूखता जाता शिर तारू नेत्रजलने लगते आगे अँधेरासाहोजाता भ्रमहोता व पीड़ाहोतीहै ७ पीला अति गरम हरा तीत व धुमैला जलताहुआ वमन पित्तवाला करता है कफकी छर्दिके लक्षण–तबाँतारहना मुहँमीठाबनारहना कफका

दाहचोषबहुलंसकफप्रसेकम् ॥ श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहु भिश्चविद्याद्वैगुण्यमोहजड़ताभिरथापरंच ४ ॥

इत्यरोचक निदानम् ॥

दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्बीभत्सालोकनादिभिः ॥ छर्दयःपंचविज्ञेयास्तासांलक्षणमुच्यते १ अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि ॥ अकालेचातिमात्रैश्चतथासात्म्यैश्चभोजनैः २ श्रमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्कृमिदोषतः ॥ नार्य्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः ३ वीभत्सैर्हेतुभिश्चान्यैर्द्रुतमुत्क्लेशतोबलात् ॥ छादयन्नाननंवेगैरर्दय

वायुके अरोचकमें हृदयमें शूल व पीड़ा होतीहै व पित्तसेउत्पन्न अरोचक में प्यास लगती दाहहोता व चोंकना होताहै व कफके अरोचक में मुखसे कफ गिराकरता है व सन्निपात के अरोचक में पीड़ाअधिकहोतीहै मनकीव्याकुलता मोहजड़तातभीहोतीहैं ४॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽरोचकनिदानम्पञ्चदशम् १५॥

दोहा ॥ सोलहयें महँ छर्दि के कहे निदान विचारि ॥
जाहि वमन डाकन कहत सकल वैद्यनिर्द्धारि १

छर्दि अर्थात् डाकने के निदान अलग अलग दुष्टदोषों से वा मिले हुये दोषोंसे वा बहुल घिनघिने सड़ेघाव आदि के देखने से पांच प्रकारके बमनडाक वा रदहोतेहैं उनसबोंके लक्षण कहते हैं १ बहुत पतले पदार्थों के पीने खानेसे अति चिकने जिन के खाने को जी नहीं चाहता बहुत खारी अकालमें भोजन करने से वहुत खालेनेसे व जो अन्नादि अपने को न पचताहो उससे खानेसे२श्रमसे भयसे ऊबनेसे अजीर्णसे कृमियोंके दोषसे गर्भवती स्त्रीके लड़केके होनेका समय आजानेसे व वहुतजल्द खाने से३ वाभत्स बीभत्स घिनघिनेकारणोंसे जैसे कि पीबमज्जारुधिर अभक्ष्यमांसादिकों के देखनेसे उकलाई लगआती है बस मनुष्य

ह्यंगभंजनैः ॥ निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावति ४ (अत्यंतामपरीतस्यछर्देर्वसंभवोध्रुवम्) हृल्लासोद्गार रोधश्चप्रसेकोलवणस्तनुः ॥ द्वेषोन्नपानेचभृशंवमीनां पूर्वलक्षणम् ५ हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्तिकास स्वरभेदतोदैः ॥ उद्गारशब्दप्रबलंसफेनंविच्छिन्नकृष्णंत नुकंकषायम् ६ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनार्तोनिलाच्छ र्दयतीहदुःखम् ॥ मूर्च्छापिपासामुखशोषमूर्द्धताल्वक्षिसं तापतमोभ्रमार्त्तः ७ पीतंभृशोष्णंहरितंसतिक्तंधूम्रंचपि

के मुख गले को भीतरका मल आच्छादित कर लेता है अंगों को मानोंतोड़नें लगताहै व मुखके मलको गिरानें लगता है इसी रोग को छर्दि वमन वान्त डाकना वा रद करना कहते हैं ४ छर्दिके पूर्वरूपके लक्षण—वमन जब होने परहोता है तो मुँहमें पानी छूटने लगताहै डकारना वन्दहोजाताहै मुखमें नुनखारा पानी छूटने लगताहै पसीना होआताहै खाने पीनेमें अरुचि होजाती है यह सब प्रकारके वमनोंका पूर्व्व लक्षण है ५ वातज छर्दि के लक्षण-हृदय व पशुलियोंमें पीड़ाहोती मुख सूखतारहताहै मुखमें व नाभिमें पीड़ाहोती खाँसी आती स्वर भेदहोजाता कोचने कीसी पीड़ाहोने लगती है वान्त करनेके समय अधिक आो २ करनेलगताहै फेनासहित डाकताहै थँभ २ करथोड़ा २ वमनहोता वा कसैला रदहोता ६ वड़े कष्टसे थोड़ासा वमनहोता पर वेग वड़ाभारी होताहै इसप्रकार वायु वाला वड़ेदुःखसे डाकताहै पित्तके वमनके लक्षण—मूर्च्छा आती प्यास लगती मुख सूखता जाता शिर तारू नेत्रजलने लगते आगे अँधेरासाहोजाता भ्रमहोता व पीड़ाहोतीहै ७ पीला अति गरम हरा तीत व धुआँसा जलताहुआ वमन पित्तवाला करता है कफकी छर्दिके लक्षण—तवाँतारहना मुँहमीठावनारहना कफका

त्तेनवमेत्सदाहम् ॥ तंद्रास्यमाधुर्य्यकफप्रसेकसंतोषनिद्रा रुचिगौरवार्त्तः ॥ स्निग्धंघनंस्वादुकफांविशुद्धंसरोमहर्षं। ल्परुजंवमेत्तु ८ शूलाविपाकारुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोह प्रबलाप्रसक्ता ॥ छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्लनीलसांद्रोष्णर क्तंवमतांनृणांस्यात् ९ विड्भेदमूत्राम्बुवहानिवायुःस्रो तांसिसंरुध्ययदोर्ध्वमेति ॥ उत्सन्नदोषस्यसमाचितंतंदो षंसमुद्धूयनरस्यकोष्ठात् १० विण्मूत्रयोस्तत्समगन्धव र्णंतृट्श्वासकासार्तियुतंप्रसक्तम् ॥ प्रच्छर्दयेद्दुष्टमिहाति वेगात्तयार्दितश्चाशुविनाशमेति ११ वीभत्सजादौहृद

वहना सुस्ती आजाना नींद अधिकआना अरुचि सर्धीनी इनसे पीड़ितहोना चिकना गाढ़ा स्वादुयुक्त श्वेत वमन रोमों का खड़े होआना वमनके समय थोड़ी पीड़ा ८ त्रिदोष वा सन्निपात की छर्दि के लक्षण-त्रिदोषके वमन में शूल अजीर्ण अरुचि दाह पिपासा दमा अतिमोह होते लोनखर खट्टी नीली गाढ़ी उष्ण लाल ऐसी छर्दि त्रिदोषवालोंको होती है ९ छर्दि के असाध्यल- क्षण–जबपवन विष्ठा पसीना मूत्र व जल इनके निकलनेवाले मार्गोंकोरूँधकर ऊपरको चढ़ताहै तो पुरीषादिकों को उभाड़कर कोठे से बाहर करदेताहै १० उस वान्तकी दुर्गन्धि मल व मूत्र कीसी होती है व रंगभी विष्ठाही कासा होताहै प्यास बहुत ल- गती दमभरआती खांसीआती व शूल उठती व बड़े बेग से बार २ वमन होता है व इस छर्दि से पीड़ित मनुष्य मृतकई होजाताहै ११ आगन्तुक अर्थात् आनेवाली छर्दि के लक्षण- वीभत्सजा १ दौर्हृदजा २ आमजा ३ असात्म्यजा ४ व कृमि जा ५ ये पाँच प्रकारकी छर्दियाँ हैं १ वीभत्स घिनघिने पदार्थ के देखने से उत्पन्न होती है २ दुष्टहृदयहोने से ३ अजी होनेसे ४ अधिक भोजनादिसे ५ उदरमें कृमि पड़जानेसे इ

जामजाच आसात्म्यजांचक्रमिजाचयाहि ॥ सापञ्चमी तांचविभावयेत्तुदोषोच्छ्रयेणैवयथोक्तमादौ १२ शूलहृल्लासबहुलाक्रमिजाचविशेषतः ॥ कृमिहृद्रोगतुल्येन लक्षणेनचलक्षिता १३ क्षीणस्ययाछर्दिरतिप्रसक्तयासोपद्रवाशोणितपूययुक्ता ॥ सचंद्रिकान्तांप्रवदेदसाध्यां साध्यांचिकित्सेनिरुपद्रवांच १४ कासःश्वासोज्वरोहिक्कातृष्णावैचित्यमेवच ॥ हृद्रोगस्तमकश्चैवज्ञेयाश्छर्देरुपद्रवाः १५ ॥ इति छर्दिनिदानम् ॥

भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयाद्वाप्यूर्ध्वंचितम्पित्तविवर्द्धनै

त्रवों के लक्षण ऊपरभी कह आये हैं जिसमें जो लक्षण घटे उसे वह छर्दि जानो १२ कृमिजा छर्दिके विशेष लक्षण—कृमियोंसे उत्पन्न छर्दि में शूल उठती हृदयमें लासासा छपटाजानपड़ता व इसमें हृदय के व कृमियों के रोगों के जी मचलाने थुँक थुँकी लगने आदि के लक्षण बहुत घटते हैं ३ इसके साध्यासाध्यके लक्षण—जो क्षीण पुरुषके बड़े जोर से विकराल छर्दि होती हो व खांसी दमा आदि उपद्रवों से युक्तहो वा रुधिर और पीवसे युक्तहो वा मोरके पंखों के समान चमचमाते रंगकी हो ऐसीछर्दि असाध्य होतीहै पर जब खांसी आदि उपद्रवोंसे युक्त नहींहोती तो यही साध्य होजातीहै १४ उपद्रवोंके लक्षण—खांसीश्वास ज्वर हुचकी प्यास चित्तभ्रम हृदयमें पीड़ा व तमक अर्थात् अंधेरासा नेत्रोंके आगेहोआना बस येही छर्दि के उपद्रव हैं १५ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेछर्दिरोगनिदानंषोडशम् १६ ॥

दोहा ॥ सत्तरहे महँ कहभलो तृष्णा रोग निदान ॥
जाहि पिपासा प्यासहू भाषत लोग महान १

तृष्णा पिपासा वा प्यासकी सम्प्राप्तिके लक्षण—भय व श्रम

श्च ॥ पित्तंसवातंकुपितन्नराणां तालुप्रपन्नंजनयेत्पिपा
साम् १ स्रोतःस्वपांवाहिषुदूषितेषुदोषैश्चतट्संभवती
हजंतोः ॥ तिस्रःस्मृतास्ताःक्षतजाचतुर्थी क्षयात्तथान्या
मसमुद्भवाच ॥ भक्तोद्भवासप्तमिकेतितासांनिबोधलिंगा
न्यनुपूर्वशस्तु २ क्षामास्यतामारुतसम्भवायां तोदस्त
थाशंखशिरस्सुचापि ॥ स्रोतोनिरोधोविरसंचवक्त्रंशीता
भिरद्भिश्चविवृद्धिमेति ३ मूर्च्छान्नविद्वेषविलापदाहरक्ते
क्षणत्वंप्रततश्चशोषम् ॥ शीताभिनंदामुखतिक्तताच
पित्तात्मिकायाम्परिदूयनंच ४ वाष्पावरोधात्कफसंवृते

से बलक्षीणहोने से व पित्तको ऊपरको खींचनेवाले उपवासादि-
कोंसे पित्तकोपकरके पिपासाके स्थानतालुमें आकर प्यासको
उत्पन्न करताहै १ अन्नजादिक तृष्णाकी सम्प्राप्तिलिखतेहैं—जल
बहानेवाली नसोंके दोषोंसे दूषितहोनेसे तीन प्रकारकी पिपासा
लगती हैं व चौथी पिपासा घाव लगनेसे लगतीहै पांचईं क्षय
से उत्पन्न होतीहै छठींआमसे व सातईं अन्नसे इनसबोंके चिह्न
क्रमसे कहते हैं सुनो २ वातसे उत्पन्न पिपासाके लक्षण--वात
से उत्पन्न पिपासामें मुख सूखताजाताहै चित्तमें दीनताहोती है
कनपटी और मस्तकमें पीड़ाहोतीहै रस बहानेवाली नसों में
रुँकावटहोजाती है मुखकास्वाद जातारहताहै शीतलजलपीनेसे
यह तृष्णाअधिक बढ़तीहै ३ पित्तसे उत्पन्न तृष्णाके लक्षण—
इसमें मूर्च्छा आती अरुचिहोती विलाप करनाबढ़ता दाहहोता
नेत्रलालहोते अधिकशोष शीतलवस्तुपर प्रीतिहोती मुखकडुआ
बनारहता परितापरहता दिशा पेशाव व नेत्र पीलेरहते हैं यह
ग्रन्थान्तरमें लिखाहै ४ कफसे उत्पन्न पिपासाके लक्षण--कफ
अपने कारणसे संकुपित होकर अग्निको आच्छादित करताहै
फिर उष्णताको रोंककर नीचे चलाजाताहै व जल बहानेवाली

ग्नौ तृष्णाबलासेनभवेन्नरस्य ॥ निद्रागुरुत्वंमधुरास्य ताचतृष्णार्दितःशुष्यतिचातिमात्रम् ५ क्षतस्यरुक्शोणितनिर्गमाभ्यांतृष्णाचतुर्थीक्षतजामतासा ॥ रसक्षयाद्याक्षयसम्भवासातयाभिभूतस्तुनिशादिनेषु ६ पेपीयतेम्भःससुखंनयातिसासन्निपातादितिकेचिदाहुः॥रसक्षयोक्तानिचलक्षणानितस्यामशेषेणभिषग्व्यवस्येत् ७ त्रिदोषलिंगामसमुद्भवात्तुहृच्छूलनिष्ठीवनसादकर्त्री ८ स्निग्धंतथाम्लंलवणंचभुक्तेगुर्वन्नमेवाशुतृषांकरोति ९ दीनस्वरः प्रताम्यन्दीनः संशुष्कवक्त्रगलतालुः ॥ भवति

नसोंको शोषकर कफज तृष्णाको उत्पन्न करता है इसतृष्णा में निद्राअधिक आती है देहभारी रहताहै मुख मीठाबना रहता इस पिपासासे पीड़ित मनुष्य अत्यन्त सूखजाताहै ५ घावसे उत्पन्न तृष्णाके लक्षण–घावलगनेसे पीड़ाउत्पन्न होने व रुधिर बहनेसे मनुष्यको जो तृष्णालगतीहै वह चौथी क्षतजातृष्णा कहातीहै ६ क्षयसे उत्पन्न तृष्णाके लक्षण–रस क्षय होनेसे जो तृष्णा उत्पन्न होतीहै उसको क्षयजा तृष्णा कहतेहैं इससे पीड़ित पुरुष रात्रि दिन पानीही पियाकरताहै पर सन्तुष्ट नहीं होता इसीको कोईर सन्निपातजा तृष्णा कहतेहैं रसक्षयके लक्षण जोकहेहैं सब इसमें होतेहैं रसक्षयके लक्षणयेहैं हृदयमेंपीड़ा शरीरमें कम्पशोष बधिर होना औरपिपासालगना७आमजातृष्णाके लक्षण येहैं यहतृष्णा अजीर्ण से उत्पन्न होतीहै अजीर्ण तीनों दोषों से होताहै उनमें जिस दोषकी अधिकता जानपड़े उसीका लक्षण जाननाचाहिये नहीं तो"सामान्यतः"इसतृष्णासे हृदयमें शूल होती लार अधिक बहती ग्लानि बनी रहतीहै ८ अन्नजा तृष्णाके लक्षण ये हैं चिकना खट्टा खारी गरुआ पदार्थ और अधिक खाजानेसे शीघ्रही पिपासा बढ़तीहै बसइसी को अन्नजा तृष्णा कहतेहैं ९ उप-

खलुयोपसर्गात्तृष्णासाशोषिणीकष्टा ज्वरमोहक्षयकास श्वासाद्युपसृष्टदेहानाम् १० सर्वास्त्वतिप्रसक्ताःरोगकृशानांवमिप्रसक्तान्यम् ॥ घोरोपद्रवयुक्तास्तृष्णामरणाय विज्ञेयाः ११ ॥ इतितृष्णानिदानम् ॥

क्षीणस्यबहुदोषस्यविरुद्धाहारसेविनः ॥ वेगाघाता दभीघाताद्धीनसत्वस्यवापुनः १ करणायतनेषुग्राबाह्ये ष्वाभ्यंतरेषुच ॥ निवसंतियदादोषास्तदामूर्च्छंतिमानवाः २ सञ्ज्ञावहासुनाडीषु पिहितास्वनिलादिभिः॥तमो

सर्गसे उत्पन्न तृष्णाके लक्षण—इस तृष्णावालेका बोल मध्यम होजाताहै मोह होताहै मनमें ग्लानि होती मुख गल तालू सूख जातेहैं शरीर सूखजाताहै यहरोग बड़े कष्टसे साध्य होताहै यही तृष्णा यदि ज्वर मोह क्षय खांसी श्वास अतीसार रोग वालोंको होतो अत्यन्त कष्ट साध्य समझना १० असाध्य तृष्णाके लक्षण वातजादि सब तृष्णा कठिनहोती हैं परन्तु रोगसे अतिदुर्बलमनुष्य की तृष्णा वा वमन करने वालों की तृष्णा वा अन्य किसी घोर उपद्रव में तृष्णा का होना मरणही के लिये होता है ११ ॥

इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादे तृष्णानिदानं सप्तदशम् १७ ॥

दोहा ॥ अट्ठरहें महँ कह सुकबि मूर्च्छा प्रबल निदान ॥
लखहिं सुजन मन लायके चितगुनि तासु विधान १

अब मूर्च्छाकेनिदानकहतेहैं क्षीणहोनेसेअधिकदोष एकत्रहोने से विरुद्ध आहारके सेवनकरनेसे मलमूत्रके वेगके रोकनेसे लाठी आदि की चोटलगनेसे और सत्वके हीनहोजाने वालेको १ जब वाहर भीतरकी इन्द्रियों में दोष प्रवृत्त होतेहैं तब पुरुषको मूर्च्छा आजातीहैं २ जबसञ्ज्ञा वहानेवालीनसें वायुआदिसे रूँधजातीहैं तवप्राणीको अज्ञान प्राप्तहोताहै उसमें सुख दुःखका स्मरण नहीं

भ्युपैतिसहसासुखदुःखव्यपोहकृत् ३ सुखदुःखव्यपोहच्चनरःपततिकाष्ठवत् ॥ मोहोमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासा प्रकीर्तिता ४ वातादिभिःशोणितेनमद्येनचविषेणच ॥ षट्स्वप्येतासुपित्तन्तुप्रभुत्वेनावतिष्ठते ५ हृत्पीडाजृम्भणंग्लानिः संज्ञादौर्बल्यमेवच ॥ सर्वासांपूर्वरूपाणियथास्वंतांविभावयेत् ६ नीलंवायदिवाकृष्णमाकाशमथवारुणम् ॥ पश्यंस्तमःप्रविशतिशीघ्रंचप्रतिबुध्यते ७ वेपथुश्चांगमर्दश्च प्रपीडाहृदयस्यच ॥ कार्श्यंश्यावारुणच्छाया मूर्च्छायेवातसम्भवा ८ रक्तंहरितवर्णंवावियत्पीतमथापिवा ॥ पश्यंस्तमःप्रविशतिसस्वेदश्चप्रबुद्ध्यते ९ सपिपासःससंतापोरक्तपीताकुलेक्षणः ॥ जा

रहता ३ फिर सुखदुःखके नष्टहोनेसे पुरुष काष्ठके समान एकाएकी गिरपड़ताहै इसीको मोह वा मूर्च्छा कहतेहैं वह मूर्च्छा ६ प्रकारकीहोतीहै ४ वातपित्तकफसे रक्तसे मद्यसे और विषसे इन छःसे मूर्च्छाहोतीहै परन्तु पित्तकीप्रधानता इसरोगमेंरहती है ५ मूर्च्छाका पूर्व रूप जब होता है हृदयमें पीड़ा जँभुआई आना ग्लानि भ्रान्तिका होना येसबमूर्च्छाओं के पूर्वरूप हैं जिसमूर्च्छामें वातादिकों की अधिकता जानपड़े उसे उसीकी मूर्च्छा जाननी चाहिये ६ वातकी मूर्च्छाके लक्षण येहैं जब वातकी मूर्च्छा आती है तो आकाश नील वा कृष्ण अथवा अरुण दिखाई देताहै व अँधियारीछाजातीहै पर प्राणीशीघ्र चैतन्यहोजाताहै ७ देह काँपने लगताहै शरीर इधरउधर मुड़ताहै हृदयमें पीड़ाहोती है देह दुर्बल होजाताहै देहका रंग काला साँवला वा लाल होजाताहै वातजमूर्च्छाके येहीलक्षणहैं ८ पित्तजमूर्च्छाकेलक्षण—इसमूर्च्छामें लाल हरा वा पीलाआकाश दिखाईदेता है व अँधियारी छाजातीहै सावधानहोनेके समय पसीना आजाताहै ९

तमात्रेचपततिशीघ्रंचप्रतिबुद्ध्यते ॥ संभिन्नवर्चाःपीता भोमूर्च्छावैपित्तसम्भवा १० मेघसंकाशमाकाशमावृतं वातमोघनैः ॥ पश्यंस्तमःप्रविशतिचिराच्चप्रतिबुद्ध्यते ११ गुरुभिःप्रावृतैरंगैर्यथैवार्द्रेणचर्मणा ॥ सप्रसेकःसह ल्लासोमूर्च्छावैकफसम्भवा १२ सर्वाकृतिःसन्निपातादप स्मारइवागतः ॥ सजन्तुम्पातयत्याशु विनाबीभत्सचे ष्टितैः १३ पृथिव्यापस्तमोरूप रक्तगन्धस्तदन्वयः ॥ तस्माद्रक्तस्यगन्धेन मूर्च्छंतिभुविमानवाः ॥ द्रव्यस्वभा वइत्येकेदृष्ट्वायदभिमुह्यति १४ गुणास्तीव्रतरत्वेनस्थि

देहमें सन्तापहोताहै पिपासा अधिक लगती है रक्त वा पीतनेत्र होजाते हैं शीघ्रही गिरपड़ता व शीघ्रही चैतन्यहोजाता है मल पतलाहोजाता और शरीर पीलाहोजाताहै १० कफज मूर्च्छाके लक्षणये हैं—इसमूर्च्छामें आकाश प्रथम मेघकेरंगका दिखाईदेता है वा अत्यन्त अँधियारीसे घिराहुआ दिखाईदेता है बस जबइस प्रकार आकाश दिखाई देता कि मूर्च्छा आजाती है और बड़ी देरमें चैतन्यहोताहै ११ अंगबहुतभारी होजाते हैं वा ओदेचमड़े से बँधेहुये विदितहोतेहैं मुखसे पानीछूटता वमनहोता बसकफ की मूर्च्छाके येही लक्षणहैं १२ सन्निपातज मूर्च्छाके लक्षण ये हैं इसमूर्च्छामें सबप्रायःमृगीरोगकेलक्षणहोतेहैं जैसेकि मुखसे फे- नाबहनेलगता दांतकटकटाने लगते नेत्र लोटपोट होजाते येसब मृगीके लक्षण होतेहैं मनुष्यफटकने लगताहै १३ रक्तज मूर्च्छा की सम्प्राप्ति ऐसी होती है पृथ्वी व जल दोनों तमोरूप होते हैं व रक्तगंधही पृथ्वीका अन्वय है इसी से रक्तकीगन्धि आनेसे म- नुष्यको मूर्च्छा आजाती है रक्तकी गन्धि नहीं आती तो रक्तके देखने से भी मूर्च्छा आजाती है द्रव्यका स्वभावही ऐसा है १४ विष और मद्यसे उत्पन्न मूर्च्छा के लक्षण—विष और मद्य में सब

तास्तुविषमद्ययोः ॥ तएवतस्मात्ताभ्यांतुमोहौस्यातांयथे रितौ १५स्तब्धांगदृष्टिस्त्वसृजागूढोच्छ्वासश्चमूर्च्छितः॥ मद्येनविलपन्शेतेनष्टविभ्रांतमानसः ॥ गात्राणिविक्षिपन्भूमौजरांयावन्नयातितत् १६ वेपथुस्वप्नतृष्णास्स्युस्तमश्चविषमूर्च्छिते ॥ वेदितव्यंतीव्रतरंयथास्वंविषलक्षणैः १७ मूर्च्छापित्ततमःप्रायारजःपित्तानिलाद्भ्रमः ॥ तमोवातकफात्तन्द्रानिद्राश्लेष्मतमोद्भवा १८इंद्रियार्थेष्वसंप्राप्तिर्गौरवंजृम्भणंक्लमः ॥ निद्रार्त्तस्येवयस्येतेतस्यतंद्रांविनिर्दिशेत् १९ योनायासःश्रमोदेहेप्रवृद्धश्श्वासवः-

तैलादिकों के दशगुण बड़ी तीव्रता से रहते हैं उन्हींसे मूर्च्छाउत्पन्न होतीहैं इनमें विष से उत्पन्न दोष अपने आप विना औषध किये नहीं मिटता और मद्यसे उत्पन्न दोप अपने आपही मिटजाताहै १५ रक्तजादि मूर्च्छा के लक्षण—रक्तमूर्च्छामें अंग और नेत्र तनउठते हैं व प्रकट श्वास आने लगताहै मद्यकी मूर्च्छा में प्राणी बकतारहताहै ज्ञान उसका नष्ट भ्रष्ट होजाता मन विभ्रान्तहोजाताहै जबतक मदनहीं उतरता पृथ्वीपर पड़ारहता है अंग पृथ्वीपर पटका करता है १६ शरीर कांपता रहताहै सोतारहता पिपासाबड़ीलगती अन्धकार सा उसके आगे छाया रहताहै ये सब विपकी मूर्च्छा के लक्षणहैं मद्य के लक्षणोंसे विष के लक्षणोंमें अधिक तीव्रताहोती है१७मूर्च्छा भ्रम तन्द्रा व निद्रा के भेद दिखातेहैं मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक होते हैं व भ्रम में रजोगुण पित्त और वायुकी अधिकता होतीहै तमोगुण वात और कफ से तन्द्राहोती है श्लेष्मा और तमोगुणकी अधिकतासे निद्राहोती है १८तन्द्राके विशेपलक्षण—इन्द्रियां जब अपने २ विषयोंकाग्रहण नहीं करतीं शरीरमें गरुआई बनीरहती जँभुआईआती ग्लानिहोती निद्रासे पीड़ितके समान गिरताप-

र्जितः ॥ क्लमस्सइतिविज्ञेयइन्द्रियार्थप्रबाधकः २०दोषे
षुमदमूर्च्छायाःकृतवेगेषुदेहिनाम्॥स्वयमेवोपशाम्यंतिसं
न्यासोनौषधैर्विना २१ वाग्देहमनसांचेष्टाआक्षिप्यातिव
लाबलात् ॥ संन्यस्यंत्यबलंतंतुंप्राणायतनमाश्रिताः २२
सनासंन्याससंन्यस्तःकाष्ठीभूतोमृतोयमः॥प्राणैर्विमुच्यते
शीघ्रम्मुक्तासद्यःफलक्रियाम् २३ इतिमूर्च्छातंद्रासंन्यासनिदानम् ॥

येविषस्यगुणाःप्रोक्तास्तेचमद्यस्यकीर्त्तिताः ॥ तेन
मिथ्योपयुक्तेनभवत्युग्रोमदात्ययः १ किन्तुमद्यंस्वभावेन

इता रहतावसयेही लक्षण तन्द्राकेहैं१६क्लमके लक्षण—जिसकेदेह
में विनाश्रम कियेही थकवाही वनीरहे और श्वासअधिकनआवें
इसीको क्लमकहते हैं यह इन्द्रियोंके अर्थोंका बाधक होताहै २०
मदमूर्च्छादिक सब दोष प्राणियोंके समय पाकर अपने आपशान्त
होजातेहैं परन्तु संन्यासनामरोग विना औषधोंके किये नहीं
शान्तहोता २१ संन्यासके लक्षण—वाणी देह और मनकी चेष्टा-
ओंकोबलसे रोककर मल प्राणस्थानोंमें ठहरकर बलहीन प्राणी
को सब कर्म्मों के करनेसे रोंकतेहैं २२ तब वह पुरुष सब कामों
कोछोड़ देताहै काष्ठरूपी मृतकके समानपड़ारहताहै सबक्रिया-
ओंको छोड़ शीघ्रही मृतकहोजाताहै जैसे संन्यासी सबकर्मोंके
फलों को छोड़ केवलमृतकहो होजाता है ऐसेही यह रोगीभी
मरने को छोड़ और कुछ कर्म्म नहीं करसका इसी से इसका
सन्न्यासरोग नामभी है २३ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमूर्च्छानिदानमष्टादशम् १८ ॥

दोहा ॥ उन्निशयें महँ कहमदात्यय लक्षण सविचार ॥
देखहिं सुजन लगाय चित्त अरुकरिकेनिरधार १

जो गुणविषके कहेहैं वेही मद्यके हैं इससे जैसे विषअधिक
सेवन करनेसे हानिकारक होताहै ऐसेही मद्यभी प्रमाणसे अधिक

यथैवान्नन्तथास्मृतम्॥ अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथा स्मृतम् २ प्राणाःप्राणभृतामन्नंतदयुक्त्याहिनस्त्यसून्॥ विषंप्राणहरंतच्चयुक्तियुक्तंरसायनम् ३ विधिनामात्रयाकाले हितैरन्नैर्यथाबलम्॥ प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतं यथा ४ स्निग्धैस्तदन्नैर्मांसैश्चभक्ष्यैश्चसहसेवितम्॥ भवेदायुःप्रहर्षायबलायोपचयायच ५ काम्यतामनस स्तुष्टिस्तेजोविक्रमएवच ॥ विधिवत्सेव्यमानेतुमद्येसं निहितागुणाः ६ बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरःसुखश्चपानान्ननि द्रारतिवर्द्धनश्च॥संपातगीतस्वरवर्द्धनश्चप्रोक्तोतिरम्यः

पीनेसे उग्रहोजाताहै १ किन्तुमद्य स्वभाव से जैसे अन्न है वैसाही है इससे जैसे अन्न अयोग्यता के संग खायाजाताहै तो रोग करताहै और यों गुण करताहीहै ऐसेही जब मद्य अयुक्तिके साथ पियाजाताहै तब रोगकरताहै जब युक्तिकेसाथ सेवन कियाजाता है तो अमृत के समान गुण करताहै २ इस विषयमें दृष्टान्त कहते हैं प्राणियों के प्राण अन्नहीहैं परन्तु वेहीअन्न जब अयुक्ति के साथभोजन कियेजातेहैं तो प्राणोंको नष्ट करदेतेहैं और विषप्राणोंको हरलेताहै परन्तु जब युक्तिके साथ सेवन कियाजाता है तो वही रसकास्थान होजाताहै शरीर को पुष्टकरताहै ३ विधिसे मद्य सेवन करनेका फल विधिपूर्व्वक प्रमाण सहित हितकारी अन्नोंके संग अपने बलके अनुसार प्रसन्नतासे जो मद्य पानकरताहै उसे वह अमृत तुल्यफल देताहै ४ सो अच्छे चिकने अन्नोंकेसाथ अथवा मांसोंकेसाथजो कोई मद्य सेवन करता है उसकी आयुबढ़ाताहै हर्षकरताहै बलबढ़ाताहै व वृद्धिकरता है नेत्रमें प्रकाश अधिक कराताहै ५ सुन्दर रूप होता मन सन्तुष्ट रहता तेज बढ़ता और विक्रमहोता है विधिसेमद्य सेवन करनेसे ये सब गुण होतेहैं ६ मद चारप्रकारके होते हैं उनमें प्रथमका

प्रथमोमदोहि ७ अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाग्विचेष्टस्सोन्मत्त लीलाकृतिरप्रशांतः ॥ आलस्यनिद्राभिहितोमुहुश्चम ध्येनमत्तःपुरुषोमदेन ८ गच्छेदगम्यांचगुरूंन्नमन्येत्खा देदभक्ष्याणिचनष्टसंज्ञः ॥ ब्रूयाच्चगुह्यानिहृदिस्थितानि मद्येतृतीयेपुरुषोऽस्वतंत्रः ९ चतुर्थेचमदेमूढोभग्नदा र्विवनिष्क्रियः ॥ कार्य्याकार्य्यविभागाज्ञोमृतादप्यप रोमृतः १० कोमदंतादृशंगच्छेदुन्मादमिवचापरम् ॥ ब हुदोषमिवामूढःकांतारंस्ववशःकृती ११ निर्भुक्तमेकांतत

मद बुद्धि स्मरण व प्रीतिको करता है सुखकारी होता पान अन्न निद्रा व रतिकी इच्छाको बढ़ाताहै अच्छे प्रकारपाठकरने गीतगाने व स्वरके बढ़ाने वालाहोता है प्रथममद इसीसे अति रम्य कहागयाहै ७ द्वितीयमद केलक्षण–इसमें मनुष्यकी बुद्धि स्मृति व वाणी यथावस्थित नहीं रहती करचरणादिकोंका व्यापार अपने अधीन नहीं रहता मतवाले कीसी लीला व आ- कृति होजाती है चित्तअशान्त बनारहता है आलस्य व निद्रा में पड़ारहता है बस द्वितीय मद से पुरुष इस प्रकार मतवाला होजाताहै ८ तृतीय मदके लक्षण–गुरुस्त्री आदि अगम्य स्त्रियों के संग भी भोग करलेता अपने गुरु आदि बड़ों को भी नहीं दे- खता न उनकी लज्जाकरताहै अभक्ष्य पदार्थों को भी खा लेताहै स्मरण उसे किसी भी वस्तुका नहीं रहता अपने मनकी गुप्तबातें भी सब से कहने लगता है ऐसा पराधीन होजाताहै ९ चतुर्थमदके लक्षण–इस मदमें मनुष्य ऐसा मूढ होजाताहै कि टूटे हुये काष्ठके समान पड़ा रहता व कुछ भी कर्म्म नहीं कर- सक्ता कार्य्य अकार्य्य के भेदको नहीं जानता यहां तक कि मरे से भी मरेके समान होजाताहै १० ऐसा कौन मनुष्य है जो दूसरे उन्मादकके तुल्य ऐसे चौथे मदको प्राप्तहो जैसे कि जो

एवमद्यं निषेव्यमानंमनुजेननित्यम् ॥ उत्पादयेत्कष्टतमा
न्विकारानापादयेच्चापिशरीरभेदम् १२ क्रुद्धेनभीतेनपि
पासितेनशोकाभितप्तेनबुभुक्षितेन ॥ व्यायामभाराध्वप
रिक्षतेनवेगावरोधाभिहितेनचापि १३ अत्यन्नभक्ष्याव
ततोदरेणसजीर्णभुक्तेनतथाबलेन ॥ उष्णाभितप्तेनच
सेव्यमानंकरोतिमद्यंविविधान्विकारान् १४ पानात्ययं
परमदंपानाजीर्णमथापिवा ॥ पानविभ्रममत्युग्रंचैषांव
क्ष्यामिलक्षणम् १५ वातात्॥ हिक्काश्वासशिरःकंपपार्श्व
शूलप्रजागरैः॥विद्यात्प्रलपनंतस्यवातप्रायंमदात्ययं १६

पुरुष अपनेवशमेंहै विक्षिप्तताआदिकेअधीननहीं है तोवहव्याघ्रा-
दि सेवित अनेक दोषोंसेयुक वनको नहीं जाता सत्त्वरजस्तमो-
गुणोंसेयुक्त होनेहीकेकारण एकहीमदमें तीनगुणहोतेहैं चौथाइन
तीनोंसे नष्ट निन्दित होता इससे उसका सेवनकोई न करे ११
जो मनुष्य विना कुछ अन्नादि भोजन किये नित्य केवल मद्यही
पान किया करताहै उस पुरुषको वह मद्य नानाप्रकार के अति-
कष्टदायक विकारों को पहुँचाताहै व उसके शरीरका नाश भी
शीघ्रही करा देताहै १२ जो मनुष्य क्रोध युक होकर भय युक्त
होकर पिपासितहोकर शोकयुक्त होकर भूँखेहोकर परिश्रमकरने
के पीछे वा भारढोने मार्ग चलने के पीछे वा मलमूत्रके वेगको
रोंकनेकेपीछे १३ बहुत अन्नखालेनेपर पेटफूलआनेपर व अजी-
र्ण में निर्बलता होने में बहुत गर्म्मीने पर इन सब में तुरन्त
मद पान करताहै वह मद्य ऐसे पुरुषको अनेक विकार कराता
है १४ उनविकारोंका विवरणयों है पानात्यय परमदपाना जीर्ण
और पान विभ्रम इन नामों से प्रसिद्ध अति भयंकर व उग्र
विकारों के लक्षण कहते हैं १५ वातमदात्ययके लक्षण–हुचकी
श्वास शिरकांपना पशुड़ियोंमें पीड़ा नींदनआना व अनर्थवकने

पित्तात् ॥ दाहतृष्णाज्वरश्त्रासमोहातीसारविभ्रमैः ॥ विद्याद्धरितवर्णस्यपित्तप्रायंमदात्ययम् १७ कफात् ॥ छर्द्यरोचकहृल्लासतंद्रास्त्यैमित्यगौरवैः ॥ विद्याच्छीतपरीतस्यकफप्रायंमदात्ययं १८ ज्ञेयस्त्रिदोषजश्चापिसर्वलिंगैर्मदात्ययः ॥ श्लेष्मोच्छ्रयोङ्गगुरुताविरसास्यताचविण्मूत्रशक्तिरथतंद्रिररोचकस्य ॥ लिंगंपरस्यतुमदस्यवदंति तंज्ञास्तृष्णारुजाशिरसिसंधिषुचापिभेदः १९ आध्मानमुग्रमथवोद्गिरणंविदाहंपानेत्वजीर्णमुपगच्छतिलक्षणानि २० हृद्गात्रतोदकफसंश्रवकंठधूम मूर्च्छावमिज्वरशि

से वाताधिक्यमदात्यय जानना चाहिये १६ पित्तमदात्यय के लक्षण—पिपासा दाह ज्वर पसीना मोह अतीसार भ्रमहोना व हरित वर्ण होजाना इन लक्षणोंसे जो युक्तहो उसके पित्ताधिक मदात्यय जानना १७ कफ मदात्ययके लक्षण—वमन होना अरुचि मुखमें पानी छूटना तन्द्रा शरीर गीलासारहना गरुआपन व शीत युक्त देहरहना कफाधिक्य मदात्यय के ये लक्षण होतेहैं १८ त्रिदोष युक्त मदात्यय के लक्षण—जिसमें वातपित्त कफ तीनों दोषोंके लक्षण मिले हुये पाये जायँ उसे त्रिदोषज मदात्यय जानना चाहिये पर मद के लक्षण—श्लेष्माकी बढ़ती अंगमें गुरुता रस रहित मुख विष्ठा व मूत्रका अवरोध होना तन्द्रा अरुचि पिपासा शिरमें पीड़ा सन्धियों में पीड़ा ये परमदके लक्षणहैं १९ पानाजीर्णके लक्षण—अधिक पेटफूलना वमन होना गलेहीं जलना मद्यपीने का अजीर्ण होना ये सब लक्षण मदिरा पीने के अजीर्ण से होते हैं इसीको पानाजीर्ण कहते हैं २० पान विभ्रमके लक्षण—हृदय और अंगों में कोंचने कीसी पीड़ा कफका अधिक गिरना धुआंइँध आना मूर्च्छा वमन ज्वरहोना शिर में पीड़ा मुख में कफलपटा रहना सब प्रकारकी

रोरुजनप्रदेहाः ॥ द्वेषस्सुरान्नविकृतेषुचतेषुतेषु पानंच विभ्रममुशंत्यखिलेनधीराः २१ हीनोत्तरोष्ठमतिशीतम मंददाहंतैलप्रभास्यमतिपानहतंत्यजेत्तं ॥ जिह्वौष्ठदंतम सितंत्वथवापिनीलं पीतेचयस्यनयनेरुधिरप्रभेवा २२ हिक्काज्वरोवमथुवेपथुपार्श्वशूलाः कासभ्रमावपिचपानह तंभजंते २३ इतिमदात्ययनिदानम् ॥

त्वचंप्राप्तस्सपानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः ॥ दाहंप्र कुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् १ कृत्स्नदेहानुगंरक्तमुद्रिक्तं दहतिध्रुवम्॥शुष्यतेतृष्यतेचैवताम्राभस्ताम्रलोचनः २

मदिरा व सब प्रकारके अन्नोंमें अरुचि होजाना ये लक्षण जिसमें होतेहैं धीर लोग उसे पानविभ्रम कहते हैं २१ इसके असाध्य लक्षण–ऊपरके ओष्ठका बहुत बढ़जाना उसके ऊपरका भाग अत्यन्त शीतल रहना भीतर अतिदाह होना मुख में तैलकी चिकनाई जानपड़े जिह्वाओष्ठ व दांतकाले वा नीले और नेत्रोंका रंग पीला वा रुधिरके रंगका ऐसे अतिपानसे हत रोगीको वैद्य छोड़देवे क्योंकि वह असाध्य होने के कारण जी नहीं सक्ता २२ नीचे लिखेहुये उपद्रव अति मद्यपके होते हैं हुचकी ज्वर ओकाई देहकांपना पशुड़ियोंमें शूलखांसी भ्रम और वमन २३ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमदात्ययनिदानमेकोनविंशम्१६

दोहा ॥ त्रिशयेंमहँ कहदाहकर सबनिदानकरि ठीक ॥
मदज क्षतज मुख भेदहैं जासुबहुतविधिनीक १

प्रथम मद्यज दाहके लक्षण कहते हैं पित्त रक्तसे युक्तहोकर जब मदिरा पानकी उष्णता त्वचामें प्राप्तहोतीहै तो घोरदाहको उत्पन्नकरातीहै इसमें पित्तकेप्रमाणकेयोग्य औषधकरनाचाहिये १ रक्तज व पित्तजदाहके लक्षण–देहभरमें कुपितहोकर रक्त अत्यन्त दाह करताहै रोगी सूखता जाताहै और पिपासा अधिक लगती है

पूर्वोमनोभिघातोविषमाश्चचेष्टाः ४ तैरल्पसत्त्वस्यमलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्य ॥ स्रोतांस्यधिष्ठायमनोवहानिप्रमोहयंत्याशुनरस्यचेतः ५ धीविभ्रमःसत्त्वपरिप्लवश्चपर्याकुलादृष्टिरधीरताच ॥ अवद्धवाक्यंहृदयंचशून्यंसामान्यमुन्मादगदस्यलिंगम् ६ रूक्षाल्पशीतान्नविरेकधातुक्षयोपवासैरनिलोतिवृद्धः ॥ चिंतादिदुष्टंहृदयंप्रविश्यबुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहंतिशीघ्रम् ७ अस्थानहास्यस्मितनृत्यगीतवागंगविक्षेपणरोदनानि। पारुष्यकार्श्यारुणवर्णताचजीर्णेबलंचानिलजस्यरूपम् ८ अजीर्णकट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितंपित्तमुदीर्णवेगम् ॥ उन्मादमत्यु

बलवान् के संग मल्लयुद्धादि करना इत्यादि उन्माद होने के कारणहैं ४ इनकारणोंसे अल्पपराक्रमी पुरुष के मल दुष्टहोजाते हैं वे फिर बुद्धिके रहनेके स्थान मनको दूषितकरके मनमें लगी हुई सब नसोंमें व्याप्तहोकर मनुष्यके चित्तको अत्यन्तमोहित करातेहैं ५ उन्माद रोगके सामान्य लक्षण—बुद्धिका विभ्रमहोना मनकी चंचलता दृष्टिकी अस्थिरता अधीरहोना भाँय बाँय साँय बकना मनकी शून्यता बस ये इसरोग के सामान्य लक्षण हैं ६ विशेष लक्षण ये हैं रूखा अल्प शीतअन्न दस्तावरअन्नखाने से व धातुक्षयहोनेसे व उपवास करनेसे पवन अति बढ़के चिन्तादिकोंसे दूषित हृदयमें प्रवेश करके बुद्धि और स्मरण शक्ति को शीघ्रही नाश करदेताहै ७ उनमें वातज उन्माद के लक्षण येहैं विनाकारणके हँसना मुसुकराना नाचना गाना अंगोंको घुमाना मटकाना रोदनकरना कठोरकाला वा अरुणशरीरकारंग होजाना अन्नपचनेपर रोगकी अधिकता ८ पित्तज उन्माद के लक्षणयेहैं अधकच्चा कडुआ आमिल दाहकारी व शीतल भोजन करने से संचित पित्त उफलाकर अत्यग्रउन्मादको बलहीन पुरु?

अमनात्मकस्यहृदिस्थितंपूर्ववदाशुकुर्य्यात् ९ अमर्षसंरंभ विनग्नभावाःसंतर्ज्जनाभिद्रवणोष्णरोषाः ॥ प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषाःपीताचभाःपित्तकृतस्यलिंगम् १० सम्पूरणैर्मंदविचेष्टितस्यसोष्माकफोमर्म्मणिसंप्रवृद्धः ॥ बुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहंतिचित्तंप्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ११ वाक्चेष्टितंमंदमरोचकश्चनारीविविक्तप्रियताचनिद्रा ॥ छर्दिश्चलालाचबलंचभुंक्ते नखादिशौक्ल्यंचकफात्मके स्यात् १२ यस्सन्निपातप्रभवोहिघोरःसर्वस्समस्तैस्सतु हेतुभिःस्यात् ॥ सर्वाणिरूपाणिबिभर्तिताहृग्विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः १३ चौरैर्नरेन्द्रपुरुषैररिभिस्तथान्यै

शीघ्र उत्पन्न करताहै ९ इसमें असहन शीलता क्रुद्धता नग्न होजाना भयदेना भागना शरीर उष्ण रहना रोष बनारहना छायामें रहना शीतल अन्नजलकी इच्छा व देहका रंग पीला ये सबलक्षण होते हैं १० कफ़ज उन्माद के लक्षण—तृप्तिकारी पदार्थोंके भोजन करने से परिश्रम हीन पुरुषके पित्तयुक्त कफ मर्म्मस्थल में अत्यन्त बढ़कर उसकी बुद्धि और स्मृतिका नाश करताहै व सम्मोहित कराताहुआ विकारको उत्पन्नकराताहै ११ इसमें बोलना थोड़ा होजाताहै भोजनमें अरुचिहोती स्त्री सेवन और एकान्त बैठनेमें बड़ी प्रीतिहोती निद्राअधिकआती वमनहोताभुखसे रालबहाकरती व नखआदिशुक्लरहतेहैं कफजउन्मादके येहीलक्षणहैं १२ सन्निपातजउन्मादके लक्षण—जोउन्मादसन्निपातसे उत्पन्नहोताहैवहबड़ाघोरहोताहै क्योंकि-वहबातपित्तकफ सबके हेतुओंसेउत्पन्नहोताहै इसरोइनसबोंके रूपोंकोधारणकरताहै इसके औषध का विधानउलटापलटा होताहै इससेवैद्यको चाहिये किइसरोगीकोछोड़े क्योंकियहअसाध्यहोताहै १३ शोक से उत्पन्न उन्माद के लक्षण—जो पुरुष चोरराज पुरुष शत्रु वा

प्रेतान्संसदिशातिसंस्तरेषुपिंडान् भ्रान्तात्माजलमपिचा पसव्यहस्तः ॥ मांसेप्सुस्तिलगुडपायसाभिकामस्तद्भक्तोभवतिपितृग्रहाभिजुष्टः २२ यस्तूर्व्यांप्रसरतिसर्पवत्कदाचित्सृक्किण्योर्विलिहतिजिह्वयातथैव ॥ क्रोधालुर्गुड़मधुदुग्धपायसेप्सुर्विज्ञेयो भवतिभुजंगमेनजुष्टः २३ मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सुर्निर्लज्जोभृशमतिनिष्ठुरोतिशूरः ॥ क्रोधालुर्विपुलबलोनिशाविचारीशौचद्विड्भवतिहिराक्षसाभिजुष्टः २४ उद्धस्तःकृशपरुषोचिरुद्धलापीदुर्गंधोभृशमशुचिस्तथातिलोलः ॥ बह्वाशीविज

जिसमें हों उसे यक्ष ग्रह से पीड़ित जानना चाहिये २१ पितृ ग्रह के लक्षण—जो उन्माद वाला कुश बिछाकर उसपर प्रेतोंको पिण्ड देने लगे सदा भ्रान्त चित्त रहै व जल भी अपसव्यहो अँगौछालेकर देने लगे मांस खाने की इच्छा करे अथवा तिलगुड़ खीर खाने की अभिलाषाकरे बस जिसके ऐसे लक्षण हों उसे पितृग्रहसे पीड़ित जानना चाहिये २२ सर्पग्रहसे सेवित के लक्षण—जो मनुष्य कभी२ सर्प के समान पृथ्वीपर लोटते हुये चलनेलगे व जिह्वासे गलफड़े चाटने लगे सदा क्रोधयुक्त बना रहै व गुड़ मधु दुग्ध खीरखानेकी सदा इच्छा करतारहै बस जिसके ऐसे लक्षणहों उसे सर्पग्रहसे सेवित जानना चाहिये २३ राक्षस ग्रहसे पीड़ित के लक्षण-जो उन्मादवाला मांस रुधिर व विविध प्रकारकी मदिरासे बनेहुये पदार्थोंकी इच्छा करतारहै निर्लज्जरहै अत्यन्त निष्ठुर स्वभावहो अति शूरतायुक्तरहै क्रोधयुक्तरहै अधिकबलवान् जानपड़े रात्रिमें विचरा करै पवित्रता से वैररक्खे-बस जिसके ये लक्षणहों उसे राक्षसोंसे सेवित जानो२४ पिशाचग्रहसे सेवित के लक्षण—जो उन्मादवाला ऊपरको हाथ उठायेरहै दुर्बल कठोरचित्तरहै उलटी पलटी बहुतसीबातें बका

नवनांतरोपसेवी व्याचेष्टन्भ्रमतिरुदन्पिशाचजुष्टः २५ स्थूलाक्षोद्रुतमटनःसफेनलेहीनिद्रालुः पततिचकंपतेच योऽति ॥ यश्चाद्रिद्विरदनगादिविच्युतस्स्यात्सोसाध्यो भवतितथात्रयोदशेऽब्दे २६ देवग्रहाःपौर्णमास्या मसुराः संध्ययोरपि ॥ गंधर्वाः प्रायशोष्टम्यां यक्षाश्चप्रतिपद्यथ २७ पितृग्रहास्तथादर्शे पंचम्यामपिचोरगाः ॥ रक्षांसि रात्रौपैशाचाश्चतुर्दश्यांविशंतिच २८ दर्पणादीन्यथा छाया शीतोष्णंप्राणिनोयथा ॥ स्वमणिभास्करार्चिश्च यथादेहंचदेहधृक् ॥ विशंतिनचदृश्यंते ग्रहास्तद्वच्छरीरिणाम् २९ (प्रविश्याशुशरीरंहिपीडां कुर्वंतिदुस्सहा

करै उसके शरीरसे दुर्गन्ध आया करै व अत्यन्त अपवित्र रहै व वड़ाचञ्चल चित्तरहै भोजन वहुतकरै निर्ज्जनस्थान वनादिका बैठना प्रसन्नकरै व इधरउधर रोतेहुये घूमतारहै बस जिसकेऐसे लक्षणहों उसेपिशाच सेवितजानो २५ इसके बिशेष लक्षण नेत्र मोटे वहुतशीघ्र दौड़ताफिरै फेनासहित पदार्त्थों को चाटै वहुधा सोयाकरै वहुधाचलते २ गिरपड़े वा काँपने लगैहाथी वृक्षपर्व्वत पर चढ़के गिरनाचाहे इसप्रकार १३ वर्षतकरहै तो वह उन्मादी असाध्य होजाताहै २६ देवग्रहोंकेग्रहणकरने के लक्षण—देवग्रह वहुधा पूर्णमासीको लगते हैं दैत्य दोनोंसन्ध्याओंमेंगन्धर्व्व वहुधा अष्टमीको व यक्षप्रतिपदाको २७ व पितृग्रह वहुधा अमावास्याको प्रवेश करते हैं व सर्पग्रह पञ्चमी को राक्षस रात्रिमें व पिशाच वहुधा चतुर्दशी को प्रवेश करते हैं २८ दर्पणादिकों में जैसे छाया प्रवेश करती है परउसका रूपनहीं दिखाईदेतावजैसे शीत गर्मी मनुष्यादिकोंके शरीरमें व्याप्त होजाती है परदिखाई नहींदेती जैसे सूर्य्यकांति मणिमें सूर्य्यके किरण प्रवेश करजाते हैं पर उनका रूपनहीं दिखाई देता जैसे देह में जीवरहताहै पर

देवेवर्षत्यपियथाभूमौवीजानिकानिचित् ॥ शरदिप्रतिरोहंति तथाव्याधिसमुद्भवः ६ ॥ इत्यपस्मारनिदानम् ॥

रूक्षशीताल्पलघ्वन्न व्यवायातिप्रजागरैः ॥ विषमादुपचाराञ्च दोषासृक्स्रवणादपि १ लंघनप्लवनात्यध्व व्यायामातिविचेष्टितैः ॥ धातूनांसंक्षयाच्चिंता शोकरोगादिकर्षणात् २ वेगसंधारणादामादभिघातादभोज

मल कोपकरके पित्तवालेको पन्द्रहें दिन मृगीआती है वातवालेको वारहेंदिन व कफवालेको महिनये भरपर यद्यपि ऐसा नियम बाँधाहै पर कभी २ नियत समयसे प्रथम व पीछेभी आजाती है इसलिये इसका ठीक २ नियमनहीं होसका ८ जैसे मेघ बरसते भी रहते हैं पर बहुत से बीज पृथ्वी पर शरद ऋतुमेंही जमते हैं वर्षा में नहीं ऐसेही रोगभी अपने समयपरही उत्पन्न होतेहैं सदा नहीं होते ६ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽपस्माररोगनिदानन्द्वाविंशतितमम् ॥ २२ ॥

दोहा ॥ तेइसयें महँ कह सकल वातव्याधि निदान ॥
देखहिं सुजन लगायचित अरुरयहिकरहिंप्रमान १

अथ वातव्याधि निदानम्-रूपा शीतल थोड़ा व हलका अन्न खानेसे अति मैथुनकरने से अत्यन्त जागने से सबेर सवेर कुसमयपर भोजन करने से कफ पित्तमल मूत्र रुधिर आदि एकाएकी बहुत निकालडालने से १ खावाँ आदि लाँघने से ऊँचे पर से नीचे कूदनेसे वा नीचेसे ऊँचेको उछलने से अति मार्ग चलनेसे दण्ड मुद्गर कुश्ती आदि बहुतकरने से करचरणादि के अति विरुद्ध चलाने से रसरक्तादि धातुओंके बहुत क्षयहोने से चिन्ता रोग शोकादिकों से अति दुर्बलहोजाने से २ मलमूत्र के वेग के रोकने से आमहोने से सुकुमारस्थान में चोटलगजाने से अच्छे

नात् ॥ मर्मबाधाद्गजोष्ट्राश्वशीघ्रमानादिसेवनात् ३ देहस्रोतांसिरिक्तानि पूरयित्वानिलोबली ॥ करोतिविविधान्व्याधीन् सर्वांगैकांगसंश्रयान् ४ अव्यक्तंलक्षणं तेषां पूर्वरूपमितिस्मृतम् ॥ आत्मरूपंतुयद्व्यक्त मपायोलघुतापुनः ५ संकोचःपर्वणांस्तंभो भंगोरथ्नांपर्वणामपि ॥ लोमहर्षःप्रलापश्च पाणिपृष्ठशिरोग्रहः ६ खांज्यपांगुल्यकुब्जत्वंशोथोंगानामनिद्रता ॥ गर्भशुक्ररजोनाशः स्पंदनंगात्रसुप्तता ७ शिरोनासाक्षियत्रूणांग्रीवायाश्चापि

भले चंगे होने में उपास करने से सुकुमार स्थल में किसी वलवानका धक्कालगजाने से हाथी ऊँट घोड़े आदि पर चढ़करबहुत शीघ्र दौड़ाने से ३ इनसबकारणों से वलवान् वायु देहकी सब खाली नसों को भरके विविधप्रकार के वात रोगों को करता है सो चाहे सब अंगोंमें एकाएकी करताहै चाहे किसी एकही अंगमें करता है ४ वात व्याधिका पूर्व्वरूप—उनवातव्याधियों के जो अप्रकटलक्षण कहे हैं उन्हींका पूर्व्वरूपनाम है व जो उनकाप्रकटरूप है वह आत्मरूपकहाता है कहीं वायुकोपकरके नाशही करदेताहै कभी २ रोगकी लघुताकरताहै ५ जैसे कि इसरोगमें अंग सिकुड़जाते हैं जोड़ोंका हिलना चलना झुँकना वन्दहो जाताहै हड्डियां टूटनेलगती हैं जोड़भी टूटने लगते हैं रोमखड़े हो २ जाते हैं अनर्थ वक२ प्राणीकरने लगता है हाथ पीठ शिर जकड़जाते हैं ६ लँगड़ा पँगुला व कुबड़ा रोगी होजाताहै अंगों में शोथ आजाता है निद्रानहीं आती स्त्री हो तो उसके गर्भकी धारणा नहीं होती पुरुषका वीर्य्य नष्टहोजाता स्त्रीका रजोदर्शन वन्दहोजाताहै गात्र कुछचलायमान होतेरहते हैं कभी २ अंग वनाय सोजाते हैं किञ्चिन्मात्र भी चलायमान नहीं होते ७ शिर नाशिका नेत्र हँसिया गला येसब टेढ़ेहोजाते हैं व ये टूटते भी

हुण्डनम् ॥ भेदस्तोदार्त्तिराक्षेपोमोहश्चायासएवच ८ (एवंविधानिरूपाणि करोतिकुपितोनिलः ॥ हेतुस्थानविशेषाच्च भवेद्रोगविशेषकृत् ९) तत्रकोष्ठाश्रितेदुष्टे निग्रहोमूत्रवर्चसोः ॥ वर्ध्महृद्रोगगुल्मार्शः पार्श्वशूलंचमारुते १० सर्वांगकुपितेवाते गात्रस्फुरणभंजने ॥ वेदनाभिःपरीताश्चस्फुरन्तीवास्यसन्धयः ११ ग्रहोविण्मूत्रवातानां शूलाध्मानाश्मशर्कराः ॥ जंघोरुत्रिकहृत्पृष्ठ रोगशोफौ गुदस्थिते १२ रुक्पार्श्वोदरहृन्नाभौ तृष्णोद्गारविसूचिकाः ॥ कासोहृत्कण्ठशोषश्च श्वासश्चामाशयस्थिते १३

रहते हैं कोंचने कीसी पीड़ाहोती चिलकने की पीड़ाहोती अंग फैलते नहीं मोह और श्रम बनारहता है ८ कोष्ठ में रहनेवाले वायु के कार्य्य जब कोठे का वायु दुष्ट होजाताहै तो मलमूत्र का अवरोध होजाता है दिशा पेशाब नहीं उतरता अण्डवृद्धि हृदयरोग पिलही वायु गोलादि गुल्म रोग ववाशीर पशुलियोंमें शूल येसबरोग होते हैं ९–१० सबअंगोंके कुपित वायुके कार्य्यये हैं जबसब अंगों में टिकाहुआ वायु कोप करताहै तो अंगफरकने लगतेहैं व टूटने लगतेहैं व पीड़ाओंसे युक्तसी सब संधियां फूटने टूटने लगतीहैं ११ गुदमें स्थित पवनकेकार्य्य जबगुदमें टिकाहुआ पवन दुष्टहोजाताहै तो विष्ठामूत्रव अधोवायुका अवरोधहोजाता हैं शूलहोती पेटफूलता पथरीरोगहोता शर्करारोगदूरहोता जंघा ऊरू पखौड़े की सन्धि हृदय पीठ इनमें शोथ ये सब होते हैं-१२ आमाशयमें टिके हुये वायुके कार्य्य जब आमाशयका वायु दुष्ट होजाता है तो पशुली पेटहृदय व नाभिमें पीड़ाहोताहै पिपासा अधिक लगतीहै उबकाई आती है विसूचिका जिसे महामारी और हैज़ा भी कहतेहैं होतीहै खांसीआती हृदय व कण्ठ सूखता जाता है व श्वाश भी आने लगताहै १३ व पक्वाशय में टिके

पक्काशयस्थोंत्रकूजं शूलाटोपौकरोतिच ॥ कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहंत्रिकवेदनाम् १४श्रोत्रादिष्विन्द्रियवधंकुर्यात् क्रुद्धःसमीरणः ॥ त्वग्रूक्षास्फुटितासुप्ता कृशाकृष्णाचतुद्यते ॥ आतन्यतेसरोगाचसर्वरुक्त्वग्गतेनिले १५ रुजस्तीव्राःससंतापावैवर्ण्यंकृशतारुचिः ॥ गात्रेचारूंषिभुक्तस्यस्तंभश्चासृग्गतेनिले १६ गुर्वगंतुद्यतेस्तब्धंदंडमुष्टिहतंयथा॥सरुक्श्रमितमत्यर्थंमांसमेदोगतेनिले १७

हुये वायुके कार्य्य जब पक्काशय में टिकाहुआ वायु दुष्ट होजाता है तो पेट घलघलानेलगताहै शूलहोती मलमूत्र बड़ी कठिनता से उतरताहै पेट फूला बना रहता पखौड़ों के जोड़ों में पीड़ा होती है १४ कान आदि इन्द्रियों में टिकेहुये वायुके कार्य्य कान नेत्र नासिका मुख आदि इन्द्रियों में टिके हुये वायु जब कोप करते हैं तो अपने २ स्थानों का नाश करते हैं रस धातु में प्राप्त वायुके लक्षण—जब त्वचारूप रसमेंरहनेवाला पवनदुष्टहोजाता तो त्वचारूपी होजाती है मानो फटी जाती है काटने से उसमें कुछ जाननहीं पड़ता व दुर्व्बल होजातीहै काली होजाती फिर कोई उसमें मानो कोंचने लगता है तन उठती हैं वा लाल भी होजातीहै व सबअंगोंके ऊपरकी खाल में पीड़ाहोनेलगतीहै १५ रक्तमें गत वायुके लक्षण--जब रुधिर में गतवायु दुष्ट होजाताहै तो सन्ताप सहित अति तीव्र पीड़ा उत्पन्न होती है देह में विवर्णता होजाती है दुर्व्बलता आजाती व अरुचि होजातीहै भोजन करने पर अंगों में पीड़ा होने लगती वा पेट जकड़सा जाता है १६ मांसगत पवनके लक्षण--जब मांस व मेदा में दुष्टपवन प्रवेश करता है तो बहुत अंगमें कोंचने कीसी पीड़ा होती है व अंग जकड़ जाते हैं दण्ड व मुक्काके मारने कीसी पीड़ा होने लगती है हाथ पैर उठते पसरते नहीं ऐसे अचल होजाते

मेदोस्थिपर्वणांसंधौशूलंमांसबलक्षयः॥ अस्वप्नःसततरुकचमज्जास्थेकुपितेनिले १८ क्षिप्रंमुंचतिबध्नाति शुक्रंगर्भमथापिवा ॥ विकृतिंजनयेच्चापिशुक्रस्थःकुपितोनिलः १९ कुर्याच्छिरोगतःशूलंशिराकुंचनपूरणम्॥स बाह्याभ्यंतरायामंखल्लींकुब्जत्वमेवच २० सर्वांगैकांगरोगांश्चकुर्यात्स्नायुगतोनिलः ॥ हंतिसंधिगतःसंधीन्शूलशोफौकरोतिच २१ प्राणेपित्तावृतेछर्दिदाहश्चैवोपजायते ॥ दौर्बल्यंसदनंतंद्रावैरस्यंचकफावृते २२

है १७ मज्जामें स्थित वायुके लक्षण—जब मज्जामें स्थितपवन दुष्ट होजाता है तो हड्डियों व सन्धियों में पीड़ा होती है व जोड़ों में शूल होती है मांस व बलका नाश होताहै निद्रा नहीं आती व निरन्तर सब अंगों में पीड़ा हुआ करती है १८ शुक्रगत वायु के लक्षण—जब शुक्र में स्थित होके वायु कोप करता है तो पुरुष वा स्त्री का धातुशीघ्रही गिर पड़ता है व स्त्री को गर्भ शीघ्रही धारण कराता है व गर्भ व धातुमें कुछ विकार उत्पन्न कराताहै १९ नसमें प्राप्त कुपित वायुके लक्षण—जबनस में कुपित वायु स्थित होताहै तोशूल को उत्पन्नकराता है व नस को जकड़ाता व फुलाताहै बाहर भीतर दोनों ओर को नस फूल उठती है कुबड़ापन भी करता है व खल्लीरोगको करता है २० स्नायु व सन्धिगत वायुके लक्षण—स्नायु में गत संकुपित वायु सबअंगोंमें अथवा एकही किसी अंगमें रोगोंको करताहै व सन्धि अर्थात् जोड़ोंमें स्थित पवन जोड़ोंमें शूल और शोथको करता है २१ प्राण वायु जब पित्तसे आच्छादित होजाताहै तो वमन और दाहको उत्पन्नकराताहै व जब कफसे वही प्राणवायु आच्छादितहोताहै तो दुर्बलता ग्लानि तन्द्रा व मुखकी विरसताको करताहै २२ जब उदानवायु पित्तसे आच्छादित होता है तो श-

उदानेपित्तसंयुक्तेदाहोमूर्च्छाभ्रमःक्लमः॥अस्वेदहर्षोमंदा-
ग्निःशीततावकफावृते २३ स्वेददाहोष्णमूर्च्छाःस्युःस
मानेपित्तसंयुते ॥ कफेनसंगोविण्मूत्रेगात्रहर्षश्चजायते
२४ अपानेपित्तयुक्तेतुदाहोष्ण्यंरक्तमूत्रता ॥ अद्धकाये
गुरुत्वञ्चशीतताचकफावृते २५ व्यानेपित्तावृतेदाहोगा-
त्रविक्षेपणंक्लमः ॥ स्तम्भनोदंडकश्चापिशोथशूलोकफा
वृते २६ यदातुधमनीस्सर्वाःकुपितोभ्येतिमारुतः ॥ त-
दाक्षिपत्याशुमुहुर्मुहुर्देहंमुहुस्स्वरः॥मुहुर्मुहुस्तदाक्षेपादा
क्षेपकइतिस्मृतः २७क्रुद्धस्स्वैःकोपनैर्वायुस्स्थानादूर्ध्वंप्र-

रीरमें दाह मूर्च्छा भ्रम व ग्लानिहोतीहै व जब वही उदानवायु कफसे आच्छादित होताहै तो पसीना नहीं निकलता पर रोमें खड़े होजातेहैं मन्दाग्नि होजाताहै व शरीरमें शीतलता होजाती है २३ जब समानवायु पित्तसे संयुक्त होताहै तो पसीना दाह उष्णता व मूर्च्छा ये सब होतेहैं व जब कफकेसंग समान बायुका संयोग होताहै तो विष्ठा मूत्र अधिक होते और रोमखड़ेहोजाते हैं २४ जब अपानवायु पित्त से संयुक्त होता है तो दाह उष्णताहोती और लालपेशाब होताहै वा रक्तही मूतताहै व जब कफसे वही अपानबायु आच्छादित होता है तो आधेशरीरमें गरुआपन रहताहै और उसी आधेशरीरमें शीतलताभी रहती है २५ व व्यानवायु जब पित्त से आच्छादित होताहै तो शरीर में दाह अंगों में फटक व ग्लानिहोतीहै जब वही व्यान कफसे युक्तहोता है तो शरीरमें स्तम्भन सूजन और शूलहोती है २६ जब पवन कुपितहोकर सबनसोंमें प्राप्तहोताहै तब वह प्राणी बार २ अपने देहको फटकने लगताहै व बार २ उछालताहै इसीसे इसरोगका आक्षेपकनामहै २७ वही आक्षेपक वायु जब अपने कोपकराने वालोंसे क्रुद्धहोताहै तो अपने स्थानसे ऊँचेको चलताहै फिर

पद्यते ॥ पीडयन्हृदयंगत्वाशिरश्शंखौचपीडयेत् २८ धनुर्वन्नामयेद्गात्राण्याक्षिपेन्मोहयेत्तथा ॥ सकृच्छ्रादुच्छ्वसेच्चापिस्तब्धाक्षोथनिमीलकः २९ कपोतइवकूजेच्चानिःसंज्ञःसोपतंत्रकः ॥ दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञांचहत्वाकंठेनकूजति ३० हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहवृतेपुनः॥ वायुनादारुणंप्राहुरेकेतमपतानकम् ३१ कफान्वितोभृशंवायुस्ताःस्वेवंयदितिष्ठति ॥ सदंडवत्स्तंभयतिकृच्छ्रोदंडापतानकः ३२ मर्म्माश्रितंव्रणम्प्राप्यवायुर्व्यस्सर्वदेहगः ॥

हृदयको पीड़ित करातेहुये ऊपरजाकर शिर और कनपटीको पीड़ित कराता है २८ व धन्वा के तुल्य देहको नवाता है फिर उछालताहुआ अंगोंको मोहित कराताहै यहांतक कि वह रोगी बड़ेकष्टसे ऊपरको श्वासलेताहै नेत्र उसके अचलहोजाते बड़ी देरतक पलक नहींमारसका फिर नेत्र मूँदलेताहै २९ व कबूतर कीनाईं कूजने लगताहै फिर मूर्च्छित होजाताहै इसरोगको अपतन्त्रक कहतेहैं फिर जब मूर्च्छाजागती है तो दृष्टिको अकटक करलेताहै और गलाघरघराने लगताहै ३० जब वायु हृदय को छोड़देताहै तो फिर रोगीको ज्ञानहोजाताहै जब फिर वायु हृदय में व्याप्त होजाता है तो फिर मोहित होजाता है वायु के कारण इस रोगको लोग बड़ा दारुण कहते हैं कोई इस रोग को अपतानकरोग कहते हैं ३१ दण्डापतानक रोगके लक्षण—कफयुक्त होकर वायु अत्यन्त कोपकरके जब सब नसों में ठहरताहै तब दण्डकीनाईं सब देहभरको जकड़कर कड़ाकरदेता है इससे इसरोगका दण्डापतानक नामहै व यह बड़ेकष्टसे साध्य होताहै ३२ सब शरीर में जो व्यानवायु रहताहै वह जब सुकुमारस्थानों के व्रणमें पहुँचताहै तो अपने वेगोंसे देहको झुँका देता है इसरोगको व्रणायाम कहते हैं यह असाध्यहोता इससे

वेगैरानमयेदेहंत्रणायामन्तुतन्त्यजेत् ३३ धनुस्तुल्यंन मेद्यस्तुसधनुस्तंभसंज्ञितः ॥ अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः ॥ स्नायुप्रतानमनिलोयदाक्षिपतिवेगवान् ३४ विष्टब्धाक्षस्तब्धहनुभग्नपार्श्वः कफंवमन् ॥ अभ्यंतरधनुरिवयदानमतिमानवः ॥ तदासोऽभ्यंतरायामंकुरुतेमारुतोबली ३५ बाह्यस्नायुप्रतानस्थोबाह्यायामंकरोतिच ॥ तमसाध्यंबुधाःप्राहुःकटीपार्श्वोरुभंजनम् ३६ (हृदयंयदिवापृष्ठमुन्नतंक्रमशस्सरुक् ॥ क्रुद्धोवायुर्यदा कुर्यात्तदातंकुब्जमादिशेत्) कफपित्तान्वितोवायुर्वायु

वैद्यको चाहिये कि इसे छोड़ देवे ३३ जो वायु कफ मिश्रितहोकर नसोंके भीतर चलाकरताहै चलते २ फिर नसोंके मुख बन्दकर देताहै तब देह धन्वाके आकार तनिजाताहै इसलिये इसरोगको धनुस्तम्भ कहते हैं अन्तरायामके लक्षण—अंगुली घुटना पेट हृदय छाती व गला इनस्थानोंमें आकर वेगवान् वायु इनकीनसों को जालतुल्य तानदेताहै ३४ तब उसके नेत्र तनजाते हैं दाढ़ी जकड़जाती है व पशुड़ियाँ मुडजाती हैं व मुखसे कफ उगिलने लगताहै व भीतर उसमनुष्यका धन्वाकार झुकनेलगताहै तब वह बली पवन अभ्यन्तरायामनाम रोगको उत्पन्न करता है ३५ बाह्यायामके लक्षण ये हैं बाहरकी नसोंमें जो पतलीनसें होतीहैं उनमें जाकर वायु बाह्यायामनाम रोगको करताहै यहरोग कटि पशुली और फीलीको तोडताहै व पण्डितलोग इसको असाध्य कहते हैं ३६ कफ पित्तयुक्त वायु वा केवलही वायु आक्षेपरोग को उत्पन्नकरता है इसके लक्षण २७ वाले श्लोक में कहचुकेहैं व दूसरा दण्डापतानकादि रोगोंको उत्पन्नकरताहै व चौथा अभिघातज आक्षेपक रोगकरताहै ये आक्षेपक चारप्रकारके होते हैं एककफान्वितवायु दूसरा पित्तान्वितवायु तीसरा केवल वायु

पद्यते ॥ पीडयन्हृदयंगत्वाशिरःशंखौचपीडयेत् २८ धनुर्वन्नामयेद्गात्राण्याक्षिपेन्मोहयेत्तथा ॥ सकृच्छ्रादुच्छ्वसेच्चापिस्तब्धाक्षोथनिमीलकः २९ कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोपतंत्रकः ॥ दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञांचहत्वाकंठेनकूजति ३० हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहवृतेपुनः ॥ वायुनादारुणंप्राहुरेकेतमपतानकम् ३१ कफान्वितोभृशंवायुस्तास्वेवयदितिष्ठति ॥ सदंडवत्स्तंभयतिकृच्छ्रोदंडापतानकः ३२ मर्म्माश्रितंव्रणम्प्राप्यवायुर्यस्सर्वदेहगः ॥

हृदयको पीड़ित करातेहुये ऊपरजाकर शिर और कनपटीको पीड़ित कराता है २८ व धन्वा के तुल्य देहको नवाता है फिर उछालताहुआ अंगोंको मोहित करताहै यहांतक कि वह रोगी बड़ेकष्टसे ऊपरको श्वासलेताहै नेत्र उसके अचलहोजाते बड़ी देरतक पलक नहींमारसका फिर नेत्र मूँदलेताहै ३९ व कबूतर कीनाईं कूजने लगताहै फिर मूर्छित होजाताहै इसरोगको अपतन्त्रक कहतेहैं फिर जब मूर्च्छाजागती है तो दृष्टिको अकटक करलेताहै और गलाघरघराने लगताहै ३० जब वायु हृदय को छोड़देताहै तो फिर रोगीको ज्ञानहोजाताहै. जब फिर वायु हृदय में व्याप्त होजाता है तो फिर मोहित होजाता है वायु के कारण इस रोगको लोग बड़ा दारूण कहते हैं कोई इस रोग को अपतानकरोग कहते हैं ३१ दण्डापतानक रोगके लक्षण—कफयुक्त होकर वायु अत्यन्त कोपकरके जब सब नसों में ठहरताहै तब दण्डकीनाईं सब देहभरको जकड़कर कड़ाकरदेता है इससे इसरोगका दण्डापतानक नामहै व यह बड़ेकष्टसे साध्य होताहै ३२ सब शरीर में जो व्यानवायु रहताहै वह जब सुकुमारस्थानों के व्रणमें पहुँचताहै तो अपने वेगोंसे देहको झुँका देता है इसरोगको व्रणायाम कहते हैं यह असाध्यहोता इससे

वेगैरानमयेद्देहंत्रणायामन्तुतन्त्यजेत् ३३ धनुस्तुल्यंनमेयस्तुसधनुस्तंभसंज्ञितः ॥ अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः ॥ स्नायुप्रतानमनिलोयदाक्षिपतिवेगवान् ३४ विष्टब्धाक्षस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वःकफंवमन् ॥ अभ्यंतरंधनुरिवयदानमतिमानवः ॥ तदासोऽभ्यंतरायामंकुरुतेमारुतोबली ३५ बाह्यस्नायुप्रतानस्थोबाह्यायामंकरोतिच ॥ तमसाध्यंबुधाःप्राहुःकटीपार्श्वोरुभंजनम् ३६ (हृदयंयदिवापृष्ठमुन्नतंक्रमशःससरुक् ॥ क्रुद्धोवायुर्यदाकुर्यात्तदातंकुब्जमादिशेत्) कफपित्तान्वितोवायुर्वायु

वैद्यको चाहिये कि इसे छोड़ दे३३ जो वायु कफ मिश्रितहोकर नसोंके भीतर चलाकरताहै चलते २ फिर नसोंके मुख बन्दकर देताहै तब देह धन्वाके आकार तनिजाताहै इसलिये इसरोगको धनुस्तम्भ कहते हैं अन्तरायामके लक्षण—अंगुली घुटना पेट हृदय छाती व गला इनस्थानोंमें आकर बेगवान् वायु इनकीनसों को जालतुल्य तानदेताहै ३४ तब उसके नेत्र तनजाते हैं दाढ़ी जकड़जाती है व पशुड़ियां मुडजाती हैं व मुखसे कफ उगिलने लगताहै व भीतर उसमनुष्यका धन्वाकार झुकनेलगताहै तब वह बली पवन अभ्यन्तरायामनाम रोगको उत्पन्न करता है ३५ बाह्यायामके लक्षण ये हैं बाहरकी नसोंमें जो पतलीनसें होतीहैं उनमें जाकर वायु बाह्यायामनाम रोगको करताहै यहरोग कटि पशुली और फीलीको तोडताहै व पण्डितलोग इसको असाध्य कहते हैं ३६ कफ पित्तयुक्त वायु वा केवलही वायु आक्षेपरोग को उत्पन्नकरता है इसके लक्षण २७ वाले श्लोक में कहचुकेहैं व दूसरा दण्डापतानकादि रोगोंको उत्पन्नकरताहै व चौथा अभिघातज आक्षेपक रोगकरताहै ये आक्षेपक चारप्रकारके होते हैं एककफान्वितवायु दूसरा पित्तान्वितवायु तीसरा केवल वायु

पद्यते ॥ पीडयन्हृदयंगत्वाशिरःशंखौचपीडयेत् २८ धनुर्वन्नामयेद्गात्राण्याक्षिपेन्मोहयेत्तथा ॥ सकृच्छ्रादुच्छ्वसेच्चापिस्तब्धाक्षोथनिमीलकः २९ कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोपतंत्रकः ॥ दृष्टिंसंस्तभ्यसंज्ञांचहत्वाकंठेनकूजति ३० हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहृच्यतेपुनः॥ वायुनादारुणंप्राहुरेकेतमपतानकम् ३१ कफान्वितोभृशंवायुस्तास्वेवयदितिष्ठति ॥ सदंडवत्स्तंभयतिकृच्छ्रोदंडापतानकः ३२ मर्म्माश्रितंव्रणम्प्राप्यवायुर्यस्सर्वदेहगः ॥

हृदयको पीड़ित करातेहुये ऊपरजाकर शिर और कनपटीको पीड़ित कराता है २८ व धन्वा के तुल्य देहको नवाता है फिर उछालताहुआ अंगोंको मोहित करताहै यहांतक कि वह रोगी वड़ेकष्टसे ऊपरको श्वासलेताहै नेत्र उसके अचलहोजाते बड़ी देरतक पलक नहींमारसका फिर नेत्र मूँदलेताहै २९ व कबूतर कीनाईं कूजने लगताहै फिर मूर्च्छित होजाताहै इसरोगको अपतन्त्रक कहतेहैं फिर जब मूर्च्छाजागती है तो दृष्टिको अकटक करलेताहै और गलाघरघराने लगताहै ३० जब वायु हृदय को छोड़देताहै तो फिर रोगीको ज्ञानहोजाताहै जब फिर वायु हृदय में व्याप्त होजाता है तो फिर मोहित होजाता है वायु के कारण इस रोगको लोग बड़ा दारुण कहते हैं कोई इस रोग को अपतानकरोग कहते हैं ३१ दण्डापतानक रोगके लक्षण—कफयुक्त होकर वायु अत्यन्त कोपकरके जब सब नसों में ठहरताहै तब दण्डकीनाईं सब देहभरको जकड़कर कड़ाकरदेता है इससे इसरोगका दण्डापतानक नामहै व यह बड़ेकष्टसे साध्य होताहै ३२ सब शरीर में जो व्यानवायु रहताहै वह जब सुकुमारस्थानों के व्रणमें पहुँचताहै तो अपने वेगोंसे देहको झुँका देता है इसरोगको व्रणायाम कहते हैं यह असाध्यहोता इससे

वेगैरान्नमयेदेहंत्रणायामन्तुतन्त्यजेत् ३३ धनुस्तुल्यंन मेद्यस्तुसधनुस्तंभसंज्ञितः ॥ अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षो गलसंश्रितः ॥ स्नायुप्रतानमनिलोयदाक्षिपतिवेगवान् ३४ विष्टब्धाक्षस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वःकफंवमन् ॥ अभ्यं तरंधनुरिवयदानमतिमानवः ॥ तदासोऽभ्यंतरायामंकुरु तेमारुतोबली ३५ बाह्यस्नायुप्रतानस्थोबाह्यायामंकरो तिच ॥ तमसाध्यंबुधाःप्राहुःकटीपार्श्वोरुभंजनम् ३६ (हृदयंयदिवापृष्ठमुन्नतंक्रमशःससरुक् ॥ क्रुद्धोवायुर्यदा कुर्यात्तदातंकुब्जमादिशेत्) कफपित्तान्वितोवायुर्वायु

वैद्यको चाहियें कि इसे छोड़ देइ३ जो वायु कफ मिश्रितहोकर नसोंके भीतर चलाकरताहै चलते २ फिर नसोंके मुख वन्दकर देताहै तब देह धन्वाके आकार तनिजाताहै इसलिये इसरोगको धनुस्तम्भ कहते हैं अन्तरायामके लक्षण–अंगुली घुटना पेट हृ- दय छाती व गला इनस्थानोंमें आकर वेगवान् वायु इनकीनसों को जालतुल्य तानदेताहै ३४ तब उसके नेत्र तनजाते हैं दाढ़ी जकड़जाती है व पशुड़ियाँ मुडजाती हैं व मुखसे कफ उगिलने लगताहै व भीतर उसमनुष्यका धन्वाकार झुकनेलगताहै तब वह वली पवन अभ्यन्तरायामनाम रोगको उत्पन्न करता है ३५ बाह्यायामके लक्षण ये हैं बाहरकी नसोंमें जो पतलीनसें होतीहैं उनमें जाकर वायु बाह्यायामनाम रोगको करताहै यहरोग कटि पशुली और फीलोको तोड़ताहै व पण्डितलोग इसको असाध्य कहते हैं ३६ कफ पित्तयुक्त वायु वा केवलही वायु आक्षेपरोग को उत्पन्नकरता है इसके लक्षण २७ वाले श्लोक में कहचुकेहैं व दूसरा दण्डापतानकादि रोगोंको उत्पन्नकरताहै व चौथा अ- भिघातज आक्षेपक रोगकरताहै ये आक्षेपक चारप्रकारके होते हैं एककफान्वितवायु दूसरा पित्तान्वितवायु तीसरा केवल वायु

रेचकेवलः ॥ कुर्यादाक्षेपकंत्वन्यच्चतुर्थमभिघातजम् ३७ गर्भपातनिमित्तश्चशोणितातिस्रवाच्चयः ॥ अभिघातनिमित्तश्चनसिध्यत्यपतानकः ३८ गृहीत्वार्द्धतनोर्वायुःशिरास्नायूर्विशोष्यच ॥ पक्षमन्यतरंहंतिसंधिबन्धान्विमोक्षयेत् ३९ कृत्स्नोर्द्धकायस्तस्यस्यादकर्मण्योविचेतनः ॥ एकांगरोगंतंकेचिदन्येपक्षवधंविदुः ४० सर्वांगरोगंतंकेचित्सर्वकायाश्रितेनिले ॥ दाहसन्तापमूर्च्छास्स्युर्वायुपित्तसमन्विते ॥ शैत्यशोफगुरुत्वानि तस्मिन्नेवकफावृते ४१ शुद्धवातहतंपक्षंकृच्छ्रसाध्यतमंविदुः ॥ साध्यमन्येनसंसृष्टमसाध्यंक्षयहेतुकम् ४२ गर्भिणीसूति

व चौथा दण्डाभिघात आक्षेप ३७ इसके असाध्यलक्षण—गर्भपातही जिसका निमित्तहै अथवा जो अति रुधिर बहने से होता वा जो लाठी दण्डा आदि के अभिघातसे होता ऐसा अपतानक रोग साध्यनहीं होताहै ३८ वायुदेहके आधे भागमें फिरकरदोनों प्रकारकी मोटी मझोली नसोंको सुखाकर दहिने वा वायें आधे शरीरको नष्टकरदे उसमेंकुछशक्तिनरक्खे ३९ यहांतक कि उसका सम्पूर्ण आधाअंग ऐसाअचेत होजाय कि कुछभी कर्म्म न करसके तो उसको कोई एकांगरोग कहते हैं व कोई२ पक्षवधवापक्षाघात कहते हैं ४० ऐसेही जबसब अंगोंमें वायु व्याप्तहोजाय और सब अंगमारजानेसे सूखजायँ तो उसे सर्व्वांगरोग कहते हैं वह वायु जबपित्तयुक्त होकर सबनसोंमें व्याप्तहोता है तो दाह सन्ताप व मूर्च्छा होती हैं व जब कफ युक्त होता है तो शीतलता शोथ व अंगों में गरुआपन होता है ४१ जो शुद्ध वातसे पक्षाघात होता है वह अतिशय कष्ट साध्य होता है व जब अन्य किसी पित्त कफ से युक्त होता है तब साध्य होता है और जब तीनों एक संग होजाते हैं तो असाध्यहोतेहैं ४२ गर्भिणी सूतिका बालवृद्ध

कावालवृद्धक्षीणेष्वसृक्क्षये ॥ पक्षाघं तं परिहरेद्वेदनारहितोयदि ४३ उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थंखादतः कठिनानि च ॥ हसतोजृम्भतःभारात् विषमाच्छयनादपि ४४ शिरोनासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसंधिगः ॥ वर्त्तमानोनिलस्तेषु वक्त्रमर्दयतिद्रुतम् ४५ (तस्यार्धजोरोमहर्षो वेपथुर्नेत्रमाविलम् ॥ वायुरुर्द्धंत्वचस्सुप्तिस्तोदोमन्याहनुग्रहः ॥ लालातिप्रस्रवःकम्पः स्फुरणंहन्तुसंग्रहः ॥ ओष्ठयोःश्वयथुःशूलः मर्दितेवातजेभवेत् ॥ पीतमंगंज्वरस्तृष्णा पित्तजेमोहधूपने ॥ वातात्पित्तात्कफाच्चैव त्रिविधस्स्यात्समासतः ॥ लालातिप्रस्रवःकम्पः स्फुरणंहन्तुसंग्रहः ॥ गण्डेशिरसिमन्यायांशोभस्तम्भःकफात्मके) वक्रीभवतिवक्त्रार्द्धं ग्रीवाचाप्यप्रवर्त्तते ॥ शिरश्चलति वाक्संगो नेत्रादीनाञ्चवैकृतम् ४६ ग्रीवाचिबुकदन्तानान्तस्मिन्पार्श्वेचवेदना ॥ तमर्दितमितिप्राहुर्व्याधि

क्षीण व जिसके रक्तक्षयहो इन के जब पक्षाघात हो और पीड़ा न हो तो ऐसे रोगीको छोड़ देना चाहिये क्योंकि वह असाध्य होजाता है व असाध्य की औषध करनी न चाहिये ४३ बड़े ऊंचे स्वर से पढ़ने से कठिन कड़े पदार्थोंके खाने से हसने से जँभोई लेने से ऊँचे स्थानसे उतरनेसे कुसमय में शयन करने से ४४ शिर नासिका ओष्ठ दाढ़ी लिलार नेत्र और सब जोड़ोंमें पहुँच कर पवन मुखको पीड़ित करता है उससे अर्दित रोग उत्पन्न होताहै ४५ इसअर्दित रोगसे आधा मुख टेढ़ा होजाता है और ग्रीवा भी टेढ़ी होजाती है शिर कांपने लगता है मुखसे बोला नहीं जाता भौंह आंखि दाढ़ी आदि टेढ़े होजाते हैं व पीड़ा भी इन में होने लगती है ४६ व ग्रीवा ठुड्डी दांत व पशुलियों में

ऽव्याधिविशारदाः ४७ क्षीणस्यानिमिषाक्षस्यप्रसक्ताऽव्यक्त भाषिणः ॥ नसिध्यत्यर्दितगाढं त्रिवर्षवेपनस्य च ॥ गते वेगेभवेत्स्वास्थ्यंसर्वेष्वाक्षेपकादिषु ४८ जिह्वानिर्लेखना च्छुष्क भक्षणादभिघातनः ॥ कुपितोहनुमूलस्थः स्रंस यित्वानिलोहनुम् ४९ करोतिविवृतास्यत्वमथवासंवृता स्यताम् ॥ हनुग्रहस्सतेनस्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषणम् ५० दिवास्वप्नाशनस्नान विकृत्योर्ध्वनिरीक्षणैः ॥ मन्यास्त म्भम्प्रकुरुते सएवश्लेष्मणावृतः ५१ वाग्वाहिनीशिरा

भी पीड़ा होती है जो लोग रोगों को जानते हैं वे इसरोग को अर्दित कहते हैं ४७ इस अर्दित रोग के असाध्य लक्षण—क्षीण होने के कारण जब पुरुषकी आंखि खुल मूंद न सके व जिससे स्पष्ट शब्द न बोलाजाय व जो तीनवर्ष तक इस रोगसे कांपता रहाहो ऐसे मनुष्य के यह अर्दित रोग असाध्य होता है इन आक्षेपकादि सब रोगों में वेग उतर जाने के पीछे फिर स्वास्थ्य मिलती है ४८ किसी कड़े काष्ठ के दांतुनसे जीभी करनेसे चना आदि रूपी वस्तुओं के चबाने से क्योंकि जब दांतों में कहीं भर होता है तो जीभ जोरसे घुमाकर निकाल ने से जिह्वाकी जड़में मुड़क आजाती है अथवा जीभमें कभी चोटलग जाने से चौहड़ी की जड़में स्थित वायु कुपित होकर दाढ़को नीचे बैठा देता है ४९ तो कि तो मुखको फैला देता है फिर सिकुड़ने नहीं देता वा सिकोड़ देताहै फिर फैलने नहींदेता इसरोगको हनुग्रह कहते हैं चवना बोलना मशकाना आदि कठिनहोजातेहैं ५० ग- र्द्दन स्तम्भके लक्षण—दिनमेंसोनेसे भोजन करनेसे स्नानकरनेसे इनसबोंके अप्रमाण करनेसे व ऊपरको देखनेसे वायुकुपितहोकर गर्द्दन के ऊपरी भागको तनदेता है जबकि वह श्लेष्मा से युक्त होजाताहै तब ऐसाकरताहै इसरोगको मन्यास्तम्भ कहते हैं ५१

संस्थो जिह्वांस्तम्भयतेनिलः ॥ जिह्वास्तम्भस्सतेनान्न पानवाक्येष्वनीशता ५२ रक्तमाश्रित्यपवनः कुर्यान्मूर्द्धधराःशिराः ॥ रूक्षास्सवेदनाःकृष्णाः सोसाध्यःस्याच्छिरोग्रहः ५३ स्फिक्पूर्वाकटिपृष्ठोरुजानुजंघापदंक्रमात् ॥ गृध्रसीस्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिस्पंदतेमुहुः॥वाताद्वातकफात्तंद्रा गौरवारोचकान्विता ५४ तलंप्रत्यंगुलीनांयाः कंडूराबाहुपृष्ठतः ॥ बाह्वोःकर्मक्षयकरी विश्वाचीतिचसा स्मृता ५५ वातशोणितजःशोफो जानुमध्येमहारुजः॥ ज्ञेयःक्रोष्टुकशीर्षश्चस्थूलःक्रोष्टुकशीर्षवत् ५६ वायुः क

बोलने वाली नस में टिकाहुआ वायु जिह्वाको रोकता है इस रोगको जिह्वास्तम्भ कहतेहैं इसरोगमें अन्नपानी खाने व बोलने में कष्ट होताहै ५२ ऊपर शिरकी नसों के रक्तमें पहुँचकर पवन सबनसों को रूखी काली व पीड़ितकर देताहै यहरोग असाध्य होताहै और शिरोग्रह उसका नामहै ५३ प्रथम कटिके ऊपरके भागसे प्रारम्भ होकर फिर कटि पीठ ऊरू जानु जंघा पद इन स्थानों में क्रमसे पवन कड़ापन करताहै होते २ बनाय तन देताहै इस रोगको गृध्रसी कहते हैं इनमें कोंचने कीसी व्यथा होती बार २ कम्प होता पीड़ाभी बहुत होती है अंगभारी लान पड़ते अरुचि सब पदार्थों से हो जाती है यहरोग वात से होता है और वातकफ दोनोंसे मिलकर भी होता है इस लिये दो प्रकार का होता है ५४ पखौराके पीछे से अँगुलियों के ऊपर तक जो मोटी २ नसें चलीगातीहैं उनमें दुष्टपवन प्रविष्टहोकर उन्हें ग्रहणकर लेताहै इस कारण हाथसिकुड़ पसर नहीं सकते बनाय तनेरहते हैं इसरोगको विश्वाची कहते हैं ५५ वातरक्त से उत्पन्न होकर जो शोथ मोटी जाँघके मध्यमें शिआरके मूँड़केआकारकाहो उसरोगको क्रोष्टुकशीर्ष कहतेहैं ५६ कटिमें रहनेवाला

त्याश्रितश्शक्थ्नः कण्डूरामाक्षिपेद्यदा॥ खञ्जस्तदाभवेज्जन्तुःपंगुश्शक्थ्नोर्द्वयोर्व्वधात् ५७ प्रक्रामन्वेपतेयस्तु खंजन्निवचगच्छति॥ कलापखंजंतंविद्यान्मुक्तसन्धिप्रबंधनम् ५८ रुक्पादेविषमेन्यस्ते श्रमाद्वाजायतेयदा॥ वातेनगुल्ममाश्रित्यतमाहुर्वातकंटकम् ५९ पादयोःकुरुते दाहं पित्तासृक्सहितोनिलः॥ विशेषतश्चक्रमतः पाददाहंतमादिशेत् ६० हृष्येतेचरणौयस्य भवेतांवा प्रसुप्तकौ॥ पादहर्षस्सविज्ञेयः कफवातप्रकोपजः ६१ अंसदेशस्थितोवायुःशोषयित्वांसबंधनम्॥ शिराश्चाकुंच्यत

वायु जब एकपैरकी नसोंको रोकलेताहै तब मनुष्यलँगड़ाहोजाताहै इसको संस्कृतमें खञ्ज कहते हैं व यहीरोग जबदोनों पैरोंकी मोटी नसोंमें होजाताहै तो प्राणी पँगुला कहाता है इसे संस्कृत में पंगु कहतेहैं ५७ जो मनुष्य चलनेके समय काँपनेलगे फिर कुछ लँगड़ाताहीहुआ चले उसेकलापखंज कहतेहैं इसमें जोड़ों के सब बन्धन ढीले होजाते हैं ५८ वातकण्टकरोग के लक्षण— तिरछा उलटाआदि विषमतासे पैरधरनेसे वा श्रमकरने से पाद में पीड़ाहोती है और पवनगाँठिको पकड़लेताहै चलने नहींदेता तो इसरोगको वातकण्टक कहतेहैं ५९ पाददाहरोगके लक्षण— रक्तपित्त युक्तहोकर जब पवन दोनोंपादोंमें दाहकराने लगताहै व थोड़ाचलनेपरभी अधिक पैरगरमा उठतेहैं उसरोगको पाद दाह कहतेहैं ६० पादहर्षरोगके लक्षण—कफ और वातके अतिकोपकरने से जिसके पैरोंमें कभी २ तो झंझनाहट व कभी २ बनाय शिथिलता होजाय उस रोगको पादहर्ष कहतेहैं ६१ जिस अंगके ऊपर गलासहित शिररहता है उसको अंसकहतेहैं बस अंसमें जो बायु रहताहै वहदुष्टहोकर कभी अंसके सबबन्धनोंकोशोपलेताहै व नसों को सिकोड़कर वहीं स्थितहोजाता है तब अपबाहुकनाम रोगको

त्रस्थो जनयत्यपवाहुकम् ६२ आवृत्यवायुस्सकफोधम नीःशब्दवाहिनीः ॥नरान्करोत्यक्रियकान् मूकमिन्मिनगद्गदान् ६२ अधोयावेदनायाति वर्चोमूत्राशयोत्थिता॥ भिनत्तीवगुदोपस्थं सातूनीनामनामतः ६४ गुदोपस्थोत्थिताचैव प्रतिलोमंप्रधावति॥ वेगैःपक्वाशयंयाति प्रतूनीतिचसोच्यते ६५ सांतेयमत्युग्ररुजमाध्मानमुदरंभृशम्॥ आध्मानमितिजानीयात् घोरंवातनिरोधजम् ६६ विमुक्तपार्श्वहृदयंतदेवामाशयोत्थितम्॥ प्रत्याध्मानंविजानीयात्कफव्याकुलितानिलम् ६७नाभेरधस्तात्संजातः

उत्पन्नकरताहै ६२ जिह्वासे शब्दनिकालनेवाली नसोंको सिकोड़कर कफयुक्त वायु मनुष्योंको कार्य्यरहित करदेताहै उसमें तीन रोगउत्पन्न होते हैं एकमूक दूसरा मिन्मिन तीसरागद्गद अर्थात् किसी मूक अर्थात् गूंगाहोजाता वा पुकारनेपर मिन्मिनाकरबोलता है वास्पष्टशब्द नहीं निकलता गें २ करैनेलगता वा हकलाने लगताहै ६३ तूनीनाम रोगके लक्षण—पक्वाशय व मूत्राशय में पीड़ाकरतीहुई जो पुरुष वा स्त्रीके गुद व लिंग वा भगकोमानो चीड़ती फाड़ती चलीजाती है उसे तूनी कहते हैं ६४ प्रतूनीरोगके लक्षण—जो गुद और लिंग वा भगसे पीड़ाउठे और उलटी ऊपरको पक्वाशयतक चढ़तीचलीजाय उसरोगको प्रतूनी कहतेहैं ६५ अध्मानके लक्षण—जिसरोगमें पेट अधिक फूलआवे मल मूत्र अधोवायु न खुलै उसे अध्मान कहते हैं यह बड़ाकठिनरोग वातके रुँकजानेसेही होता है ६६ प्रत्याध्मान रोगके लक्षण—यह अध्मान आमाशयमें उत्पन्न होताही है जब जैसापूर्व में कहआये हैं पेट वैसाही फूले परन्तु पशुलियोंमें पीड़ानहो तो उसीको प्रत्याध्मान कहते हैं यह भी कफवातके इकट्ठेहोकर बिगड़नेसे होता है ६७ वाताष्ठीलारोग के लक्षण—नाभि के नीचे

संचारीयदिवाचलः॥ अष्ठीलावद्घनोग्रंथिरूद्र्ध्वमायत मुन्नतः॥ वाताष्ठीलांविजानीयाद्बहिमार्गनिरोधिनीम्६८ एतामेवरुजायुक्तांवातविण्मूत्ररोधिनीम्॥ प्रत्यष्ठीलामि तिवदेज्जठरेतिर्य्यगुत्थिताम् ६९ मारुतेविगुणेवस्तौमू त्रंसम्यक्प्रवर्त्तते॥ विकाराविविधाश्चापिप्रतिलोमेभव न्तिहि ७० सर्वांगकंपःशिरसोवायुर्वेपथुसंज्ञकः॥ खल्ली तुपादजंघोरुकरमूलावमोटिनी ७१ अधःप्रतिहतोवायुः श्लेष्मणामारुतेनच॥ करोत्युद्गारबाहुल्यमूर्द्ध्ववातःस उच्यते॥स्थाननामानुरूपैश्चलिंगैःशेषान्विनिर्दिशेत्॥ सर्वेष्वेषुचसंसर्गं पित्ताद्यैरुपलक्षयेत्७२ हनुस्तम्भार्दि-

उत्पन्नहोकर जो वायु अचलरहै वा चलहोवे व पत्थरके वटखरेके समान कठोर गाँठिको उत्पन्नकरे वह ऊपरकीओर चौड़ीहो व नीचेसे ऊंचको कभी २ चढ़े व वाहरके मार्गको रोकतीरहै उसे वाताष्ठीलारोग कहतेहैं ६८ प्रत्यष्ठीलारोगके लक्षण—इसीवाता- ष्ठीलाको प्रत्यष्ठीला कहतेहैं जब कि इसमें पीड़ाहोनेलगे और अधोवायु विष्ठा मूत्रको अधिकरोके यह पेटमें तिरछी रहती है और वाताष्ठीला नीचेसे ऊपरको सीधी रहती है ६९ मूत्ररोधरो- गके लक्षण—जब पेडूपर पवन सीधारहताहै तो मूत्र बिनापीड़ा किये सुखसे उतरता है जब उसके विपरीत उलटा पलटा च- लता है तो अश्मरी (पथरी) मूत्रकृच्छ्रादि अनेक विकारउत्पन्न होजाते हैं ७० कम्पवायुके लक्षण—जिसरोगमें शिरसे लेकर पैर तक सर्वांग कांपाकरै उसे कम्पवायुनाम रोग कहते हैं खल्ली रोगके लक्षण—जिसरोगमें पाद जंघा ऊरु पखोड़ामें कूटनेकीसी पीड़ाहो उसे खल्लीकहते हैं ७१ जिनवातरोगोंके लक्षणनहींकहे उनको स्थाननाम आकृति और चिह्नोंसे जानलेनाचाहिये व सबों में पित्तादिकोंके संसर्गों से उपलक्षित करलेना चाहिये ७२ वात

ताक्षेपपक्षाघातापतानकाः ॥ कालेनमहतावाता यत्ना त्सिध्यन्तिवानवा ७३ नवान्बलवतस्त्वेतान् साधयेन्निरु पद्रवान् ७४विसर्पदाहरुक्संगमूर्च्छारुच्यग्निमार्दवैः ॥ क्षीणमांसबलंवाताघ्नन्तिपक्षवधादयः ७५ शूनंसुप्तत्व चम्भग्नंकंपाध्मानानिपीडितम् ॥ रुजार्तिमन्तञ्चनरंवा तव्याधिर्विनाशयेत् ७६ अव्याहतागतिर्यस्यस्थान स्थःप्रकृतौस्थितः ॥ वायुःस्यात्सोधिकंजीवेद्वीतरोगः समाःशतम् ७७ ॥

इतिवातव्याधिनिदानम् ॥

रोगों की साध्यासाध्य परीक्षा हनुस्तम्भ अर्दित आक्षेपक पक्षा-घात अपतानक ये रोग जब बहुत दिनों के होजाते हैं तो बड़े कठिन यत्न से कभी साध्यभी होजाते हैं नहीं तो असाध्य तो होतेही हैं ७३ जब ये रोग नये हों और बलवान् पुरुषके हों और कोई उपद्रव भी इनकेसंग नहो तब जोइनमेंऔषध कियाजाय-गा चाहिये कि साध्यहीहों ऐसोंकी चिकित्सा अवश्य करनी चा-हिये ७४ उपद्रवों के लक्षण—विसर्प जो रोग फैलता जाता हो दाह जिसमें बढ़ताहो पीड़ा अधिक होती हो मलमूत्रका निरोध हो मूर्च्छा आजाती हो अरुचिहो अग्निकी मन्दताहो मांस बल क्षीणहोगयेहों ऐसे उपद्रवोंसे युक्तरोगीको पक्षघातादिरोग अव-श्य मारडालते हैं ७५ असाध्यके लक्षण—जिस रोगीकाशरीरब-नाय शोथआयाहो जिसकी त्वचामें छूने से न जानपड़े हाड़टूट गयेहों सबशरीर कांपताहो अध्मानयुक्तहो पेटफूलगयाहो पीड़ासे अधिक पीड़ितहो बस ऐसेनरको वात व्याधि मारहीडालताहै ७६ जिसपुरुषका पवनअव्याहतगतिहो अर्थात् विनारोंकटोंक अपने मनमाना चलताहो व अपने स्थान में स्थितरहै व अपने स्वभाव पर स्थितरहै व उसे कोई रोग कभी न हुआहो तो वह प्राणी

ते ॥ स्निग्धैः रूक्षैः समं नौति कण्डूक्लेदसमन्वितः ११ पित्तेविदाहः संमोहः स्वेदोमूर्च्छामदः सतृट् ॥ स्पर्शाक्षमत्वं रुग्रागः शोफः पाकोभृशोष्णता १२ कफस्तैमित्यगुरुता सुप्तिस्निग्धत्वशीतताः ॥ कण्डूर्मन्दा च रुग्द्वन्द्वसर्वलिंगचसंकरात् १३ पादयोर्मूलमास्थाय कदाचिद्धस्तयोरसि ॥ आखोर्विषमिवक्रुद्धंतद्देहमनुसर्पति १४ आजानुस्फुटितंयच्च प्रभिन्नम्प्रस्रुतञ्चयत् ॥ उपद्रवैर्यच्चजुष्टंप्राणमांसक्षयादिभिः ॥ वातरक्तमसाध्यंस्याद्याप्यंसंवत्सरोत्थितम् १५ अस्वप्नारोचकश्वासमांसकोथशिरोग्रहाः ॥

रक्तके लक्षण–जब वातरक्तरोगमें रक्त अधिकहोता है तो शरीर में शोथ अति पीड़ा कोंचना व ताम्रकेरंगका शोथसे रुधिर वहना व सुहरानेकीसी पीड़ा होती है, चिकनी वा रूपी वस्तुसे पीड़ाका न मिटना व उस शोथमें खजुलीभी होती है च मुख में पानीछूटाकरताहै ११ पित्ताधिक रक्त के लक्षण–पित्ताधिक रक्तमें दाह सम्मोह पसीना मूर्च्छा मद प्यास स्पर्श न सहजाना पीड़ा ललाई शोथ पकना अति उष्णता ये सब होते हैं १२ कफाधिक रक्तके लक्षण–कफाधिक में शीतलता गरुआपन छूनेपर न जानपड़ना चिकनापन अति शीतता खजुली थोड़ी पीड़ा इसप्रकार दो २ के मिलने से द्वन्द्वज और तीनों के मिलने से सन्निपातज जानना १३ जब पैरोंकी जड़से वातरक्त चढ़े व कदाचित् हाथों तक पहुंचे व मूसके विषके समान देहभरमें फैलजाय तो असाध्य होताहै १४ व जो गांठि तक जाने से जिसकी त्वचा सब फटजाय व विधर बिधर होजाय व बलमांस क्षयआदि उपद्रवों से युक्तहो ऐसा वातरक्त असाध्य होता है पर जो वर्ष दिनके भीतर का हो तो औषध करने के योग्य है पर जब ऊपर के फटजाने आदि लक्षण न हों तो वर्ष दिनके भीतर साध्य होताहै *

मूर्च्छायोमंदरुक्तृष्णाज्वरमोहप्रवेपकाः १६ हिक्कापांगुल्यवीसर्प्पपाकतोदभ्रमक्लमाः १७ अंगुलीवक्रतास्फोटदाहमर्मग्रहार्बुदाः ॥ एतैरुपद्रवैर्य्युक्तस्मोहेनैकेनवापियत् १८ वातरक्तमसाध्यंस्याद्यच्चातिक्रान्तवत्सरम् ॥ अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यं साध्यंस्यान्निरुपद्रवम् १९ एकदोषानुगंसाध्यं नवंयाप्यंद्विदोषजं ॥ त्रिदोषजमसाध्यंस्याद्यस्यचस्युरुपद्रवाः २० ॥ इतिवातरक्तनिदानम् ॥

नहीं तो नहीं १५ उपद्रवयेहैं नींदका न आना अरुचि श्वास मांसगलना माथजकड़ना वा नसोंकातन उठनामूर्च्छा थोड़ीपीड़ा पिपासा ज्वर मोह कांपना १६ हुचकी पंगुलापन रोगका फैलना पकना कोंचना भ्रम ग्लानि ये सब होते हैं १७ अँगुलियों का टेढ़ाहोजाना फोड़ाहोना दाहउठना मर्म्मस्थानों में पीड़ा गांठियों में गांठियोंका होना इन उपद्रवों सहित वातरक्त असाध्यहोता है अथवा एक मोहही से युक्तहो तो भी असाध्यहीहोता है १८ साध्यासाध्य विचार जो वातरक्त एक वर्ष से अधिक होजाताहै वह असाध्य होजाताहै जिस में सब उपद्रव नहीं कुछ थोड़ेहों तोवह औषध करनेके योग्य होताहै पर कष्ट साध्यहोताहै व जिसमें उपद्रव कोई नहीं होते वह साध्यहोता है १९ फिर जिसमें कोई वात पित्तादिकों में एकही दोषसे युक्त रक्त होता है वह साध्य होता है व जिसमें दो दोष होते हैं पर नवीन होता है वह कष्टसाध्यहोता है व जिस में तीन दोष मिलेहुये होते हैं वह असाध्यही होता है व जिसमें सब उपद्रव होते हैं वह भी असाध्यही होता है २० ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेवातरक्तनिदानञ्चतुर्विंशतितमम् ॥ २४ ॥

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेवितैः ॥ जीर्णा जीर्णैतथाग्राससंक्षोभस्वप्नजागरैः १ सश्लेष्ममेदःपवनः साममत्यर्थसंचितम् ॥ अभिभूयेतरंदोषमूरूचेत्प्रतिपद्य ते २ सक्थ्यस्थीनिप्रपूर्यांतःश्लेष्मणास्तिमितेनच ॥ तदास्तम्नातितेनोरूस्तब्धौशीतावचेतनौ ३ परकीयाविवगुरुस्यातामतिभृशव्यथौ॥ ध्यानांगमर्दस्तैमित्यतंद्राछर्घरुचिज्वरैः ४ संयुक्तौपादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुतिभिः ॥ तमूरुस्तंभमित्याहुराढ्यवातमथापरे ५ प्राग्रूपंतस्यनिद्रा

दो० पच्चिसयें महँ है कहो ऊरुस्तम्भ निदान ॥
देखहिंसुजनलगायचित अरुत्यहिकरहिं प्रमान १

ऊरुस्तम्भके कारण शीत उष्ण गीली सूखी गरू चिक्कण इन परस्पर विरुद्ध पदार्थों के भोजन करने से कच्चा अधपका पदार्थ खाने से ऐसेही शक्ति से अधिक जोर करने से अतिक्रोध करने दिनमें सोने व रात्रिभर जागने से १ इन कारणों से कफमेदयुक्त पवन अत्यन्त सञ्चित आम व अन्य दोष पित्तका अनादर करके जांघमें प्राप्त होता है २ तब जांघके हाड़ मन्द कफसे भर जाते हैं उससे जांघोंको पवन थांभलेताहै इस से दोनों जांघें जकड़कर फिर निर्जीव होजातीहैं ३ मानों ऐसी गरुई होजाती हैं जैसे बिरानी होगई हैं अपनी नहीं हैं और अत्यन्तव्यथा होतीहै उठायेसे उठती नहीं अंग मर्दनेसे कुछ जान नहीं पड़ता ऐसी अचलहोजातीहैं तन्द्राआती वमनहोता अरुचिहोती ज्वरआताहै ४ इन लक्षणों से संयुक्त पैरोंमें बड़ाकष्ट बड़ेकष्टसे पैरोंका उठना शून्यहोजाना बस ऐसे रोगको ऊरुस्तम्भ कहते हैं अथवा कोई २ लोग आढ्यवात कहते हैं ५ इसरोग का पूर्वरूप जब यह रोग होने पर होता है, तो निद्रा अधिक आती है चिन्ता भी बहुत होती है देह भरभराने लगताहै ज्वर होता रोमाञ्चहोता अरु-

तिध्यानंस्तिमितताज्वरः॥ रोमहर्षोरुचिश्छर्दिर्जंघोर्वोः सदनंतथा द्वातशंकिभिरज्ञानात्तस्यस्यात्स्नेहनात्पुनः॥ पादयोःसदनंसुप्तिःकृच्छ्रादुद्धरणंतथा ७ जंघोरुग्लानिरत्यर्थंशश्वद्दाहवेदना ॥ पादंचव्यथतेन्यस्तं शीतस्पर्शंनवेत्तिच ८ संस्थानेपीडनेगत्यांचलनेचाप्यनीश्वरः॥ अन्यानेयौहिसंभग्नावूरूपादौचमन्यते ९ यदादाहार्त्तितोदार्त्तो वेपनःपुरुषोभवेत ॥ ऊरुस्तंभस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम् १०॥ इत्यूरुस्तम्भनिदानम् ॥

चिहोजाती वमन होनेलगता जांघ व फीलियों में कष्टहोता वस ऊरुस्तम्भ रोग का यही पूर्व्वरूप है ६ इस रोग के लक्षण ऐसे होते हैं—अज्ञानसे वातकी शंकारहनेसे औषध करनेसे यह रोग अधिक बढ़जाताहै पैरों में पीड़ाहोती है कुछ स्पर्श करनेसे नहीं विदित होता बड़ेकष्टसे पैर उठते हैं ७ जांघें व फीलियों में अति ग्लानि होती है अथवा निरन्तर दाहसहित पीड़ाबनीरहती है पैरधरतेही पीड़ाहोनेलगती है शीत वस्तुका स्पर्श नहीं जान पड़ता ८ पादस्थिर रखने से पीड़ा होती चलने में पीड़ाहोती होते २ फिर चलने की सामर्थ्यही जाती रहती है पाद ऐसे टूटसे जातेहैं कि जब कोई अन्य टिकाकर लेचले तो वा उठाकरलेचले तो चले और जब पैरों को बटोरना चाहे तो जानों अन्य किसी के हैं अपने आप बटोर न सके ९ इस ऊरुस्तम्भ के असाध्य लक्षण-जब दाहसहित पीड़ाहो मानों कोई कोंचताहै ऐसाजानपड़े व पुरुष कांपने लगे तब जानों कि अब यह ऊरुस्तम्भरोगमारही डालेगा जब ये लक्षण न हों और रोग नवीन हो बहुत पुराना न होगयाहो तो साध्य जानना चाहिये १० ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऊरुस्तम्भनिदानम्पंचविंशतितमम् ॥ २५ ॥

द्वोषोयाप्यउच्यते ॥ सर्वदेहचरःशोथःसकृच्छ्रःसान्निपा
तिकः १२ ॥ इत्यामवातनिदानम् ॥

दोषैःपृथक्समस्तामद्वंद्वैःशूलोष्टधाभवेत् । सर्वेष्वे
तेषुशूलेषुप्रायेणपवनःप्रभुः १व्यायामयानादतिमैथुनाच्च
प्रजागराच्छीतजलातिपानात् ॥ कलायमुद्गाढकिकोरदू
षादत्यर्थरूक्षाध्यशनाभिघातात् २ कषायतिक्तातिविरू
ढजान्नविरुद्धवल्लूरकशुष्कशाकात् ॥ विट्शुक्रमूत्रानि
लसन्निरोधाच्छोकोपवासादतिहास्यभाष्यात् ३ वायुःप्र
वृद्धोजनयेद्धिशूलं हृत्पार्श्वपृष्ठत्रिकवस्तिदेशे ॥ जीर्णेप्र

ध्य होताहै दो दोषोंसे युक्त कष्टसाध्य व जिसमें सबदेहभरमें शोथ
आगया हो वह सन्निपातज आमवात असाध्यही होताहै १२ ॥
इति माधवनिदानेभाषानुवादेआमवातनिदानंपड्विंशतितमम्२६

दो० ॥ सत्ताइसयें महँ कह्यो शूल निदान अनूप ॥
देखहिं सज्जन लायचित कविकह मति अनुरूप १ ॥

वात पित्त कफ तीनों दोषों से अलग २ व सन्निपातसे एक
आमसे एक और दो २ से तीन इस प्रकार ८ प्रकारके शूल होते
हैं इन सब प्रकारके शूलों में बहुधा वातकी प्रधानता होती है १
वात शूलके कारण व्यायाम कहे मल्लयुद्धादि करने से घोड़े रथ
पर अधिक चढ़ने से अति मैथुन करने से रात्रिमें बहुत जागने
से बहुत शीतल जल पीने से मटर वा कपराव मूँग अर्हर कोदों
आदि अति रूखे अन्नों के खाने से भोजन करने पर तुरन्त फिर
भोजन करनेसे व चोटलगनेसे २ कसैलीवस्तु तीखीवस्तु अँखुआ
निकला अन्न विरुद्ध पदार्थ सूखामांस व सूखाशाक खाने से
मलमूत्र वीर्य्यअधोवायुके रोकने से शोक करने से उपवास करने
से बहुत हँस २ कर बतलाने से ३ वायुप्रवृद्धहोकर हृदय पीठ
पशुलियों में व कटिदेश में व पेडू में शूलको उत्पन्नकरता है

दोषेचघनागमेच शीतेचकोपंसमुपैतिगाढम् ४ मुहुर्मुहु
श्चोपशयप्रकोपौ विड्वातसंस्तंभनतोदभेदैः ॥ संस्वेद
नाभ्यंजनमर्द्दनाद्यैः स्निग्धोष्णभोज्यैश्चशमंप्रयाति ५
क्षारातितीक्ष्णोष्णविदाहितैल निष्पावपिण्याककुलत्थ
यूषैः ॥ कट्वम्लसौवीरसुराविकारैः क्रोधानलायास
रविप्रतापैः ६ ग्राम्यातियोगादशनैर्विदग्धैः पित्तंप्रकु
प्याशुकरोतिशूलं ॥ तृण्मोहदाहार्तिकरंहिनाभ्यां संस्वेद
मूर्च्छाभ्रमदोषयुक्तम् ७ मध्यंदिनेकुप्यतिचार्द्धरात्रे निदा
घकालेजलदात्ययेच ॥ शीतेचशीतैस्समुपैतिशान्तिसु

आहार पचजानेपर संध्या समयमें वर्षाकालमें व शीत काल में
बहुधा शूल अधिक कोप करताहै ४ बार २ यह रोग शान्त भी
होजाता है और कोप भी करता रहताहै मल मूत्र अधो वायु के
रोकने से कोंचने व फटने लगता है व पसीना होने उबटन ल-
गाने व मर्द्दन करने से व चिकनी गरमी वस्तु के खाने से कुछ
शान्त होजाताहै ५ पित्तशूल के लक्षण—यवाखार आदि क्षार
पदार्थों के खानेसे अतितीक्ष्ण लाल मिरचादि खाने से उष्ण
पदार्थों के खाने से व बाँसआदि केअंकुर जो अत्यन्त विदाहीहोते
हैं उनकेखानेसे तेलपीने बालखाजाने तिलका पीना खाने कुल-
थीखानेवाकिसीका यूषपीनेसे कडू खट्टाखानेसे सौवीरएकप्रकार
के सन्धान करने से मदिराके विकार सिरका आदि पीने से क्रोध
करने अग्नि अधिक तापने से घाम में अधिक फिरने से ६ अत्य-
न्त मैथुन करने से जले भूने अन्नके खाने से पित्त कोप करके
अतिशीघ्र शूलको करता है तब तृषा मोह दाह पीड़ा नाभि में
होने लगती है पसीना मूर्च्छा भ्रम कोंचना इन से युक्त होजाता
है ७ यह शूल दोपहरको कोप करता है व अर्द्धरात्र में भी कोप
करताहै व ग्रीष्म ऋतु में व वर्षाबीतने पर क्वार के महीने में वह

स्वादुशीतैरपिभोजनैश्च ८ आनूपवारिजकिलाटपयो विकारैर्मांसेक्षुपिष्टकृशरातिलशष्कुलीभिः ॥ अन्यै र्बलासजनकैरपिहेतुभिश्च श्लेष्माप्रकोपमुपगम्यकरोतिशूलं ९ हृल्लासकासस दनारुचिसंप्रसेकैरामाशयेस्तिमितकोष्ठशिरोगुरुत्वैः ॥ भुक्तेसदैवहिरुजंकुरुतेतिमात्रं सूर्य्योदयेचशिशिरेकुसुमागमेच १० सर्वेषुदोषेषुचसर्वलिंगं विद्याद्भिषक्सर्वभवंहिशूलं ॥ सुकष्टमेनंविषवज्रतुल्यं विवर्जनीयंप्रवदंतितज्ज्ञाः ११ आटोपहल्लासवमीगुरुत्वस्तैमित्यमानाहकफप्रसेकैः ॥ कफस्यलिंगे

शीतकाल में व शीतमीठे पदार्थों के खाने से व स्वादुयुक्त ठण्ढे पदार्थों के खानेसे शान्त होता है ८ कफ शूल के लक्षण-जल समीपी पक्षी वा मछलियों का मांस खाने से नई ब्याईगाय भैंस की खिभ्भरी मट्ठा दही दूध घी आदिके खाने से मांस ऊखकारस खाने पिनेसे पीठीके बने पदार्थ वा खिचड़ी खाने से व तिल पूड़ी खानेसे अथवा अन्य कफकारी पदार्थों के खाने से श्लेष्मा कोप करके शूलको करता है ९ यह शूल बहुधा जी मचलवाता खांसी देह टूटना अरुचि मुखमें पानी छूटना पेट में गजबज शिर भारी रहना इन लक्षणों को करताहै भोजनके पीछे सदा देह में अधिकपीड़ा होती है व सूर्योदयके समय जाड़े में व वसन्तऋतु में अधिक कोप करता है १० सन्निपात शूल के लक्षण-जिसमें वात पित्त कफ तीनोंके लक्षण मिलें उसको वैद्य तीनों दोषों से मिलने के कारण संन्निपात शूल जाने यह अति कष्टदायकविष वज्रके तुल्य होताहै इससे वैद्य लोग इसे त्याज्य कहते हैं अर्थात् इसके रोगीको औषध करनेका निषेध करते हैं ११ आमशूल के लक्षण-पेटका गड़गड़ाना जी मचलाना वमन होना शिर गरू रहना मन्दता उदरफूलना कफका वेग अधिकरहना इनलक्षणों

नसमानेलिंगमामोद्भवंशूलमुदाहरन्ति १२ द्विदोषलक्षणैरेतैर्विद्याच्छूलंद्विदोपजम् ॥ वस्तौहृत्कण्ठपार्श्वेषु सशूलःकफवातिकः १३ कुक्षौहृन्नाभिमध्येतुसशूलःकफपैत्तिकः ॥ दाहज्वरकरोघोरो विज्ञेयोवातपैत्तिकः १४ एकदोषोत्थितःसाध्यः कृच्छ्रसाध्योद्विदोषजः ॥ सर्वदोषोत्थितोघोरस्त्वसाध्योभूर्य्युपद्रवः १५ ॥ इतिशूलनिदानम् ॥

स्वैर्निदानैःप्रकुपितो वायुःसन्निहितस्तदा ॥ कफपित्ते समावृत्यशूलकारीभवेद्बली १ भुक्तेजीर्य्यतियच्छूलंतदे

से युक्त अथवा कफके लक्षणों से युक्तको आमशूल कहते हैं १२ द्वन्द्वजशूलके लक्षण—जो इन दोषों में से दो दोषोंसे उत्पन्नहोताहै उसे द्विदोपज शूल कहते हैं उनमें भी जिसमें पेडू हृदय गला व पशुलियों में शूल होता है उसे कफ वातिक शूल कहते हैं १३ व जिसमें कोखि हृदय नाभि में शूलहो उसे कफ पैत्तिक कहते हैं व जिसमें दाह और ज्वरहोताहै वह वात पैत्तिकशूल कहाता है १४ इनमें एक दोप से उत्पन्न शूल तो साध्य होताहै व दो दोषों से उत्पन्न कष्टसाध्य होता है व जो सब तीनों दोषों से उत्पन्न होताहै वह असाध्य होता है और जो पीड़ा पियास मूर्च्छा पेट फूलना भारीहोना अरुचि खांसी श्वास व हुचकी इन उपद्रवों सहित शूलहोता है वहभी असाध्यहोता है १५ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेशूलनिदानंसप्तविंशतितमम् २७

दो० ॥ अट्ठाइसयेंमहँ कह्यो है परिणाम विशूल ॥
देखहिंसुजन लगाय चित तजिकै सिगरीभूल १ ॥

परिणाम शूलका वर्णन—अपने कारणों से कुपितहोकर जब वायु कफ व पित्तके निकट जाकर और उनको आच्छादित करके बली होजाता है तो शूलकारी होताहै १ फिर अन्न पचने के समय वही शूल करता है बस इसीको परिणामज शूल कहते हैं

वपरिणामजम् ॥तस्यलक्षणमप्येतत्समासेनविधीयते २
आध्मानाटोपविण्मूत्र विबन्धारतिवेपनैः ॥ स्निग्धोष्णो
पशमप्रायं वातिकंतद्वदेद्भिषक् ३ तृष्णादाहारुचिस्वेद
कट्वम्ललवणोत्तरम् ॥ शूलंशीतसमप्रायं पैत्तिकंलक्षये
द्बुधः ४ छर्दिहृल्लाससंमोहं स्वल्परुग्दीर्घसंततिः ॥ क
टुतिक्तोपशांतिश्च ज्ञेयंतच्चकफात्मकम् ५ संसृष्टलक्षणंतु
द्बुवा द्विदोषंपरिकल्पयेत् ॥ त्रिदोषजमसाध्यंस्यात्क्षीण
मांसबलानलम् ६ जीर्णेजीर्यत्यजीर्णेवा यच्छूलमुपजा

उसका लक्षण भी यह संक्षेप रीतिसे विधान कियाजाता है २ वातिक परिणाम शूलके लक्षण–पेटका फूलना गड़गड़ाना मल-मूत्रका अवरोध अप्रीति कांपना इनकारणोंसे युक्त हो व चिकनी और उष्ण वस्तुके खाने से कुछ शान्त होजाय वैद्य उसे वातिक शूल कहते हैं ३ पैत्तिक परिणाम शूलके लक्षण–जिस शूल में तृष्णा दाह अरुचि व पसीना ये लक्षण होते हैं और कडू खट्टा खारी इन वस्तुओं से जो बढ़ता है, व शीतल पदार्थों से शान्त होताहै ऐसेको पैत्तिक परिणाम शूल कहते हैं ४ श्लैष्मिक परि-णामशूलके लक्षण–जिस शूलमें वमन जीमचलाना इन्द्रियों में मोहहोना थोड़ीपीड़ा शूल अधिकहो कडू व तिक्त वस्तुसे शान्ति होतीहो उस शूलको कफ परिणाम शूल कहते हैं ५ द्विदोषज व त्रिदोषज परिणाम शूलके लक्षण–मिलेहुये लक्षणको जानकर द्विदोषज परिणाम शूल कल्पित करना चाहिये व जिसमें तीनों दोष मिलेहों उसे त्रिदोषज परिणाम शूल जानना चाहिये यह असाध्य होता है व मांस बल अग्नि जिस रोगीके क्षीण होगयेहों उस शूलीको अत्यन्त असाध्य जानना चाहिये ६ अन्नद्रव शूलके लक्षण-अन्न पचने पर वा पचजाने पर वा अजीर्णके समय सदा शूल बना रहै पथ्य खानेपर व अपथ्य खाने पर भोजन करनेपर

यते ॥ पथ्यापथ्यप्रयोगेण भोजनाभोजनेनच ॥ नशमं यातिनियमात्सोन्नद्रवउदाहृतः ७ ॥

इतिशूलपरिणामनिदानम् ॥

वातविण्मूत्रजृंभाश्रुक्षवोद्गारवमींद्रियैः ॥ क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणांधृत्योदावर्तसंभवः १ वातमूत्रपुरीषाणां संगाध्मानक्लमोरुजः ॥ जठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात् २ आटोपशूलौपरिकर्तिकाचसंगःपुरीषस्य तथोर्ध्ववातः ॥ पुरीषमास्यादथवानिरेतिपुरीषवेगेभिहतेनरस्य ३ वस्तिमेहनयोःशूलंमूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा ॥ वि

व भूखे रहने पर कभी शान्तही नहो कुछ शान्तभी होतो नियम से न शान्तहो कभी किसीसमय कभी किसीसमय ऐसे शूलको अन्नद्रवशूल कहते हैं ७ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेपरिणामशूलान्नद्रवशूलनिदानमष्टाविंशम् २८ ॥

दो० ॥ उन्तिसयें महँ है कहो उदावर्त्त निदान ॥
लखहिंसुजनमनलायपुनिताकरकरहिंप्रमान १

उदावर्त्तरोगके लक्षण—वायु विष्ठा मूत्र जंभुआई आंशु छींकना डकार आना वमन होना शुक्रपात क्षुधा तृष्णा ऊर्ध्वसांस व निद्रा इत्यादिको व वात रोगोंको जो रोंकता है उसके उदावर्त्तरोगहोता है १अधोवायुके रोंकनेसे वात मूत्र पुरीष इनकी रुँकावट होती है पेट फूलताहै, ग्लानिहोती है पेट में पीड़ाहोती है पेटमें अन्यभी वातजरोग होतेहैं २ व विष्ठाके वेगके रोंकनेसे पेट गड़गड़ाता है शूलउठतीहै गुदमें कतरनीके कतरनेकीसी पीड़ाहोतीहै मलका अवरोधहोता ऊपरको पवन चढ़ता डकारआती व मुखकी भी मल निकलपड़ता है ३ व मूत्रके वेगके रोंकनेसे पेड़ू व लिंगमें शूलउठती है वड़ी कठिनतासे मूत्र उतरताहै शिरमें पीड़ाहोती

नामेवंक्षणानाहः स्याल्लिंगंमूत्रनिग्रहे ४ मन्यागलस्तंभशिरोविकाराजृम्भोपघातात्पवनात्मकास्स्युः ॥ तथाक्षिनासावदनामयाश्चभवंतितीव्राःसहकर्णरोगैः ५ आनन्दजंवाप्यथशोकजंवानेत्रोदकम्प्राप्तममुञ्चतोहि॥ शिरोगुरुत्वन्नयनामयाश्चभवन्तितीव्रास्सहपीनसेन ६ मन्यास्तम्भःशिरश्शूलमर्दिताद्धावभेदकौ ॥ इन्द्रियाणाञ्चदौर्बल्यंक्षवथोस्स्याद्विधारणात् ७ कण्ठास्यपूर्णत्वमतीवतोदःकूजश्चवायोरथवाप्रवृत्तिः ॥ उद्गारवेगेऽभिहतेभवन्तिघोराविकाराःपवनप्रसूताः ८ कण्डूकोठारुचिव्यङ्गशोफपाण्ड्वामयज्वराः ॥ कुष्ठहृल्लासवीसर्पा

है देह फुँकजाताहै पट्ठेकाजोड़ जकड़जाताहै पेट फूलताहै ये सब चिह्न मूत्रके अवरोध करनेसे होते हैं ४ व जँभुआईके रोंकनेसे गलेकी नसेंतनजाती हैं शिरमें पीड़ा होनेलगती है व अन्य भी वातज रोगहोतेहैं व ऐसेही नेत्र नासिका व मुखमेंभी व कानोंमेंभी बहुतसे वातजरोग होते हैं ५ आनन्दसे वा शोकसे उत्पन्न आँशुओंको जो नहीं गिरने देता हठसे रोंकलेताहै उसके शिरमें पीड़ाहोतीहै व नेत्रोंमें रोगहोते हैं व बड़ी तीव्र व्यथाहोती है तथा पीनसरोग होताहै ६ छींकके रोंकनेसे गर्दन तनजाती है शिरमें पीड़ाहोती है आधामुख टेढ़ाहोजाता है व आधाशीशी पीड़ाहोती है व सब इन्द्रियां दुर्बल होजातीहैं ७ डकारकेरोंकने से गला व मुख भरासा होजाताहै अत्यन्त कोंचनेकीसी पीड़ा होनेलगती है पेट घलघलाने लगताहै व वायुकी प्रवृत्ति बाहरको होती जिससे श्वासादिकोंकी रुँकावटहोती है व पवनके सम्बन्धी घोरविकार उत्पन्नहोते हैं ८ ओकाईके रोंकनेसे खजुलीहोती है ददरा पड़जातेहैं अरुचिहोती है व्यंगहोता शोथहोता पाण्डुरोग व ज्वरहोता है कुष्ठरोग जीमचलाना व विसर्परोग मकड़ी

इच्छाहिंनिग्रहजागदाः॥ ९ मूत्राशयेवैगुदमुष्कयोश्चशोफोरुजामूत्रविनिग्रहश्च ॥ शुक्राश्मरीतच्छ्रवणंभवेच्चतेतेविकाराभिहतेचशुक्रे १० तंद्रांगमर्दावरुचिश्श्रमश्चक्षुधाभिघातात्कृशताचदृष्टेः ॥ कण्ठास्यशोषःश्रवणावरोधस्तृष्णाभिघाताद्धृदयव्यथाच ११ श्रांतस्यनिश्वासविनिग्रहेण हृद्रोगमोहावथवापिगुल्मः ॥ जृम्भांगमर्दाक्षिशिरोभिजाड्यं निद्राभिघातादथवापितंद्रा १२ वायुःकोष्ठानुगोरूक्षैःकषायकटुतिक्तकैः ॥ भोजनैःकुपितस्सद्यउदावर्त्तंकरोतिहि १३ वातमूत्रपुरीषाश्रुकफमेदोवहानिवै ॥ स्रोतांस्युदावर्त्तयतिपुरीषंचातिवर्त्तयेत् १४ ततोहृ

अधेंगी आदिहोते हैं ९ मैथुनकरनेके समय वा अन्य किसीसमय वीर्य्य न गिरनेदेनेसे मूत्राशयमें गुदमें व अण्डकोशों में सूजन होआती है पीड़ाहोती मूत्रनहीं उतरता चिलकहोने लगती है (शुक्राश्मरी) वीर्य्यकी पथरी होजाती है व फिर प्रमेह होजाता है १० व भूँखके रोंकनेसे तन्द्रा देह ऐंठना वा टूटना अरुचि विनाश्रमके थकवाही और दृष्टिकी दुर्ब्बलता होती है व पिपासा के रोंकनेसे गला व मुख सूखजाताहै कानसे सुनकमपड़ता है व हृदयमें पीड़ा होनेलगती है ११ थकाहुआ मनुष्य जब अपने श्वासोंको हठसे रोंकलेताहै तो उससे हृदयमें रोगहोताहै मोह अथवा कोई गुमरीदेहमें निकलआतीहै व निद्राके रोंकनेसे जँभोई अंगोंका टूटना नेत्र व शिरमें जड़ता व तन्द्राहोती है १२ रूखे कसैले कडुये व तीखे भोजन करनेसे कोष्ठगतहो कुपितहोकर वायु उदावर्त्तरोगको करताहै १३ व वात मूत्र मल आँशु कफ मेदाओंके वहानेके मार्गोंको बन्दकरके पवनमलको सूखा करदेताहै १४ तव रोगीहृदय व पेडू की शूल से पीड़ित होताहै जीमचलाने लगताहै सुस्ती आजाती है वात मल व मूत्र फिर

हस्तिशूलार्तोहृल्लासारतिपीडितः ॥ वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेणलभतेनरः १५ श्वासकासप्रतिश्यायदाहमोहव मिज्वरान् ॥ तृष्णाहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान् १६ बहूनन्यांश्चलभतेविकारान्वातसंभवान् १७ ॥ इत्युदावर्त्तनिदानम् ॥

अथानाहः ॥ आमंशकृद्वानिचितंक्रमेणभूयोविबद्धं विगुणानिलेन ॥ प्रवर्त्तमानन्नयथास्वमेनंविकारमानाहमुदाहरन्ति १ तस्मिन्भवन्त्यामसमुद्भवेतु तृष्णाप्रतिश्याय्रशिरोविकाराः ॥ आमाशयेशूलमथोगुरुत्वं हृल्लासमुद्गारविघातनंच २ स्तम्भःकटीपृष्ठपुरीषमूत्रे शूलोथ

उस मनुष्यके बड़े कष्ट से उतरते हैं १५ व श्वास खाँसी नाक बहना दाहहोना मोह तृष्णा व ज्वर वमन हुचकी शिरपीड़ा मन की भ्रान्ति १६ व अन्य बहुत वातज विकारोंको मनुष्यपाता है इस प्रकारका उदावर्त्त रोगहोताहै १७ ॥ इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादे उदावर्त्तरोग निदानमेकोनत्रिंशत्तमम् २९ ॥

दो० ॥ तिसये माहँ अनाहके कहे निदान अशेष ॥
लखहिंसुजन चितलायके लहैं न दुःख विशेष १

अब अनाह रोगके निदान कहते हैं—आम व मलमूत्र इकट्ठे होकर कुपित वायुसे बहुधा बंधकरसूखजाते हैं इसलिये अपनेमार्गसे यथावस्थित बाहरनहीं आनेपाते इसरोगको अनाहरोग कहते हैं १ आमसे उत्पन्न उस अनाहरोग में तृष्णा नाकबहना शिरोविकार आमाशयमें शूल अंगोंमेंगरोई जीमचलाना डकारका न आना ये उपद्रव होते हैं २ कटि पीठ मूत्र मल के स्थानों में पीड़ा मूर्च्छा मलका वमन श्वास येसब लक्षण पक्वाशयसे उत्पन्न अनाहरोग में होते हैं व अलस रोग में जो लक्षण कहआये हैं वेभी होते हैं

मूर्च्छाशकृतोवमिश्च ॥ श्वासश्चपक्वाशयजेभवन्ति त
थालसोक्तानिचलक्षणानि ३ तृष्णार्दितम्परिक्लिष्टंक्षीणंशू
लैरुपद्रुतम् ॥ शकृद्वमन्तंमतिमानुदावर्तिनमुत्सृजेत् ४

इत्युदावर्त्तानाहनिदानम् ॥

दुष्टावातादयोत्यर्थंमिथ्याहारविहारतः ॥ कुर्वन्तिपंच
धागुल्मंकोष्ठान्तर्ग्रन्थिरूपिणम् ॥ तस्यपंचविधंस्थानंपा-
र्श्वहृन्नाभिवस्तयः १ हृन्नाभ्योरंतरेग्रन्थिः संचारीयदि
वाचलः ॥ वृत्तश्चयोपचयवान्सगुल्मइतिकीर्त्तितः २
सव्यस्तैर्जायतेदोषैः समस्तैरपिचोच्छ्रितैः ॥ पुरुषाणां

अर्थात् पेट फूलना अधोवायु का रुँकना इत्यादि रोगहोते हैं ३
उदावर्त रोग वाले के असाध्यलक्षण—इस रोगवाला जब तृष्णा
से पीड़ितहो बहुत क्लेशितहो क्षीण शरीर शूलादिकों से युक्त व
विष्ठा वमन करताहो ऐसे उदावर्त वालेको बुद्धिमान् वैद्यकोचा-
हिये कि छोड़दे औषध नकरै ४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽनाहरोगनिदानंत्रिंशत्तमम् ३० ॥

दो० ॥ इकतिसयें महँ गुल्म अथ रोगनिदान कहेव ॥
देखहिंसुजन लगायचित क्यातिकअहैंयहिभेव १

मिथ्या आहार विहार करनेसे अत्यन्त दुष्ट वात पित्त और कफ
कोष्ठके भीतर पांचप्रकार के गुल्म अर्थात् गाँठियों को उत्पन्नकु-
रतेहैं उसके पांचप्रकार के स्थान ये हैं दोनोंओर की पशुलियांहृ-
दय नाभि और पेडू १ हृदय और नाभि के बीचमें चलती हुई
अथवा अचल जो ग्रन्थिहोतीहै आकार में गोल व प्रतिदिन कुछ
बढ़तीहीजाती है ऐसी गाँठिको गुल्मरोग कहते हैं २ गुल्मकेहोने
का कारण-सोपुरुषों के पांच प्रकारके गुल्महोते हैं एक वातपित्त
का दूसरा वातकफका तीसरा कफ पित्तका व चौथा वात पित्त
कफतीनों का पांचवां धातुरूपरक्तज और स्त्रियों के छः प्रकार के

तथास्त्रीणांज्ञेयोरक्तेनचापरः ३ उद्गारबाहुल्यपुरीषबन्ध स्तृप्त्यक्षमत्वांत्रविकूजनानि ॥ आटोपमाध्मानमपक्तिश क्तिमासन्नगुल्मस्यवदन्तिचिह्नम् ४ अरुचिःकृच्छ्रवि एमूत्रवातश्चांत्रविकूजनम् ॥आनाहश्चोर्द्ध्ववातश्चस र्वगुल्मेषुलक्षयेत् ५ रूक्षान्नपानंविषमातिमात्रंविचेष्टनं वेगविनिग्रहश्च ॥ शोकाभिघातोतिमलक्षयश्चनिरन्न ताचानिलगुल्महेतुः ६ यःस्थानसंस्थानरुजाविकल्पंवि ड्वातसंगंगलवक्त्रशोषम् ॥ श्यावारुणत्वंशिशिरज्वरंच हृत्कुक्षिपार्श्वांसशिरोरुजश्च ७ करोतिजीर्णेभ्यधिकं

होते हैं अर्थात् रक्तज एक गुल्म अधिक होता है और पांच जो पुरुषों के होते हैं वे तो होतेही हैं ३ गुल्मका पूर्वरूप—गुल्म जब होनेपर होता है तो डकारें अधिक आतीं मल नहीं उतरता अन्नखाने को मन नहीं चलता आंतें घलघलाती हैं पेट फूलता मन्दाग्नि होता है बस येही लक्षण होते हैं ४ गुल्म के साधारण रूप के लक्षण—अरुचि कष्ट से मलमूत्र अधोवायुका उतरना आंतोंका घलघलाना पेटकाफूलना ऊपर को वायु चढ़ना ये लक्षण सब गुल्मों में होते हैं वातज गुल्मके कारण रूखा अन्न पान विषम समयपर सेवन करने से अपने से अधिक बलवाले के संग मल्लयुद्ध करने से मलमूत्र वातके वेगोंके रोकने से अति शोक करने से अतिदस्तहोने व बहुत उपवास करने से वातज गुल्महोताहै ६ व जिसगुल्म में कभी पेडूपर कभी कोखिमें पीड़ा होती व वह कभी छोटा कभी बड़ा होजाता है कभी गोल कभी लम्बा होजाताहै व पीड़ा भी उसकी कभी अधिक कभी कम हो- जाती है मल व वात जिस में अच्छे प्रकार नहीं होते गला व मुख जिसमें सूखतारहताहै शरीर जिसमें नील वा लाल होजा- ता है शीतज्वर बनारहता है हृदय पशुली कोखि गर्दन व शिर

प्रकोपंभुक्तेमृदुत्वेसमुपैतियश्च ॥ वातात्सगुल्मोनचतत्र रूक्षंकषायतिक्तंकटुचोपशेते ८ कट्वम्लतीक्ष्णोष्णवि दाहिरूक्षंक्रोधातिमद्यार्कहुताशसेवा ॥ आमाभिघातोरु- धिरंचदुष्टंपैत्तस्यगुल्मस्यनिदानमुक्तम् ६ ज्वरःपिपासा वदनांगरागः शूलंमहज्जीर्यतिभोजनेच ॥ स्वेदोविदाहो व्रणवच्चगुल्मः स्पर्शासहःपैत्तिकगुल्मरूपम् १० शीतं गुरुस्निग्धमचेष्टनंचसंपूरणप्रस्वपनंदिवाच ॥ गुल्मस्य हेतुःकफसंभवस्य सर्वस्तुदुष्टोनिचयात्मकस्य ११ स्तै मित्यशीतज्वरगात्रसाद हृल्लासकासारुचिगौरवाणि ॥

में पीड़ारहती है ७ व जो गुल्म अन्न पचजानेपर अधिकपीड़ाक- रता व उछलता है व जो भोजन करने पर उष्णता पाकर कुछ कोमल होजाता है ऐसे गुल्मको वातप्रधान जानना इसमें रूखा कसैला तीखा व कडुआ पदार्थ खाने से अधिक कष्ट होताहै ८ पित्तप्रधान गुल्मके लक्षण—कडू खट्टी तीखी उष्ण दाहकारक रूखीवस्तुओं के खाने से अति क्रोध करने अति मद्यपीने घाम में अधिकरहने व अति अग्निकी सेवाकरनेसे जलेहुये अन्नकेरस के सेवनसे अधिक चोटलगनेसे रुधिरदुष्ट होजानेसे वसइन्हींका- रणों से पैत्तिक गुल्म होताहै ६ इसमें बहुधा ज्वरबना रहता है पिपासा लगती है मुख व शरीरभरभी लालरहता व भोजन प- चने के समय बड़ी पीड़ाहोती है पसीना बहुत होता दाहहोता गुल्ममें घावके समान पीड़ाहोती इससे छुआनहीं जाता बसयही पैत्तिक गुल्मका रूप होता है १० कफज व सन्निपातज गुल्मों के लक्षण—कहतेहैं शीत गुरु चिकना पदार्थ खानेसे परिश्रम न करने से अघाने पर फिर कुछखालेने पर दिनमें बहुत सोने से कफज गुल्म उत्पन्न होता है व इन तीनों के लक्षणों से युक्त सन्निपातज गुल्महोता है यह बड़ाहीदुष्ट होता है ११ कफज गु-

शैत्यंरुग्गल्पाकाठिनोन्नतत्वं गुल्मस्यरूपाणिकफात्मकस्य १२ निमित्तलिंगान्युपलक्ष्यगुल्मे द्विदोषजेदोषबलाबलंच ॥ व्यामिश्रलिंगानपरांस्तुगुल्मांस्त्रीनादिशेदौषधकल्पनार्थम् १३ महारुजंदाहपरीतमश्मवद्घनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणः ॥ मनश्शरीराग्निबलापहारिणं त्रिदोषजंगुल्ममसाध्यमादिशेत् १४ नवप्रसूताहितभोजनायायाचामगर्भंविसृजेदृतौवा ॥ वायुर्हितस्याःपरिगृह्यरक्तंकरोतिगुल्मंसरुजंसदाहम् १५ पैत्तस्यलिंगेनसमानलिंग

ल्मके लक्षण—देह ऐसा गीला मानों कपेयाहुआहै शीतज्वर बनारहताहै अंग विशीर्ण हुआकरते हैं जीमचलायाकरताहै खांसी आतीहै अरुचि रहती अंग गरू बनेरहते हैं शीतलता रहती है थोड़ी पीड़ाहोतीहै गुल्मऊंचा व कड़ारहता है बस ये सब कफके गुल्मके रूप हैं १२ द्वन्द्वज गुल्मके लक्षण—द्वन्द्वज अर्थात् वात पित्त कफादिकों में से दो २ जिसमें मिलेहुये होते हैं उनमें कारण लक्षण व दोष के बलाबल देखकर तब औषध करनाचाहिये व मिलेहुये तीनों ये और अन्यभीगुल्मों में ऐसेही विचारांश करना चाहिये १३ सन्निपातज गुल्मके लक्षण—जिसगुल्ममें बड़ी पीड़ाहो व दाह बहुतहो व पत्थर के समान कठोरताहो व बहुतऊंचा भी हो व एकाएकी बहुत जलनेलगे व अति दारुणहो मन शरीर व अग्निका नाशकहो ऐसे गुल्मको त्रिदोषज अर्थात् सन्निपातज जानना चाहिये यह गुल्म असाध्य होता है १४ ॥ स्त्री के रक्तज गुल्म के लक्षण—नवीन प्रसूता स्त्री के अपथ्य भोजन करने से वा कच्चे पर गर्भ गिरनेसे अथवा ऋतुकालमें अपथ्य भोजन करने से वात कुपित होकर स्त्री के रक्तको इकट्ठे करके गुल्मको उत्पन्न करता है उस गुल्ममें पीड़ाहोती है व दाहहोता है १५ इस गुल्म के सब लक्षण पैत्तिक गुल्म के समान

विशेषणंचाप्यपरंनिबोध ॥ यःस्पंदतेपिंडितएवनांगैश्चि रात्सशूलःसमगर्भलिंगः ॥ सरौधिरःस्त्रीभवएवगुल्मोमा सेऽव्यतीतेदशमेचिकित्स्यः १६ संचितःक्रमशोगुल्मो महावस्तुपरिग्रहः ॥ कृतमूलशिरानद्धो यदाकूर्मइवोन्न तः १७ दौर्बल्यारुचिहल्लासकासच्छर्द्यरुचिज्वरैः ॥ तृष्णातंद्राप्रतिश्यायैर्युज्यतेनमसिध्यति १८ गृहीत्वास

होते हैं व कुछ विशेष लक्षण होताहै वह भी सुनो जो स्त्री का रक्तज पिण्ड ऐसी,वैसी चलतारहे पर हाथ पैर ,शिर आदि अंग न जानपड़ें व बहुत दिनोंके पीछे कभी पीड़ा भी उठै पर स्त्रीके गर्भके जो लक्षण होते हैं वे सबहीं जैसे कि स्तनों से दूध,उ-तरना उनका मोटा होजाना ऊपरका भाग काला परजाना इत्यादि व गर्भ के संग फिर रुधिर नहीं गिरता और रक्त गुल्म में कभी २ रुधिर गिरता जाताहै ऐसे गुल्मका औषध दशमहीने वीतजाने के पीछे करना चाहिये क्योंकि दशमासतक गर्भ की शंका वनी रहती है इसके सिवाय जब गर्भ के लक्षणोंसे कुछ विरुद्धता पाने से निश्चय भी होजाय कि यह गर्भ नहीं है गु-ल्मही है तौ भी दशमास के पीछेही इस रक्त गुल्मका औषध क-रना चाहिये क्योंकि-दशमासके भीतर औषध करने से गर्भा-शयनष्टहोजाता है, व जब तक दशमास नहीं होते यह गुल्मभी परिपक्व नहीं होता इससे औषध करने से अच्छा नहीं होता १६ अवस्था के अनुसार रक्त गुल्म के असाध्य होने का लक्षण-जब क्रमसे रक्त गुल्म बहुत दिनोंका होजाताहै व धातुमें व्याप्त होकर बहुत नसें उसके ऊपर फैलजाती हैं इससे नसों से बँधजाता है व कछुआ के समान ऊंचा होजाता है १७ तब उसस्त्री को दुर्बलता आजाती है अरुचि होती जीमचलाता खांसी आती ओकाई लगती असन्तोष होजाता, ज्वर आता तृष्णा तन्द्रा नाकबहना ये सब उपद्रव होजातेहैं तब यह रोग सिद्धनहीं होता

ज्वरंश्वासंछर्द्यतीसारपीडितम् ॥ हृन्नाभिहस्तपादेषुशोफःकर्षतिगुल्मिनम् १९ श्वासशूलोपिपासान्न विद्वेषो ग्रंथिमूढता ॥ जायतेदुर्बलत्वंच गुल्मिनोमरणायवै २०

॥ इतिगुल्मनिदानम् ॥

अत्युष्णगुर्वम्लकषायतिक्त श्रमाभिघाताध्ययनप्रसंगैः॥ संचिन्तनैर्वेगविधारणैश्च हृदामयःपंचविधः प्रदिष्टः १ दूषयित्वारसंदोषा विगुणाहृदयंगताः ॥ हृदिबाधांप्रकुर्वंति हृद्रोगंतंप्रचक्षते २ आयम्यतेमारुतजे

असाध्य होजाता है १८ इसके औरभी असाध्यलक्षण—जवज्वर सहित दमआने लगती है वमनहोता और दस्तभी आनेलगतेहैं उसमें पीडाभीहोती है हृदय नाभि हाथ व पैरोंमेंशोथआजाताहै तब उस रोगिणी स्त्रीको यहरोग खींचहीलेता जीतीनहीं १९ इसमेंक्या जिसीकिसी गुल्मवाले को जब श्वास व शूल संगही संगहों व पिपासालगतीहीरहै अन्नउविठिजाय गांठिबहुतकड़ीहो जाय व शरीर दुर्बलहोजाय तो फिरउसगुल्मवालेका मरणही होजाता है २० इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेसर्वगुल्मनिदान मेकत्रिंशत्तमम् ॥ ३१ ॥

दोहा ॥ बत्तिसयें महँ कहं हृदय रोग निदान विधान ॥
सोहै पञ्चप्रकार कर देखहिं लोग महान १

अब हृदय के रोगका निदान कहते हैं अतिउष्ण अतिभारी अतिखट्टा अतिकसैला अतिकडू ऐसे पदार्थों के खानेसे बहुत श्रमकरनेसे लाठीआदिकी चोटलगजाने से बहुत ज़ोरसे पढ़ने से बहुत चिन्तवन करनेसे मलमूत्र व अधोवायुके वेगके रोंकने से हृदयमें रोगहोताहै वहपांचप्रकारका होताहै १ उसकी सम्प्राप्ति और सामान्य लक्षण—पवनादिक दोष कुपित होकर रसको दूषितकर हृदय में जाय नानाप्रकारकी बाधाकरते हैं उसीको हृदय रोगकहते हैं २ वायुज हृदय रोगके लक्षण—वातज हृदय

हृदयंतुद्यतेतथा ॥ निर्मथ्यतेदीर्य्यतेचस्फोटयतेपाटयतेपिच ३ तृष्णोष्मदाहमोहास्स्युःपैत्तिकेहृदयेक्लमः ॥ धूमायनंचमूर्च्छाचक्लेदःशोषोमुखस्यच ४ गौरवंकफसंस्रावोरुचिस्तंभोग्निमार्दवम् ॥ माधुर्यमपिचास्यस्यबलासावतेहृदि ५ विद्यात्त्रिदोषादपिसर्वलिंगंतीव्रार्त्तितोदंक्रिमिजंसकण्डूम् ॥ उत्क्लेदःष्ठीवनंतोदःशूलंहृल्लासकस्तमः ॥ अरुचिःश्यावनेत्रत्वंशोषश्चक्रिमिजेभवेत् ६ क्लमः

रोगमें हृदयतनतासा रहता कोंचतासारहता मथने के समान खलभलाता रहता दोखण्ड होनेके समान फटाजाता चीरने के तुल्य चरांता कुठारादिसे फाड़नेके तुल्य पीड़ितहोताहै ३ पित्तज हृदय रोगके लक्षण–पित्तज हृदयरोगमें हृदयमें तृष्णा उष्णता दाह मोह ग्लानि धुआँइधमाना मूर्च्छा पसीना व मुख का सूखना ये सब लक्षणहोते हैं ४ कफज हृदय रोगके लक्षण–जब कफज हृदय रोगहोता है तो शरीरमें गरुआपन रहताहै कफमुखसे अधिक गिरता रहताहै अरुचि रहती हृदयभारी अग्नि की मन्दता मुख मीठारहना ये सब लक्षण होते हैं ५ संनिपातज और कृमिज हृदय रोगके लक्षण–जिसमें वात पित्त कफ तीनों के लक्षणहों उसे त्रिदोपज अर्थात् सन्निपातका हृदयरोग जानना चाहिये इसमें कुपथ्य करने से गुल्म उत्पन्न होता है उससे कृमि उत्पन्न होताहै वह कृमिजरोग तीव्रपीड़ाको करताहै मानों कोई सुईसे कोंचताहै ऐसा विदित होताहै इसमें खुजली भी उठती है ओकाई आती थुकथुकी लगती कोंचनेकीसी पीड़ाहोती है शूलउठती जीमचलाता आगे अँधेरासा छाजाता अरुचिहोजाती नेत्र कालेहोजाते शरीर सूखजाताहै बस ये सब लक्षण इस कृमिज हृदयरोगमें होते हैं ६ इनसब हृदयरोगोंके उपद्रव ग्लानि शरीर विशीर्णहोना भ्रम और शरीर का सूखना ये सब इनहृदय के सब रोगों के उपद्रव हैं व कृमिज हृदयरोग में जो कफज

सादोश्रमःशोषोज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः ॥ कृमिजेकृमिजाती नांश्लेष्मजानांचयेमताः ७॥ इतिहृद्रोगनिदानम् ॥

व्यायामतीक्ष्णौषधरूक्षमद्य प्रसंगनृत्यद्रुतपृष्ठयाना त ॥ अनूपमत्स्याध्यशनादजीर्णात्स्युर्मूत्रकृच्छ्राणिनृणां तथाष्टौ १ पृथग्मलाःस्वैःकुपितानिदाने स्सर्वेथवाकोप मुपेत्यवस्तौ ॥ मूत्रस्यमार्गंपरिपीडयंति यदातदामूत्र यतीहकृच्छ्रात् २ तीव्राचरुक्वंक्षणबस्तिमेढ्रष्वल्पंमु हुर्मूत्रयतीहवातात् ॥ पीतंसरक्तंसरुजंसदाहं वेगान्मुहु

हृदयरोग में उपद्रव कहे हैं वेही होते हैं जैसे कि मुखसे राल वहना जीमचलाना अन्न न पचना व अरुचिहोजाना ७॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेहृदयरोगनिदानन्द्वात्रिंशत्तमम्॥

दोहा॥ त्यौंतिसयेमहँ कह सुकवि मूत्रकृच्छ्र नीदान ॥
देखहिं सुजन लगायचित जो यहिमाहिं प्रधान १

अथमूत्रकृच्छ्ररोगका निदान कहते हैं—अतिपरिश्रम करनेसे तीक्ष्ण औषध सेवन करनेसे रूखीवस्तु बहुत खाजाने से अधिक मदिरा पीनेसे अति मैथुनकरनेसे नाचनेसे घोड़े हाथी बग्धीआदि शीघ्र चलनेवालेके पीछे दौड़ने से वा बहुत घोड़परचढ़के दौड़नेसे जलचर के मांसकेखाने व जलसमीपी जीवके मांसकेखाने से अजीर्ण होने से मनुष्योंको आठप्रकार के मूत्रकृच्छ्र होते हैं १ अपने २ कारणों से संकुपित वात पित्त कफ अलग २ वा सब के सब इकट्ठे होकर पेडू के भीतरजाकर मूत्र के मार्गको जब परिपीड़ित करते हैं तो मनुष्य बड़ेकष्ट से मूतताहै इसीको मूत्रकृच्छ्र कहतेहैं २ वातज और पित्तज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण वात के मूत्रकृच्छ्र में अण्डसन्धिमें मूत्राशयमें व लिंग में तीव्र पीड़ा होती है व बार २ थोड़ा सा मूतता है और पित्तज मूत्रकृच्छ्र में पीला लाल लिये दाह सहित पीड़ाकरतेहुये मूत्रको बार २ बड़े

मूत्रयतीहपित्तात् ३ बस्तेस्सलिंगस्यगुरुत्वशोथौमूत्रं सपिच्छंकफमूत्रकृच्छ्रे ॥ सर्वाणिरूपाणिचसन्निपाताद्भवंतितत्कृच्छ्रतमंचकृच्छ्रम् ४ मूत्रवाहिषुशल्येनक्षतेष्वभिहतेषुच॥मूत्रकृच्छ्रन्तदाघातात्जायतेभृशदारुणम् ॥ वातकृच्छ्रेणतुल्यानि तस्यलिंगानिनिर्दिशेत् ५ शकृतस्तुप्रतीघाताद्वायुर्विगुणतांगतः ॥ आध्मानंवातशूलौ च मूत्रसंगंकरोतिच ६ अश्मरीहेतुतत्पूर्वं मूत्रकृच्छ्रमुदाहरेत् ॥ शुक्रेदोषैरुपहते मूत्रमार्गेविधारिते ॥ सशुक्रं मूत्रयेत्कृच्छ्राद्वस्तिमेहनशूलवान् ७ अश्मरीशर्कराचैव

वेग से छोड़ताहै ३ कफज व सन्निपातज मूत्रकृच्छ्र के लक्षण-कफके मूत्रकृच्छ्र में मूत्राशय व लिंग में गुरुता और शोथ दोनों होते हैं व मूत्रमें चिकनाई होती है व सन्निपात के मूत्रकृच्छ्र में वात पित्त कफतीनोंके सब लक्षण होतेहैं यह मूत्रकृच्छ्र अत्यन्त कष्टदहोताहै ४ शल्यजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण—जबमूत्रनिकलनेवाली नसों में कभी किसीकी चोट अधिक लगजाती है तो उसके आघातसे अतिदारुण मूत्रकृच्छ्र रोग उत्पन्न होजाता है इसके सब लक्षण वातकृच्छ्रके तुल्य होते हैं ५ पुरीषजन्य मूत्रकृच्छ्रके लक्षण—जबकभी मलमेंकिसीप्रकारका अभिघातहोताहै तोवायु उलटा चलने लगता है व्बस उसीसमय पेटको फुलादेता और शूलउठाताहै व मूत्रको रोकदेताहै इसीको पुरीष अर्थात् मलसे उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ६ अश्मरीजन्य व शुक्रजमूत्रकृच्छ्रों के लक्षण—पथरीरोगके होनेके कारण जोकष्ट से मूताजाताहै उसे अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्रकहते हैं जब शुक्र अर्थात् काममें दोषोंका योग होताहै इससे शुक्र अभिहत होजाताहै मूत्र के मार्ग में ; तो घाव करदेता है अथवा मांस बढ़ाकर उसे रोकताहै तब ; कष्ट से मूताजाताहै अथवा मूत्र के साथ धातुजाने लगताहै

तुल्यसंभवलक्षणे ॥ विशेषणंशर्करायाःशृणुकीर्त्तयतो मम ८ पच्यमानाश्मरीपित्ताच्छोष्यमाणाचवायुना ॥ विमुक्तकफसंधानाक्षरंतीशर्करामता ९ हृत्पीडावेपथुः शूलंकुक्षावग्निश्चदुर्बलः ॥ तथाभवतिमूर्च्छाचमूत्रकृच्छ्रंसुदारुणम् १० ॥ इतिमूत्रकृच्छ्रनिदानम् ॥

जायंतेकुपितैर्दोषैर्मूत्राघातास्त्रयोदश ॥ प्रायोमूत्रविघाताद्यैर्वातकुण्डलिकादयः १ रौक्ष्याद्वेगविघाताद्वावायुर्बस्तौसवेदनः ॥ मूत्रमाविश्यचरतिविगुणःकुंडलीकृतः २

इसमें मूत्राशय और लिंग में पीड़ा होती है ७ अश्मरीरोग व शर्करा रोग इन दोनों के लक्षण—व उत्पत्ति एकही हैं परन्तु शर्करा रोग में जो विशेषता है उसे हम कहते हैं सुनो ८ पित्त से पककर और वायु से शोषित होकर जबतक कफ का ज़ोर न होने से बँधतीनहीं तबतक अश्मरी जिसे पथरी कहते हैं नहीं बनती व उसी बीचमें मूत्रके संग कुछ खरखराहटके साथ गिरने को शर्करारोग कहते हैं ९ इसशर्करा रोगमें हृदयमें पीड़ाहोतीहै शरीर कांपने लगताहै कोखिमें शूलउठती है और अग्निमन्द होजाताहै मूर्च्छा होती है यह मूत्रकृच्छ्र अतिदारुण होताहै१० ॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमूत्रकृच्छ्र
निदानन्त्रयस्त्रिंशत्तमम् ३३ ॥

दोहा ॥ चौंतिसयें महँ कह सुकवि मूत्राघात निदान ॥
सब वे तेरह होत हैं यहां कहे सविधान १

बहुधा मूत्रमल व शुक्रके रोकने से दोषोंके कुपित होने से वात कुण्डलिकादिक तेरहप्रकार के मूत्राघातनाम रोगहोतेहैं १ वातकुण्डलिका नाम मूत्राघात के लक्षण—रुखाई से अथवा मूत्रादिकों के वेगों के रोकनेसे वायु मूत्राशयमें जाय पीड़ाकरता हुआ मूत्रमें प्रवेशकरके कुण्डलाकार बिगड़कर घूमने लगताहै२

मूत्रमल्पाल्पमथवासरुजंसंप्रवर्त्तते ॥ वातकुंडलिकांतां तुव्याधिंविद्यात्सुदारुणम् ३ आध्मापयन्वस्तिगुदंरुद्ध्वावायुश्चलोन्नताम् ॥ कुर्यात्तीव्रार्त्तिमष्ठीलांमूत्रविण्मार्गरोधिनीम् ४ वेगंविधारयेद्यस्तु मूत्रस्याकुशलोनरः ॥ निरुणद्धिमुखंतस्यवस्तेर्वस्तिगतोनिलः ५ मूत्रसंगोभवेत्तेन वस्तिकुक्षिनिपीडितः ॥ वातवस्तिस्सविज्ञेयो व्याधिःकृच्छ्रप्रसाधनः ६ चिरंधारयतोमूत्रंत्वरयानप्रवर्त्तते॥ मेहमानस्यमंदंवा मूत्रातीतःसउच्यते ७ मूत्रस्यवेगेभिहते तदुदावर्त्तहेतुकः ॥ अपानःकुपितोवायुरुदरंपूरयेद्भृशम् ८ नाभेरधस्ताद्ध्मानंजनयेत्तीव्रवेदनम् ॥ तन्मू

तब मूत्र थोड़ा २ होनेलगता है अथवा पीड़ा सहित होता है इसरोगको वातकुण्डलिका कहते हैं इसे अतिदारुण जानना चाहिये ३ अष्ठीला मूत्राघात के लक्षण—वायु मूत्राशय और गुदको फुलाकर व रोंककर चलतीहुई ऊँची बड़े कष्टदेनेवाली व मूत्र मलके रोकनेवाली अष्ठीलानामवाली पत्थर सरीखी गांठिको करता है ४ वातवस्तिनाम मूत्राघातके लक्षण—जो पुरुष योगाभ्यास नहीं जानता वह अकुशल मनुष्य पेशाब लगने पर जब नहीं करता उसे रोंकलेताहै तो मूत्राशयमें रहनेवाला वायु फिर मूत्राशयके मुखको बन्दकरलेताहै ५ इससे फिर मूत्र बन्दहोजाताहै उसीसे मूत्राशयमें व कोठे में वह वायु पीड़ाकरने लगताहै इसरोगको वातवस्तिनाम मूत्राघात कहते हैं यह रोग बड़े कष्ट से साध्य होताहै ६ मूत्रातीतनाम मूत्राघात के लक्षण—जबबड़ी देरतक मूत्रको रोंकेरहते हैं तो फिर शीघ्रताकेसाथ मूत्र नहीं खुलता वरन जब मूतने लगते हैं तो धीरे २ मूताजाता है इस रोगको मूत्रातीत कहते हैं ७ मूत्रजठरनाम मूत्राघात के लक्षण—मूत्रके वेगकेरोंकनेसे उससे उदावर्त्तरोग होताहै जिसका कारण

त्रजठरंविद्यादधोवस्तिनिरोधनम् ९ वस्तौवाप्यथवानाडे मणौवायस्यदेहिनः ॥ मूत्रंप्रवृत्तंसज्येतसरक्तंवाप्रवाहतः १० स्रवेच्छनैरल्पमल्पंसरुजंवाप्यनीरुजम् ॥ विगुणानिलजोव्याधिःसमूत्रोत्संगसंज्ञितः ११ रूक्षस्यक्लांतदेहस्यवस्तिस्थौपित्तमारुतौ॥ मूत्रक्षयंसरुग्दाहंजनयेतांतदाक्षयम् १२ अन्तर्वस्तिमुखेवृत्तःस्थिरोल्पःसहसाभवेत् अश्मरीतुल्यरुग्ग्रन्थिर्मूत्रग्रन्थिःसउच्यते १३ मूत्रितस्यस्त्रियंयातोवायुनाशुक्रमुद्धतम् ॥स्थानाच्च्युतंमूत्रयतःप्राक्पश्चाद्वाप्रवर्त्तते ॥ भस्मोदकप्रतीकाशंमूत्रशुक्रंतदुच्य

गुदमें रहनेवाला अपानवायु है वह कुपित होकर पेटको भरदेता है ८ व नाभिके नीचे पेडूको फुलादेता व बड़ीभारी पीड़ाकरने लगताहै इसरोगका मूत्रजठरनाम है यह नाभिकेनीचे मूत्राशय को रोंकरखता है ९ मूत्रोत्संगनाम मूत्राघात के लक्षण—जब पेशाब लगताहै व किसी प्राणी के किसी कुयोग से मूत्राशयमें वा लिंगमें वा लिंगके अग्रिम भागमें अड़जाताहै वह रक्तसहित वा ऐसेही जब थोड़ा २ होताहै १० व धीरे २ बहुत थोड़ा होता है वह चाहे पीड़ाकेसाथहो अथवा बिना पीड़ाकाहो तब इसकुपित वायुसे उत्पन्न रोगको मूत्रोत्संग कहते हैं ११ मूत्रक्षयनाम मूत्राघात के लक्षण—रूखे व अतिश्रमसे थकेहुये पुरुष के मूत्राशय में टिकेहुये पित्त व पवन पीड़ा व दाहसहित मूत्रकानाश करदेते हैं इससे इसरोगका मूत्रक्षयनाम कहाजाता है १२ मूत्रग्रन्थिनाम मूत्राघात के लक्षण—मूत्राशयके मुखपर गोल २ अचल छोटासा जो एकाएकी होभावे व पथरी रोगकेतुल्य पीड़ाकरे इस गाँठिरूप रोगको मूत्रग्रन्थि कहते हैं १३ मूत्रशुक्रनाम मूत्राघात के लक्षण—जिस पुरुषके पेशाब लगाहोताहै व उसीसमय बिना पेशाब कियेही स्त्रीप्रसंग करने लगताहै तो पवन शुक्रको उसके

ते १४ व्यायामाध्वातपैःपित्तंवस्तिंप्राप्यानिलान्वितम्॥ वस्तिंमेढ्रंगुदंचैवप्रदहन्स्रावयेदधः १५मूत्रंहारिद्रमथवा सरक्तंरक्तमेववा॥ कृच्छ्रात्पुनःपुनर्जंतोरुष्णवातंवदंतित म् १६ पित्तंकफोवाद्वौवापिसंहन्येतेनिलेनचेत्॥ कृच्छ्रा न्मूत्रंतदापीतंरक्तंश्वेतंघनंसृजेत् १७ सदाहंरोचनाशंख चूर्णवर्णंभवेत्ततः॥ शुष्कंसमस्तवर्णंवामूत्रसादंवदंतित म् १८ रूक्षान्नभुग्दुर्बलयोर्वातेनाधोद्धृतंशकृत् ॥ मूत्र स्रोतोनुपद्येतविट्संसृष्टंतदानरः १९ विड्गंधंमूत्रयेत्कृ च्छ्राद्विड्विघातंविनिर्दिशेत् २० द्रुताध्वलंघनायासैरभि

स्थानपरसे हटादेताहै फिर जब वह पेशाब करने लगता है तो कितो उसके प्रथमही वा पीछेको वह काम गिरताहै उसकारंग राखमिलेहुये पानीकासाहोताहै इसरोगको मूत्रशुक्रकहते हैं १४ उष्ण वातनाम मूत्राघातके लक्षण—अधिकश्रम दण्ड मुद्गरादि करनेसे वा बहुत मार्गचलने से अथवा अधिक घाम लूक लग जानेसे वायुसहित पित्त मूत्राशय में पहुँचकर मूत्राशय लिंग व गुदको जलतेहुये पित्तवायु १५ हरिद्राके रंगका वा रक्तकेरंगका वा रक्तही मूत्रके स्थानसे चुआते हैं वह रक्त वा हरिद्राके रंगका मूत्र बड़े कष्ट से बार२ पुरुषके होताहै उसरोगको उष्णवातकहते हैं १६ मूत्रासादके लक्षण—जब पित्त वा कफ वा दोनों जाकर वायु में बनाय मिलजाते हैं तब बड़े कष्टसे पीला लाल अथवा श्वेत व गाढ़ा पेशाब होताहै १७ अथवा जलताहुआ होता है फिर पृथ्वीपर गिरनेके पीछे जमकर गोरोचन व शंखके चूर्णकेरंग काहोजाताहै अथवासूखनेपर सबरंगका होजाताहै इस रोगको मूत्रासाद कहते हैं १८ विड्विघातके लक्षण- रूखाअन्न खानेवाले व दुर्बल पुरुषके मलकोवायु आच्छादित करके लेजाय मूत्र के स्थानमें करदेता तब वह पुरुष विष्ठामिला मूत्र मूतताहै १९

घातात्प्रपीडनात ॥ स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तः स्थूलस्तिष्ठ तिगर्भवत् २१ शूलस्पंदनदाहार्तोबिंदुंबिंदुंस्रवत्यपि ॥ पीडितस्तुसृजेद्धारंसस्तंभोद्वेष्टनार्तिमान् २२ वस्तिकुंड लमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् ॥ पवनप्रबलंप्रायोदुर्निवा रमबुद्धिभिः २३ तस्मिन्पित्तान्विते दाहःशूलंमूत्रविवर्ण ता ॥ शोथःश्लेष्मयुतेगौरंस्निग्धम्मूत्रंद्घनंसितम् २४ श्लेष्मरुद्धविलोवस्तिःपित्तोदीर्णोनसिध्यति ॥ अविभ्रा न्तविलस्साध्योनचयःकुण्डलीकृतः २५ स्याद्वस्तौकुंड

जिसकी गन्धि विष्ठाकीसी आती है इसके मूतने में बड़ाही कष्ट होताहै व इसका विड्विघातनाम कहना चाहिये २० वस्तिकु- ण्डलके लक्षण–बहुत दौड़कर मार्ग चलनेसे उपवास करनेसे बहुत श्रम करने से लाठीआदिकी चोट लगनेसे कहीं दबजानेसे वा कुचलजानेसे मूत्राशय अपने स्थानसे कुछेक ऊपर जाकर पेडूको फुलाकर गर्भकी नाईं करदेताहै २१ इससे शूल कुछच- लना दाह व पीड़ा ये सब होतेहैं मूत्र बूँद २ होताहै जब मूत्रा- शयपर जोर परताहै तब मूत्रकीधारा बहने लगतीहै जबस्तम्भन होजाताहै पेशाब रुँकताहै तो बड़ीपीड़ा होती है २२ इसरोगको वस्तिकुण्डल कहते हैं यह शस्त्र और विषके तुल्य घोर होता है इसमें प्रायः पवन की प्रबलता होतीहै व थोड़ी बुद्धिवाले वैद्योंसे बड़े कष्टसे इसकानिवारण होताहै २३ यहरोग जब पित्तयुक्तहोता है तो दाह शूलहोतीहै वमूत्र रंगबिरंगकाहोताहै व जब कफसेयुक्त होताहै तो पेशाब उजला होता पर मूत्राशयमें शोथहोआताहै व मूत्र चिकना व गाढ़ा व बहुत श्वेत होताहै २४ साध्यासाध्यका विचार-जिस मूत्राशयका छिद्रकफसे रूँधजाताहै अथवा पित्तयुक्त होताहै वह सिद्धनहींहोता किन्तु असाध्य होताहै वजिसमूत्राश- यका मुहँखुला रहताहै वह साध्य होता है और जो कुण्डली

लीभूतेतृष्णमोहःश्वासएवच २६ ॥ इतिमूत्राघातनिदानम्॥

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजास्मृता ॥ प्राय श्श्लेष्माश्रयास्सर्वाश्श्मर्यस्स्युर्यमोपमा १ विशोषये द्वस्तिंगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा ॥ यदातदाश्म र्य्युपजायतेतुक्रमेणपित्तेष्विवरोचनार्गोः २ नैकदोषाश्र याःसर्वाअथासांपूर्वलक्षणम् ॥वस्त्याध्मानंतदासन्नदेशे षुपरितोतिरुक् ३ मूत्रेवस्तस्यगंधत्वंमूत्रकृच्छ्रंज्वरोरु चिः४सामान्यलिंगंरुग्नाभिसेवनीवस्तिमूर्द्धसु ॥विशीर्ण

क्तनहीं है वह भी साध्य होता है २५ जब मूत्राशय कुण्डली भूत होजाता है तो तृष्णा मोह और श्वास होते हैं ॥ २६ ॥ इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमूत्रावातनिदानेचतुस्त्रिंशत्तमम् ३४॥

दोहा ॥ पैंतिसयें महँ अश्मरी रोग निदान बखान ॥
लपहिं सुजन सीखहिं भले स्यहि निष्काश विधान १

अश्मरी अर्थात् पथरी रोग के लक्षण--वात पित्त व कफ से तीन प्रकारकी अश्मरियां होती हैं व चौथी शुक्र से उत्पन्न होती है बहुधा सब अश्मरियों में कफहीकी प्रधानता होती है व सब यमराज के तुल्य होती हैं १ इस के सम्प्राप्ति के लक्षण--जब पवन मूत्राशय में जाकर शुक्र सहित वा पित्त सहित मूत्रको अथवा कफको सुखाता है तब जमकर अश्मरी अर्थात् पथरी होजाती है जैसे गाय के पित्त में जमकर गोरोचना बनजाती है २ अश्मरी का पूर्वरूप-सब अश्मरियोंमें अनेक दोष होतेहैं अब इन के पूर्व का लक्षण कहते हैं- सबों में वस्ति फूलजाती है व वस्तिके चारों ओर पीड़ा हुआकरती है ३ मूत्र में छागके मूत्रकी सी गन्धि आती है व पेशाब बड़े कष्टसे उतरता है ज्वर होता भोजनादि में अरुचि रहती है ४ अश्मरी रोग के सामान्य लक्षण ये हैं पथरी के सामान्य लक्षण हैं कि नाभि में व मूत्राशय के ऊपरी भाग में पीड़ा होती है और जब पथरी से मूत्र का मार्ग रुक

घातात्प्रपीडनात् ॥ स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तः स्थूलस्तिष्ठतिगर्भवत् २१ शूलस्पंदनदाहार्तोविंदुंविंदुंस्रवत्यपि ॥ पीडितस्तुसृजेद्धारांसंस्तंभोद्वेष्टनार्त्तिमान् २२ वस्तिकुंडलमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् ॥ पवनप्रबलंप्रायोदुर्निवारमबुद्धिभिः २३ तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलंमूत्रविवर्णता ॥ शोथःश्लेष्मयुतेगौरःस्निग्धम्मूत्रञ्घनंसितम् २४ श्लेष्मरुद्धविलोवस्तिःपित्तोदीर्णोनसिध्यति ॥ अविभ्रान्तविलस्साध्योनचयःकुण्डलीकृतः २५ स्याद्वस्तौकुंड

जिसकी गन्धि बिष्ठाकीसी आती है इसके मूतने में बड़ाही कष्ट होताहै व इसका विड्विघातनाम कहना चाहिये २० वस्तिकुण्डलके लक्षण—बहुत दौड़कर मार्ग चलनेसे उपवास करनेसे बहुत श्रम करने से लाठीआदिकी चोट लगनेसे कहीं दबजानेसे वा कुचलजानेसे मूत्राशय अपने स्थानसे कुछेक ऊपर जाकर पेड़ूको फुलाकर गर्भकी नाईं करदेताहै २१ इससे शूल कुछचलना दाह व पीड़ा ये सब होतेहैं मूत्र बूँद २ होताहै जब मूत्राशयपर जोर परताहै तब मूत्रकीधारा बहने लगतीहै जबस्तम्भन होजाताहै पेशाब रुँकताहै तो बड़ीपीड़ा होती है २२ इसरोगको वस्तिकुण्डल कहते हैं यह शस्त्र और विषके तुल्य घोर होता है इसमें प्रायः पवन की प्रबलता होतीहै व थोड़ी बुद्धिवाले वैद्योंसे बड़े कष्टसे इसकानिवारण होताहै २३ यहरोग जब पित्तयुक्तहोता है तो दाह शूलहोतीहै वमूत्र रंगबिरंगकाहोताहै व जब कफसेयुक्त होताहै तो पेशाब उजला होता पर मूत्राशयमें शोथहोआताहै व मूत्र चिकना व गाढ़ा व बहुत श्वेत होताहै २४ साध्यासाध्यका विचार-जिस मूत्राशयका छिद्रकफसे रूँधजाताहै अथवा पित्तयुक्त होताहै वह सिद्धनहींहोता किन्तु असाध्य होताहै वजिसमूत्राशयका मुहँखुला रहताहै वह साध्य होता है और जो कुण्डली

लीभूतेतृष्णमोहःश्वासएवच २६ ॥ इतिमूत्राघातनिदानम् ॥
वातपित्तकफैस्तिस्त्रश्चतुर्थीशुक्रजास्मृता ॥ प्राय श्लेष्माश्रयास्सर्वाअश्मर्यस्स्युर्यमोपमा १ विशोषयेद्वस्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा ॥ यदातदाश्मर्य्युपजायतेतुक्रमेणपित्तेष्विवरोचनागौः २ नैकदोषाश्रयाःसर्वाअथासांपूर्व्वलक्षणम् ॥वस्त्याध्मानंतदासन्नदेशेषुपरितोतिरुक् ३ मूत्रेवस्तस्यगंधत्वंमूत्रकृच्छ्रंज्वरोरुचिः४सामान्यलिंगंरुग्नाभिसेवनीवस्तिमूर्द्धसु ॥विशीर्ण

कृतनहीं है वह भी साध्य होता है २५ जब मूत्राशय कुण्डलीभूत होजाता है तो तृष्णा मोह और श्वास होते हैं ॥ २६ ॥ इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमूत्राघातनिदानेचतुस्त्रिंशत्तमम् ३४॥

दोहा ॥ पैंतिसयें महँ अश्मरी रोग निदान बखान ॥
लखहिं सुजन सीखहिं भले स्वहि निष्काश विधान ३

अश्मरी अर्थात् पथरी रोग के लक्षण -बात पित्त व कफ से तीन प्रकारकी अश्मरियां होती हैं व चौथी शुक्र से उत्पन्न होती है बहुधा सब अश्मरियों में कफहीकी प्रधानता होती है व सब यमराज के तुल्य होती हैं १ इस के सम्प्राप्तिके लक्षण--जब पवन मूत्राशय में जाकर शुक्र सहित वा पित्त सहित मूत्रको अथवा कफको सुखाता है तब जमकर अश्मरी अर्थात् पथरी होजाती है जैसे गाय के पित्त में जमकर गोरोचना बनजाती है २ अश्मरी का पूर्व्वरूप-सब अश्मरियोंमें अनेक दोष होतेहैं अब इन के पूर्व्व का लक्षण कहते हैं- सबों में वस्ति फूलजाती है व वस्तिके चारों ओर पीड़ा हुआकरती है ३ मूत्र में छागके मूत्रकी सी गन्धि आती है व पेशाब बड़े कष्ट से उतरता है ज्वर होता भोजनादि में अरुचि रहती है ४ अश्मरी रोग के सामान्य लक्षण ये हैं पथरी के सामान्य लक्षण हैं कि नाभि में व मूत्राशय के ऊपरी भाग में पीडा होती है और जब पथरी से मूत्र का मार्ग रुक

घातात्प्रपीडनात् ॥ स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तः स्थूलस्तिष्ठ तिगर्भवत् २१ शूलस्पंदनदाहार्तोबिंदुंबिंदुंस्रवत्यपि ॥ पीडितस्तुसृजेद्धारांसंस्तंभोद्वेष्टनार्त्तिमान् २२ वस्तिकुंडलमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् ॥ पवनप्रबलंप्रायोदुर्निवारमबुद्धिभिः २३ तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलंमूत्रविवर्णता ॥ शोथःश्लेष्मयुतेगौरःस्निग्धम्मूत्रञ्घनंसितम् २४ श्लेष्मरुद्धबिलोवस्तिःपित्तोदीर्णोनसिध्यति ॥ अविभ्रान्तबिलस्साध्योनचयःकुण्डलीकृतः २५ स्याद्वस्तौकुंड

जिसकी गन्धि विष्ठाकीसी आती है इसके मूतने में बड़ाही कष्ट होताहै व इसका विड्विघातनाम कहना चाहिये २० वस्तिकुण्डलके लक्षण—बहुत दौड़कर मार्ग चलनेसे उपवास करनेसे वहुत श्रम करने से लाठीआदिकी चोट लगनेसे कहीं दबजानेसे वा कुचलजानेसे मूत्राशय अपने स्थानसे कुछेक ऊपर जाकर पेड़ूको फुलाकर गर्भकी नाई करदेताहै २१ इससे शूल कुछचलना दाह व पीड़ा ये सब होतेहैं मूत्र बूँद २ होताहै जब मूत्राशयपर जोर परताहै तब मूत्रकीधारा वहने लगतीहै जबस्तम्भन होजाताहै पेशाब रुँकताहै तो बड़ीपीड़ा होती है २२ इसरोगको वस्तिकुण्डल कहते हैं यह शस्त्र और विषके तुल्य घोर होता है इसमें प्रायः पवन की प्रबलता होतीहै व थोड़ी बुद्धिवाले वैद्योंसे बड़े कष्टसे इसकानिवारण होताहै २३ यहरोग जब पित्तयुक्तहोता है तो दाह शूलहोतीहै वमूत्र रंगबिरंगकाहोताहै व जब कफसेयुक्त होताहै तो पेशाब उजला होता पर मूत्राशयमें शोथहोआताहै व मूत्र चिकना व गाढ़ा व बहुत श्वेत होताहै २४ साध्यासाध्यका विचार-जिस मूत्राशयका छिद्रकफसे रूँधजाताहै अथवा पित्तयुक्त होताहै वह सिद्धनहींहोता किन्तु असाध्य होताहै वजिसमूत्राशयका मुहँखुला रहताहै वह साध्य होता है और जो कुण्डली

लीभूतेतृष्णमोहःश्वासएवच २६ ॥ इतिमूत्राघातनिदानम् ॥

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजास्मृता ॥ प्राय श्लेष्माश्रयास्सर्वाअश्मर्यस्स्युर्यमोपमा १ विशोपये द्वस्तिंगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा ॥ यदातदाश्म र्युपजायतेतुक्रमेणपित्तेष्विवरोचनागोः २ नैकदोषाश्र याःसर्वाअथासांपूर्वलक्षणम् ॥ वस्त्याध्मानंतदासन्नदेशे षुपरितोतिरुक् ३ मूत्रेवस्तस्यगंधत्वंमूत्रकृच्छ्रंज्वरोरु चिः ४ सामान्यलिंगंरुग्नाभिसेवनीवस्तिमूर्द्धसु ॥ विशीर्ण

कृतनहीं है वह भी साध्य होता है २५ जब मूत्राशय कुण्डली भूत होजाता है तो तृष्णा मोह और श्वास होते हैं ॥ २६ ॥ इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमूत्राघातनिदानंचतुस्त्रिंशत्तमम् ३४॥

दोहा ॥ पैंतिसयें महँ अश्मरी रोग निदान बखान ॥
लखहिं सुजन सीखहिं भले स्यहि निष्काश विधान १

अश्मरी अर्थात् पथरी रोग के लक्षण--वात पित्त व कफ से तीन प्रकारकी अश्मरियां होती हैं व चौथी शुक्र से उत्पन्न होती है बहुधा सब अश्मरियों में कफहीकी प्रधानता होती है व सब यमराज के तुल्य होती हैं १ इस के सम्प्राप्ति के लक्षण--जब पवन मूत्राशय में जाकर शुक्र सहित वा पित्त सहित मूत्रको अथवा कफको सुखाता है तब जमकर अश्मरी अर्थात् पथरी होजाती है जैसे गाय के पित्त में जमकर गोरोचना बनजाती है २ अश्मरी का पूर्वरूप-सब अश्मरियोंमें अनेक दोष होतेहैं अब इन के पूर्व का लक्षण कहते हैं- सबों में वस्ति फूलजाती है व वस्तिके चारों ओर पीड़ा हुआकरती है ३ मूत्र में छागके मूत्रकी सी गन्धि आती है व पेशाब बड़े कष्ट से उतरता है ज्वर होता भोजनादि में अरुचि रहती है ४ अश्मरी रोग के सामान्य लक्षण ये हैं पथरी के सामान्य लक्षण हैं कि नाभि में व मूत्राशय के ऊपरी भाग में पीड़ा होती है और जब पथरी से मूत्र का मार्ग रुके

घातात्प्रपीडनात् ॥ स्वस्थानाद्वस्तिरुद्वृत्तः स्थूलस्तिष्ठतिगर्भवत् २१ शूलस्पंदनदाहार्तोविंदुंविंदुंस्रवत्यपि ॥ पीडितस्तुसृजेद्धारांसंस्तंभोद्वेष्टनार्त्तिमान् २२ वस्तिकुंडलमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् ॥ पवनप्रबलंप्रायोदुर्निवारमबुद्धिभिः २३ तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलंमूत्रविवर्णता ॥ शोथःश्लेष्मयुतेगौरंस्निग्धम्मूत्रञ्घनंसितम् २४ श्लेष्मरुद्धबिलोवस्तिःपित्तोदीर्णोनसिध्यति ॥ अविभ्रान्तविलस्साध्योनचयःकुण्डलीकृतः २५ स्याद्वस्तौकुंड

जिसकी गन्धि बिष्ठाकीसी आती है इसके मूतने में बड़ाही कष्ट होताहै व इसका विड्विघातनाम कहना चाहिये २० वस्तिकुण्डलके लक्षण–बहुत दौड़कर मार्ग चलनेसे उपवास करनेसे बहुत श्रम करने से लाठीआदिकी चोट लगनेसे कहीं दबजानेसे वा कुचलजानेसे मूत्राशय अपने स्थानसे कुछेक ऊपर जाकर पेडूको फुलाकर गर्भकी नाईं करदेताहै २१ इससे शूल कुछ चलना दाह व पीड़ा ये सब होतेहैं मूत्र बूँद २ होताहै जब मूत्राशयपर जोर परताहै तब मूत्रकीधारा बहने लगतीहै जबस्तम्भन होजाताहै पेशाब रुँकताहै तो बड़ीपीड़ा होती है २२ इसरोगको वस्तिकुण्डल कहते हैं यह शस्त्र और विषके तुल्य घोर होता है इसमें प्रायः पवन की प्रबलता होतीहै व थोड़ी बुद्धिवाले वैद्योंसे बड़े कष्टसे इसकानिवारण होताहै २३ यहरोग जब पित्तयुक्तहोता है तो दाह शूलहोतीहै वमूत्र रंगबिरंगकाहोताहै व जब कफसेयुक्त होताहै तो पेशाब उजला होता पर मूत्राशयमें शोथहोआताहै व मूत्र चिकना व गाढ़ा व बहुत श्वेत होताहै २४ साध्यासाध्यका विचार-जिस मूत्राशयका छिद्रकफसे रुँधजाताहै अथवा पित्तयुक्त होताहै वह सिद्धनहींहोता किन्तु असाध्य होताहै वजिसमूत्राशयका मुहँखुला रहताहै वह साध्य होता है और जो कुण्डली

लीभूतेतृष्णमोहःश्वासएवच २६ ॥ इतिमूत्राघातनिदानम् ॥

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजास्मृता ॥ प्राय श्श्लेष्माश्रयास्सर्वाश्रश्मर्यस्स्युर्यमोपमा १ विशोषये द्वस्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा ॥ यदातदाश्म र्य्युपजायतेतुक्रमेणपित्तेष्विवरोचनागौः २ नैकदोषाश्र याःसर्वाअथासांपूर्व्वलक्षणम् ॥वस्त्याध्मानंतदासन्नदेशे षुपरितोतिरुक् ३ मूत्रेवस्तस्यगंधत्वंमूत्रकृच्छ्रंज्वरोरु चिः४सामान्यलिंगंरुग्नाभिसेवनीवस्तिमूर्द्धसु ॥विशीर्ण

क्तनहीं है वह भी साध्य होता है २५ जब मूत्राशय कुण्डली भूत होजाता है तो तृष्णा मोह और श्वास होते हैं ॥ २६ ॥ इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमूत्राघातनिदानंचतुस्त्रिंशत्तमम् ३४॥

दोहा ॥ पैंतिसयें महँ अश्मरी रोग निदान बखान ॥
लखहिं सुजन सीखहिं भले त्यहि निष्काश विधान १

अश्मरी अर्थात् पथरी रोग के लक्षण -वात पित्त व कफ से तीन प्रकारकी अश्मरियां होती हैं व चौथी शुक्र से उत्पन्न होती है बहुधा सब अश्मरियों में कफहीकी प्रधानता होती है व सब यमराज के तुल्य होती हैं १ इस के सम्प्राप्ति के लक्षण--जब पवन मूत्राशय में जाकर शुक्र सहित वा पित्त सहित मूत्रको अथवा कफको सुखाता है तब जमकर अश्मरी अर्थात् पथरी होजाती है जैसे गाय के पित्त में जमकर गोरोचना बनजाती है २ अश्मरी का पूर्व्वरूप-सब अश्मरियोंमें अनेक दोष होतेहैं अब इन के पूर्व्व का लक्षण कहते हैं- सबों में वस्ति फूलजाती है व वस्तिके चारों ओर पीड़ा हुआकरती है ३ मूत्र में छागके मूत्रकी सी गन्धि आती है व पेशाब बड़े कष्ट से उतरता है ज्वर होता भोजनादि में अरुचि रहती है ४ अश्मरी रोग के सामान्य लक्षण ये हैं पथरी के सामान्य लक्षण हैं कि नाभि में व मूत्राशय के ऊपरी भाग में पीड़ा होती है और जब पथरी से मूत्र का मार्ग रुके

धारंमूत्रंस्यात्तयामार्गेनिरोधिते ५ तद्व्यपायासुखंमे हेदच्छंगोमेदकोपमम् ॥ तत्संक्षोभात्क्षतेसासृमायासाच्चा तिरुग्भवेत् ६ तत्रवाताद्भृशार्त्यार्त्तोदंतान्खादतिवेपते ॥ मृथ्नातिमेहनंनाभिंपीडयत्यनिशंक्वणन् ७ सानिलंमुंच तिशकृन्मुहुर्मेहतिबिंदुशः ॥ श्यावारुणाश्मरीचास्यास्स्या त्चिताकंटकैरिव ८ पित्तेनदह्यतेबस्तिःपच्यमानइवोष्म वान् ॥ भल्लातकास्थिसंस्थानरक्तापीतासिताश्मरी ९ ब स्तिर्निस्तुद्यतइवश्लेष्मणाशीतलोगुरुः ॥ अश्मरीम

जाता है तो पेशाव थोड़ा २ पतरी धारा से होता है ५ जब प- थरी मूत्रके मार्ग से हटजाती है तो सुख से मूत्र उतरता है कुछ भी कष्ट नहीं होता व मूत्रका रंग अच्छा गोरोचन के तुल्य होता है व जब अश्मरी के चलायमान होनेसे घाव होजाता है तब रु- धिर सहित मूत निकलता है जब बड़ा ज़ोर किया ज़ाताहै तो पेशाव केसमय बड़ी पीड़ा होती है ६ वात से उत्पन्न पथरी के लक्षण—वातकी पथरीवालारोगी अत्यंत दुःख से पीड़ित होता है यहां तक कि दांत पीसने लगता व कांपने लगता है व मूतनेके समय नाभि व लिंग को सुहराने लगताहै व निरन्तर कांखता हाय २ करता रहताहै ७ मल उतरनेके समय शब्द बहुत होताहै व मूत्र बार२ बूंद २ करके उतरताहै उसके भीतर से जब निकाली जातीहै तो लाल काली मिलीहुई पथरी निकलती है वह मानों कांटों से बिन्हीं हुई होती है ८ पित्तकी अश्मरी के लक्षण— पित्तकी अश्मरी में मूत्राशय में दाहहोताहै मानों इतनी उष्णता होती है कि कोई पकाये डालताहै उसमें से जब पथरी निकाली जातीहै तो भेलावां के डौलकी लाल पीली व काली निकल तीहै ९ कफकी पथरीके लक्षण-कफकी पथरीमें मूत्राशयमें मानों कोंचनेकी पीड़ा होती है वह स्थान शीतल व भारी जानपड़ताहै

हतीश्लक्ष्णामधुवर्णाथवासिता १० एताभवंतिबालानां तेषामेवचभूयसा॥ आश्रयोपचयाल्पत्वाद्ग्रहणाहरणेसुखाः ११ शुक्राश्मरीतुमहतांजायतेशुक्रधारणात् ॥ स्थानाच्च्युतमभुक्तंहिमुष्कयोरंतरेनिलः १२ शोषयत्युपसंहृत्यशुक्रंतच्छुक्रमश्मरी १३ वस्तिरुक्कृच्छ्रमूत्रत्वंमुष्कश्वयथुकारिणी ॥ तस्यामुपन्नमात्रायांशुक्रमेतिविलीयते १४ पीडितेत्ववकाशोस्मिन्नश्मर्य्येवचशर्करा १५ अणु

व पथरी बड़ी चिकनी मधुके रंगकी अथवा उजली होती है १० बहुधा ये सब प्रकारकी पथरियां बालकोंकेही होती हैं इसका हेतु यह जानाजाताहै कि बहुधा उनलोगों का भोजन भारी शीतल मीठा और चिकना होताहै इससे ग्रन्थिबँध जाती है व उनकी वस्ति छोटी व नम्र होतीहै इससे उसके ग्रहणकरने में सुखहीरहता बड़ी कठिनता नहीं पड़ती ११ शुक्राश्मरीके लक्षण-यहशुक्राश्मरी जिनके वीर्य्य उत्पन्न होआताहै उनसयानों केही होती है बालकों के कभी नहीं जब कभी पुरुष वीर्य्यको रोंकताहै तबहोती है जैसे कि जब मैथुन करने लगा व किसी कारण से बिना वीर्य्य च्युति के बन्दकर दिया तो वह अपने स्थान से अलग चला पर निकल कर बाहर नहीं आया इससे पवन उसे लिंग व अण्डकोशों में लेजाकर १२ शुष्क कर डालता है इसलिये वही वीर्य्य सूख कर अश्मरी रोग होजाता है पत्थर की सी गांठि बँधजाती है १३ इसरोगके कारण मूत्राशय में पीड़ा व मूत्रोत्सर्ग करने में बड़ाकष्ट होताहै व अण्डकोशों में शोथ आजाता है इस अश्मरी रोग के होतेही फिर अन्य शुक्रमात्रा पर नष्ट होजाता है अर्थात् पतला होकर बहजाता है १४ पतलाहोने का कारण यह है कि मारेपीड़ा के उसके अवकाशके दबाते २ वह पतला होजाताहै वह इसी अश्मरीहीको शर्कराभी कहते हैं व सिकताभी कहते हैं यह

शोवायुनाभिन्नासात्वस्मिन्ननुलोमगे १६ त्विरेतिसहमूत्रेणप्रतिलोमेविबध्यते ॥ मूत्रस्रोतःश्रितासानुसक्ताकुर्याद्रुपद्रवान् १७दौर्बल्यंसदनंकार्श्यंकुक्षिशूलमथारुचिम् ॥ पांडुत्वमुष्णवातंचतृष्णांहृत्पीडनंवमिम् १८ प्रशूननाभिवृषणंबद्धमूत्ररुजातुरम् ॥ अश्मरीक्षपयत्याशुसिकताशर्करान्विता १९ ॥ इत्यश्मरीनिदानम् ॥

आस्यासुखंस्वप्नसुखंदधीनिग्राम्योदकानूपरसाःपयां

प्रथम-कहआये हैं कि जबतक पित्त व वातमें कफनहीं मिलता तबतक बिना जमेहुये अश्मरी नहीं बनती बस इसके पूर्वही शर्करा के समान कुछ खर खरासा पदार्थ पेशावके संग गिरता है उसीको शर्करा कहते हैं १५ जब पवन मूत्राशयमें सीधारहताहै तो वायुसे प्रेरित थोड़ा २ मूत्र उतरता रहताहै १६ व जब वायु उलटा चलताहै तो एकाएकी बन्दहोजाता है तब वह अश्मरी मूत्रकी नसोंके भीतरजाकर रहती है व वहाँ रहकर नानाप्रकार के उपद्रवों को करती है १७ जैसे कि शरीरकी दुर्बलता ग्लानि सूखजाना कोठाका सूजना अरुचि पीलापन उष्णवात तृष्णा हृदय में पीड़ा व ओकाई ये सब उपद्रवहोते हैं १८ इसके असाध्य लक्षण—जिस पथरीरोगमें नाभि अण्डकोश सूजउठें मूत्र बन्द होजाय पीड़ा अधिकहो ऐसी अश्मरी सिकता वा शर्करा रोगीको नाशही करडालती है १९ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽश्मरीरोगनिदानम्पञ्चत्रिंशत्तमम् ३५ ॥

दोहा ॥ छत्तिसयें महँ कह सुकवि सुभग प्रमेह निदान ॥
देखहिं युवालगाय चित यह कैसो बलवान १

प्रमेह के कारण कहते हैं बैठने में दुःख मिलना सुखपूर्वक सोना दही खाना गवईं के जीवोंके मांसादिकारस जलके

सि ॥ नवान्नपानंगुडवैकृतंचप्रमेहहेतुःकफकृच्चसर्वम् १ मेदश्चमांसंचशरीरजंचक्लेदंकफोवस्तिगतंविदूष्य॥करोतिमेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि २क्षीणेषुदोषेष्ववकृष्यधातून्संदूष्यमेहान्कुरुतेनिलश्च ॥ साध्याःकफोत्थादशपित्तजाःषट् याप्यानसाध्याःपवनाच्चतुष्काः ॥ समक्रियत्वाद्विषमक्रियत्वान्महात्ययत्वाच्चयथाक्रमंते ३ कफःसपित्तःपवनश्चदोषामेदोस्थिशुक्राम्बुवसालसीकाः ॥ मज्जारसौजःपिशितंचदूष्याः प्रमेहिनांविंशतिरेवमेहाः ४ दन्तादीनांमलाढ्यत्वंप्राग्रूपंपाणिपादयोः॥

जन्तुओं के मांसादिकारस व जलके समीपके रहनेवाले पदार्थों का रस वा दूध नवीन जलपीना गुड़के विकारखाना व सब कफकारी पदार्थ बस ये सब प्रमेहरोग के कारण हैं १ कफ पित्त वातकी सम्प्राप्ति—कफ मूत्राशयमें गत मेद मांस व शरीर से उत्पन्नरसरूप जलको दूपितकरके सवप्रकारके प्रमेहोंको करता है ऐसेही उष्ण पदार्थोंके खानेसे कफ कोपकरके मांसादिकोंको दूपितकरके प्रमेहोंको करताहै व इन सबोंको दूपितकरके पित्त भी प्रमेहों को करता है २ व जब दोप क्षीण होजाते हैं तो वायु भी मज्जा मांसादि धातुओंको खींचकर व दूपितकरके प्रमेहोंको करताहै सो कफसे दशप्रकार के प्रमेह होतेहैं वे साध्य होते हैं व पित्तसे ६ प्रकारके होते हैं वे कष्टसाध्य होतेहैं व वायुसे चारप्रकार के होते हैं वे साध्य नहीं होते कफवालोंकी क्रिया समहोती है इससे वे साध्यहोतेहैं पित्तवालों की विपम होती है इससे वे कष्टसाध्य होते हैं व वातवालोंकी क्रिया अतिनाशकर्त्री होती है इससे वे असाध्य होते हैं ३ कफ पित्त वायु ये दोप हैं मेदा रुधिर शुक्र जल वसा लासा मज्जा रस ओज और मांस ये दूष्य हैं व सब कफ पित्त वायु इनसबको दूपितकरके बीसप्रकार के प्रमेहों

दाहश्चिक्कणतादेहेतृट्स्वाद्वास्यंचजायते ५ सामान्यल क्षणंतेषांप्रभूताविलमूत्रता ६ दोषदूष्याविशेषेपितत्संयो गविशेषतः ॥ मूत्रवर्णादिभेदेनभेदोमेहेषुकथ्यते ७ अ च्छंवहुसितंशीतंनिर्गन्धमुदकोपमम् ॥ मेहत्युदकमेहेन किंचिदाविलपिच्छिलम् ८ इक्षोरसमिवात्यर्थंमधुरंचेक्षुमे हतः ॥ सांद्रीभवेत्पर्य्युषितंसांद्रमेहेनमेहति ९ सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् ॥ संहृष्टरोमापिष्टेन पिष्ट वद्वहलंसितम् १० शुक्राभंशुक्रमिश्रंवाशुक्रमेहीप्रमेह ति ॥ मूत्राण्सिकतामेही सिकतारूपिणोमलान् ११

को करते हैं ४ प्रमेहोंका पूर्व्वरूप—जवकोई प्रमेह होनेपर होता है तोदांत जीभ व तालु में अधिकमल लपटताहै हाथोंपैरोंमेंदाह होताहै देहमें चिकनाई आजाती है मुखमें प्रत्येक वस्तुके खानेमें स्वादु वहुत जानपड़ताहै ५ प्रमेहके सामान्य लक्षण—सवप्रमेहों का यह सामान्य लक्षण है कि मूत्र वहुत उतरे वह भी ढवैलेरंग काहो ६ प्रमेहहोनेके कारण दोष और दूष्योंमें कुछ विशेषता नहीं है पर उनके संयोग विशेषसे मूत्रके रंगादिके भेदसे प्रमेहों में भेद कहाजाताहै ७ कफज दशप्रकार के प्रमेहों के लक्षण कहतेहैं—उदक मेहमें अच्छा वहुत उजला ठण्ढा गन्धरहित जल के तुल्य कुछ ढवेला और चिकना मूत्र होताहै ८ व इक्षुप्रमेहमें ऊपकेरसके समान अत्यन्त मीठा मूत्र होताहै व सान्द्र प्रमेह में मूत्ररख छोड़नेपर जमजाता है ९ व सुराप्रमेहमें मदिरा के स- मान ऊपर स्वच्छ नीचेकुछ गाढ़ा पेशाव होताहै व पिष्ट प्रमेह में पेशाव करनेके समय रोमाञ्च होआता है व चौरेठाके समान गाढ़ा व वहुत उजला मूत्र उतरताहै १० व शुक्र प्रमेहमें शुक्र के तुल्य वा शुक्र मिलाहुआ मूत्र उतरताहै व सिकताप्रमेह में मूत्र रेत मिलाहुआ होताहै कुछ खसखसाता रहताहै ११ व शीत

शीतमेहीसुबहुशो मधुरंभृशशीतलम्॥शनैश्शनैःशनैर्मे ही प्रमेहतिप्रमेहति १२ गंधवर्णरसस्पर्शैः क्षारेणक्षार तोयवत् ॥ नीलमेहेननीलाभं कालमेहीमषीनिभम् १३ हारिद्रमेहीकटुकं हरिद्रासन्निभंदहत् ॥ विस्रम्मांजिष्ठमे हेन मंजिष्ठासलिलोपमम् १४ विस्रमुष्णंसलवणंरक्ता भंरक्तमेहतः ॥ वसामेहीवसामिश्रंवसाभंमूत्रयेन्मुहुः १५ मज्जाभंमज्जमिश्रंवा मज्जामेहीमुहुर्मुहुः ॥ कषायंमधु रंरूक्षं क्षौद्रमेहेनमेहति १६ हस्तीमत्तइवाजस्रम्मूत्रंवे

प्रमेहमें अत्यन्त शीतल मीठा व बहुतसा पेशाब होताहै व शनैः प्रमेहमें धीरे २ थँभ २ कर पेशाव होताहै व लाला प्रमेहमें लार के समान चटचटाता चिकना पेशाव होता है १२ पित्तज ६ प्रकार के प्रमेहों के नाम व लक्षण—क्षार प्रमेह में गन्ध रंग रस व स्पर्शमें क्षार पानीहीकीनाईं पेशाव होता है व नील प्रमेहमें नील के रंगका मूत्रहोताहै व कालप्रमेहमें मषी के समान काला पेशाब होताहै १३ हारिद्र मेहमें हरदी के समान कडू व जलता हुआ पेशाव होताहै व माञ्जिष्ठ प्रमेह में कच्चे मांसादिकके सड़ने के गन्धकेतुल्य गन्धाताहुआ व मँजीठ के काढ़ेके रंग का पेशाव होताहै व रक्त प्रमेहमें उसी कच्चे मांसके सड़ने के गन्धकाखारी और रक्त सरीखा पेशाब होताहै १४ वात प्रमेह चार होतेहैं उन के नाम व लक्षण—वसाप्रमेहमें वसामिलाहुआ वसाकेही रंगका पेशाव वार २ वह रोगी करता रहताहै व मज्जा प्रमेह में रोगी मज्जा के रंगका व मज्जा मिश्रित वारवार मूतता है १५ क्षौद्र प्रमेह में गेरूके रंगे कपड़े के रंगका मीठा और रूखा पेशाव होताहै व हस्ति प्रमेह में मतवाले हाथी के समान वार २ धीरे २ लसगढ़ बँधा हुआ पेशाव रोगी करता है १६ कफ से उत्पन्न प्रमेहों के उपद्रव कफज प्रमेहों में अन्नका न पचना अरु-

गविवर्जितम् ॥ सलसीकंविबद्धंच हस्तिमेहीप्रमेहति १७ अविपाकोरुचिश्छर्दि ज्वरःकासःसपीनसाः ॥ उप द्रवाःप्रजायंते मेहानांकफजन्मनाम् १८ बस्तिमेहनयोः शूलं मुष्कावदरणंज्वरः ॥ दाहस्तृष्णाक्लमोमूर्च्छा विड् भेदःपित्तजन्मनाम् १९ वातजानामुदावर्त्त कंपहृद्ग्रह लोलताः॥शूलमुन्निद्रताशोषः कासश्वासश्चजायते २० यथोक्तोपद्रवाविष्ट मतिप्रस्रुतमेवत्रा ॥ पिडिकापीडितं गाढं प्रमेहोहंतिमानवम् २१ जातःप्रमेहीमधुमेहिनांवा नसाध्यरोगःसहिबीजदोषात् ॥ येचापिकेचित्कुलजा

चि वमन ज्वर खाँसी पीनस वा नाक वहना ये उपद्रव होते हैं १७ पित्तज प्रमेहों के उपद्रव–पित्तज प्रमेहों में मूत्राशय व लिंग में पीड़ा होती है अण्डकोशों में खाल फटजाने की सी पीड़ा होतीहै ज्वर होता दाह तृष्णा ग्लानि मूर्च्छा व मल पतला ये उपद्रव होते हैं १८ वातज प्रमेहोंके उपद्रव–वातज प्रमेहों में उदावर्त्त कांपना हृदयका अवरोध सब पदार्थों के भक्षण की इच्छा शूल नींदका उचटना देह सूखना खाँसी श्वास ये उपद्रव होते हैं १९ प्रमेहोंके असाध्य लक्षण-प्रथम वातज प्रमेहों के जो अन्न न पचने आदि उपद्रव कह आये हैं वे विद्यमानहों और उनमें फिर पेशाव बहुत २ बार २ होताहो व फोड़ा फुनसी भी बहुतहों उनसे अत्यन्त पीड़ितहो वस ऐसा प्रमेह रोगीको मारही डालताहै २० अन्यरीतिका असाध्य लक्षण–मधु प्रमेह वालों को जब कोई और प्रमेह होता है तो उनके बीज में ऐसा दोष आजाता है कि बीज मारहीजाताहै वस फिर यहरोग साध्य नहीं होता अथवा जिसके कुलपरम्परासे जो प्रमेहादि विकार चले आतेहैं उन सबोंको असाध्य कहते हैं २१ सब प्रमेहों की जब उपेक्षा कीजाती है कुछ औषधादि नहीं की जाती तो वे

विकाराभवंतितांश्चप्रवदंत्यसाध्यान् २२ सर्वएवप्रमेहा स्तु कालेनाप्रतिकारिणः ॥ मधुमेहत्वमायांति तदासा ध्याभवंतिहि २३ मधुमेहोमधुसमंजायतेसकिलद्विधा ॥ क्रुद्धेधातोःक्षयाद्वायौ दोषावृत्तपथेथवा २४ आवृतोदो षलिंगानि सोऽनिमित्तंप्रदर्शयन् ॥ क्षीणःक्षणात्क्षणात् पूर्णो भजतेकृच्छ्रसाध्यताम् २५ मधुरंयच्चमेहेषु प्रायोम ध्विवमेहति॥सर्वेचमधुमेहाख्या माधुर्य्याच्चतनोरतः २६

इतिप्रमेहनिदानम् ॥

सराविकाकच्छपिका जालिनीविनतालजी ॥ मसूरि

सब मधुप्रमेह होजाते हैं व वे फिर असाध्य होजाते हैं २२ मधु- प्रमेह में पेशाब मधु के समान होता है यह प्रमेह दो प्रकारका होता है एक तो वायु के क्रुद्ध होने से इसमें धातुओंका क्षय हो- जाता है दूसरा जब कि दोष से वायुका मार्ग रुकजाता है २३ आवरण के लक्षण-आवृत वात से उत्पन्न मधुप्रमेह जिन २ पि- त्तादि दोषोंसे उत्पन्न होता है उनके लक्षणोंको दिखाता रहताहै क्षण भर में क्षीण होजाता है और क्षणभर में पूर्ण सो यह प्रमेह कष्टसाध्य होता है २४ मधुप्रमेह शब्द का यथार्थ ज्ञान इस मधुप्रमेह में बहुधा रोगी मधुही के समान मूत्रोत्सर्ग करता है व देह भर में मधुरता आजाती है इसी से वैद्य लोग इसे मधु- प्रमेह कहते हैं २५ ॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेप्रमेहरोगनिदानं पट्त्रिंशत्तमम् ३६ ॥

दोहा ॥ सैंतिसयें महँ मेहकृत पिटिका केर निदान ॥
दशप्रकारकी होत जो तिनकर कीन बखान १

शराविका । कच्छपिका । जालिनी । विनता । अलजी

क्षुद्राश्वासतृषामोहस्वप्नक्रथनसादनैः ॥ युक्तःक्षुत्स्वेद दौर्गन्ध्यैरल्पप्राणोल्पमैथुनः ३ मेदस्तुसर्वभूतानामुदरेष्व स्थिषुस्थितम्॥अतएवोदरेवृद्धिःप्रायोमेदस्विनोभवेत् ४ मेदसावृतमार्गत्वाद्वायुःकोष्ठेविशेषतः ॥ चरन्सन्धुक्षय त्यग्निमाहारंशोषयत्यपि ५ तस्मात्सशीघ्रंजरयत्याहारं चापिकांक्षति ॥ विकारान्कुरुतेघोरान्कांश्चित्कालव्य तिक्रमात् ६ एतावुपद्रवकरौ विशेषादग्निमारुतौ ॥ एतौहिदहतस्स्थूलंवनंदावोनलोयथा ७ मेदस्यतीवसं वृद्धेसहसैवानिलादयः ॥ विकारान्दारुणान्कृत्वानाश यंत्याशुजीवितम् ८ मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदर

इससे मेदस् बढ़ के मनुष्य को सब कर्मों के करने से अशक्त करदेता है २ जब पुरुष की चर्बी बहुत बढ़जाती है तो उसके क्षुद्रश्वास रोगके सब लक्षण होजाते हैं तृषा बहुत लगती है मोह होताहै निद्रा बहुत आती है अकस्मात् श्वासरुकजाती है शरीर शिथिल होजाता है छींक व पसीना में दुर्गन्धि आने लगती है निर्बल होजाताहै व मैथुन करने की शक्तियोड़ी रहजाती है ३ मेदस् सब प्राणियों के पेटों में व हाड़ोंमें स्थितरहताहै इसी से जब वह बढ़जाताहै बहुधा ऐसे मनुष्य के उदरकी वृद्धिहोजाती है ४ मेदस् से मार्गोंके रुँकजाने से वायु बहुधाकोठेकेभीतरही घूमाकरताहै इससे अग्निको बहुत प्रचण्ड करदेता है व आहार को शीघ्रसुखाकरदेता है ५ इससे वह आहार को शीघ्रही पचा देता है व फिर तुरन्तही और भोजन करनेकी इच्छा करताहै व कालके व्यतिक्रमहोनेके कारण बड़ेघोरबहुतसे विकारोंको कराता है ६ ये अग्निऔर पवनदोनों विशेष उपद्रव करते हैं इससे मोटे मनुष्य को शीघ्रहीजला देतेहैं जैसे दावानल वनकोजलादेताहै ७ जब मेदस् अत्यन्त बढ़जाता है तो एकाएकी पवनादिक दारुण

स्तनः ॥ अयथोपचयोत्साहोनरोतिस्थूलउच्यते ९ ॥

इतिमेदोनिदानम् ॥

रोगाःसर्वेपिमंदेग्नौसुतरामुदराणिच ॥ अजीर्णान्म
लिनैश्चान्यैर्जायन्तेमलसंचयात् १ रुद्ध्वास्वेदाम्बुवाही
निदोषःस्रोतांसिसंचिताः ॥ प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यजन
यंत्युदरंनृणाम् २ आध्मानंगमनेशक्तिर्दौर्बल्यंदुर्बलाग्नि
ता ॥ शोथःसदनमंगानांसंगोवातपुरीषयोः ॥ दाहस्तं
द्राचसर्वेषुजठरेषुभवंतिहि ३ पृथग्दोषैःसमस्तैश्चप्लीह
बद्धक्षतोदकैः ॥ संभवंत्युदराण्यष्टौतेषांलिंगम्पृथक्पृथ

विकारोंको करके शीघ्र उसप्राणीकोमारडालतेहैं ८ स्थूलमनुष्यके
लक्षण—मेदस् व मांस बहुत अधिक बढ़जानेके कारण मनुष्यके
चूतर पेट व स्तन थलथलानेलगते हैं व उत्साह औरतेजजाती
रहती है बस ऐसे पुरुषको अतिस्थूल कहते हैं ९ ॥ इतिश्री
माधवनिदानेभाषानुवादेमेदोवृद्धिनिदानमष्टत्रिंशत्तमम् ॥ ३८ ॥
दोहा ॥ उनतालिसयें महँ उदर रोग अनेक निदान ॥
कहेसुकविदेखहिं सुजन पुनितिनकरहिंप्रमान १

अब उदरके सबरोगोंके निदान कहतेहैं उदरके सबरोग म-
न्दाग्नि होनेपर होतेहैं व अजीर्ण से मलिन अन्नोंके भोजनों से
व अधिकमल इकट्ठे होजाने से भी होते हैं १ उदररोग की स-
म्प्राप्ति के लक्षण—बहुत दिनों के सञ्चित वातादिदोष पसीना
बहानेवाली नसोंके मुखबन्दकरके अग्नि प्राण व अपान वायुको
अतिदूषितकरके मनुष्योंके उदररोग उत्पन्न करताहै २ उदररोग
के सामान्यरूप के लक्षण—सबउदररोगोंमें पेटफूलना चलने में
अशक्ति दुर्बलता मन्दाग्निता शोथ अंगोंमें सुस्ती अधोवायु व
मलका अवरोध दाह तन्द्रा ये सब उपद्रव होते हैं ३ उदररोगों

क ४ तत्रवातोदरेशोथःपाणिपान्नाभिकुक्षिषु ॥ कुक्षिपा
र्श्वोदरकटीपृष्ठरुक्पर्वभेदनम् ५ शुष्ककासोंगमर्दोधोगु
रुतामलसंग्रहः॥श्यावारुणत्वगादित्वमकस्माद्वृद्धिह्रा
सवत् ६सतोदभेदमुदरंतनुकृष्णशिराततम्॥ आध्मानद्द
तिवच्छब्दमाहतंप्रकरोतिच ॥ वायुश्चात्रसरुक्शब्दो
विचरेत्सर्वतोगतिः ७ पित्तोदरेज्वरोमूर्च्छादाहस्तृट्क
टुकास्यता ॥ भ्रमोतिसारःपीतत्वंत्वगादावुदरंहरित् ८
पीतताम्रशिरानद्धंसस्वेदंसोष्मदह्यते॥ धूमायतमृदुस्प
र्शंक्षिप्रपाकंप्रदूयते ९ श्लेष्मोदरेंगसदनंस्वापःश्वपथुगौ
रवम् ॥ निद्रोत्क्लेदोरुचिःश्वासःकासःशुक्लत्वगादिता १०

की गिनती तीन वायुआदि दोषोंसे व एकसन्निपातसे४ ये व प्लीः
होदर बद्धोदर क्षतोदर व जलोदर ४ ये सब ८ प्रकारके उदर
होतेहैं इनके अलग २ लक्षण सुनो ४ वातोदरके लक्षण–उनमें
वातोदरमें हाथ पैर नाभि व कोपमें शोथहोताहै व कोपि पशुली
पेट कटि व पीठमें पीड़ाहोतीहै सब जोड़ोंमें भी हड़फूटन हुआ
करतीहै ५ सूखी खांसी आती है अंगोंमें पीड़ाहोती है अधोभाग
में गरोई रहतीहै मल बँधारहता साफ नहीं उतरता श्याम व
लालमिला देहके चमड़ेका रंग रहता है पेट अकस्मात् फूलता
पचतारहताहै ६ पेट कोंचता रहता व उसकी सबओरों में छोटी
छोटी कालीनसैंतन उठती हैं पेट फूलनेपर ठोंकनेपर ढोलकी
नाईं कुछ शब्द करता है पवन भी पीड़ा व शब्दकरताहुआ सब
कहीं घूमाकरताहै ७ पित्तोदरके लक्षण–पित्तोदरमें ज्वर मूर्च्छा
दाह तृष्णा मुखकड़ू भ्रम अतीसार त्वचा नखादि पीले उदर
हरा ८ नसें पीली वा लाल होजाती हैं पसीना होता उष्णता
सहित दाह धुआँइध आती छूने में नम्रहोता अन्न शीघ्र पचता
पीड़ा अधिक होती है ९ कफोदरके लक्षण–कफोदर में हाथ पैर

उदरंस्तिमितंस्निग्धंशुक्लराजीचितंमरुत् ॥ चिराभिवृ
द्धिःकठिनंशीतस्पर्शंगुरुस्थिरम् ११स्त्रियोन्नपानंनखरोम
मूत्रविडार्त्तवैर्युक्तमसाधुवृत्ताः ॥ यस्मैप्रयच्छंत्यरयोगरां
श्चदुष्टांबुदूषीविषसेवनाद्वा १२ तेनाशुरक्तंकुपिताश्चदो
षाःकुर्युस्तुघोरंजठरंत्रिलिंगम् ॥ तच्छीतवातेभृशदुर्द्दिने
चविशेषतःकुप्यतिदह्यतेच १३ सचातुरोमूर्च्छतिहिप्रस
क्तंपाण्डुकृशःशुष्यतितृष्णयायः ॥दुष्योदरंकीर्तितमेतदे
वप्लीहोदरंकीर्त्तयतोनिबोध १४ विदाह्यभिष्यंदिरतस्य
जंतोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ॥ प्लीहाभिवृद्धिंकुरुतःप्रवृ

आदि अंग शिथिल होजाते निद्राबहुत आती है आलस्य बनी
रहती शरीर गरूरहता नेत्रों पर झपान पड़ा रहता है अरुचि
होती श्वास आती खाँसी आती त्वचा आदि श्वेतहोजाती १०
पेट निश्चल चिकना सपेद रहता नसें ऊपर निकलआती पवन
छूटाकरता वहुत कालतक पेट फूला रहता है कड़ारहता छूनेपर
ठण्ढाजानपड़ता गरूजानपड़ता है ११ सन्निपातोदरके लक्षण—
दुष्ट स्त्रियां जिसपुरुषको नख रोम मूत्र मल व स्त्रियोंके ऋतुका-
लके रुधिरसे युक्त अन्न वा जल खवा पियादेतीहैं अथवा जिसको
शत्रुलोग विष खिलादेते हैं वा दुष्टजल जिनको पिला दियाजा-
ता है अथवा कुछ विषारी पदार्थोंके सेवन करने से १२ शीघ्रही
रक्त व वातादिदोष कुपितहोकर उदरको घोरकरदेते हैं जो कि
वात पित्त कफ तीनों दोषोंसे युक्त होजाता है यह सन्निपातोदर
शीतकालमें अथवा अधिक पवन चलनेके दिन वा जिसदिन अ-
धिक बदरी होती है तब विशेष कोप करताहै व जलने लगता है
१३ उससमय ऐसारोगी अति मूर्च्छित होजाता है पीला दुबला
होकर प्याससे सूखने लगताहै यह दूष्योदर कहागया अब प्ली-
होदर कहते हैं सुनो १४ प्लीहोदरके लक्षण—जो पुरुष दाहक-

द्धोप्लीहोत्थमेतज्जठरंवदन्ति ॥ १५ तद्वामपार्श्वेपरिवृद्धि मेति विशेषतःसीदतिचातुरोत्र ॥ मन्दज्वराग्निःकफ पित्तलिंगै रुपद्रुतःक्षीणबलोतिपाण्डुः ॥ १६ सव्यान पार्श्वेयकृतिप्रदुष्टे ज्ञेयंयकृद्दाल्युदरंतदेव ॥ १७ उदाव र्त्तरुजानाहैर्मोहतृट्दहनज्वरैः ॥ गौरवारुचिकाठिन्यै र्विद्यात्तत्रमलान्क्रमात् ॥ १८ यस्यान्त्रमन्यैरुपलेपिभि र्वा बालाश्मभिर्वापिहितंयथावत् ॥ संचीयतेतस्यम लःसदोषः शनैःशनैःसंकरवच्चनाड्याम् ॥ १९ निरुध्य

रनेवाले पदार्थ खाताहै वा अभिष्यन्दी अर्थात् दधिआदिक गी-ली चिकनी वस्तु अधिकखाताहै उसके दुष्टहोकर रक्त और कफ बढ़कर प्लीहा अर्थात् पिलही की वृद्धि करादेते हैं इसरोगी को प्लीहोदर अर्थात् पेटमें पिलहीवाला कहते हैं १५ यह प्लीहो-दर वा पिलहीरोग पेटमें बाईंओर होताहै व बढ़तारहताहै इसमें रोगी बहुत व्याकुल होता गलता चलाजाताहै मन्द२ कुछ ज्वर होतारहता है मन्दाग्नि होजाता इससे जो खाता पचता नहीं कफ व पित्त के लक्षणों से युक्त होजाता है बलक्षीण होजाता है देह अतिपीला होजाताहै १६ यकृद्दाल्युदर रोगके लक्षण—व इसी प्रकारकारोग जब पेटमें दहिनीओर होताहै तो उसरोगको यकृ-द्दाल्युदर कहते हैं दोष और यकृद्दाल्युदर में कुछ भेद होताहै १७ इसरोगमें दोषका संयोग बताते हैं उदावर्त्त शूल और आनाहसे वातका सम्बन्ध जानना चाहिये मोह तृष्णा दाह और ज्वर से पित्तके दोषका सम्बन्ध समझना चाहिये गरुआपन अरुचि व कठिनता से कफ के दोषका सम्बन्ध जानना चाहिये १८ बद्धगुदोदररोगके लक्षण—जिसपुरुषकी आँत चिकने अन्न शाका-दिकों से वा छोटी २ पथरियों से मुँदजाती हैं धीरे २ दोष स-हित मल वहाँ उस आँतकी नाड़ी में इकट्ठा होजाता है जैसे

तेतस्यगुदेपुरीषं निरेतिकृच्छ्रादपिचाल्पमल्पम् ॥ हृन्नाभिमध्येपरिवृद्धिमेति तस्योदरंबद्धगुदंवदंति २० शल्यंतथान्नोपहितंयदन्नं भुक्तंभिनत्त्यागतमन्यथावा ॥ तस्मात्क्षतांत्रात्सलिलप्रकाशः स्रावः स्रवेद्वैगुदतस्तुभूयः २१ नाभेरधश्चोदरमेतिवृद्धिं निस्तुद्यतेदालयतिचातिमात्रम् ॥ एतत्परिस्राव्युदरंप्रदिष्टं दकोदरंकीर्त्तयतोनिबोध २२ यःस्नेहपीतोप्यनुवासितोवावांतोविरक्तोप्यथवा निरूढः ॥ पिवेज्जलंशीतलमाशुतस्य स्रोतांसिदुष्यंति हितद्वहानि २३ स्नेहोपलिप्तेष्वथवापितेषु दकोदरंपूर्व

बढ़नी झाड़ू से झारने से कूड़ा करकट इकट्ठा होजाता है १९ ऐसें होनें से उसके गुद में मल रुँक जाता है व बड़े कष्टसे थोड़ा २ निकलता है वह हृदय नाभि के बीच में बढ़जाता है बस इसीरोगको बद्धगुदोदर कहते हैं जबतक दोष इस के संग नहीं कुपित होकर रहते तबतक यकृदाल्युदरही कहाता है २० क्षतोदर के लक्षण–कँकरौटी पथरौटी काँटा आदि से युक्त अन्न खाजाने से पक्वाशय में उलटने पलटनेंसे आँतसें घाव कर देता है उसघाव सहित आँत से जलका प्रकाश होने लगता है फिर जलचूकर वहने लगता है पीछे वही गुदमार्ग से बाहरआताहै २१ व जो वहीं इकट्ठा होतारहताहै वहनाभि के नीचे बढ़ताजाताहै इसमें सुई आदिसे कोंचने कीसी पीड़ाहोतीहै बस इसी को क्षतोदर वा परिस्राव्युदर कहतेहैं अबहम जलोदरके लक्षण कहतेहैंसुनो २२ जलोदरकी उत्पत्ति व लक्षण–जो पुरुष किसी रोग के मिटाने के लिये तैल पीताहै अथवा अनुवासन करताहै वा वान्तकरताहै अथवा जुलाबलेताहै अथवा निरूढ वस्तिकरताहै व तुरन्तही अतिशीतलजलपीताहै उसकी जलवहानेवाली नसेंदुष्टहोजाती हैं २३ व उननसोंमें वहतैलादिक लपटजाताहै

वदभ्युपैति ॥ स्निग्धंमहत्तत्परिवृत्तनाभिसमानतंपूर्ण मिवाम्बुनाच॥यथादृतिःक्षुभ्यतिकंपतेच शब्दायतेचापि दकोदरंतत् २४जन्मनैवोदरंसर्वं प्रायःकृच्छ्रतमंविदुः॥ ब लिनस्तदजाताम्बुयत्नसाध्यंनवोत्थितम् २५ पक्षाद्बद्धगु दंतूर्ध्वंसर्वंजातोदकंतथा॥ प्रायोभवत्यभावायछिद्रांत्रंचो दरंनृणाम् २६ शूनाक्षिकुटिलोपस्थमुपक्लिन्नतनुत्वचम्॥ बलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणंचवर्जयेत् २७ पार्श्वभंगा न्नविद्वेषशोथातीसारपीडितम् ॥ विरक्तंचाप्युदरिणं पू र्य्यमाणंविवर्जयेत् २८ इत्युदरनिदानम् ॥

तबजलोदर पूर्व्व कहीहुई रीतिसे बढ़ताहै व ऊपर बड़ा चिकना होजाताहै नाभिको सबओरसे तनदेताहै व मानोंजलसे वहपेट भरजाताहै व इसीसे जैसे मशकके भीतर पानी इधरउधरचल तारहताहै व काँपता शब्दकरताहै वैसेहीयहजलोदरभी काँपता थलथलाता व शब्दकरता रहता है २४ साध्यासाध्यका विचार– जो उदररोग जन्मके साथहीसेहोतेहैं वेसब कष्टसाध्य होतेहैं पर जो वे किसी बलीपुरुषकेहों व आँतमें पानी नपहुँचाहो औरनये हों तो यत्नसे साध्य भी होते हैं २५ असाध्यलक्षण–बद्धगुदोदर रोग पन्द्रह दिनोंमें असाध्य होजाताहै व जबजलआँत में पहुँच जाताहै तो सबउदररोगअसाध्यहोजातेहैं व जिसउदररोगमेंघाव होजाताहै वह बहुधा असाध्यहीहोताहै पर चीरनेसे वा शस्त्र से औषधकरनेसे साध्यभी होजाताहै २६ असाध्यके लक्षण–जिस उदररोगीके नेत्रोंपर सूजन होगईहो व लिंग टेढ़ाहोगयाहो उदर कीखालनीरसहोगईहो बल रुधिर मांस व अग्निसे हीन होगया हो ऐसेरोगी को वैद्यछोड़दे औषधनकरे २७ दूसरे प्रकारकेअसा ध्यके लक्षण–जिसकी पशुड़ियाँ टूटगई हों अन्नसे वैरहोगयाहो देहशोथ गयाहो व अतीसारसेभी पीड़ितहो जुल्लाबआदिदेनेपर

रक्तपित्तकफान्वायुर्दुष्टोदुष्टान्बहिश्शिराः ॥ नीत्वारुद्धगतिस्तैर्हि कुर्यात्त्वग्मांससंश्रयम् ॥ उत्सेधसंहतंशोफंतमाहुर्निचयादतः १ सर्वहेतुविशेषैस्तु रूपभेदान्नवात्मकम् ॥ दोषैःपृथक्द्वयैःसर्वैरभिघाताद्विषादपि २ तत्पूर्वरूपंक्षवथुः शिरायामंशगौरवम् ३ शुद्ध्योमयाभक्तकृशावलानांक्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा ॥ दध्याममृच्छाकविरोधिदुष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणञ्च ४ अर्शांस्य

वा फस्तखोलनेके पीछे फिर उदररोग ज्योंका त्यों होजाताहो ऐसे रोगीको वैद्यछोड़दे औषध न करे २८ ॥

इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादेउदररोगनिदानमेकोनचत्वारिंशत्तमम् ॥ ३६ ॥

दोहा ॥ चालिसयें महँ कहभिषक शोथनिदान बहूत ॥
देखहिंसुजन लगायचित ताके सकल सबूत १

अब शोथका निदानकहतेहैं शोथकीउत्पत्तिके लक्षण-दुष्टवायु अपने कारणोंसे दुष्ट रक्तपित्त कफोंको ऊपरकी नसोंमें भरके व उनके मार्ग को दुष्टकरके चर्म्म व मांसकेआश्रितहोताहै व शोथ को करताहै वह शोथऊँचा व कड़ाहोताहै यहरक्त व वातपित्तकफ इनचारोंकेसंयोगसे होताहै इससे सन्निपातात्मक कहाजाताहै १ वे सब शोथहेतु विशेषोंके रूप भेदहोनेसे नवप्रकारके होतेहैं वात पित्त कफइनसे ३ व दो २ मिलकर ३ सन्निपातका १ अभिघातज १ विषज १ ये सब ९ हुये २ इनकापूर्वरूप सन्तप्तनसों के तननेकीसी पीड़ाशरीरभारी जबये लक्षणहों तो जानना चाहिये किशरीरमें शोथहोगा ३ इसकेहेतु विरेक वमन आदि शरीरशुद्ध करने ज्वरादिरोग होने व उपवास करनेसे दुर्बल व बलहीनपुरुष जब खारी खट्टी तीक्ष्ण उष्ण व गरूबस्तुओंकी सेवाकरताहै व दधि कच्चीवस्तुमिट्टीशाकादि दुग्धमछली आदि पदार्थोंकोए-

चेष्टानचदेहशुद्धिर्मर्म्मोपघातोविषमाप्रसूतिः ॥ मिथ्योप
चारःपरिकर्मणांचनिजस्यहेतुःश्वयथोःप्रदिष्टः ५ सगौर
वंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमूष्माथशिराकृशत्वम् ॥ सलो
महर्षश्चविवर्णताच सामान्यलिंगंश्वयथोःप्रदिष्टम् ६
चरस्तनुस्त्वक्परुषोरुणोसितः प्रसुप्तिहर्षार्तियुतोनिमित्त
तः ॥ प्रशाम्यतिप्रोन्नमतिप्रपीडितोदिवाबलीचश्वयथु
स्समीरणात् ७ मृदुस्सगन्धोसितपीतरागवान्भ्रमज्वरो
खेदतृशमदान्वितः॥यउष्यतेस्पर्शरुगक्षिरोगकृत्सपित्त
शोफोभृशदाहपाकवान् ८ गुरुस्थिरःपांडुररोचकान्वितः

कसंगभोजन करताहै अथवा अन्यपरस्पर विरुद्धदुष्ट पदार्थों का सेवन करताहै वा विषदूषित अन्नखाताहै ४ व बवासीर तुल्यपरिश्रमरहित शोधनकरनेकेयोग्य दोषमेंशोधन करना जोंक आदि लगाना अथवा हृदयादि सुकुमार स्थानोंमें लाठी शस्त्रादिकाअभिघात होने से अथवा स्त्रियों के कच्चे गर्भ के गिरने से व वमन विरेक वस्तिआदि पांचोंकर्म्मों के मिथ्या करने से शोथहोता है बस येही सब शोथ के कारण हैं ५ शोथ के सामान्य लक्षण—शरीरका भारीरहना व्याकुलता ऊँचीसूजन उष्णता नसोंकापतलाहोना रोमखड़े होना शरीर का रंग विपरीत होजाना बस शोथ के ये सामान्य लक्षण हैं ६ वातज शोथ के लक्षण—वायु से उत्पन्न शोथमें चञ्चलता त्वचा पतली होजानी कठोरता व खरखराहट रंगलाल व कालाहोना शरीर झूठापड़ना रोमखड़े होना पीड़ाहोनी व दबानेसे दबजाताहै फिर उठआताहै दिनमें अधिक बलीरहताहै व रात्रिमें कुछ२ शान्त होजाताहै ७ पित्तज शोथ के लक्षण—पित्तज शोथ मृदु कुछगन्धयुक्त काला व पीला होताहै व उसमें भ्रम ज्वर खेद तृषा व मद होते हैं दाहहोताहै स्पर्श करने से पीड़ाहोतीहै नेत्रलालरहते हैं अतिदाह होकर वह

प्रसेकनिद्रावमिवह्निमांद्यकृत् ॥ सकृच्छ्रजन्मप्रशमोनिपीडितोनचोन्नमेद्रात्रिबलीकफात्मकः ९ निदानाकृतिसंसर्गात्श्वयथुःस्यात्द्विदोषतः ॥ सर्वाकृतिःसन्निपातात्शोथोऽव्यामिश्रलक्षणः १० अभिघातेनशस्त्रादिच्छेदभेदक्षतादिभिः ॥ हिमानिलोदध्यनिलैर्भल्लातकपिकच्छुजैः ११ रसैःशूकैश्चसंस्पर्शात्श्वयथुःस्याद्विसर्पवान् ॥ भृशोष्णालोहिताभासःप्रायशःपित्तलक्षणः १२ विषजःसविषप्राणिपरिसर्पणमूत्रणात् ॥ दंष्ट्रादंतनखाघातादविषप्राणिनामपि १३ विण्मूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्तु

पकजाताहै ८ कफज शोथ के लक्षण—कफसे उत्पन्न शोथ गुरु स्थिर पाण्डुरंगका अरुचियुक्त लारयुक्त निद्रा वमन व अग्निकी मन्दता इसकी उत्पत्ति व नाश शीघ्रही होजाते हैं यह दबाने से फिर बराबर नहीं होजाता व रात्रि में अधिक बली होता ९ द्वन्द्वज व सन्निपातज शोथों के लक्षण—जिनमें दो२ दोषोंके लक्षण व आकृति मिलेहुये विदित हों वहद्वन्द्वजशोथ कहाताहै जिसमें तीनोंदोषोंके लक्षण मिलतेहों वह सन्निपातज शोथ कहाताहै १० अभिघातज शोथ के लक्षण—लाठीदंडा आदि के घाव लगने से शस्त्रादिकों से कटने छिदने से शीतलपवनके लगने से समुद्र के पवनकेलगने से भिलावां वा कयवांचके वायुवाधूमकेलगने से ११ कयवाँचादिका रस वा उसके कांटों के लगजाने से शोथहोजाता है वह सब ओर फैलता रहताहै व अत्यन्त उष्णता उसमें होती है व उसका रंग लालहोताहै व पित्त के शोथके सब लक्षण इस में भी होते हैं १२ विषज शोथ के लक्षण—विषज शोथ विषधर जीव के ऊपर रेंगजाने से व ऊपर मूतने से और अविषधर जीव के दांत दाढ़ नखों के घात से भी १३ व विषधारी जीवकी विष्ठा मूत्र शुक्र के स्पर्शहोजाने से वा मलिन वस्त्र धा-

संकरात् ॥ विषवृक्षानिलस्पर्शाद्गरयोगावचूर्णनात् १४ मृदुश्चलोऽवलंबीचशीघ्रोदाहरुजाकरः १५ दोषाःश्वय थुमूर्द्ध्वंहिकुर्वंत्यामाशयस्थिताः ॥ पक्वाशयस्थामध्येतु वर्चस्थानगतास्त्वधः ॥ कृत्स्नंदेहमनुप्राप्ताःकुर्युःसर्वसरं तथा १६ योमध्यदेशेश्वयथुः संकष्टःसर्वगश्चयः ॥ अर्द्धांगेरिष्टभूतःस्याद्यश्चोर्द्ध्वंपरिसर्पति १७ श्वासःपिपासाछर्दिश्चदौर्बल्यंज्वरएवच ॥ यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनंपरिवर्जयेत् १८ अनन्योपद्रवकृतःशोथःपादसमु

रणकरने से व विषारी वृक्षके पवनलगने से वा विष मिलीहुई वस्तुओं के देहमें लगजाने से जो शोथहोताहै वह विषज कहाता है १४ वह विषज कोमल चलायमान फैलाव अधिक शीघ्रबढ़ने वाला दाह व पीड़ाकरने वालाहोता १५ दोष जब आमाशय में स्थितहोते हैं तो छातीमें शोथ करते हैं व जब पक्वाशयमें स्थितहोते हैं तो छाती और पक्वाशय दोनों में शोथ उत्पन्न करते हैं व मलस्थानमें स्थितहोकर दोषनीचे और अण्डकोशों में सूजन करते हैं व जब सबदेहमें दोष स्थितहोजाते हैं तो देहभरमें शोथ करते हैं १६ जो शोथ बीचदेह में होता है अथवा सब देहमें होताहै वह कष्ट साध्यहोता है व जो शोथ नीचे के आधे अंगमें होकर ऊंचेको चढ़ताहै वह मरणकारी होताहै १७ असाध्यके लक्षण जिस शोथ वाले के श्वास पिपासा वमन दुर्बलता ज्वर और अन्नमें अरुचिहो उसशोथवालेको वैद्यत्यागदे औषध न करे१८ अन्य उपद्रवों का कियाहुआ न हो किन्तु शोथही के उपद्रवों से युक्त शोथ जब पैरों में प्रथम होकर फिर ऊपर को चढ़ता है तो पुरुषको नष्ट करदेता है व जो मुखमेंहोकर फिर नीचे को चलताहै वह स्त्री को नष्ट करताहै व जो गुदसे प्रारम्भ होकर फिर देहभरमें होजाताहै वह चाहे पुरुषहो वा स्त्री दोनोंको मारडालता

स्थितः ॥ पुरुषंहंतिनारींतुमुखजोगुह्यजोद्वयम् ॥ नवो -नुपद्रवःशोथःसाध्योऽसाध्यःपुरेरितः १९ इतिशोथनिदानम् ॥

क्रुद्धोमूर्द्धगतिर्वायुःशोथशूलकरश्चरन् ॥ मुष्कौवंक्षणतःप्राप्यफलकोशाभिवाहिनीः १ प्रपीड्यधमनीर्वृद्धिं करोतिफलकोशयोः २ दोषास्रमेदोमूत्रांत्रैः सवृद्धिःसप्तधागदः ॥ मूत्रांत्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदश्चकेवलः ३ वातपूर्णदृतिस्पर्शो रूक्षोवातादहेतुरुक् ॥ पक्वोदुम्बरसंकाशः पित्ताद्दाहोष्मपाकवान् ॥ कफाच्छीतोगुरुःस्निग्धः कण्डूमान्कठिनोल्परुक् ४ कृष्णस्फोटावृतः पित्तवृद्धि

है नया व उपद्रव रहित शोथ साध्यहोताहै व साध्यमसाध्य सब इस अध्याय के प्रथम श्लोकमें कहचुके हैं देखो १९ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेशोथनिदानंचत्वारिंशत्तमम् ४०॥

दो० ॥ इकतालिसयें महँ कह्यो अण्ड प्रवृद्धि निदान ॥
देखहिं विज्ञ विचारि यहि कैसो है बलवान १

अण्ड वृद्धिकी सम्प्राप्ति का वर्णन क्रुद्ध वायु ऊँचे से नीचे को चलकर शोथ और शूलकरते हुये कोष्ठ में जाकर अण्डकोश के सन्धियों से अण्डकोश तक चली गई हुई नाड़ियों को १ अति पीड़ित करके दोनों अण्डों को वा एक अण्ड को बढ़ादेता है २ वातज पित्तज कफज रुधिर मेदस् मूत्र और आंत इन भेदों से अंड वृद्धि सात प्रकार की होती है उनमें मूत्रज और अन्त्रज कहे आंत से उत्पन्न ये दोनों अंड वृद्धियां वायु से होती हैं केवल हेतु मात्रका भेद है ३ वायु से भरीहुई चमड़े की थैली की तरह जो छूने पर विदितहो व विना कारण पीड़ाहुआ करे व रूखी रहती हो उसे वातज अंड वृद्धिकहते हैं व जो पकीहुई गूलर के रंगकी हो और उसमें दाह हुआ करे तथा गरम बनी रहे और पकउठे उसे पित्तज अंड वृद्धि जाननी चाहिये ४

लिंगश्चरक्तजः ॥ कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलो पमः ५ मूत्रधारणशीलस्यमूत्रजःसतुगच्छतः ॥ अम्भोभिःपूर्णदृतिवत् क्षोभंयातिसरुग्मृदुः ॥ मूत्रकृच्छ्रमध स्ताच्चचलयन्फलकोशयोः ६ वातकोपिभिराहारैःशीत तोयावगाहनैः ॥ धारणेरणभाराध्वविषमांगप्रवर्त्तनैः ७ क्षोभणैःक्षुभितोन्यैश्चक्षुद्रांत्रावयवंयदा ॥ पवनोविगुणी कृत्य स्वनिवेशादधोनयेत् ॥ कुर्याद्वंक्षणसंधिस्थो ग्रंथ्या भंश्वयथुंतदा ८ उपेक्ष्यमाणस्यचमुष्कवृद्धि माध्मानरुक्

व जो भंड वृद्धिकफसे होती है वह भारी रहती है व ठंढी चिकनी खजुली सहित कड़ी व थोड़ी पीड़ाकी होती है कालेफोड़ों से युक्त व जिसमें पित्तज भंड वृद्धिके लक्षण हों—उसे रक्तज भंड वृद्धिजानो व जो मेदस् से भंडवृद्धिहोती है वह कफज भंड वृद्धिकीनाईं मृदु व तारके फलकीनाईं आकार में होती है ५ मूत्रज अण्डवृद्धि पेशाव लगनेपर हठसे रोकने से होती है व जब रोगी चलताहै तो जलभरीहुई मशकके समान वह बोलती है पीड़ा हुआ करती है व छूनेसे नरम जानपड़तीहै पेशाव कष्ट से उतरता है व भंडकोशकी थैलियां इधर उधर चलायमान रहती हैं ६ अन्त्रज भंडवृद्धिके लक्षण—वातकोपकरानेवाले भोजनों के करने से बड़े शीतल जलमें स्नानकरने से मल मूत्र के वेग के रोंकने से व मलमूत्र विनालागेहुये जोरसे उनके करने से भारी बोझा ले चलने से रणमें घवड़ाकर भागनेसे बहुत झपटकर मार्ग चलने से वा टेढ़े मेढ़े होकर ऐंठते ग्वैंठते चलने से ७ वा अन्य चलायमान मनुष्यों के संगचलायमान होनेसे कुपितहोकर वायु छोटी २ आँतोंमें जाकर विकार उत्पन्न करके आँतोंको उनके स्थान से नीचेको उतारदेता है व भंडकोशके ऊपर गाँठिला शोथ करादेताहै ८ इसरोगकी उपेक्षाकरनेका परिणाम यह होता

स्तंभयतीववायुः ॥ प्रपीडितोन्तःस्वनवान्प्रयाति प्र ध्मापयन्नेतिपुनर्विमुक्तः ९ यस्यांत्रावयवाश्लेषान्मुष्कयो रतिसंचयात् ॥ ज्वरशूलाङ्गसादाढ्यंतम्वध्र्ममितिनिर्दिशे त् ॥ अंत्रवृद्धिरसाध्यायं वातवृद्धिसमाकृतिः १० ॥

इतिअन्त्रवृद्धिनिदानम् ॥

निवद्धःश्वयथुर्यस्य मुष्कवल्लम्बतेगले ॥ महान्वा यदिवाह्रस्वोगलगण्डंतमादिशेत् १ वातःकफश्चापिग लेप्रदुष्टोमन्यांसमाश्रित्यतथैवमेदः ॥ कुर्वंतिगंडंक्रमशः

है कि जब ऐसे रोग में जो कि फूलताहै पीड़ा करताहै व कड़ा-रहता है उसके औषध करने में उपेक्षा कीजाती है तो जब अण्ड कोश दवाये जाते हैं तो उसमेंका पवन आँतों सहित ऊपर को चढ़जाता है व घुलघुलाता रहता है व छोड़ देनेसे पवन आँतों सहित फिर अपने स्थानपर ज्यों का त्यों आजाताहै ९ इसरोग के असाध्य लक्षण–जो अण्डवृद्धि वायु व कफ से उत्पन्न होता है व वात के लक्षण बहुत पायेजाते हैं व आँतों के अंगों के पृथक् करनेसे वा अण्डकोशोंमें वातके सञ्चयसे ज्वर शूल अंगोंका टूट-ना ये युक्त होते हैं उसे वध्र्म कहते हैं यह वातवृद्धि के समानवध्र्म नाम अण्डवृद्धि असाध्य होती है १० ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽण्डवृद्धिनिदान-मेकचत्वारिंशत्तमम् ४१ ॥

दो० बयालिसें महँ हैं लिखे गलगण्डादि निदान ॥
अधम रोग यहि जानहीं जो हैं वैद्य महान १

गलगण्डरोगका निदान-जिसके गले में अण्डकोशके समान बड़ा वा छोटा १ शोथ होकर लटकने लगताहै व बँधारहताहै उसे गलगण्ड वा घेघाकहना चाहिये १ इसरोगकी सम्प्राप्ति-वात कफ व मेदस् दुष्टहोकर अपने २ लक्षणोंसे युक्तहोकर गले में क्रम २

स्वलिंगैःसमन्वितंतद्गलगंडमाहुः २ तोदान्वितःकृष्णाशिरावनद्धः श्यावारुणोवापवनात्मकस्तु ॥ पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्धिपाको यदृच्छयापाकमियात्कदाचित् ॥ वैरस्यमास्यस्यचतस्यजंतोः भवेत्तथातालुगलप्रशोषः ३ स्थिरःसवर्णोल्परुगुग्रकंडूः शीतोमहांश्चापिकफात्मकस्तु ४ चिराभिवृद्धिंभजतेचिराद्वा प्रपच्यतेमंदरुजःकदाचित् ॥ माधुर्य्यमास्यस्यचतस्यजंतोर्भवेत्तथातालुगलप्रलेपः ५ स्निग्धोगुरुःपांडुरनिष्टगंधो मेदोभवःकंडुयुतोऽतिरुक्च ॥ प्रलम्बतेऽलावुवदल्पमूलो देहानुरूपःक्षयवृद्धियुक्तः ॥ स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजन्तोर्गलेऽ

से गाँड़ाकीनाईं शोथको करतेहैं उसे वैद्यलोग गलगण्ड कहतेहैं २ वातजगलगण्डकेलक्षण ॥ वातिकगलगण्ड रोग में कोंचनेकीसी पीड़ा होतीहै काली नसों से बंधाहुआ होताहै श्याम वा अरुण रंगका होता कड़ापन रहताहै पकता नहीं जब कभी पकताहै तो अपनीही इच्छासेही किसी विकार से नहीं इसके रोगवाले के मुखका स्वादजाता रहता है व तालु और गले में शोष होताहै ३ कफज गलगण्ड के लक्षण--कफसे उत्पन्न गलगण्ड रोगमें स्थिरता रहती है व जैसा उसरोगीके सब शरीर के चर्म्मका रंग होता है वैसाही उसका भी पीड़ा इसमें थोड़ी होतीहै पर खजुहट बड़ी उग्र होती है सदा ठंढा बनारहता है और बहुत बड़ा होता है ४ बढ़ता बहुत दिनोंमें है व बहुतही दिनोंमें पकताभी है पीड़ा इस में मन्दहोती है सोभी कभी २ इसरोगीकामुख मीठाबनारहताहै व तालु और गलेमें सदा कफलपटा रहता है ५ मेदसे उत्पन्न गलगण्डकेलक्षण-इसगलगण्डरोगमें चिकनाई गरुआपन रहता है पीलारंगका होताहै दुर्गन्धि आती है खजुआता रहताहै पीड़ा थोड़ी होती है लौकीकी नाईं लम्बा होता जड़ में पतला रहताहै

नुशब्दंकुरुतेचनित्यम् ६ कृच्छ्राच्छ्वसंतंमृदुसर्वगात्रं संवत्सरातीतमरोचकार्त्तम् ॥ क्षीणञ्चवैद्योगलगंडजुष्टंभि न्नस्वरञ्चापिविवर्जयेत्तु ७ कर्कंधुकोलामलकप्रमाणैःक क्षांसमन्यागलवंक्षणेषु ॥ मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैः स्याद्गण्डमालाबहुभिश्चगण्डैः ८ तेग्रन्थयःकेचिदवाप्त पाकाः स्रवंतिनश्यंतिभवंतिचान्ये ॥ कालानुबंधंचिरमा दधाति सैवापचीतिप्रवदंतिकेचित ९ साध्यास्मृतापी नसपार्श्वशूलकासज्वरच्छर्दियुतात्वसाध्या १० वाता

रंग बहुधा देहकासाही रहताहै कभी अपने आप घटजाताहै कभी फिर बढ़जाताहै रोगी का मुहँ चिकना बनारहताहै व बोलते समय शब्द घेघँ २ निकलताहै ६ इसके असाध्य लक्षण—जो घेघावाला बड़े कष्टसे श्वास ले सकाहो अंग उसके सब कोमलहों व वर्षभर से रोग अधिक दिनोंका होगयाहो अरुचिके मारे रोगी पीड़ितहो व बलादि से क्षीण होगयाहो जिसकाबोल भनभनाने लगाहो बस ऐसे गलगण्डी को वैद्य छोड़दे औषध न करे ७ गलगण्ड के आकार और लक्षण इसी गलगण्डही से फिर गण्डमाला रोग होताहै जब मेदस् व कफसे काँख काँधा गर्दन गला व अण्डों के जोड़पर छोटी वा बड़ी बेरभर २ बहुतसे गण्ड होजाते हैं व बहुत दिनों में धीरे २ पकउठते हैं व भँवलेभर २ के भी होते हैं जो ऐसा रोग होताहै उसे गण्डमाला कहते हैं ८ इसी के भेद अपचीरोग के लक्षण-कोई कोई आचार्य कहते हैं जब वे गण्डमालावाली गाँठियाँ कभी २ पकती हैं व बहनेलगती हैं कभी अपने आप मिटजाती हैं व और होआती हैं इसप्रकार बहुत दिनोंतक रहती हैं वही अपचीरोग कहाता है ९ अपची के साध्यासाध्य लक्षण-अपचीरोग साध्य कहाजाताहै परन्तु जब पीनस पशुलियों में शूल खाँसी ज्वर व वमन से युक्त होतीहै तो वही असाध्य होजाती

दयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः संदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च ॥ वृत्तोन्नतंविग्रथितंतुशोफं कुर्वन्त्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः ११ आयम्यतेवृश्च्यतितुद्यतेचप्रत्यस्यतेमथ्यतिभिद्यतेच ॥ कृष्णोमृदुर्वस्तिरिवाततश्च भिन्नस्रवेच्चानिलजोसृमच्छम् १२ दंदह्यतेधूम्यतिचूष्यतेचपापच्यतेप्रज्वलतीवचापि । रक्तःसपीतोप्यथवापिपित्ताद्भिन्नःस्रवेदुष्टमतीवचासृम् १३ शीतोविवर्णोल्परुजोतिकंडूःपाषाणवत्संहननोपपन्नः ॥ चिराभिवृद्धिश्चकफप्रकोपाद्भिन्नःस्रवेच्छुक्लघनंचपूयम् १४ शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिःस्निग्धोमहान्कंडुयु

है १० वात पित्त कफ जबदुष्टहोकर मांस और रक्तको दूपितकरके मेदस्को भी दूषित करते हैं व इनमें लगीहुई नसोंको भी दूपित करते हैं फिर गोल और ऊँची गाँठि सदृश शोथ करदेते हैं वह ग्रन्थि वा गाँठि कहाती है ११ वातज ग्रन्थि के लक्षण--यह ग्रन्थि फैलती है छेदती रहती है कोंचने कीसी व्यथाकरती है जानो कोई उखेड़कर फेंकेदेताहै मानो मथेडालताहै जानो कोई फोड़े डालताहै उसका रंग काला होताहै छूने में कोमल जानपड़ती है व वस्तिके तुल्य फैलीहोती है जब फूटती है तो अच्छा रुधिर उसमें से निकलताहै १२ पित्तजग्रन्थिमें अतिशयकरके दाह होताहै व धुआँसा उसमें निकलनेलगताहै मानो कोई चूसेलेताहै वजानो कोई अतिशयतासे कोई पकायेडालताहै व जानो जलउठने चाहती है इसकारंग लाल पीलामिलाहोताहै व ऐसी ग्रन्थिके फूटनेसे अतिदुष्टरुधिर निकलताहै १३ कफज ग्रन्थिके लक्षण-यह गाँठि शीत शरीरके रंगसे कुछ भेदयुक्त थोड़ीपीड़ाकी बहुत खजुली युक्त पत्थरसीकड़ी ऊँची बहुत दिनों में बढ़ने वाली होती है और फूटजाने पर कोदो के चावलके समान उजली २ पीव निकलती है १४ मेदासे उत्पन्न ग्रन्थिके लक्षण–यह गाँठि शरीर के मुटाने

तोलपरुक्च ॥मेदःकृतेगच्छतिचात्रभिन्नेपिण्याकसर्पिः प्रतिमञ्चमेदः १५ व्यायामयातैरबलस्यतैस्तैराक्षिप्यवा युर्हिशिराप्रतानम् ॥ संकोच्यसंपीड्यविशोष्यचापिग्र न्थिंकरोत्युन्नतमाशुवृत्तम् १६ ग्रंथिःशिराजःसतुकृच्छ्र साध्योभवेद्यदिस्यात्सरुजश्चलश्च ॥ सचारुजश्चाप्य चलोमहांश्चमर्मोत्थितश्चापिविवर्जनीयः १७ गात्रप्रदे शेक्वचिदेवदोषाःसमुच्छ्रितामांसमसृक्प्रदूष्य॥वृत्तंमृदुंमं दरुजंमहांतमनल्पमूलंचिरवृद्धिपाकम्॥कुर्वंतिमांसोच्छ्र यमत्यगाधंतदर्बुदंशास्त्रविदोवदंति १८ वातेनपित्तेनक

से बढ़ती है व दुबराने से दुर्बल होजाती है चिकनी मोटी खजु- ली सहित थोड़ी पीड़ावाली होतीहै व फूटनेपर इसमें से तिल्ली के पीनाके तुल्य वा जमेहुये घीके समान मेदस् अर्थात् चर्बी निकलती है १५ नसोंकी गांठिके लक्षण–निर्बल पुरुष जब अनेक प्रकारके काम अधिक जोरसे करताहै तो उन उन कामोंसे कुपित होकर पवन नसोंके जालको तनकर फिर इकट्ठी करके व बनाय बटोरकर व सुखाकर बड़ी ऊँची गोल गाँठि बनादेता है १६ शिरासे उत्पन्नग्रन्थि के साध्यासाध्य के लक्षण–शिराओं से उत्पन्नग्रन्थि कष्टसाध्यहोती है व जो वह पीड़ासहितहो और चञ्चलहो व पीड़ा रहित हो तो अचल और बड़ीहो व किसीसु- कुमारस्थान में उत्पन्नहुईहो तो त्यागने के योग्यहै औषधकरनेकी आवश्यकता नहीं है १७ अथअर्बुद रोगके लक्षण कहतेहैं-प्रथम अर्बुदकी सम्प्राप्तिका वर्णन करतेहैं–देहके किसीस्थानपर वाता- दिदोष उठकर मांस व रक्तको अत्यन्त दूषितकरतेहैं उससे गोल कोमल थोड़ी पीड़ा युक्त बड़ी भारी जड़में अधिक फैलाववाली बहुत दिनों में बढ़नेवाली व पकनेवाली मांसकी गोली निकल आतीहै वैद्य उसे संस्कृत में अर्बुद व भाषामें बतौरी कहतेहैं १८

फेनचापिरक्तेनमांसेनचमेदसाच ॥ यज्जायतेतस्यचल क्षणानि ग्रंथेसमानानिसदाभवंति १९ दोषःप्रदुष्टोरुधि रंशिराश्च संकुच्यसंपीड्यगतस्त्वपाकम् ॥ सास्रावमुन्न ह्यतिमांसपिंडं मांसांकुरैरोचितमाशुवृद्धम् २० करोत्य जस्रंरुधिरप्रवृत्तिमसाध्यमेतद्रुधिरात्मकन्तु ॥ रक्तक्ष योपद्रवपीडितत्वात्पाण्डुर्भवेत्सोऽर्बुदपीडितस्तु २१ मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितेंगे मांसश्चदुष्टंजनयेत्तुशोथम् ॥ अवेदनंस्निग्धमनन्यवर्णं मपाकमाश्मोपममप्रचाल्यम् २२ प्रदुष्टमांसस्यनरस्यगाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य ॥ मांसार्बुदत्वेतदसाध्यमुक्तंसाध्येष्वपीमानिविवर्जयेत्तु २३

वे अर्ब्बुद वात पित्त कफ मांस रक्त व मेदस इनसे उत्पन्न होने के कारण ६ प्रकारकी होती हैं इनके लक्षण वातजादि ग्रन्थियों केही समानहोते हैं १९ दुष्टवातादिक दोषरुधिर और नसों को सिकोड़करवा सम्पीड़ितकरके मांसके पिण्डको ऊपरको उठाता है वह पहिले कच्चारहताहै फिर कभी पकताहै तो रुधिर बहने लगताहै मांसके अंकुरउसके किनारे २ निकलआते हैं और बहुत शीघ्र वह बढ़जाताहै २० यदि उसमें से निरन्तर रक्त बहता रहै तो वह रक्तार्ब्बुद असाध्य होजाताहै और रक्तार्ब्बुद से पीड़ित पुरुष रक्तक्षयहोनेसे व उपद्रवसे पीड़ित होनेके कारण पीलाहो-जाताहै २१ मांसके अर्ब्बुद रोगकी सम्प्राप्ति—मूकाआदिसे पीड़ित करनेसे मांस अति दुष्टहोकर शोथको उत्पन्न करताहै उसशोथ वा सूजनमें पीड़ानहींहोती चिकनीहोती रंगशरीरही कासाहोता है पकती नहीं है व पत्थरके समान कड़ीहोने के कारण अचल होजाती है २२ जिस मनुष्यका मांस बिगड़जाताहै अथवा जो नित्यमांस भक्षण करता रहताहै उसके जब मांसार्ब्बुद होताहै तो असाध्यकहाताहै व साध्यों के बीचमें भी जो अर्ब्बुद कहे हैं

संप्रसृतंमर्म्मसुयच्चजातं स्रोतस्सुवायच्चभवेदचाल्यम् ॥
यज्जायतेन्यत्खलुपूर्वजाते ज्ञेयंतदध्यर्वुदमर्वुदज्ञैः २४य
द्द्वन्द्वजातंयुगपत्क्रमाद्वा द्विरर्वुदंतच्चभवेदसाध्यम् २५
नपाकमायांतिकफादिकत्वान्मेदोबहुत्वाच्चविशेषतस्तु ॥
दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्चतेषांसर्वार्वुदान्येवनिसर्गतस्तु २६

इतिगलगण्डमालाग्रन्थ्यर्वुदनिदानम् ॥

मेदोमांसाश्रयंशोफम्पादयोश्श्लीपदम्भवेत् ॥ स्व
लिङ्गदर्शिभिर्दोषैस्त्रिधास्याच्चकफोत्तरम् १ यस्सज्वरो

वेभीप्रायः असाध्यहीहोते हैं २३ साध्यासाध्य जाननेका प्रकार जो अर्व्वुद सदा बहतारहताहै अथवा जो किसी सुकुमार स्थानमें उत्पन्नहोताहै वा नसोंमें जोउत्पन्नहोताहै वहकिसीके चलायेनहीं चलताअर्थात् असाध्यहोताहै व जिसस्थानमें प्रथमअर्व्वुदहुआहो उसीपरजो दूसराहोतो उसकाअध्यर्व्वुद नामजाननाचाहिये २४ अब द्वन्द्वज अर्व्वुद जो एकही साथ एकही स्थानपर हों वा एक दूसरे के पीछेहों तो उन्हें द्विरर्व्वुद कहतेहैं ये द्विरर्व्वुद असाध्य होतेहैं २५ अर्व्वुद के न पकनेका कारण कफाधिक होनेसे मेद बहुत होनेसे व दोषके स्थिर होनेसे अथवा इनकी गांठि परजाने से सब अर्व्वुदों का स्वभाव है कि फिर वे अपने आपनहीं पकते हैं २६ ॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेगलगण्डगण्डमालाऽपची ग्रन्थिशिराग्रन्थ्यर्व्वुदादिनिदानन्द्विचत्वारिंशत्तमम् ॥ ४२ ॥

दो० ॥ त्येंतालिसयें महँ कह्यो श्लीपदरोग निदान ॥
करि विचार बहुभांति सों भाषत जाहि सुजान १

श्लीपद रोगका निदान कहते हैं पैरों में मेदस् और मांसके आश्रयसे जो शोथ होताहै उसे श्लीपदरोग कहतेहैं वह अपने २ चिह्नों के दिखानेवाले दोषों के कारण तीन प्रकारका होता है

षड्विधश्चसः २ पृथग्दोषैःसमस्तैश्च क्षतेनाप्यसृजा तथा ॥ षण्णामपीहतेषांहिलक्षणंचप्रचक्षते ३ कृष्णोरुणोवाविषमो भृशमत्यर्थवेदनः ॥ चित्रोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिर्वातसंभवः ४ पक्वोदुम्बरसंकाशः श्यावोवा ज्वरदाहवान् ॥ क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिःपित्तसंभवः ५ सएवसदृशःपांडुःशीतःस्निग्धोऽल्पवेदनः॥ चिरोत्थानप्रपाकश्च सकण्डुश्चकफोत्थितः ६ तनुपीतासिताश्चैषा मास्रावाःक्रमशःस्मृताः॥नानावर्णरुजास्रावोघंटास्रोविषमोमहान् ॥ विषमंपच्यतेचापि विद्रधिःसान्निपा

बड़ी चौड़ी होती है व पीड़ा बहुत होती है चाहे वह गोलहो वा लम्बीहो उसे लोग विद्रधि कहते हैं सो वह ६ प्रकारकी होती है २ वात पित्त कफ तीनों दोषोंसे तीनप्रकारकी व सबों के मिलने से एकसन्निपातकी पांचईं क्षतज छठीं रक्तज इनछओंके लक्षण कहते हैं ३ वातज विद्रधि के लक्षण—जो काले वा लालरंग की होती है चाहे छोटीहो वा भारीहो पर पीड़ा बहुतहो उसका उठना और पकना अनेक प्रकारकाहो बस वायुसे उत्पन्न विद्रधि के येही लक्षण होते हैं ४ पित्तज विद्रधि के लक्षण—पित्तज विद्रधि पकीहुई गूलर के रंगकी होती है अथवा श्यामता लियेहुये होती है ज्वर व दाह भी इसमें होताहै उसका उठना व पकना शीघ्रही होताहै ५ कफज विद्रधि के लक्षण—कफकी विद्रधि दिया के तुल्य बड़ी व पाण्डुरंग और ठण्ढीहोतीहै चिकनी व अल्पपीड़ायुक्त होतीहै बहुत कालमें उठती और पकती है ६ पकने पर बहनावातकी विद्रधिमें पतली पीव बहती है पित्तकीमें पीली व कफकी में उजली सन्निपातकी विद्रधि के लक्षण-सन्निपातकी विद्रधिका नानाप्रकारका रंगहोताहै व नानाप्रकार की पीड़ाहोती है व नानाप्रकार से बहनाहोताहै व घण्टाकी नाईं लम्बाई होती

रिकः ७ तैस्तैर्भावैरभिहते क्षतेवापथ्यकारिणः ॥ क्षतो ष्णोवायुविसृतः सरक्तंपित्तमीरयेत् ८ ज्वरस्तृष्णाचदा हश्च जायतेतस्यदेहिनः ॥ आगंतुर्विद्रधिस्त्वेष पित्त विद्रधिलक्षणः ९ कृष्णःस्फोटावृतःश्यावस्तीव्रदाहरुजा ज्वरः ॥ पित्तविद्रधिलिंगस्तुरक्तविद्रधिरुच्यते १० पृथ क्संभूयवादोषाःकुपितागुल्मरूपिणम् ॥वल्मीकवत्समुन्न द्धमन्तःकुर्वन्तिविद्रधिम् ११गुदेवस्तौमुखेनाभौकुक्षौवंक्ष णयोस्तथा ॥ वृक्कयोःप्लीन्हियकृतिहृदयेक्लोम्निवाप्यथ १२ एषामुक्तानिलिंगानिवाह्यविद्रधिलक्षणैः ॥ अधिष्ठानवि शेषेणलक्षणानिनिबोधमे १३ गुदेवातनिरोधस्तुवस्तौ

है विषम स्वभावकी बड़ी भारी होती है कोई तो पकती है कोई पकतीही नहीं यह भी विषमता उसमें होती है ७ विद्रधिकी स- म्प्राप्तिका वर्णन—लोहे पत्थर काठ आदिकों के घावके लगने से वा किसी अन्य प्रकार के घाव में जब रोगी अपथ्य करता है तो घावका उष्णवायु कोपकरके रक्तसहित पित्तको कोप कराताहै ८ ज्वर तृष्णा व दाह उस रोगी के होतेहैं इस आनेवाली विद्रधि के लक्षण प्रायःपित्तकी विद्रधि के होते हैं ९ रक्तज विद्रधि के ल- क्षण—रक्तकीविद्रधि कालेफोड़ोंसे घिरीहुई होती है कुछ श्यामता लिये उसका रंगहोताहै दाह पीड़ा व ज्वर तीव्रहोते हैं पित्त वि- द्रधि के सब लक्षण रक्तकी विद्रधिमें होते हैं १० अन्तर्विद्रधि के लक्षण—वात पित्त कफकोपकरके अलग२ वाएकसंग होकर गुल्म- रूप ब्यँबौरी की नाईं ऊँची विद्रधि अन्तःकरणमें करते हैं ११ स्थान २ परके पृथक्२ लक्षण—गुद वस्तिमुख नाभि कोपि अण्ड- कोशोंकी सन्धिमें अण्डकोशोंमें पिलहीके स्थानमें यकृतके स्था- नमें हृदयमें व पिपासाके स्थानमें विद्रधि होती हैं १२ इनके चिह्न वाहरकी विद्रधिके लक्षणोंसे कहा अवस्थान विशेषसे लक्ष-

कृच्छ्राल्पमूत्रता ॥ नाभ्यांहिक्कातथाटोपःकुक्षौमारुतको पनम् १४ कटीपृष्ठग्रहस्तीव्रोवंक्षणोत्थेतुविद्रधौ । वृक्क योःपार्श्वसंकोचःप्लीह्युच्छ्वासावरोधनम् १५ सर्वांगप्रग्र हस्तीव्रोहृदिकासश्चजायते ॥ श्वासोयकृतिहिक्काचक्लो म्निपेपीयतेपयः १६ नाभेरुपरियाःपक्वायांत्यूर्ध्वमितरे त्वधः ॥ अधःस्रुतेषुजीवेत्स्रुतेषूर्ध्वंनजीवति १७ हन्ना भिवस्तिवर्ज्यायेतेषुभिन्नेषुबाह्यतः ॥ जीवेत्कदाचित्पुरु षोनेतरेषुकदाचन १८ साध्याविद्रधयःपंचविवर्ज्यःसान्नि

ण विशेष हमसे सुनो १३ गुद में विद्रधिहोने से वायुका निरोध होताहै वस्तिमें होनेसे कष्टसे थोड़ा पेशाब उतरता है नाभि में होनेसे हुचकीआती व पेटफूलताहै कोपिमें होनेसे वायुकाकोप होताहै १४ अण्डकोशोंके जोड़में विद्रधिहोनेपर कटि और पीठ जकड़कर अतिपीड़ित होती है कोपिके पिण्डमें होनेसे पशुड़ियां सिंकुर जाती हैं व पिलहीके स्थानमें होनेसे श्वासरुँकने लगती है १५ हृदयमें विद्रधिनाम फोड़ाहोनेसे सबअंग जकड़जातेहैं व खांसी आनेलगती है यकृत के स्थान में अर्थात् कलेजेमें होनेसे श्वास और हुचकी आतीहै व पिपासा के स्थानमें होनेसे फिर२ पिपासा लगती है इससे पानी अधिक पियाजाताहै १६ नाभि के ऊपर जो विद्रधियां होती हैं फूटनेपर उनकी पीबमुखकीहो- करबहतीहै व जोनाभिके नीचेहोतीहैं वे गुदमार्गहोकर बहती हैं जोनीचेहोकर बहतीहैं उनमें रोगीजीताहै व ऊपरको बहने से नहीं जीताहै १७ साध्यासाध्यके लक्षण—हृदयनाभि वस्ति इन स्थानोंको छोड़कर पिलही पिपासादि स्थानोंकी विद्रधियां जब बाहरहोकर बहती हैं तो कदाचित् पुरुषजीभीजाताहै पर अन्य स्थानोंमें होनेपर फिरकभी नहीं जीता १८ पांच विद्रधियांसाध्य होतीहैं व सन्निपातजअसाध्य होतीहै इससे त्याज्यहै इनमेंकच्ची

पातिकः ॥ आमपक्वविदग्धत्वंतेषांशोफवदादिशेत् १९ आध्मानंबद्धनिष्पन्दंछर्दिहिक्कातृषान्वितम् ॥रुजाश्वास समायुक्तंविद्रधिर्नाशयेन्नरम् २० ॥ इतिविद्रधिनिदानम् ॥

एकदेशोत्थितःशोथो व्रणानांपूर्वलक्षणम् ॥ षड्विधः स्यात्पृथक्सर्वैरक्तजागंतुजौतथा १ शोफाःषडेतेविज्ञेयाः प्रागुक्तैःशोफलक्षणैः ॥ विशेषःकथ्यतेचैषांपक्वापक्वविनिश्चये २ विषमेपच्यतेवातात्पित्तोत्थश्चाचिरंचिरम् ॥ कफजःपित्तवच्छोफोरक्तागंतुसमुद्भवः ३ मन्दोष्णताल्पशो

पक्की विदग्धता ये तीन शोथके समान जानना चाहिये १९ असाध्यके लक्षण—जिसविद्रधिमें पेटफूलताहै पेशाब रुँककर होता है ओकाई आती वा जी मचलाता है वान्त होताहै हुचकीआती है पिपासा लगती है पीड़ा होती और श्वास अधिकआती है वह विद्रधि रोगीको नाशकरदेती है २० ॥

इति श्रीमाधवनिदाने भाषानुवादे विद्रधिनिदानं चतुश्चत्वारिंशत्तमम् ४४ ॥

दोहा ॥ पैंतालिसयें महँ कह्यो वहु व्रण शोथ निदान ।
लखहिं सुजनमनलायकै गुनि२महितविधान ॥१॥

व्रण अर्थात् घावके निदान कहतेहैं एक किसी स्थानपरजब शोथहो आवे तो उसको व्रणों का पूर्व्व लक्षण जानना चाहिये वह ६ प्रकार का होता है वात पित्त कफ इनका अलग २ व सबोंके मिलने से सन्निपातज पांचवां आगन्तुक छठां रक्तज १–६ शोथ पूर्वोक्त शोथोंके लक्षणों से जानने चाहियें इनके कच्चेपक्के के निश्चय के विषयमें विशेष कहाजाताहै २ वातज का पकना विषम होता है इससे कहीं पकजाता है कहीं नहीं भी पकता है पित्तज बहुत शीघ्र पकताहै व कफज विलम्ब से पकताहै रक्तज और आगन्तुक शोथ पित्तज के समान शीघ्र पकता है ३ थोड़ी

थत्वंकाठिन्यंत्वक्सवर्णता ॥ मंदवेदनताचेतिशोफाना मामलक्षणम् ४ दह्यतेदहनेनेवक्षारेणेवचपच्यते॥ पिपी लिकागणेनेवदश्यतेछिद्यतेतथा ५ भिद्यतेचैवशस्त्रेणदं डेनेवचताड्यते ॥ पीड्यतेपाणिनेवांतःसूचीभिरिवतुद्य ते ६ शोषचोषौविवर्णःस्यादंगुल्येवावपाट्यते ॥ आस निशयनेस्थानेशांतिर्वृश्चिकविद्धवत् ७ नगच्छेदाततः शोफोभवेदाध्मातवस्तिवत् ॥ ज्वरस्तृष्णारुचिश्चैतत् पच्यमानस्यलक्षणम् ८ वेदनोपशमःशोफोलोहितोवा ल्पवेदनः॥ प्रादुर्भावोवलीनांचतोदःकण्डूर्मुहुर्मुहुः ९ उ पद्रवाणांप्रशमोनिम्नतास्फुटनंत्वचः॥वस्ताविवाम्बुसंचा रःस्याच्छोफेंगुलिपीड़िते १० पूयस्यपीडयत्येकमंतमंते

उष्णता थोड़ा सूजना कड़ापन देहके चर्म्मही का सा रंग होना थोड़ीपीड़ा ये शोथोंकेकच्चेहोने के लक्षणहैं ४ जब शोथमें अग्नि के समान जलन उत्पन्नहो व लोन के तुल्य पकनेलगे च्यूंटियों के काटने कीसी पीड़ा होनेलगे व जानों कोई चीरेडालताहै ५ जानों शस्त्रसे कोई काटताहै जानों दण्डासे पीटाजाताहै जानों हाथ से पीड़ित होता है भीतरमानों कोई सुइयोंसे चोंकता है६ सूखना अग्निसे जलाने के समान जलन रंग बदलजानामानों कोई अँगुलीडाले फाड़ताहै ऐसा जानपड़ना वैठने सोने मेंशांति न होनी वीछीके काटेकी नाईं पीड़ाका विदितहोना ७ वह शोथ जब न जाय व पेडूकेशोथके तुल्य होजाय ज्वर तृष्णाअरुचि येहों ये सब लक्षण जब सूजन पकजातीहै तो उसके लक्षण होतेहैं८ पकेहुये व्रणके लक्षण—पीड़ाका मिटजाना सूजनका रंग कुछ मैला लाल होजाताहै कुछथोड़ी पीड़ारहजाती है खालमें सिकुड़े पड़जातेहैं कोंचना और खजुलाना वार २ होताहै ९ सबउपद्रव शान्तहोजातेहैं शोथ में गढ़पड़जाते हैं खालफूटजाती है वस्तिसे

चपीडिते ॥ भक्ताकांक्षाभवेच्चैतच्छोफानांपक्वलक्षणम् ११ नर्तेनिलाद्रुग्नविनाचपित्तंपाकःकफाच्चापिविनानपूयः ॥ तस्मात्तुसर्वेपरिपाककालेपचंतिशोफांस्त्रिभिरेवदोषैः १२ कालांतरेणाभ्युदितंतुपित्तंकृत्वावशेवातकफौप्रसह्य ॥ पचत्यतःशोणितमेषपाकोमतोपरेषांविदुषांद्वितीयः १३ कक्षंसमाश्रित्ययथैववह्निर्वाय्वीरितःसंदहतिप्रसह्य ॥ तथैवपूयोप्यविनिःसृतोहिमांसंशिरास्नायुचखादतीह १४ आमंविदह्यमानंचसम्यक्पाकंचयोभिषक् ॥ जानीयात्सभवेद्वैद्यःशेषास्तस्करवृत्तयः १५ यश्छिनत्या

मानों पानी बहने चाहताहै और सूजनपर अँगुलीके दबानेसे १० पीव इधर उधर हटजातीहै इससे कुछगढेसे होजातेहैं व अन्नखाने की इच्छाहोतीहै बसपकेहुये शोथोंकायही लक्षणहै ११एकदोष से उत्पन्न शोथमें पकनेके समय तीनोंदोषोंके होजानेके लक्षण बिना वायुके दोषकेपीड़ा नहींहोती व बिनापित्तके शोथ वा घावपकताही नहीं व बिनाकफके पीवहोतीहीनहीं इससे सबशोथ पकनेकेसमय तीनोंदोषोंसे युक्तहोते हैं १२ इसविषय में दूसरामत ऐसाहै कोप कियेहुये पित्त कालान्तर पाकरहठसे वातकफको अपनेवशमें कर के रुधिरको पकाताहै इसीसे अन्यपण्डितोंका यहदूसरामतहै१३ जैसे सूखे खरमें प्राप्तअग्नि जबवायुसेप्रेरित होताहै तो हठसे उसे जलाताहै इसप्रकार जबतक पीव घावसे बाहर नहीं निकलता तबतक मांस व छोटी बड़ी सब नसोंको खाती रहती है१४आमादि लक्षणों केजानने के अर्थ इस के गुण और दोष दिखाते हैं लक्षणोंसे जो वैद्य व्रणका कच्चापन पकनेके योग्य व अच्छेप्रकार से पकजाना जानलेताहै वहवैद्यहोताहै अन्यजो नहीं जानते योंहीं वैद्यकीकरतेहैं व चोरहैं वैद्यनहींहैं १५ जो अज्ञान से कच्चेफोड़े आदिको चीड़डालताहै व जो पकेहुयेकेचीड़ने वा फोड़नेके उपाय

ममज्ञानाद्यश्चपक्वमुपेक्षते ॥ श्वपचाविवमंतव्यौतावनिश्चितकारिणौ १६ ॥ इतिशोथव्रणनिदानम् ॥

द्विधाव्रणःपरिज्ञेयःशारीरागंतुभेदतः ॥ दोषैराद्यस्तयोरन्यःशस्त्रादिक्षतसंभवः १ स्तब्धःकठिनसंस्पर्शोमंदस्रावोमहारुजः ॥ तुद्यतेस्फुटतिश्यावोव्रणोमारुतसंभवः २ तृष्णामोहज्वरक्लेददाहदुष्ट्यवदारणैः ॥ व्रणंपित्तकृतंविद्याद्गन्धैः स्रावैश्चपूतिकैः ३ बहुपिच्छोगुरुःस्निग्धःस्तिमितोमंदवेदनः ॥ पाण्डुवर्णोल्पसंक्लेदश्चिरपाकीकफव्रणः ४ रक्तोरक्तस्रुतीरक्तात्द्वित्रिजःस्यात्तदन्वयैः ५

की उपेक्षा करताहै झटनहीं चीड़ता वा फोड़ता तो वे दोनोंअनिश्चितकारी होनेकेकारण डोमड़ेके समान मानने चाहियें १६ ॥

इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादे व्रणशोथनिदानं-
पञ्चचत्वारिंशत्तमम् ॥ ४५ ॥

दो० ॥ छयालिसयें महँ हैं कहे व्रणके सकल निदान ॥
पिछलेमहँ व्रणशोथके कहे लखें गुणवान ॥ १ ॥

शारीरक और आगन्तुक के भेदसे व्रण दो प्रकार के जानने चाहियें उनमें पहिला शारीरक शरीरके वात पित्त कफादिकों के दोषसे होताहै व दूसरा आगन्तुक शस्त्रादिकोंकी चोटके लगने से होताहै १ वातजव्रणकेलक्षण-वायुसेउत्पन्नव्रण अचलकड़ाहोताहै थोड़ा बहताहै पीड़ावड़ीहोती है कोंचनेकीसी भी पीड़ा होती है फूटजाताहै यह व्रणकुछ ललाई लिये मटमैले रंगका होता है २ पित्त व्रणका लक्षण--पित्तजव्रणमें पिपासा मोह ज्वर गीलापन दाह सड़जाना विदीर्णहोना दुर्गन्धिआना बहनेपरभी दुर्गन्धिही का आना ये लक्षण होते हैं ३ कफात्मक व्रण के लक्षण ये हैं बहुत चमकना गुरु चिकना अचल थोड़ी पीड़ा पीलारंग थोड़ा बहना विलम्ब से पकना ४ रक्तज व्रणके लक्षण--रक्तसे उत्पन्न

त्वग्मांसतःसुखेदेशेतरुणस्यानुपद्रवः ॥ धीमतोभिनवः कालेसुखेसाध्यःसुखव्रणः६ गुणैरन्यतमैर्हीनस्ततःकृच्छ्रो व्रणःस्मृतः ॥ सर्वैर्विहीनोसाध्यस्तुतथैवोपद्रवान्वितः ७ पूतिपूयातिदुष्टासृक्स्राव्युत्संगीचिरस्थितिः ॥ दुष्टव्रणो तिगन्धादिःशुद्धलिंगविपर्ययः ८ जिह्वातलाभोऽतिमृदु श्शुक्ष्णोविगतवेदनः ॥ सुव्यवस्थोनिरास्रावश्शुद्धोव्रणइ तिस्मृतः ६ कपोतवर्णप्रतिमायस्यांताःक्लेदवर्जिताः ॥ स्थिराश्चपिडिकावंतोरोहतीतितमादिशेत् १० रूढवर्त्मा

व्रणका रंग लाल होताहै व उससे रक्त बहताहै वह जब वाता-दिकों में से किसी एक दोपके संग हो तो द्विज और जब दो औरों के संग हो तो त्रिज व जब तीन औरों के संग हो तो चतु-र्ज कहाताहै ५ सुख व्रणके लक्षण—जो व्रण त्वचा मांस और असुकुमार स्थानों में युवापुरुष के उपद्रव रहित होकर होताहै, सो भी बुद्धिमान् मनुष्य के होता है और नयाहोताहै व सुखद काल हिम शिशिरही में होताहै वह सुख से साध्यहोता है इसीसे उसका सुख व्रण नाम भी है ६ कृच्छ्रसाध्य और असाध्य व्रणों के लक्षण—कहेहुये गुणों में से कुछहों और कुछ जिसमें न हों वह व्रण कष्ट साध्यहोताहै व जो गुण कहे हैं उनमें से जिसमें एकभी नहो तो वह असाध्य होताहै उसकी औषध न करनी चा-हिये ७ दुष्ट व्रणके लक्षण—जिस व्रणमें दुर्गन्ध सहित पीव व अति दुष्ट रुधिरबहै व जो ऊपरकी ओर अधिक ऊँचाहो व बहुत दिनों का होगयाहो व गँधाता बहुतहो शुद्धताका कोई चिह्न जि-समें नहो वह दुष्ट व्रण कहाताहै ८ जो व्रण जिह्वा के नीचे के भागकी नाईं चिकनाहो छूनेपर कोमल जानपड़े उजलाहो पी-ड़ारहित हो व्यवस्था अच्छीहो बहुत न बहताहो उसको शुद्धव्रण कहते हैं ६ व्रणके भर आनेके लक्षण—जिस व्रणका रंग ललाई,

नमग्रंथिमशूनमरुजंव्रणम्॥त्वक्सवर्णसमतलंसम्यग्रूढं विनिर्दिशेत् ११ कुष्ठिनांविषजुष्टानांशोषिणांमधुमेहिनाम॥व्रणाःकृच्छ्रेणसिद्धयंतियेषांचापिव्रणेव्रणाः १२वसामेदोथमज्जानंमस्तुलुंगंचयःस्रवेत्॥आगंतुजोव्रणःसिद्धयेन्नसिद्धयेद्दोषसंभवः १३ मद्यागुर्वाज्यसुमनापद्मचंदनचंपकैः॥सुगंधादिव्यगंधाश्चमुमूर्षाणांव्रणाःस्मृताः १४ येचमर्मस्वसंभूताभवंत्यत्यर्थवेदनाः॥ दह्यंतेचांतरत्यर्थं

लिये मट मैले कबूतर कासाहो व उसमें से पीव आदि कुछ बहती न हो स्थिरता विद्यमान हो ऊपर खांसे पड़गयेहों बस ऐसे व्रणको जानलेना चाहिये कि यह अब भरता चलाआताहै १० बनायभरआयेहुये घावके लक्षण-जिस व्रणका मार्ग भर आयाहो मुँहपर गाँठिनरहगईहो सूजन बन्दहोगईहो पीड़ाभी जातीरही हो देहके चर्मका सारंग उसके चर्मकाभी होगयाहो व बराबर होगयाहो खाली ऊँचा न रहगयाहो बस ऐसे व्रणको अच्छेप्रकार भरआयाहुआ समझनाचाहिये ११ जिन२ के व्रण असाध्यहोते हैं उनको गिनाते हैं कुष्ठरोग वालेके विषभक्षण करनेवालों के शोष रोग होनेवालोंके मधुप्रमेहवालों के व जिनके प्रथम घावरहाहो उसीस्थानपर दूसरीबारहुआहो उनलोगोंके भी व्रणअसाध्यहोते हैं १२ व्रणोंके साध्या साध्यकाविचार जिसव्रणसे वसा मेदस् और मज्जा बहतीहो वमट्ठेकेपानीकी तरह का पानीबहताहो ऐसे आगन्तुक व्रणको साध्यजाननाचाहिये व जो व्रणवातादि दोषसे होताहै वह सिद्धनहींहोता १३ असाध्यव्रणके लक्षण-मदिरा अगुरु घृतमालती पुष्प कमल चन्दन चम्पा अन्यसुगन्धितपुष्प वा अन्य दिव्यगन्धयुक्त ऐसे सुगन्धित व्रणमरनेपर उद्यतपुरुषों केहीहोते हैं १४ दूसरे प्रकारके असाध्यके लक्षण जो व्रणमर्म्म स्थानों में उत्पन्नहुयेहों और पीड़ाअधिककरतेहों वजोव्रणभीतरबहुतजलतेहों

बहिःशीताश्चयेव्रणाः १५ दह्यन्तेबहिरत्यर्थम्भवन्त्य न्तश्चशीतलाः ॥ प्राणमांसक्षयश्वासकासारोचकपीडिताः १६ प्रवृद्धपूयरुधिरा व्रणायेषांचमर्मसु ॥ क्रियाभिः सम्यगारब्धा नसिद्ध्यंतिचयेव्रणाः ॥ वर्जयेदपितान्वैद्यः संरक्षन्नात्मनोयशः १७ ॥

इतिशारीरव्रणनिदानम् ॥

नानाधारमुखैःशस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ॥ भवंति नानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे १ छिन्नंभिन्नंतथाविद्धं क्षतंपिच्चितमेवच ॥ घृष्टमाहुस्तथाषष्ठंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् २ तिर्यक्छिन्नऋजुर्वापियोव्रणस्त्वायतोभवेत् ॥

और ऊपर अत्यन्त शीतलरहतेहों १५ व जो बाहर अत्यन्त जलते हों व भीतर अत्यन्त शीतलरहतेहों व जिनमें बलमांसक्षीणहोगयाहो व श्वास खाँसी अरुचि की बड़ी पीड़ा होती हो १६ व जो व्रण मर्म्मस्थानों में हुये हों और पीब रक्त बहुत बहतेहों व जिन की अच्छीरीतिसे औषधहोतीहो पर कुछ सिद्धिनहोतीहो बस जो वैद्य अपनेयशकी रक्षाचाहताहो ऐसे व्रणोंकी औषध न करे १७ ॥

॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेशरीरव्रणनिदानं षट्चत्वारिंशत्तमम् ॥ ४६ ॥

दो० ॥ सैंतालिसयें महँ कहे व्रण के भेद अनेक ॥
तिनकेलक्षणबहुभने देखहुसहितबिबेक ॥ १ ॥

आगन्तुकव्रण नानाप्रकारकी धार और मुखवाले शस्त्र नाना प्रकारके स्थानोंपर निपातित करने से नानाप्रकार की आकृति के व्रणहोते हैं उन २ को हमसे सुनो १ छिन्न भिन्न विद्ध क्षत पिच्चित और घृष्टव्रण ६ प्रकार के होतेहैं उनके लक्षण कहते हैं २ छिन्नघावके लक्षण—जो व्रण ऊपर तिरछा वा सीधा कैसाही हो पर भीतर जाकर फैलगयाहो उसे छिन्न व्रणकहतेहैं और यह गात्र

गात्रस्यपातनंतद्धि छिन्नमित्यभिधीयते ३ शक्तिकुंतेषु खड्गाग्र विषाणैराशयोहतः ॥ यत्किञ्चित्प्रस्रवेत्तद्धिभिन्नलक्षणमुच्यते ४ स्थानान्यामाग्निपक्वानां मूत्रस्यरुधिरस्यच ॥ हृदुंडुकःफुस्फुसश्च कोष्ठइत्यभिधीयते ५ तस्मिन्भिन्नेरक्तपूर्णे ज्वरोदाहश्चजायते ॥ मूत्रमार्गगुदास्येभ्यो रक्तंघ्राणाच्चगच्छति ६ मूर्च्छाश्वासतृषाध्मान मभक्तच्छंदएवच ॥ विण्मूत्रवातसंगश्च स्वेदास्रावोऽक्षिरक्तता ७ लोहगंधित्वमास्यस्य गात्रदौर्गंध्यमेवच ॥ हृच्छूलंपार्श्वयोश्चापि विशेषंचात्रमेशृणु ८ आमाशयस्थेरुधिरे रुधिरंछर्दयत्यपि आध्मानमतिमात्रंच शूलंचभृशदारुणम् ९ पक्वाशयगतेरक्ते रुजागौरवमेवच

का पातन करताहै ३ भिन्नव्रणके लक्षण—सांग भाला वाण तलवारकी नोक दांत वा शींग इनसे पेटमें चोंकजाने से जो थोड़ा २ रुधिर वहे उसव्रणको भिन्नव्रण कहते हैं ४ कोष्ठ वा कोठे के लक्षण—आमाशय अग्न्याशय पक्वाशय मूत्राशय रक्ताशय कलेजा प्लीहा हृदय मलाशय और फुफ्फुस इनसब को कोष्ठ कहते हैं ५ इसके भेदों के लक्षण—जब कोष्ठ भिन्नहोजाताहै व रक्तसे पूर्ण होजाताहै तो ज्वर और दाह होता है व मूत्रके मार्ग की गुदकी मुखकी और नासिकाकी होकर रक्त वहने लगता है ६ व मूर्च्छा श्वास तृषा पेटफूलना अरुचि मलमूत्र व अधोवायुका रुकना पसीनाका अधिकहोना और नेत्रों में ललाई होती है ७ मुख में लोहकी गन्धि आती है अन्य अंगों में दुर्गन्धि होती है हृदय में शूल और पशुड़ियों में भी शूलहोती है इस विषयमें हमसे विशेष और सुनो ८ आमाशयमें स्थितरुधिर के लक्षण—जब आमाशयमें रुधिर जाकर भर होता है तो रुधिरकी वमनकरता है पेट वहुत फूलजाता है व अतिदारुण शूल उठती

अधःकायविशेषेण शीतताचभवेदिह १० सूक्ष्मास्य शल्याभिहतं यदंगंत्वाशयंविना। उत्तुंडितंनिर्गतंच त द्विद्धमितिनिर्दिशेत् ११ नातिच्छिन्नंनातिभिन्न मुभयोर्ल क्षणान्वितम्॥ विषमंव्रणमंगेषु तत्क्षतंत्वभिनिर्दिशेत् १२ प्रहारपीडिताभ्यांतुयदंगंपृथुतांगतम्॥ सास्थितत्पि च्चितंविद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम् १३ घर्षणादभिघाताद्वा यदंगंविगतत्वचम्॥ उपस्रावान्वितंतच्चघृष्टमित्यभिधी-यते १४ श्यावंसशोथंपिडिकान्वितंच मुहुर्मुहुःशोणित वाहिनंच॥ मृदूद्गतंबुद्बुदतुल्यमांसंव्रणंसशल्यंसहजंव दंति १५ त्वचोतीत्यशिरादीनिभित्त्वाचपरिहृत्यवा॥

है ९ जब पक्वाशयमें रुधिर स्थितहोताहै तो पीड़ाहोती है और शरीर भारी लगताहै व कटिसे नीचेके भागमें विशेष शीतलता होजातीहै १० विद्धके लक्षण-आशय को छोड़ अन्य कोई अंग जब पतली नोक वाले कांटेसे छिदजाय व उसस्थानपर कुछ ऊँचा होजाय उस व्रणको विद्धकहते हैं ११ क्षतके लक्षण कहते हैं जो न बहुत छिन्न होगयाहो न बहुत भिन्नही होगयाहो किन्तु दोनों लक्षणों से युक्तहो पर टेढ़ा मेढ़ा विषमघावहो उसे क्षत कहते हैं १२पिच्चितके लक्षण-जिस अंगके ऊपर कुछ पत्थर काष्ठादि दे-मारनेसे वा दबादेनेसे हाड़सहित चिनाव पिलुचा होजाय और उससे मज्जा रक्तनिकलनेलगे उसे पिच्चितघाव कहते हैं १३ घृष्ट के लक्षण-घसीटने से वा मारनेही से जिस किसी अंग का चमड़ा छिलजाता है व रुधिर बहने लगता हो उस व्रणको घृष्ट कहते हैं १४ सशल्यव्रण के लक्षण-जो घाव नीले रंगका हो ऊपर सूजन बनीहो व किनारे २ छोटे २ फोड़े निकलेहों व बारं उससे रक्त बहताहो ऊपर उसके नरम बना रहै व मांस उसका बुल्लाकी तरहकाहो तो उसमें कोई कांटके फांसआदि अवश्य

कोष्ठेप्रतिष्ठितंशल्यं कुर्यादुक्तानुपद्रवान् १६ तत्रांतर्लोहितंपांडुशीतपादकराननम् ॥ शीतोच्छ्वासंरक्तनेत्रमानद्धंपरिवर्जयेत् १७ भ्रमःप्रलापःपतनंप्रमोहो विचेष्टनं ग्लानिरथोष्णताच ॥ स्रस्तांगतामूर्च्छनमूर्ध्ववातस्तीव्रा रुजोवातकृताश्चतास्ताः १८ मांसोदकाभंरुधिरंचगच्छेत् सर्वेन्द्रियार्थोपरमस्तथैव ॥ दशार्द्धसंख्येष्वपिविक्षतेषु सामान्यतोमर्मसुलिंगमुक्तम् १९ सुरेंद्रगोपप्रतिमंप्रभूतं रक्तंस्रवेत्तत्क्षतजश्चवायुः ॥ करोतिरोगान्विवि

उसके भीतर रहता है इससे उसे सशल्य कहतेहैं १५ कोष्ठ भेद के लक्षण-त्वचा को छेदकर भीतर नसों को विदारण करके वा तोड़के जो कांटा फांस आदि शल्य भीतर रहजाता है वह ऊपर कहेहुये उपद्रवों को करता है व कोष्ठ भेद रहाता है १६ असाध्यकोष्ट भेद के लक्षण-जिसके भीतर रुधिर जमगयाहो इससे लालहो व ऊपर रंग पीला होगयाहो व पाद हाथ मुख ठण्ढे होगयेहों व ठण्ढी ऊर्ध्व श्वासें आतीहों नेत्रलालहों पेट फूलाचलाआताहो ऐसे कोठके मनुष्यको छोड़ देना चाहिये १७ मांस छोटी बड़ी नसें हाड़ व सन्धियोंके सुकुमार स्थानोंमें घाव लगने के सामान्य लक्षण-भ्रमहोना अनर्थ वचन बकना गिरपड़ना अति मोहहोना छटपटाना ग्लानि उष्णता शरीर शिथिलहोजाना मूर्च्छा ऊपरको श्वास आना चेहरा कुछ उदास होजाना वातके कारण पीड़ा१८ मांसकेधोवनके रंगका रक्तवहना सब इन्द्रियार्थोंका निवृत्तहोना जब पांचोंइन्द्रियोंके सुकुमार स्थलोंमें घावलगताहै तो (सामान्यतः)यहीलक्षणहोताहै१९मर्म रहित शिराविद्धव्रणकेलक्षण-जब नसें छिन्नहोजातीहैं वा विद्धहो जातीहैं क्षतयुक्त होजातीहैं तोबीरबहूटीनाम वर्षाऋतुमें उत्पन्न लाल २ कीड़ेकेतुल्य बूंद २ बहुत रक्त चूनेलगता है व व्रणकावायु

धान्यथोक्तान् शिरासुभिन्नास्त्वथवाक्षतासु २० कौब्ज्यं शरीरावयवावसादः क्रियास्वशक्तिस्तुमुलारुजश्च ॥ चिराद्व्रणोरोहतियश्चचापि तंस्नायुविद्धंपुरुषंव्यवस्येत् २१ शोफोतिवृद्धिस्तुमुलारुजश्च बलक्षयःपर्व्वसुभेदशोफौ ॥ क्षतेषुसंधिष्वचलाचलेषु स्यात्संधिकर्मोपरमश्चालिंगम् २२ घोरारुजोयस्यनिशादिनेषु सर्वास्ववस्थासुचनेतिशान्तिम् ॥ भिषग्विपश्चिद्विदितार्थसूत्रस्तमस्थिविद्धंपुरुषंव्यवस्येत् २३ यथास्वमेतानिविभावयेच्च लिगानिमर्मस्वभिताडितेषु ॥ पांडुर्विवर्णस्स्पर्शितंनवेत्तियो

कोपकरके विविधप्रकारके रोगकरताहै २० स्नायुविद्धव्रणके लक्षण—जिस पुरुष का शरिर कुवड़ाहोजाय व देह के सब अंग टूटनेलगें कुछ कार्य्य करनेकी शक्तिनरहै पीड़ावड़ीहो घाव बहुतदिनों में पूराहो उस पुरुष के नसमें घावलगा समझना चाहिये २१ सन्धिविद्धके लक्षण—जिसकी देहमें सूजनबढ़तीजाती हो पीड़ावडी होतीहो बलकानाशहोगया हो सबजोड़ोंमें पीड़ाहो और सूजनहो जितने जोड़ शरीर में चल वा अचलहोते हैं सबों में कार्य्य करने की शक्तिजातीरहीहो मानों सब टूटगये हैं यह सन्धिजव्रणका चिह्न कहागया २२ अस्थिविद्धव्रण के लक्षण—रात्रिदिन जिसकेअंगोंमें घोरपीड़ा हुआकरै व किसी अवस्थाओं में भी शान्ति न होतीहो ऐसे रोगीको दोष जाननेवाला वैद्य अस्थिविद्धजाने जो कि वह अच्छे प्रकार वैद्यकका विषय जानताहो २३ मर्म्मविद्धशिरादिकों के लक्षण—जब मर्म्मस्थलों में ऐसीचोटलगे कि नसेंतक टूटजायँ तोभी पूर्वही के लक्षणजानने चाहियें व यही सामान्यविद्धलक्षणभीकहाताहै मांसमर्मकेलक्षण जिसके मांस के मर्म्म स्थानमें कठिन चोटलगजाती है वह पाण्डुवर्ण होजाता है देहका रंग विगडजाता छूनेपर वह कुछ नहीं

मांससमंमस्वभिताडितःस्यात्॥२४॥विसर्पःपक्षघातश्च शिरास्तंभोऽपतानकः॥मोहोन्मादव्रणरुजाज्वरस्तृष्णा हनुग्रहः॥२५॥कासश्छर्दिरतीसारोहिक्काश्वासःसवेपथुः॥ षोडशोपद्रवाःप्रोक्तावृणीनांव्रणचिंतकैः॥२६॥

इतिव्रणानांव्रणनिदानम्॥

भग्नंसमासाद्द्विविधंवदंति काण्डेचसंधौचहितत्रसंधौ॥ उत्पिष्टविश्लिष्टविवर्त्तितंच तिर्यक्चविक्षिप्तमधश्चषोढा॥ प्रसारणाकुंचनवर्त्तनोग्रा रुक्स्पर्शविद्वेषणमेत दुक्तम्॥ सामान्यतःसंधिगतस्यलिंगमुत्पिष्टसंधेश्वय

जानता॥२४॥ व्रणके सब उपद्रव व्रणके विचारनेवाले वैद्यों ने व्रणके सोलह उपद्रव कहे हैं (विसर्प) फलना पक्षघात नस रुँकजाना नसोंकातनउठना मोह उन्मत्तता व्रणमें पीड़ा ज्वर तृष्णा चौहड़ी काज़कड़ना॥२५ खांसी ओकाई अतीसार हुचकी श्वास चलना और कांपना, वस येही १६ उपद्रव हैं॥२६॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेनानाव्रणनिदानंसप्तचत्वारिंशत्तमम्॥४७॥

दो०॥ अद्भुतालिसयें सहँ कह्यो भग्ननिदाननिचोर॥ देखहिं सुजन लगायचित, देके निजमतिजोर॥१॥

अब भग्ननिदान अर्थात् हड्डीटूटजानेकानिदानकहतेहैं हड्डीका टूटजाना दोप्रकारका होताहै एकजोड़परसे उखड़जाना दूसरा जोड़से अलगकहीं टूटजाना उनमें से जोड़परसे उखड़जाना ६ प्रकारका होताहै १-उत्पिष्ट २-विश्लिष्ट ३-विवर्त्तित ४-तिर्य्यक् ५-विक्षिप्त और ६-अधःक्षिप्त १-सन्धिभंगलक्षण-अर्थात् जोड़पर से उखड़ने के सामान्य लक्षण-पसारने सिकोरने हिलाने में जिसमें बड़ी पीड़ाहो व अपने वा किसी अन्यके अंगोंसे छुआया न जासके सामान्यरीतिसे सन्धिभंगके ये लक्षणहैं जिसमें जोड़

थुःसमंतात् २ विशेषतोरात्रिभवारुजाच विश्लिष्टजे तोचरुजाचनित्यम् ॥ विवर्त्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्रास्ति र्य्यग्गतेतीव्ररुजोभवन्ति ३ क्षिप्तेतिशूलंविषमत्वम स्थ्नोः क्षिप्तेत्वधोरुग्विघटश्चसंधेः ॥ कांडेत्वतःकर्कटका श्वकर्ण विचूर्णितंपिच्चितमस्थिछल्लितम् ॥ कांडेषुभ ग्नंह्यतिपातितंच मज्जागतंचस्फुटितंचवक्रम् ४ छिन्नं द्विधाद्वादशधाहिकांडे स्रस्तांगताशोथरुजातिवृद्धिः ॥ संपीड्यमानेभवतीहशब्दः स्पर्शासहःस्पन्दनतोदशू

के दोनोंहाड़ आपस में रगड़ उठतेहैं उसे उत्पिष्टनामक सन्धि भंग कहते हैं इसमें सबओरसे सूजनहो आतीहै २ व रात्रिमें वि शेष पीड़ा होती है हाडोंके जोड़में किसी प्रकार से बीचपड़जाने को विश्लिष्ट सन्धि भग्नकहते हैं इसमें चारोंओरसे सूजन होती व रात्रिमें अधिक पीड़ाहोती है परदिनमें भी पीड़ाहोती है जिस में हाड़के जोड़के दोनों नोक उलटे पलटे होजायँ उसे विवर्तित सन्धिभग्न कहते हैं इसमें उसके पासदोनोंओर तीव्रपीड़ाहोतीहै व जिसमें अपने स्थानको छोड़ कर दोहाडोंके नोक हटकर अग- ल बगल होजाते हैं उसे तिर्य्यक्सन्धि भंग कहते हैं इसमें अति तीक्ष्णपीड़ायें होती हैं ३ जिसमें ऊपरको ज़ोरसे हाड़ किसी कारण से उठजाता है उसे उत्क्षिप्तसन्धि भग्नकहते हैं इस में अत्यन्त पीड़ाहोती है क्योंकि दोनों हाड़ोंका जोड़ विषमहोजाता है व जिस में नीचे को हाड़ टलजाता है उसे अधःक्षिप्तसन्धि भग्नकहते हैं इसमें भी पीड़ा वैसीही होती है परनीचे को हड्डी टलआने के कारण कुछ वहांपर खाली होजाता है यही विशे- षता पाई जाती है—काण्डभग्न अर्थात् जो जोड़ों को छोड़ अ- लग हड्डी टूटफूटजाती है उसके लक्षण कहते हैं काण्डभग्न १२ प्रकार के होतेहैं उनके नाम ये हैं १ कर्कटक २ अश्वकर्ण

त्वात्॥ सर्वास्ववस्थासुनशर्मलाभोभग्नस्यकांडेखलुचि ह्नमेतत् ॥५॥ भग्नंतुकांडेबहुधाप्रयाति समासतोनामभि रेवतुल्यं ॥ अल्पाशिनोनात्मवतो जंतोर्वातात्मकस्य

[illegible]
३ विचूर्णित ४ पिच्चित ५ अस्थिच्छल्लित ६ काण्डभग्न ७ अतिपातित ८ मज्जागत ६ स्फुटित १० वक्र ४ व दो प्रकार का छिन्नये १२ प्रकार के काण्डभग्नहैं हड्डी दोनों ओरको टूटकर दबे व बीचमें कुछ ऊँचाहोजाय उसे कर्कटक कहते हैं जिसमें घोड़े के कानोंके तुल्य दोनोंओर के टूटेहुये हाड़ उठआवें उसे अश्वकर्ण कहते हैं जिसमें हड्डी चूरहो जाय व छूने से कर कराहत शब्द जानपड़े उसे विचूर्णित कहते हैं जिसमें हड्डी पिचक उठे उसे पिच्चित कहते हैं हड्डीके किसी अंशमें जिस में परच निकल जाती है उसे अस्थिच्छल्लितकहते हैं जिसमें हड्डी की नली टूटजाती है उसे काण्डभग्नकहते हैं सब हड्डियांटूटजायँ तो उसे अतिपातकहने लगते हैं जिसमें हड्डीटूटकर मज्जाबहने लगती है उसे मज्जागत कहते हैं हड्डीटूटकर टुकड़े २ जिस में होजाते हैं उसे स्फुटित कहते हैं जिसमें हड्डीमिचुककर टेढ़ीहो जाती है उसे वक्रकहते हैं छिन्न दोप्रकारके योंहोते हैं कि एकमें दोनों ओर के टुकड़े चूर २ होजाते हैं दूसरे में एकही ओर के चूरहोते हैं काण्डभग्न के सामान्य लक्षण अंगका ढीलापन सूजन और पीड़ा की अत्यन्त वृद्धि दवाने पर हड्डी का कड़ कड़ाना छूना न सहजाना कुछ कांपना चौंकना शूल किसी समय सुख न मिलना वस काण्डभग्न होने का यह चिह्न है ५ काण्डभग्न औरभी बहुतप्रकारके होतेहैं वे जिस २ स्थानमेंहोतेहैंव जैसा २ उनका आकारहोताहै उसीके तुल्यउनका नामहोता है कष्टसाध्यकाण्डभग्न केलक्षण-जोपुरुषथोड़ा भोजनकरताहै वजि-सकी इन्द्रियां उसके वशमेंनहीं हैं व जो वातप्रकृतिकहै व ज्वरादि उपद्रवोंसे जोयुक्तहोताहै ऐसेपुरुषोंकी हड्डीटूटजाने से बड़ेकष्टसे

च ॥ उपद्रवैर्वाजुष्टस्यभग्नं कृच्छ्रेणसिद्ध्यति ६ भिन्नं कपालंकट्यांतु संधिमुक्तंतथाच्युतम् ॥ जघनंप्रतिपिष्टंच वर्जयेत्तुविचक्षणः ७ असंश्लिष्टंकपालंच ललाटे चूर्णितंचयत् ॥ भग्नंस्तनेगुदेशंखेपृष्ठेमूर्ध्नितुवर्जयेत् ८ सम्यक्संधितमप्यस्थि दुर्निक्षेपनिबन्धनात् ॥ संक्षोभाद्वापियद्गच्छेद्विक्रियांतच्चवर्जयेत् ९ तरुणास्थीनिनम्यंते भिद्यंतेनलकानितु ॥ कपालानिविभज्यंते स्फुटंतिरुचकानिच १० ॥ इतिभग्ननिदानम् ॥

साध्यहोतीहै ६ असाध्यके लक्षण जिसकी खोपड़ी विदीर्णहोजातीहै कटिमें जोड़को छोड़ अन्यत्रकहीं टूटजाताहै वा रीढ़अलगहटजाती है अथवापेडूपरके हाड़ चूर्णीभूतहोजातेहैं ऐसे काण्डभंगवाले कोवैद्यछोड़दे क्योंकि वह असाध्य होजाताहै ७ अन्यअसाध्यका लक्षण-जिसकाण्डभग्न वालेकी खोपड़ी ऐसी चूर्णहोजाय किवहफिर जुटने के योग्यनरहे अथवा स्तन वागुदवामस्तक और पीठकी वा कनपटीकी हड्डियां जब चूर २ होजायँ तो ऐसे घायल को वैद्यत्यागदे ८ टूटजानेपरजो हाड़अच्छे प्रकार बैठा दियागया हो वा जोड़कर बांधभी दियागयाहो परढीला बँधनेसे वा किसी प्रकार खुलजानेसे जो अपने स्थानपरसे हटजाताहै व इधरउधर डोलने लगताहै इसकारण उसमें कुछ विकारहोजाता है उसेभी वैद्यत्यागदे क्योंकि वहपुनस्सन्धितनहीं होसक्ता ९ तरुणहाड़ बहुधा चोट लगने से झुकजातेहैं व नाड़ी आदि फटजातीं हैं खोपड़ी माथा आदि फटकर चूर २ होजातेहैं व दांत आदिके कुछ २ भागटूटजाते हैं इससे इनकी उचितचिकित्सा करनी चाहिये १०

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेसन्धिभंगकाण्डनिदानमष्टचत्वारिंशत्तमम् ॥ ४८ ॥

...सः शोफमाममितिपक्वमुपेक्षतेज्ञो योवाव्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः॥ अभ्यंतरंप्रविशतिप्रविदार्यतस्य स्थाननिपूर्वविहितानिततः सपूयः॥ तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यतेच नाडीवयद्वहतितेनमतातुनाडी॥१॥ दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्च संमूर्च्छितैरपिचशल्यनिमित्ततस्या २ तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखीसशूला फेनानुविद्धमधिकंस्रवतिक्षपासु॥ पित्तात्त्वतृड्ज्वरकरीपरिदाहयुक्त

दोहा ॥ उनचसयें महँ नाड़ि व्रण ज्यहि सब कहतनसूर ॥
भाष्यहु तासु निदानकवि सुनि कीजे भ्रमदूर १

(नाड़ीव्रण) अर्थात् नसूरका निदान इसव्रणकी सम्प्राप्तिको लक्षण–जोदुष्टवृत्तवाला वैद्य अच्छे प्रकार पकेहुये शोथको कच्चा जानकर उसकी उपेक्षा करता है जोड़कर वा औषध से फोड़कर उसकी पीव नहीं निकालता अथवा जिस व्रणमें बहुत पीवदेख कर घबड़ा कर छोड़ देता है तो वह पीवभीतर को घुस जाती है व व्रणकी जड़की नस में छेद करदेती है मांस चर्म सबको गलाकर बड़ा भारी घावकर देती है व उसी नससे फिर सदा पीव बहा करतीहै जब वह अत्यन्तता से नाड़ीकी रीति से पीव बहाने लगती है तो उसे नाड़ी व्रण वा नसूर कहने लगतेहैं १ ये नाड़ी व्रण पांच प्रकार के होते हैं तनितो वात पित्त कफसे चौथा इनतीनों के मिलने से सन्निपातका व पांचवां शल्यका अर्थात् कांटा फाँस आदि के गड़जाने से उसकी उपेक्षाकर के उसके निकालने का यत्न नकरने से २ वातजनाड़ी व्रण का लक्षण–इसका मुख कड़ा व सूक्ष्म होता है व फेनासहित पीव बहाकरतीहै वह भी रात्रि में अधिकपित्तजनाड़ी व्रणके लक्षण–इसमें पिपासा लगतीहै व ज्वर होतारहता है–व दाह हुआ करताहै व पीलेरंगकी उष्णपीव बहती है वहभी दिन में

पीतंस्रवत्यधिकमुष्णमहस्सुचापि ३ ज्ञेयाकफाद्बहुघनार्जुनपिच्छिलास्रास्तब्धासकण्डुररुजारजनीप्रबद्धा ॥ दोषद्वयाभिहितलक्षणदर्शनेन तिस्रोगतीर्व्यतिकरप्रभवास्तुविद्यात् ४ दाहज्वरश्वसनमूर्च्छनवक्त्रशोषा यस्यांभवन्त्यभिहितानिचलक्षणानि ॥ तामादिशेत्पवनपित्तकफप्रकोपाद् घोरामसुक्षयकरीमिवकालरात्रिम् ५ नष्टंकथंचिदनुमार्गमुदीरितेषु स्थानेषुशल्यमचिरेणगतिंकरोति ॥ सफेनिलंमथितमुष्णमसृग्विमिश्रं स्रावंकरोतिसहसासरुजंचनित्यम् ६ नाडीत्रिदोषप्रभवानासिद्ध्येच्छेषाश्चतस्रःखलुयत्नसाध्याः ७ ॥ इतिनाडीव्रणनिदानम् ॥

अधिक ३ कफजनाड़ी व्रणका लक्षण—इससे बहुतगाढ़ी उजली चिकनी पीव बहती है खजुली उठती है पीड़ानहींहोती व रात्रि में अधिक पीव बहती है जिसमें दोदोष विदितहों उसे द्विदोपज नाड़ीव्रण जाननाचाहिये व जिसमें वातादि तीनों दोषोंके लक्षण पायेजाते हों उसे त्रिदोषज वा सन्निपातज नाड़ी व्रण कहते हैं ४ सन्निपातज नाड़ी व्रणके लक्षण—जिस नाडी व्रण में दाहज्वर श्वास मूर्च्छा व मुख सूखना ये उपद्रवहों जोकि सदा अहितकारी होते हैं उसको वात पित्त व कफके कोपसे उत्पन्न जानना चाहिये यह ऐसाघोर प्राण नाशकारी होता है कि मानों प्राण नाशनेके लिये कालरात्रिही है ५ शल्यज नाड़ी व्रणके लक्षण—किसी प्रकार से जब किसी स्थान में काँटा आदि चुभजाता है व अधिक गहिरे को चलाजाता है इससे दिखाई नहीं देता वह बहुत शीघ्र मार्ग कर देता है उसकी फेनासहित उष्ण रुधिर व पीव बहने लगती है इसमें रात्रि दिन बराबर घाव बहतारहताहै और पीड़ा होती रहती है ६ इसरोगके साध्य वा असाध्य लक्षण—सन्निपातज नाड़ी व्रण साध्यनहीं होता शेषवातज पित्तज

गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रे पार्श्वतःपिडिकार्त्तिकृत् ॥ भिन्नो भगंदरोज्ञेयःसचपञ्चविधोमतः १ कषायरूक्षैरतिको पितोनिलस्त्वपानदेशेपिडिकांकरोतियाम् ॥ उपेक्षणात्पा कमुपैतिदारुणं रुजाचभिन्नारुणफेनवाहिनी २ तत्राग मोमूत्रपुरीषरेतसांव्रणैरनेकैःशतपोनकंवदेत् ३ प्रकोप नैःपित्तमतिप्रकोपितं करोतिरक्तांपिडिकांगुदेगताम् ॥ तदाशुपाकाहिमपूतिवाहिनी भगंदरंचोष्ट्रशिरोधरंवदे त् ४ कंडूयनोघनस्रावी कठिनोमंदवेदनः ॥ श्वेतावभा

कफज और शल्यज ये चारो यत्नकरने से साध्य होते हैं ७ ॥
इतिश्री माधवनिदाने भाषानुवादे नाड़ीव्रणनिदानमेकोन-
पंचाशत्तमम् ॥ ४६ ॥

दोहा ॥ कह्योपचसयें महँ भगन्दर अथ रोगनिदान ॥
महानष्ट यहरोग है जानहिं लोग सुजान १

भगन्दर रोगका निदान—गुदके दोअंगुलकी दूरीपर बगलमें एकछोटा फोड़ा होता है वह पीड़ा बहुत करता है उसके फूट जानेपर भगन्दर रोग होता है वह पाँच प्रकार का होताहै १ उसमें प्रथम शतपोनक नाम के लक्षण—कहतेहैं कसैली व रूखी वस्तुओंके खानेसे वायु अति कुपितहोकर गुद के निकट एकछो- टीसी फोड़िया करताहै उसकी उपेक्षा करनेसे वह पकती है व दारुण पीड़ा करती है फूटनेपर उससे लालफेना बहने लगता है २ फिर उसमें अनेक घाव होजातेहैं उनमेंसे मूत्र मल व वीज बहने लगता है इसे शतपोनक भगन्दर कहते हैं ३ उष्ट्रशिरो- धर नाम भगन्दर के लक्षण—बहुत उष्णादिक पित्तके प्रकोप कराने वाली वस्तुओं के खाने से अतिकुपित पित्त गुद में एक लाल रंग का फोड़ा उत्पन्न करता है वह बहुत शीघ्रपकजाता है व फूटकर ठण्ढी दुर्गन्धियुक्त पीबको बहाने लगता है इसको

सःक्रफजःपरिस्रावीभगंदरः ५ बहुवर्णरुजास्रावा पिडिकागोस्तनोपमा॥शम्बूकावर्त्तवन्नाडीशम्बूकावर्त्तकोमतः ६क्षताद्गतिः पायुगताविवर्द्धतेह्युपेक्षणान्ताः कृमयोविदार्यंते ॥ प्रकुर्वंतेमार्गमनेकधामुखैर्व्रणैस्तमुन्मार्गभगन्दरं वदेत् ७ घोराःसाधयितुंदुःखाः सर्वएवभगंदराः ॥ तेष्वसाध्यास्त्रिदोषोत्थः क्षतजश्चविशेषतः ८ वातमूत्रपुरीषाणि कृमयःशुक्रमेवच ॥ भगन्दरात्प्रस्रवंतो नाशयंतितमातुरम् ९ ॥ इतिभगंदर निदानम् ॥

उष्ट्रशिरोधर नाम भगन्दर कहते हैं ४ परिस्रावी भगन्दर के लक्षण जो भगन्दर कफसे उत्पन्नहोताहै उसमें खजुली उठती है गाढ़ी पीब बहती कड़ाहोता पीड़ा मन्दहोती है उज्वलाहोता है बस इसको परिस्रावी भगन्दर कहते हैं ५ शम्बूकावर्त्त भगन्दर के लक्षण—जिसमें मुनक्काके समान बड़ाई में फोड़ियाहो रंग उसमें अनेकहों पीड़ाके साथ बहतीरहै उसका घेराघोंघी के समानहो तो उसको शम्बूकावर्त्त कहते हैं ६ उन्मार्गी भगन्दरके लक्षण—काँटाआदिसे जब कभी गुदमें घावलगजाताहै तो उसकी उपेक्षा करनेसे अर्थात् युक्ति न करनेसे वह घाव बढ़जाताहै गुदके भीतरतक पहुँचजाताहै उसमें छोटे २ कीड़े पड़जाते हैं इससे घावविदीर्ण होजाताहै तब वे क्रिमि उसे झाँझर करके उसमें अनेक छेदकरदेते हैं उसको उन्मार्गी भगन्दर कहते हैं ७ इसरोगका असाध्यसाध्य विचार—जितने भगन्दर होते हैं सब घोरहोते हैं व उनके सिद्धकरनेमें दुःखहोतेहैं परउनमें भी सन्निपातज असाध्यहोता और क्षतज तो विशेष असाध्य होता है ८ असाध्यका लक्षण—जिस रोगीके भगन्दरसे अधोवायु मूत्र मल कीड़े व बीज गिरतेरहैं उसरोगीको ये सब मारहीडालतेहैं ९ ॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेभगन्दरनिदानंपञ्चाशत्तमम् ५०

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्युप सेवना द्वा ॥ योनिप्रदोषाच्च भवंतिशिश्णे पञ्चोपदंशाविविधोप चारैः १ सतोदभेदस्फुरणैःसकृष्णैः स्फोटैर्व्यवस्येत्पव नोपदंशम् ॥ पीतैर्बहुक्लेदयुतैःसदाहैः पित्तेनरक्तात्पिशि तावभासैः २ सकण्डुरैश्शोथयुतैर्महद्भिश्शुक्लैर्घनस्रावयु तैःकफेन ॥ नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिम लोपदंशम् ३ प्रशीर्णमांसंकृमिभिःप्रजग्धं मुष्कावशेषं परिवर्जयेत्तु ॥ संजातमात्रेणकरोतिमूढः क्रियांनरोयोवि षयेप्रसक्तः ॥ कालेनशोथक्रिमिदाहपाकैःप्रशीर्णशिश्णो

दोहा ॥ इक्यावनयेंमहँकहयो कवि उपदंश निदान ॥
जाको गर्मी कहतसब भाषा पठित महान १

उपदंश अर्थात् गर्मीनामक रोगका निदान—इसकेकारणहाथ से चोट लगजाने से नख वा दांतों की चोटलगने से भोगक- रने आदि के पीछे न धोने से अत्यन्त मैथुन करने से व योनि के दोष से शिश्ण इन्द्रिय में विविधप्रकार के उपचारों से पांच प्रकारके उपदंश होतेहैं १ वातज उपदंशकेलक्षण—जिसमें लिंग पर काले रंग के फोड़े होते हैं व उनमें सुई आदि से कोंचने की सी पीड़ाहोती है व जानपड़ताहै कि मानों शिश्णफटाजाता है वा फूटाजाताहै उसे वातज उपदंश कहते हैं व जिसमें पीले २ फोड़े होते हैं व उनमें से पीव अधिक निकलती है व दाहहोता है व रक्त से मांसके योगसे फोड़े से दिखाई देते हैं उसे पित्तका उपदंश कहना चाहिये २ व जिसमें उजले २ सूजन व ख- जुली सहित फोड़े हों व पीवगाढ़ी निकले उसे कफज उपदंश कहना चाहिये व जिसमें नानाप्रकार की पीव आदि निकले व अतिपीड़ाहो उसे त्रिदोषज अर्थात् सन्निपातज उपदंश कहते हैं यहअसाध्यहोताहै ३ असाध्य उपदंश के लक्षण—जिस उपदंश

ध्रियतेसितेन ४ अंकुरैरिवसंघातैरुपर्य्युपरिसंस्थितैः ॥ क्रमेणजायतेवर्त्तिस्ताम्रचूडशिखोपमा ५ कोशस्याभ्यन्तरेसंधौसर्वसंधिगतापिवा ॥ लिंगवर्तिरितिख्याता लिंगार्शइतिचापरे ॥ सवेदनापिच्छिलाच दुश्चिकित्स्या त्रिदोषजा ६ ॥ इत्युपदंशनिदानम् ॥

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिंयोभिवाञ्छतिमूढधीः ॥ व्याधयस्तस्यजायंते दशचाष्टौचशूकजाः १ गौरसर्षपसंस्था

में मांस फटगयाहो कीड़ोंने लिंग खालियाहो केवल अण्डकोशही शेषरहगयेहों उसको त्यागदेना चाहिये अन्यअसाध्य का लक्षण—जो विषयासक्त मनुष्य उपदंश होतेही उसकी प्रतिक्रिया औषधादि द्वारा नहीं करता काल बीतनेपर सूजनहो फूटकर क्रिमिपडजातेहैं दाहउत्पन्नहोता फिरपककर शिष्ण सड़गलजाताहै व उससे वह मूढ़रोगी मरजाताहै ४ लिंग में बत्ती परजाने के लक्षण—उपदंश होनेपर लिंग के ऊपरमांसके अँखुये से निकलजाते हैं धीरे २ वे मुरगेकी शिखाकेतुल्य इकट्ठे होकर एकबत्ती कीनाईं होजाते हैं ५ अथवा अण्डकोशके जोड़पर भीतर वा भतिसकुमार लिंगके अग्रभाग पर होजातीहै वह लिंगवर्त्ति कहाती है कोई २ उसेही लिंगार्श कहतेहैं इसमें पीड़ा बड़ी होतीहै व मोरके पंखके समान चिकनी चमकती है इसकी चिकित्सा बड़ी कठिनतासे होती है क्योंकि यह सन्निपातसे होती है ६ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेउपदंशनिदानमेकपंचाशत्तमम् ॥

दो० ॥ बावनयेंमहँ शूक के हैं निदान लखिलेहु ॥
वालीसी जो शिष्णपर होतकुतर्क वशेहु १ ॥

शूकरोगका निदान—जो मूढ़ बुद्धिवाला मनुष्य प्रमाण से अधिक लिंगको मोटा वा बड़ा करना विष क्रिमिकी पट्टी और अन्य औषधों के लेप से चाहताहै उसके १८ शूकज रोग उत्पन्न

नाः शूकदुर्भग्नहेतुकाः ॥ पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेया सर्षपिकाबुधैः २ कठिनाविषमैर्भग्नैर्वायुनाष्ठीलिकाभवेत् ॥ शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्ग्रथितंनामतत्कफात् ३ कुम्भीकारक्तपित्तोत्था जाम्बवास्थिनिभाशुभा ॥ तुल्यजान्त्वलजींविद्याद्यथाप्रोक्ताविचक्षणैः ४ मृदितंपीडितंयत्तुसंरब्धंवातकोपतः ॥ पाणिभ्यांभृशसंमूढे संमूढपिडिकाभवेत् ५ दीर्घाबह्व्यश्चपिडिका दीर्य्यन्तेमध्यतस्तुयाः ॥

होतेहैं १ उनमें एक सर्षपिकानाम रोग होताहै उसके लक्षण-दुष्ट घड़ियालआदिकी नाभिका लिंगपर लेपकरने से पीली सरसोंके प्रमाणकी फुंसियाँ शिश्नके ऊपर निकलआतीहैं वे कफ और वातके संगसे होती हैं उनको सर्षपिका कहते हैं २ अष्टीलिकाके लक्षण-निर्जीव किसी विषारी वाली के लेपकरने से वायु कोपकरके अँठुली के तुल्य फुंसी उत्पन्नकरताहै उसे अष्टीलिका कहतेहैं बार २ शूकलेपसे कफ कोपकरता है इस से शिश्नपर गाँठ परजाती है उसे ग्रथित कहतेहैं ३ कुम्भिकाके लक्षण-रक्त पित्तके दोष से लिंग के ऊपर फ़रेंदे की अँठुली के आकारकी काली फुंसी निकल आती है उसे कुम्भिका कहते हैं अलजीके लक्षण-प्रमेहके लक्षणोंमें जो अलजी कहआये हैं उसीके डौलका फोड़ा जो लाल वा काला उत्पन्नहो उसे अलजी कहतेहैं ४ मृदित के लक्षण-शूकज पीड़ा से जब पुरुष लिंगको ज़ोरसे दबादेते हैं तो वायुके कोपसे शिश्नपर सूजन आजाती है उसे मृदित कहते हैं दोनोंहाथों लिंगजोरसे कलबलाने पर मींजनेसे बिना मुँहका एक फोड़ा शिश्नके ऊपरहोआताहै उसे मूढ पिड़िका कहते हैं ५ अवमन्थके लक्षण-लम्बी २ बहुतसी फुंसियां कफ व रक्त के संयोगसे लिंग भरपरहों वा बीच २ में हों तो उसे अवमन्थरोग कहतेहैं इसमें पीड़ा होतीहै और बार २ रोम

सोऽवमंथःकफासृग्भ्यां वेदनारोमहर्षवान् ६ पिडिकाभि
श्चितायाच्च पित्तशोणितसम्भवा ॥ पद्मकर्णिकसंस्थाना
ज्ञेयापुष्करिकातुसा ७ स्पर्शहानिंचजनयेच्छोणितंशूक
दूषितम्॥मुद्गमाषोपमारक्तारक्तपित्तोद्भवाचसा ८ व्या
धिरेषोत्तमानामशूकार्जीर्णनिमित्तजा ॥ छिद्रैरणुमुखैर्लि
गं चित्तंयस्यसमंततः ९ वातशोणितजोव्याधिःसज्ञेयः
शतपोनकः ॥ वातपित्तकृतोज्ञेयस्त्वक्पाकोज्वरदाह
वान् १० कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिः पिडिकाभिर्निपीडित
म् ॥ यस्यवस्तौरुजाश्चोग्रा ज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम् ११
मांसदोषेणजानीयादर्बुदंमांससंभवम् ॥ शीर्य्यन्तेयस्य

खड़े हो २ जाते हैं ६ पुष्करिकाके लक्षण—बहुतसी छोटी २ फुं-
सियोंसे घिरीहुई पित्तरक्तसे उत्पन्न कमलकी पखुरीकेतुल्य जो
शिष्णपर फोड़िया होती है उसे पुष्करिणी कहतेहैं ७ स्पर्शहानि
के लक्षण—शूकलेपकरने से रुधिर दूषितहोजाताहै फिर स्पर्शकी
हानिको उत्पन्न कराताहै अर्थात् छूनेसे फिर लिंगमें कुछ जानें
नहीं पड़ता उत्तमाके लक्षण—शूकके वार२ लेपकरनेसे रक्तपित्त
कुपितहोके मूँग और उर्द्दकेतुल्य लाल फुंसी लिंगपर उत्पन्न क-
राते हैं ८ इसव्याधिकोउत्तमाकहतेहैं जिसपुरुषका लिंगछोटे २
मुखवाले बहुतसे छेदोंसे युक्तहोजाय ९ वायु व रक्तसे उत्पन्न
उसके जो यह रोगहोता है वह शतपोनक कहाताहै वात और
पित्त के कोप से शिष्णपरका चर्म्म पकजाता है उस में दाह
होने लगताहै और सब अंगों में उसी के कारण ज्वरहोने लगता
है इस रोग को त्वक्पाक कहते हैं १० जिस मनुष्य के लिंग में
काले वा लाल फोड़े छोटे २ इतने होते हैं कि उससे लिंग ब-
नाय पीड़ित होजाता है अथवा वस्ति में अधिक पीड़ा उनके
कारण से होती है उस रोगको शोणितार्बुद कहते हैं ११ व

मांसानि यस्यसर्व्वाश्चवेदनाः १२ विद्यात्तम्मांसपाकन्तु सर्व्वदोषकृतम्भिषक् ॥ विद्रधिसन्निपातेन यथोक्तमितिनिर्दिशेत् १३ कृष्णानिचित्राण्यथवा शूकानिसविषाणिच ॥ पातितानिपचन्त्याशु मेढ्रंनिरवशेषतः १४ कालानिभूत्वामांसानि शीर्य्यन्तेयस्यदेहिनः ॥ सन्निपातसमुत्थांस्तु तान्विद्यात्तिलकालकान् १५ तत्रमांसार्बुदंयच्च मांसपाकश्चयःस्मृतः ॥ विद्रधिश्चनसिद्ध्यंति येचस्युस्तिलकालकाः १६ ॥ इतिशूकदोषनिदानम् ॥

विरोधीन्यन्नपानानि द्रवस्निग्धगुरूणिच ॥ भजता

मांसके दोषसे यदि फोड़े होते हैं तो उसे मांसार्बुद जानना चाहिये जिसके लिंगका मांस सड़कर गिरपड़ता है व सब प्रकारकी पीड़ा होती हैं १२ वैद्य उसको सन्निपातज मांस पाकनामरोगजाने व सन्निपातज विद्रधि रोगभी इसी लक्षणकाहोता है १३ काले वा चितकबुले विषसहित शूक जब लिंग में होतेहैं तो शिष्णको ऐसा गलादेते हैं कि उसका कुछ चिह्नहीं नहीं बाक़ी रहजाता १४ जिस मनुष्य का सब मांस काला होकर लिंग के हाड़ से अलग गिरपड़े यह रोग सन्निपात से उत्पन्न होता है व तिलकालक इस का नाम है १५ शूक दोषका असाध्य लक्षण—मांसार्बुद मांसपाक विद्रधि और तिलकालक ये सब शूक दोषमें नहीं सिद्धहोते क्योंकि असाध्य होते हैं १६ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेशूकरोगनिदानंद्विपञ्चाशत्तमम्॥

दोहा ॥ तिरपनयें महँ कुष्ठके हैं निदान अतिघोर ॥
जाहि कहत सबकोढ़ हैं सबसों जौनकठोर १

कुष्ठरोगका निदान—विरोधी अन्नपानादिक जैसे कि मछली व दूध एकही संग खानेपीनेसे पतली चिकनी गरुई वस्तुओं के भी एकही संग खानेसे व मलहोनेपरहो उसके रोकने से व अन्य

मागतांछर्दिवेगांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् १ व्यायाममतिसंतापमतिभुक्तनिषेविणाम् ॥ शीतोष्णलंघनाहारान्क्रमंमुक्त्वानिषेविणाम् २ घर्मश्रमभयार्त्तानां द्रुतंशीताम्बुसेविनाम् ॥ अजीर्णाध्यासिनांचैव पञ्चकर्मापचारिणाम् ३ नवान्नदधिमत्स्यादि लवणाम्लनिषेविणाम् ॥ माषमूलकपिष्टान्न तिलक्षीरगुडाशिनाम् ४ व्यवायंचाप्यजीर्णेन्नेनिद्रांचभजतांदिवा ॥ विप्रान्गुरून्धर्षयतां पापंकर्मप्रकुर्वताम् ५ वातादयस्त्रयोदुष्टास्त्वग्रक्तंमांसमम्बुच ॥ दूषयंतिसकुष्ठानां सप्तकोद्रव्यसंग्रहः ॥ अतःकुष्ठानिजायं

मूत्रपुरीषादि वेगोंके रोकने वाले पुरुषोंके १ बहुत भोजन करनेकेपीछे तुरन्तही दण्ड मुद्गर आदि व्यायाम करने वालों के व सूर्य्यके व अग्निके सन्तापके सेवनकरनेवालों के शीतलउष्ण लंघन आहार क्रमको छोड़विषमसमय में करने वालों के २ घाम श्रम व भयसे पीड़ित होकर तुरन्तशीतल जलके पीने वा स्नान करनेवाले लोगोंके अधकच्चे चर्वणादि नित्य चबानेवाले व खाने पर विनापचे दुबारा और खानेवालोंके वमन विरेक फस्त जुलाब आदि पांच कर्म्मोंके अच्छी प्रकार से न होने वालोंके ३ नया अन्न दही मछली लोन व खटाई एकही संगखाने वालों के उर्द मूली पीठी तिल दूध व गुड एकही संग खानेवालोंके ४ अन्न विना पचे मैथुन करने वालोंके व नियमसे प्रतिदिन दिन मेंसोने वालोंके ब्राह्मण माता पिता गुरू आदि श्रेष्ठजनों का अनादर करनेवालोंके व पापकर्म्म करनेवालों के ५ वात पित्त कफ तीनों दुष्टहोकर त्वचा रक्त मांस व जलको दूषित कर देते हैं व कुष्ठरोग उत्पन्न करते हैं इन कोढ़ोंके होनेके कारण सात मुख्य हैं तीन वातादिक दोष व ४ त्वचा रक्त मांस व जल जो दूषित होजाते हैं इससे ७ महाकुष्ठ उत्पन्न होते हैं व ११ और छोटे २ कोढ़

तेसप्तचैकादशैवतु ६ कुष्ठानिसप्तधादोषैः पृथक्द्वन्द्वैस्समागतैः॥ सर्वेष्वपित्रिदोषेषु व्यपदेशोधिकत्वतः ७ अतिश्लक्ष्णखरस्पर्शखेदास्वेदविवर्णताः॥ दाहःकंडूस्त्वचिस्वापस्तोदःकोठोन्नतिःश्रमः ८ व्रणानामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः॥ रूढानामपिरूक्षत्वं निमित्तेल्पेपिकोपनम् ९ रोमहर्षोसृजःकार्ष्ण्यं कुष्ठलक्षणमग्रजम्॥ कृष्णारुणंकपालाभं यद्रूक्षंपरुषंतनु १० कपा

होते हैं सब मिलकर १८ कोढ़ हुये ६ कुष्ठ दोषों से सातप्रकार के होते हैं ३ वात पित्त कफसे ३ द्वन्दज अर्थात् दो २ के मिलने से व १ सबोंके मिलनेसे अर्थात् सन्निपातसे वास्तवमें सबकुष्ठ तीनों दोषोंके मिलनेसेही होते हैं उनमें जिसका लक्षण अधिक पायाजाय उसीके अनुसार औषधादि करना चाहिये ७ कुष्ठके पूर्वरूपका वर्णन-जिसस्थानपर कुष्ठ रोग होनेपर होताहै वहां की त्वचा चिकनी वा खरखरी होजाती है वहां कभी २ पसीनाहोता है वा नहीं भी होताहै व त्वचाकारंग औरप्रकारका होजाता है व वहांकीखाल जलनेलगती है उसमें खजुली उठती है वा शून्य होजाती है चुटकीकाटने आदि से कुछ नहीं जानपड़ता वा सुई आदिसे कोंचनेकीसी पीड़ा होती है सूजनहोआती है विना कुछ श्रमकरनेपर भी थकासा जानपड़ताहै ८ शरीर में उसी अवसर में जो घाव होते हैं तो उनमें पीड़ा बहुत होती है,व घाव शीघ्रही होजाते हैं पर बहुत दिनोंतक रहते हैं जो घाव रूखे भी होजाते हैं थोड़ेसेही व्यतिक्रम में फिर भरआते हैं व पीड़ाकरने लगते हैं ९ रोम खड़े होजाना व रुधिर काला होजाना ये सब होनेवाले कुष्ठके लक्षण हैं जब ऐसा होतो जानना चाहिये कि अब कोढ़ रोग होगा अब सात महाकुष्ठों के लक्षण कहते हैं जिस कुष्ठका रंग काला लाल मिलाहुआ तामूके रंगकाहो व

त्वतोदृबहुलंतत्कुष्ठंविषमंस्मृतम् ॥ त्वग्दाहरागकंडूभिः परीतंरोमपिंजरम् ११ उदुम्बरफलाभासं कुष्ठमौदुम्बरं वदेत् ॥ श्वेतंरक्तंस्थिरंस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमंडलम् १२ कृच्छ्रमन्योन्यसंसक्तं कुष्ठंमंडलमुच्यते ॥ कर्कशंरक्तपर्यंतमंतःश्यावंसवेदनम् १३ यदृक्षजिह्वासंस्थानमृक्षजिह्वंतदुच्यते ॥ सश्वेतंरक्तपर्यंतं पुंडरीकदलोपमम् १४ सोत्सेधंचसरागंच पुंडरीकंप्रचक्षते ॥ श्वेतंताम्रन्तनुच यद्रजोघृष्टंविमुंचति १५ प्रायंश्चोरसितत्सिध्ममलाबु

मिट्टी के खपरे के समान रूखाहो कड़ा व पतला चर्म्म होजाय १० व सुईके कोंचने कीसी पीड़ा बहुत होती रहै उसे कपाल कुष्ठ कहते हैं यह कुष्ठ विषम होताहे इससे इसकी औषध कठिनतासे होती है व जिस कुष्ठ में खचामें दाहहो ललाई रहै खजुली उठे व उसके चारोंओरके रोम पीले पड़जायँ ११ व गूलर के फलका सा रंग होजाय उसे औदुम्बरकुष्ठ कहते हैं व जिसमें चमड़े का रंग उजला वा लाल होजाता है व कड़ापन होताहै व गाढ़ा चिकना मण्डलाकार उभड़ आता है १२ वा जिस के मण्डल एक दूसरे से मिलजाते हैं उसे मण्डल कुष्ठ कहते हैं व जिसकुष्ठ में चमड़ा कर्कश ताम्रवर्ण बीच २ में काला भी होजाता है वा पीड़ा होती है १३ व ऋक्षकी जीभके आकार का होताहै उसे ऋक्षजिह्व नाम कुष्ठ कहते हैं व जिसमें चमड़ा उजलाई लिये लाल होता है व आकार में उजले कमल के दलके तुल्य होता है १४ कुछ खालके ऊपर उँचाई और ललाई भी रहती है उसे पुण्डरीक कुष्ठ कहते हैं व जिस कुष्ठमें उजलावा तांबेके रंगका चमड़ा होजाताहै पर पतला और थोड़ा होताहै व खजुवाने से उसमें से कुछ धूलसी उड़ती है १५ व बहुधा वह छाती पर होताहै व इसका डौल उजली लौकी के फूल कासा

कुसुमोपमम् ॥ यत्काकणन्तिकावर्णं सपाकन्तीव्रवेदनम्॥ त्रिदोषलिङ्गन्तत्कुष्ठङ्काकणन्नैवसिद्ध्यति १६ अस्वेदनम्महावास्तुयन्मत्स्यशकलोपमम् ॥ तदेवकुष्ठञ्चर्म्माख्यम्वहुलंहस्तिचर्म्मवत् १७ श्यावङ्किणखरस्पर्शङ्किटिभम्परुषंस्मृतम् ॥ वैपादिकम्पाणिपादे स्फुटनन्तीव्रवेदनम् १८ कण्डूमाद्भिस्सरागैश्च गण्डैरलसकञ्चितम् ॥ सकण्डूरागपिडिकन्दद्रूमण्डलमुद्गतम् १९ रक्तंसशूलंकंडूमत्सस्फोटंदलयत्यपि ॥ तच्चर्मदलमाख्या

होताहै इसे सिध्म वा स्यहुआं नामक कुष्ठ कहते हैं व जिसकुष्ठ का रंग घुंघुची कासा होताहै व वीच २ में काला वा लालहोता है व पकजाताहै और पीड़ा भी करताहै इसमें तीनोंदोषोंके लक्षण होते हैं इससे यह साध्य नहीं होता और काकण कुष्ठ इसका नाम है १६ अब जो छोटे २ग्यारह कुष्ठ होते हैं उनके लक्षण व नाम कहते हैं-जिस कुष्ठमें पसीना नहीं आता व मोटे मांसल स्थानों में ही होताहै व मछलीके छिलके के तुल्य छिलके होते हैं व वहुधा हाथीके चर्म्मके समान वहांका चर्म्म मोटा होजाता है इस रोगको गजचर्म्म कुष्ठ कहते हैं १७ व जिस कुष्ठ नें चमड़ा नीला होजाताहै व धावस्पर्श करने में खरखरा जान पड़ताहै और रूखा रहता है उसे किटिभ कुष्ठ कहते हैं व जिस कुष्ठ में हाथपैर फट जाते हैं व वड़ी पीड़ा होती है उसे वैपादिक कुष्ठ अर्थात् व्यवाई कहते हैं १८ व जिसकुष्ठमें ताम्रवर्ण खजुलातीहुई वहुतसी फुंसियां होआती हैं उसे अलसक कुष्ठ कहतेहैं व जिस में खजुली सहित लाल २ फुंसियां गोली २ कुछ चमड़े से ऊँची होती हैं उसे दद्रूमण्डल कुष्ठ वा दाद्रु कहते हैं १९ व जिसकुष्ठ में चर्म्म लाल पीड़ा सहित खजुली युक्त होता है व चमड़ा फट जाता है इससे छू नहीं जाता उसे चर्म्म दल नाम कुष्ठ कहते

तमस्पर्शसहमुच्यते २० सूक्ष्माबह्व्यश्चपिडिकाःस्राववत्यःपामेत्युक्ताःकंडूमत्यःसदाहाः ॥ सैवास्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योःकच्छुरुग्राःस्फिजोश्च २१ स्फोटाःश्यावारुणाभासाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः ॥ कण्डूम्विता याःपिडिकाश्शरीरेसंस्रावहीनारकसोच्यतेसा २२ रक्तं श्यावंसदाहार्त्तिशतारुःस्याद्बहुव्रणम्॥सकंडूपिडिकाश्यावाबहुस्रावाविचर्चिका २३ खरंश्यावारुणंरूक्षंवातकुष्ठं सवेदनम्॥पित्तात्प्रकथितंदाहरागस्रावान्वितंमतम् २४

हैं २० व जिसमें छोटी २ बहुतसी फुंसियां खजुली और दाह से युक्त होती हैं और उनमें से कुछ पीव भी निकलती है उसे पामा अर्थात् खाजु कहते हैं व इसी रोग में जो बड़े २ फोड़े बड़े दाहकारी हों व प्रायः दोनों हाथों में हों वा गलहरी में हों तो उसे कच्छु नाम कुष्ठ कहते हैं यह भी खाजुही है २१ व जिस रोग में काले वा लालफोड़े निकल आते हैं व फूट जाते हैं व चमड़ा पतला वहुत होता है उसे बिस्फोटकरोग कहते हैं यह भी कुष्ठही है व शरीर में जो खजुली सहित फुंसियां होती हैं पर उन में से पीव नहीं निकलती उस कुष्ठको रकसा कहते हैं २२ जिसकुष्ठमें लालश्याम रंगसे मिले हुये दाहपीड़ा युक्त वहुतसे घाव होजाते हैं उसे शतारु नाम कुष्ठ कहते हैं जिस कुष्ठमें काली २ फुंसियां खजुली सहित हों व उन में से पीव बहुत निकले तो उस रोग को विचर्चिका कहते हैं यद्यपि चर्म्म कुष्ठ से विचर्चिका तक १२ क्षुद्र कुष्ठ होते हैं और प्रतिज्ञा ११ कीही की है तथापि बहुत आचार्योंके मत से बारह हैं इससे इन्हों ने भी १२ कहे हैं २३ वात के संयोग से जो कुष्ठ होता है वह खरखरहा काला और लाल मिलाहुआ रूखा व पीड़ायुक्त होता है व पित्तके योगवाले कारंग लाल व दाहयुक्त होता है और बहता रहता है २४

कफात्क्लेदिघनंस्निग्धंसकंडूशैत्यगौरवम् ॥ द्विदलन्द्वन्द्वजंकुष्ठन्त्रिलिङ्गंसान्निपातकम् २५ त्वक्स्थेवैवर्ण्यमङ्गेषु कुष्ठरौक्ष्यन्तुजायते ॥ त्वग्दाहोरोमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्त्तनम् २६ कण्डूर्विपूयकश्चैवकुष्ठशोणितसंश्रये ॥ बाहुल्यंवक्त्रशोषश्चकार्कश्यम्पिड़िकोद्गमः २७ तोदस्स्फोटस्थिरत्वञ्चकुष्ठेमांससमाश्रिते ॥ कौण्यङ्गतिक्षयोऽङ्गानांसम्भेदःक्षतसर्पणम् २८ मेदस्स्थानगतेलिंगम्प्रागुक्तानितथैवच ॥ नासाभंगोऽक्षिरागश्चक्षतेषु क्रि

व कफके योगसे उत्पन्न कुष्ठका व्रण रसीला कठोर चिकना खजुआनेवाला शीतल और गरुआ होता है व द्वन्द्वज कुष्ठ में जिन दोके योग से होता है उन दोनों के लक्षण रहते हैं व सन्निपात वाले में तीनों दोष होते हैं २५ जब कुष्ठरोग त्वचा में रहता है तो अंगमें रुखाई आजाती है व त्वचा में दाह होने लगता है रोम खड़े होजाते हैं व पसीना बहुत निकलता है व अंग का रंग बदलजाता है २६ व जब कुष्ठरोग रुधिर में प्रवेश करके रहता है तो खजुली अधिक होती है व पीव बहुत बहती है व मांस में समाश्रित कुष्ठ में बहुधा मुखसूखा बनारहताहै देहखरखराहोजाता है व शरीरमें छोटी २ फुंसियांसी निकलआती हैं २७ व सुई से कोंचनेकीसी पीड़ा हुआकरती है व बड़े २ भी फोड़े होजाते हैं और बहुत दिनों तक स्थिर बनेरहतेहैं मेदस् स्थानमें कुष्ठपहुँचने व ठहरनेसे कर चरणगलजाते हैं इससे चलना फिरना बन्द होजाता है देह सब फूटजाता है व घाव सब फैलतेजातेहैं २८ इस कुष्ठमें रसरक्त मांसगत कुष्ठोंमें जो लक्षणकहआये हैं वे भी होते हैं और अस्थिमज्जामें स्थित कुष्ठमें नासिका गलकर गिरजाती है वा बैठकर पच्चीहोजाती है, व नेत्रलाल बनेरहते हैं व घावों में कृमि पड़जाते हैं गलाबैठजाताहै इससे बोल आयँ २

मिसम्भवः॥२६ स्वरोपघातश्चभवेदस्थिमज्जासमाश्रिते ॥ दन्तयोःकुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ॥ यदपत्यन्तयोर्ज्जातञ्ज्ञेयन्तदपिकुष्ठितम् ३० साध्यन्त्वग्रक्तमांसस्थंवातश्लेष्माधिकञ्चयत् ॥ मेदसिद्वन्द्वजंयाप्यंवर्ज्ज्यम्मज्जास्थिसंश्रयम् ॥३१ क्रिमिहृष्णासमन्दाग्निसंयुतंयत्त्रिदोषजम् ॥ प्रभिन्नम्प्रस्रुतांगञ्चरक्तनेत्रंहतंस्वरम् ॥ पञ्चकर्म्मगुणातीतंकुष्ठंहन्तीहकुष्ठिनम् ३२ वातेनकुष्ठङ्कापालम्पित्तेनौदुम्बरङ्कफात् ॥ मण्डलाख्यंविचर्चीचऋक्षाख्यंवातपित्तजम् ३३ चर्म्मैककुष्ठङ्किटि

होनेलगताहै २६ स्त्री और पुरुष दोनों के जब कुष्ठकी अधिकाई होती है तो पुरुषका बीज व स्त्रीका ऋतु सम्बन्धी रुधिर भी दुष्ट होजाताहै इससे जो सन्तान कन्या वा पुत्र उन दोनोंसे होतेहैं वेभी कुष्ठीही होजातेहैं और उनका असाध्य कुष्ठहोताहै३० त्वचा रक्त व मांसमेंस्थितकुष्ठ साध्यहोताहै वा जिस कुष्ठमेंवातकफकी अधिकता होती है वहभी साध्यहोताहै व जो मेदस् में होताहै वा वातादिक दो २ केयोगसेहोताहै वहकष्टसाध्यहोताहै व जो मज्जा और अस्थिमें कुष्ठपहुँचजाताहै वह बरादेने के योग्य होताहै ३१ व जिस कोढ़में कीड़े पड़तेहों व जो मचलाता रहताहो, अथवा मन्दाग्निहो व तीनों दोषोंके संयोग से उत्पन्न हो यह भी असाध्यहोताहै व जो कोढ़ फूटजाता और अंगोंसे रुधिर पीव बहनेलगती है व जिसके नेत्रलाल बनेरहते हैं और जिसका शब्द हत होजाताहै अथवा जिसके वमन विरेक आदि पांचों कर्म्मोंके गुण नहीं गुणकरते ऐसाकुष्ठऐसे कोढ़ीको मारही डालता है३२ कपाल नाम कुष्ठमें वातकी प्रधानता होतीहै व औदुम्बरमें पित्त की व मण्डलकमें और विचर्चिकामें कफकी प्रधानता रहती हैं व ऋक्षजिह्वमें वात पित्तकी अधिकता रहतीहै ३३ व चर्म्मकुष्ठ

भंसिध्मालसविपादिकाः ॥ वातश्लेष्मोद्भवाश्श्लेष्मपि त्ताद्दद्रूशतारुषी ३४ पुण्डरीकंसविस्फोटम्पामाचर्म्मद लन्तथा ॥ सर्व्वैस्स्यात्काकणम्पूर्व्वन्त्रिकन्दद्रूस्सकाक णा ३५ पुण्डरीकर्क्षजिह्वेचमहाकुष्ठानिसप्ततु ३६ कुष्ठैक सम्भवंश्वित्रङ्किलासञ्चारुणम्भवेत् ॥ निर्द्दिष्टमपरिस्रा वित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ३७ वाताद्रूक्षारुणम्पित्तात्ताम्र ङ्कमलपत्रवत् ॥ सदाहंरोमविध्वंसिकफाच्छ्वेतङ्घनंगुरु ३८ सकण्डुरंक्रमाद्रक्तमांसमेदस्सुवादिशेत् ॥ वर्णेनैवे

किटिभ सिध्म अलस विपादिका ये पांचो वात कफकी प्रधानता रखते हैं व कफ पित्त से दद्रू और शतारु होते हैं ३४ पुण्डरीक विस्फोटक पामा व चर्म्मदल इनमेंभी कफपित्तही की प्रधानता होती है व काकण कुष्ठमें वात पित्त कफ तीनोंकी प्रधानता होतीहै प्रथम के तीनकपाल औदुम्बर व मण्डल व दद्रू काकण ३५ पुण्डरीक ऋक्षजिह्वयेसात महाकुष्ठोंमेंहैं ३६ कुष्ठहोनेकेकारणजो विरुद्ध भोजन पापकर्म्मादि प्रथम कह आये हैं उन्हीं से श्वेतकुष्ठ होता है और किलास भी उन्हीं कारणों से होताहै परन्तु इस का रंग लालहोताहै ये दोनों फूटते पकते बहते नहीं पीड़ा भी कुछ इनमें नहीं होती येतीनों दोषों व रक्त मांस मेद इनतीनों धातुओं केही आश्रित रहते हैं ३७ वायु के कारण कुष्ठ रूखा वा लालहोताहै व पित्तसे कमलकी पखुरीकेतुल्य लालरंगका होता है इसमें दाह होनेके कारण देहभरके बालरोम गिरपड़ते हैं कफ से श्वेत घन और गुरु ३८ होताहै व कुछ सहराता रहताहै व इसीक्रमसे ये रक्त मांस और मेदस् के आश्रित होते हैं व रक्तके आश्रित होनेके कारण ताम्रवर्ण होता है व मांसके आश्रितहोने के कारण लालरंग होताहै और मेदस् के आश्रितहोने के कारण श्वेतरंगका होताहै इनमें रक्ताश्रित से मांसाश्रित व मांसाश्रित

द्गुभयंकृच्छ्रन्तच्चोत्तरोत्तरम् ३९ अशुक्लरोमबहुलम संश्लिष्टमथोनवम् ॥ अनग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमतोन्यथा ४० गुह्यपाणितलौष्ठेषुजातमप्यचिरंतनम् ॥ वर्जनीयंविशेषेणकिलासंसिद्धिमिच्छता ४१ प्रसंगाद्गात्रसंस्पर्शान्निश्वासात्सहभोजनात् ॥ सहशय्यासनाच्चापिवस्त्रमाल्यानुलेपनात् ४२ कुष्ठंज्वरश्चशोषश्चनेत्राभिष्यन्दएवच ॥ औपसर्गिकरोगाश्चसंक्रामंतिनरान्नरम् ४३ ॥

॥ इतिकुष्ठनिदानम् ॥

से मेद आश्रित कष्टसाध्यहोता है ३९ श्वित्रके साध्यासाध्य के लक्षण—जिसश्वित्र अर्थात् उजले दागपरके बालकाले बने हैं उजले नहीं होगये उजलाई है भी तो हलकी है व दागएकमें मिलेनहीं हैं और अभी नये हैं बहुत दिनों के नहीं हुये व वह दाग अग्निका जलाहुआ नहीं है बस ऐसे उजले दागवाला श्वित्र साध्य होताहै व इसके विपरीत असाध्य होने के कारण त्याज्य होते हैं ४० असाध्य के लक्षण—गुदलिंगादि गुप्तस्थानों का श्वेत कुष्ठ व हाथों के ऊपर का पैरोंके तलवोंका व ओठोंपर का चाहे बहुत दिनोंकाभी न हो नयाहीहो तो वह भी अपनी सिद्धिता चाहनेवाले वैद्यको वर्जनीयहै इससे ऐसे की औषध न करे ४१ सांसर्गिकरोग अर्थात् जो संसर्गसे होजाते हैं मैथुन करने से अंगोंकेछूने वा एकमेंरगड़नेसे श्वासलगने से एकसंग एकहीथाली में भोजनकरनेसे एकशय्यापर सोनेसे एकही आसनपर साथही वा आगे पीछे बैठने से वस्त्र धारण करने से व मालपहिरने से ४२ कोढ़ ज्वर सूखना नेत्ररोगमहामारी खाजु मृगीआदि औपसर्गिकरोग ये सब सांक्रामिकहोते हैं अर्थात् इनके रोगी के संग ऊपर लिखेहुये मैथुनादि करने से करनेवालेकेभी अवश्यहोजातेहैं ४३
इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेकुष्ठरोगनिदानन्त्रिपंचाशत्तमम्

शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदुष्टौकफमारुतौ ॥ पित्तेनसहसं भूयबहिरंतर्विसर्पतः १ पिपासारुचिहृल्लासमोहःसादांग गौरवम् ॥ रक्तलोचनतातेषांपूर्वरूपस्यलक्षणम् २ वरटी दष्टसंस्थानःशोथःसंजायतेवहिः ॥ सकंडूतोदबहुलःछ र्दिज्वरविदाहवान् ३ उदर्दमितितंविद्याच्छीतपित्तमथा परे ॥ वाताधिकंशीतपित्तमुदर्दस्तुकफाधिकः ४ सोत्सं गैश्चसरागैश्चकंडूमद्भिश्चमंडलैः ॥ शैशिरःकफजोऽया

दो० ॥ चौवनयें महँ शीतपित करनिदान कहिदीन ॥
देखहिं लोग विचारसों जिनकी बुद्धिप्रवीन १ ॥

शीतपित्तकी सम्प्राप्तिकालक्षण—शीतल पवन के अधिकलग- जाने से अतिदुष्टहोकर कफ और वायु पित्तकेसंग मिलकर भीतर रुधिरमें प्रविष्ट होजाते हैं व बाहर त्वचामें फैलजाते हैं उसे शीत पित्त अर्थात् पित्ती उछलना कहते हैं १ इसका पूर्वरूप-जब शीत पित्त होने पर होता है तो पिपासा अरुचि मुखमें पानी छू- टना मूर्च्छा शरीर का टूटना अंगोंमें भारीपन नेत्रोंमें ललाई ये सब लक्षण प्रथम होते हैं २ उदर्द शीतपित्त व पित्ती उछलने के लक्षण—जैसे पीली बरैयाओं के काटने से कुछ सूजन होती है वैसेही इसमें भी होती खजुहट भी होती है और सूई आदि कोंचनेकीसी पीड़ा बहुतहोतीहै ओकाईआती ज्वरहोता व दाह बहुत होता है ३ इसरोगको उदर्द कहतेहैं व कोई २ शीत पित्त कहते हैं भाषामें इसीको पित्तीउछलना वा रिसपित्ती वा पित्ती कहते हैं शीतपित्तमें वातकी प्रधानता होतीहै व उदर्द में कफकी अधिकता होती है इस कारण इन दोनों में भेदहै इसीसे दोनों अलग २ हैं जिसमें ऊपरको कुछ उछलआने से ददरेपड़जाते हैं वह उदर्द और जिसमें योंहींसूजनहो आतीहै उसे शीतपित्त क- हते हैं अन्य सब लक्षण दोनों के एकसे होते हैं ४ उदर्द रोगका

धिरुदर्दःपरिकीर्त्तितः ५ असम्यग्वमनोदीर्णपित्तश्लेष्मान्ननिग्रहैः ॥ मंडलानिसकंडूनिरागवंतिबहूनिच ॥ उत्कोठःसानुबन्धश्चकोठइत्यभिधीयते ६ ॥

इतिशीतपित्तोदर्दकोठनिदानम् ॥

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजो विदग्धम् ॥ पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्तदम्लपित्तंप्रवदंतिसंतः १ अविपाकक्लमोत्क्लेदतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः ॥ हृत्कंठदाहारुचिभिरम्लपित्तंवदेद्भिषक् २ तृड्दाहमूर्च्छाभ्रममो

दूसरा लक्षण—शीतलता से कफकोप करके ललभरे मण्डलदेहपर उछालता है वे बहुत खजुलातेहैं व उनके किनारे २ऊँचा और बीचमें कुछखाली रहताहै इसे भी उदर्द कहते हैं ५ अच्छे प्रकार खुलकर वमन न होने से व पित्त श्लेष्मा से बिगड़े हुये अन्नके रुकने से खजुली सहित बहुत से लाल २ चकंधे शरीर भरमें पड़जाते हैं इसे उत्कोठ कहते हैं यदि यही वार २ उछलता व मिटता रहै तो इसे कोठ कहते हैं ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादे शीतपित्तनिदानञ्चतुःपञ्चाशत्तमम् ५४ ॥

दो० ॥ पचपनयें महँ कह सुकवि अम्लपित्त नीदान ॥
देखहिं सज्जनयहि क्यतिकहैकुतर्कबलवान १

विरुद्ध पदार्थ दूधमछली एक संग भोजनादि करने से दुष्ट अमिलाना वासीआदि अन्न खाने से बहुत गर्म्मी करने वाले अन्नोंके खानेसे जो कि पित्तको कुपित कराते हैं ऐसे अन्न पान के सेवन करने वाले का पित्त जोकि अपने हेतुओं से इकट्ठा होताहै वह वर्षा समयमें नष्टहोजाताहै बस इसीको पण्डित लोग अम्लपित्त कहते हैं १ इसके लक्षण—अन्नका न पचना ग्लानि

हकारिप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम् ॥ हृल्लासकोठानलसादहर्षस्वेदांगपीतत्वकरंकदाचित् ३ वांतहरित्पीतकनीलकृष्णमारक्तरक्ताभमतीवचाम्लम् ॥ मांसोदकाभन्त्वतिपिच्छिलाच्छश्लेष्मानुयातंविविधंरसेन ४ भुक्तेविदग्धेप्यथवाप्यभुक्ते करोतितिक्ताम्लवमिंकदाचित् ॥ उद्गारमेवंविधमेवकंठे हृत्कुक्षिदाहंशिरसोरुजंच ५ करचरणदाहमौष्ण्यं महतीमरुचिंज्वरंचकफपित्तम् ॥ जनयतिकंडूमंडलपिडिकाशतनिचितगात्ररोगचयम् ६ र

जीमचलाना तीत व अमली डकार आना शरीर भारीरहना हृदय व गले का जलना व अरुचि जहां ये सबहों वैद्य वहां अम्लपित्त रोगकहे २ नीचेको गये हुये अम्लपित्त के लक्षण—जब अम्लपित्त नीचेको जाताहै तो तृषा दाह मूर्च्छा भ्रम मोह होतेहैं व विविध प्रकारके कुतर्क होते हैं जीमचलाता कोठे में गड़बड़ होता अग्नि मन्द होजाता रोमांचहोता पसीना बहुत होता शरीर पीलाहो जाताहै तब पित्त काला या लालहोकर मलकेसंग नीचेगिरताहै ३ ऊपरको गयेहुये अम्लपित्त के लक्षण—ऊर्ध्वगत अम्लपित्त जब होताहै तो हरा पीला नीला काला ताम्रवर्ण रुधिर के रंगका अत्यन्त खट्टा मांस धोवन के पानी के रंगका फेने के आकार का कफ युक्त लोनखर कसैलाआदि विविधरसों से युक्त वांत होता है ४ व कभी भोजनकरने के पीछे अन्न पचनेके पूर्व्व कभी बिन भोजन कियेही परःवमन होजाताहै यह वमन तीत आमिल मिलाहुआ होताहै वा ऐसीही डकार आती है कण्ठ हृदय व कोखि में दाह होता व शिरसें पीड़ा होती है ५ कफ पित्तज अम्लपित्त रोगमें हाथ पैरों में दाह शरीर टूटना अरुचि बड़ीभारी ज्वर शरीरमें दुर्गन्धि खजुली ददरें पड़जाना बहुतसी छोटी २ फुंसि- यां व अनेक उपद्रवों से युक्त शरीर होजाताहै ६ यह अम्लपित्त

गोयमम्लपित्ताख्यो यत्नात्संसाध्यतेनवः ॥ चिरोत्थितोभवेद्याप्यः कृच्छ्रसाध्यःसकस्यचित् ७ सानिलसानिलकफं सकफंतच्चलक्षयेत् ॥ दोषलिंगेनमतिमान् भिंषामोहकरंहितत् ८ कंपप्रलापमूर्च्छाचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि ॥ तमसोदर्शनविभ्रमप्रमोहहर्षाण्यनिलयुते ९ कफनिष्ठीवनगौरवजडता रुचिसीदसादवमिलेपाः ॥ दहनवलसादकंडूनिद्राश्चिह्नंचकफानुगते १० उभयमिदमेवचिह्नंमारुतकफसंभवेभवत्यम्ले ११ ॥

नामरोग जब नया होता है तो यत्न से साध्य होता है जब बहुत दिनोंका होजाताहै तो भी औषध करनेके योग्य रहताहै परसिद्ध होनेमें संशय रहताहै व यदि यही किसी पथ्य करनेवाले बलवान् पुरुष के होता है तो कष्टसाध्य होता है ७ वायु युक्त अम्ल पित्त वायु कफ युक्त अम्ल पित्त व कफ युक्त अम्ल पित्त इनतीनों प्रकारोंके अम्ल पित्तोंकी परीक्षा वातादि दोषों के लक्षणों के अनुसार बुद्धिमान् वैद्यकरे क्योंकि यह रोग वैद्यों को भ्रमकारक होताहै इसमें भ्रमहोनेका हेतु यह है कि अधोगत अम्ल पित्त में तो अतीसारका भ्रम होजाता है व ऊर्ध्वगत अम्ल पित्त में वमन की भ्रान्ति होतीहै बस इसीसे इसरोगमें चिकित्सकलोग चकड़ा जाते हैं ८ वायु युक्त अम्ल पित्त में कांपना अनर्थ बकना मूर्च्छा शरीरका चिपचिपाना सुस्त रहना शूल उठना नेत्रों के आगे अन्धकार होजाना चित्तघबराना मोह होना व रोमांचहोना ये लक्षण होते हैं ९ कफ युक्त अम्ल पित्त रोग में कफका थूंकना शरीर में गुरुता अंगों में जड़ता अरुचि शीतलता शरीर में सुस्ती वमन होना मुख में चटचटी अग्निकी मन्दता खजुरी और नींद अधिक बस ये सब लक्षण होते हैं १० वात कफयुक्त अम्ल पित्त में ऊपरवाले दोनों के लक्षण सब होते हैं ११ व कफ पित्त,

भ्रमोमूर्च्छारुचिच्छर्दिरालस्यंचशिरोरुजः॥ प्रसेकोमुखमाधुर्य्यंश्लेष्मपित्तस्यलक्षणम् १२ ॥ इत्यम्लपित्तनिदानम्॥

लवणाम्लकटूष्णादि सेवनाद्दोषकोपतः॥ विसर्पःसप्तधाज्ञेयः सर्वतःपरिसर्पणात् १ पृथक्त्रयस्त्रिभिश्चैको विसर्पाःद्वंद्वजास्त्रयः ॥ वातिकःपैत्तिकश्चैव कफजःसान्निपातिकः २ चत्वारएतेवीसर्पा वक्ष्यंतेद्वंद्वजास्त्रयः॥ आग्नेयोवातपित्ताभ्यां ग्रंथाख्यःकफवातजः ३ अग्निकर्दमिकोघोरः सपित्तकफसंभवः ॥ वुद्ध्यानिपुणया

युक्त अम्ल पित्त में भ्रम मूर्च्छा अरुचि वान्त आलस्य शिर में पीड़ा मुखमें पानीछूटना मुखमीठारहना ये सबलक्षणहोतेहैं१२॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेऽम्लपित्तनिदानं पंचपंचाशत्तमम् ५५ ॥

दोहा ॥ छप्पनयें मैं विसर्प्प के हैं निदान सनिरुक्ति ॥
देखहिं सुजन लगाय चित कैसी है कवियुक्ति १

विसर्प्प रोगके निदान–खारी खट्टी कड़वी उष्ण वस्तुओं के अधिक सेवन करनेसे वातादिक कोप करते हैं उससे विसर्प्परोग होता है वह सातप्रकार का है और सब ओर शीघ्रही पसरजाने के कारण से इसरोगका नाम विसर्प्प हुआ है १ उन सातों में तीन वात पित्त कफ से अलग २ व एक इन तीनों के मिलने से व तीन द्वन्द्वज अर्थात् दो २ के मिलने से उन में एक वातिक दूसरा पैत्तिक तीसरा कफज व चौथा सान्निपातिक जो तीनों के मिलने से होताहै २ बस चार तो ये विसर्प्परोग हुये व तीनों द्वन्द्वजों के नाम और लक्षण कहते हैं एक आग्नेय जोकि वात और पित्त से होता है दूसरा ग्रन्थ्यनाम जो कि कफ और वात दोनों के योग से उत्पन्न होता है ३ तीसरा अग्नि कर्दमिक जो

साध्यो भिषजायत्नतःक्वचित् ४ रक्तंलसीकात्वग्मांसं दूष्यन्दोषास्त्रयोमलाः ॥ विसर्पाणांसमुत्पत्तौ विज्ञेयाःसप्त धातवः ५ तत्रवातात्परीसर्पो वातज्वरसमव्यथः ॥ शोफस्फुरणनिस्तोदो मेदायामार्त्तिहर्षवान् ६ पित्ताद्द्रुतगतिःपित्तज्वरलिंगोतिलोहितः ॥ कफात्कंडूयुतःस्निग्धः कफज्वरसमानरुक् ॥ सन्निपातसमुत्थस्तु सर्वरूपसमन्वितः ७ वातपित्ताज्ज्वरच्छर्दिमूर्च्छातीसारतृड्भ्रमैः ॥ अस्थिभेदाग्निसदनतमकारोचकैर्युतः ८ करोति सर्वमंगंच दीप्तांगाएवकीर्णवत् ॥ यंयंदेशंविसर्पश्च वि

बड़ा घोर होताहै व पित्त कफ दोनोंके योगसे होताहै यह निपुण बुद्धि से बड़े यत्नसे कहीं कोई वैद्य सिद्धकर सक्ताहै नहीं तोप्रायः असाध्यही होताहै ४ रक्त (लसीकात्वक्) खालपरका लाल पानी मांस व रस दूषित होकर येचार और वात पित्त कफ येतीनों दोष वस सत्र विसर्प्प रोगोंकी उत्पत्तिमें इन्हीं सातोंको धातुसमझना चाहिये ५ उनमें वातसे उत्पन्न विसर्प्परोगमें वातज्वरके समान व्यथा होतीहै व शोथहोता अंगफरकते हैं कोंचनासा विदित होताहै फट वा फूटजाने कीसी पीड़ा होतीहै रोमांच होताहै व यह विसर्प्प लम्बहोताहै ६ व पित्तसे उत्पन्न विसर्प्प बहुत शीघ्र फैल जाताहै व पित्तज्वरके सब चिह्न इसमें होते हैं और इसका रंगलाल होताहै व कफसे उत्पन्न विसर्प्प में खजुआहट बहुत होती है व चिकनाहोता व कफज्वरके समान पीड़ाहोती है व सन्निपातसे उत्पन्न विसर्प्पमें वात पित्त कफ तीनोंके सब लक्षण होते हैं ७ वात पित्तज अग्नि विसर्प्प नाम रोग के लक्षण— वात पित्तसे उत्पन्न अग्नि विसर्प्प रोगमें ज्वरवमन मूर्च्छा अतीसार पिपासा भ्रम हड़फूटन अग्निकी मन्दता नेत्रोंके आगे अंधेराहोजाना अरुचि ये सब होते हैं ८ व इसहेतुसे सब अंगतप्ते

सर्पतिभवेत्ससः ९ ; शांतागारासितोनीलो रक्तोवाशुप चीयते ।। अग्निदग्धनिभैः स्फोटैः शीघ्रगत्वाद्रुतंसच १० मर्मानुसारीवीसर्पः स्याद्वातोतिबलःस्वतः ।। व्यथेतांगं हरेत्संज्ञां निद्रांचश्वासमीरयेत् ११ हिक्कांचसततोवस्था मीदृशींलभतेनरः ।। क्वचित्क्षमारतिग्रस्तो भूमिशय्या सनादिषु १२ चेष्टमानस्ततः क्लिष्टो मनोदेहश्रमोद्भवाम् दुर्बोधामश्नुतेनिद्रांसोग्निवीसर्पउच्यते १३ : कफेनरु द्धःपवनो भित्वातंबहुधाकफम् ।। रक्तंवावृद्धरक्तस्य त्वक् शिरास्नायुमांसगम् १४ दूषयित्वाचदीर्घाणुवृत्तस्थूल खरात्मताम् ।। ग्रन्थीनांकुरुतेमालां रक्तानांतीव्ररुक्

हुये अंगारोंके समान जलने लगतेहैं व जिस २ स्थानमें विसर्पहोताहै वह २ अंग ९ शान्तअंगारके तुल्य काले नीले लाल चकत्तोंके साथ सूजजाताहै व तुरन्त अग्नि के जलने से उत्पन्न फुटकोंके समान फुटकोंसे युक्त होजाताहै वह विसर्प शीघ्रही जाकर १० अपने निकटके किसी सुकुमार स्थानपर पहुँचजाता है अथवा और अधिकपीड़ा करनेलगता है क्योंकि वात तो अपने आप अधिक बलवान् होता है इस से अंगको व्यथित करता है संज्ञा व निद्राको हरलेता है व श्वासको अधिक बढ़ाताहै ११ हुचकीको बढ़ाता ऐसी अवस्थाको पाकर उस मनुष्य को यह ज्ञात नहींरहता कि मैं भूमि पर पड़ाहूं वा शय्यापर वा अन्य किसी आसनपर बनाय अचेत होजाता है १२ व इधर उधर लोटतारहता है मन देह दोनों अचेत होजाते हैं इस से मरण के तुल्य घोर निद्रा आजाती है बस यही रोग वात पित्तज अग्नि विसर्प कहाजाताहै १३ अपने आप जब कफ कुपितहोकर वायुको रोंकताहै तो वह पवन उस कफ को बहुत प्रकार से भेदन कर के व बढ़ेहुये रक्त का भी भेदन करके चर्म्म

ज्वराम् १५ श्वासकासातिसारस्य शोषहिक्काप्रविभ्रमैः ॥ मोहवैवर्ण्यमूर्च्छांग भंगाग्निसदनैर्युताम् १६ इत्ययं ग्रन्थिवीसर्पं कफमारुतकोपजः ॥ कफपित्ताज्ज्वरस्त म्भो निद्रातंद्राशिरोरुजा ॥ अंगावसादविक्षेप प्रला पारोचकभ्रमाः १७ मूर्च्छाग्निहानिभेदोस्थ्नां पिपासे न्द्रियगौरवम् ॥ आमोपवेशनलेपः स्रोतसांसविसर्प ति १८ प्रायेणामाशयंगृह्णन्नैकदेशंनचातिरुक् ॥ पिडिकैरवकीर्णोतिपीतलोहितपांडुरैः १९ मेचकाभःसि तस्स्निग्धोमलिनश्शोफवान्गुरुः ॥ गंभीरपाकःप्रायो

मोटी पतली नसें व मांस में जाकर १४ व उनको दूषित करके बड़ी छोटी गोली मोटी व खरखरी गांठियोंकी मालाको करताहै इस मालाकी गांठियांलालरंगकी व तीव्रपीड़ा करनेवाली व ज्वर करनेवाली होतीहैं १५ व श्वास खांसी अतीसार शोष हुचकी विभ्रम मोह विवर्णता मूर्च्छा अंग भंग व अग्निकी मन्दता इनसे भी युक्तवह ग्रन्थिमाला होतीहै बस कफवायु के कोपसे उत्पन्न यही ग्रन्थि विसर्प्प रोग कहाता है १६ कफ व पित्त से उत्पन्न कर्दमनाम विसर्प्पमें ज्वरदेहकातनना निद्रा तन्द्रा शिरकीपिड़ा अंगोंकाटूटना व अंगफटकना अनर्थवकना अरुचिभ्रमहोना १७ मूर्च्छा अग्निमन्दहोना हड्फूटन पिपासा इन्द्रियोंका गरुआपन आमपड़नामुहमें लभालपटाना व संबनसों में लभालपटाना १८ बहुधा यह विसर्प्प रोग आमाशय से उत्पन्न होकर सब ओर फैलता है परन्तु सब ओर पीड़ा बहुत नहीं करता व उस के ऊपर पीली लाल व पाण्डु रंगकी फुंसियां होतीहैं १९ यह विसर्प्प चिकना काला श्यामल मैल सूजनसहित गरुआई लिये भारी परिपाक से युक्त उष्णता अधिक झलझटाहट होजाती है दबानेसे कुछ कालतक शीतलता जानपड़ती है फिर पीछे फुं

सर्पतिभवेत्ससः ९ शांतागारासितोनीलो रक्तोवाशुप चीयते॥ अग्निदग्धनिभैःस्फोटैः शीघ्रगत्वाद्रुतंसच १० मर्मानुसारीवीसर्पः स्याद्वातोतिबलःस्वतः॥ व्यथेतांगं हरेत्संज्ञां निद्रांचश्वासमीरयेत् ११ हिक्कांचसततोवस्था मीदृशींलभतेनतः॥ क्वचिल्लभमारतिग्रस्तो भूमिशय्या सनादिषु १२ चेष्टमानस्ततःक्लिष्टो मनोदेहश्रमोद्भवाम् दुर्बोधामश्नुतेनिद्रांसोग्निवीसर्पउच्यते १३ कफेनरु द्धःपवनो भित्वातंबहुधाकफम्॥ रक्तंवाद्धरक्तस्य त्वक् शिरास्नायुमांसगम् १४ दूषयित्वाचदीर्घाणुवृत्तस्थूल खरात्मताम्॥ ग्रन्थीनांकुरुतेमालां रक्तानांतीव्ररुक्

हुये अंगारोंके समान जलने लगतेहैं व जिस २ स्थानमें विसर्पहोताहै वह २ अंग ९ शान्तअंगारके तुल्य काले नीले लाल चकत्तोंके साथ सूजजाताहै व तुरन्त अग्नि के जलने से उत्पन्न फुटकोंके समान फुटकोंसे युक्त होजाताहै वह विसर्प शीघ्रहीजाकर १० अपने निकटके किसी सुकुमार स्थानपर पहुँचजाता है अथवा और अधिकपीड़ा करनेलगता है क्योंकि वात तो अपने आप अधिक बलवान् होता है इस से अंगको व्यथित करता है संज्ञा व निद्राको हरलेता है व श्वासको अधिक बढ़ाताहै ११ हुचकीको बढ़ाता ऐसी अवस्थाको पाकर उस मनुष्य को यह ज्ञान नहींरहता कि मैं भूमि पर पड़ाहूं वा शय्यापर वा अन्य किसी आसनपर वनाय अचेत होजाता है १२ व इधर उधर लोटतारहता है मन देह दोनों अचेत होजाते हैं इस से मरण के तुल्य घोर निंद्रा आजाती है बस यही रोग वात पित्तज अग्नि विसर्प कहाजाताहै १३ अपने आप जब कफ कुपितहोकर वायुको रोकताहै तो वह पवन उस कफ को बहुत प्रकार से भेदन कर के व बढ़ेहुये रक्त का भी भेदन करके चर्म्म

ज्वराम् १५ श्वासकासातिसारस्य शोषहिक्काप्रविभ्रमैः ॥ मोहवैवर्ण्यमूर्च्छांग भंगाग्निसदनैर्युताम् १६ इत्ययं ग्रन्थिवीसर्प कफमारुतकोपजः ॥ कफपित्ताज्ज्वरस्त म्भो निद्रातंद्राशिरोरुजा ॥ अंगावसादविक्षेप प्रला पारोचकभ्रमाः १७ मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोस्थ्नां पिपासे न्द्रियगौरवम् ॥ आमोपवेशनंलेपः स्रोतसांसविसर्प ति १८ प्रायेणामाशयंगृह्णन्नेकदेशंनचातिरुक् ॥ पिडिकैरवकीर्णोतिपीतलोहितपांडुरैः १९ मेचकाभःसि तस्स्निग्धोमलिनश्शोफवान्गुरुः ॥ गंभीरपाकःप्रायो

मोटी पतली नसें व मांस में जाकर १४ व उनको दूषित करके बड़ी छोटी गोली मोटी व खरखरी गांठियोंकी मालाको करताहै इस मालाकी गांठियांलालरंगकी व तीव्रपीड़ा करनेवाली व ज्वर करनेवाली होतीहैं १५ व श्वास खांसी अतीसार शोष हुचकी विभ्रम मोह विवर्णता मूर्च्छा अंग भंग व अग्निकी मन्दता इनसे भी युक्तवह ग्रन्थिमाला होतीहै बस कफबायु के कोपसे उत्पन्न यही ग्रन्थि विसर्प्प रोग कहाता है १६ कफ व पित्त से उत्पन्न कर्दमनाम विसर्प्पमें ज्वरदेहकातनना निद्रा तन्द्रा शिरकीपीड़ा अंगोंकाटूटना व अंगफटकना अनर्थबकना अरुचिभ्रमहोना १७ मूर्च्छा अग्निमन्दहोना हड्फूटन पिपासा इन्द्रियोंका गरुआपन आमपड़नामुहंमें लभालपटाना व सबनसों में लभालपटाना १८ बहुधा यह विसर्प्प रोग आमाशय से उत्पन्न होकर सब ओर फैलता है परन्तु सब ओर पीड़ा बहुत नहीं करता व उस के ऊपर पीली लाल व पाण्डु रंगकी फुंसियां होतीहैं १९ यह विसर्प्प चिकना काला श्यामल मैल सूजनसहित गरुआई लिये भारी पारिपाक से युक्त उष्णता अधिक झलझलाहट होजाती है दबानेसे कुछ कालतक शीतलता जानपड़ती है फिर पीछे फु-

ष्मारूपष्टः छिन्नोवदीर्य्यते २० पंकवच्छीर्णमांसश्चस्फुट स्स्नायुशिरागणः ॥ शवगंधिचवीसर्पंकर्दमारूयमुशंति तम् २१ बाह्यहेतोःक्षतात्क्रुद्धःसरक्तंपित्तमीरयन् ॥ विसर्पंमारुतःकुर्यात्कुलत्थसदृशैश्चितम् २२ स्फोटैःशोफ ज्वररुजादाहाढ्यंश्यावशोणितम् २३ ज्वरातिसारोवमथु स्त्वग्मांसदरणक्षमाः॥ अरोचकाविपाकौचविसर्पाणामुप द्रवाः २४सिद्ध्यंतिवातकफपित्तकृताविसर्पाःसर्वात्मकः क्षतकृतश्चनसिद्धिमेति॥ पित्तात्मकोंजनवपुश्चभवेदसा ध्यःकृच्छ्राश्चमर्मसुभवंतिहिसर्वएव २५ इतिविसर्पनिदानम्॥

सियाँ व झलके फूटजाते हैं २० अथवा उसका मांस कीचड़के तुल्य गलजाताहै व फिर सबमोटी पतली बड़ी छोटीनसें मांस गलने के कारण खुलजातीहैं फिर मरेसड़ेहुये जन्तुकीसी दुर्गंधि आनेलगतीहै इसको कर्दमविसर्प्प कहतेहैं २१ क्षतज विसर्प के लक्षण—बाहरके किसीकारणसे क्षतहोजाने से वायु क्रुद्ध हो कर रक्तसहित पित्तको उभाड़कर विसर्प्परोगको करताहै उसके ऊपर कुलथी के तुल्य फुंसियां होतीहैं २२ फिरउन फुंसियों के कारण सूजन होजाती पीड़ा होतीहै ज्वर होता दाहहोता व रुधिर कालाहोजाता है २३ इसरोगके उपद्रव—ज्वर दस्त आना वमनहोना त्वचा व मांसका गलना शिथिलता अरुचि अन्नका परिपाक न होना बस ये सब विसर्प्पों के उपद्रवहैं २४ साध्य असाध्य के लक्षण ये हैं वातज पित्तज व कफज ये विसर्प्प सा ध्य होते हैं सन्निपातज व क्षतज विसर्प्प साध्य नहीं होते व पित्तज विसर्प्प जिसमें देह अञ्जनकेतुल्य कालाहोजाताहै वह असाध्य होताहै व हृदय आदि सुकुमार स्थानोंमें जब होतेहैं तो सबके सब विसर्प्प कष्टसाध्यहोतेहैं २५॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेविसर्प्पनिदानंपट्पंचाशत्तमम्॥

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च ॥ तथर्तुदोषेणविपर्य्ययेणकुप्यंतिदोषाः पवनादयस्तु १ त्वचमाश्रित्यतेरक्तंमांसास्थीनिप्रदूष्यच ॥ घोरान्कुर्वंतिविस्फोटान्सर्वान्ज्वरपुरस्सरान् २ अग्निदग्धनिभाःस्फोटाःसज्वरारक्तपित्तजाः ॥ क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः ३ शिरोरुक्शूलभूयिष्ठंज्वरस्तृट्पर्वभेदनम् ॥ सकृष्णवर्णताचेति वातविस्फोटलक्षणम् ४ ज्वरदाहरुजास्रावपाकतृष्णाभिरन्वितम् ॥ पीत

दोहा ॥ सत्तावनयें महँ कह्यो विस्फोटकनीदान ॥
जाहि शीतलादोष सब भाषत लोग अजान १

विस्फोटक रोग वा शीतलाके दोषकेलक्षण—कड़ू खट्टा तीषा उष्ण दाहक रूषा खारी बिना अन्न पचे फिर खाना वहुत घाम में घूमना व उष्णकालआदि ऋतुके दोषसे इनकारणोंसे वातादिक दोषकोप करते हैं १ व त्वचा में स्थिर होकर वे रक्तमांस और हाड़ोंको दूषित करके घोर विस्फोटकोंको उत्पन्न करते हैं उन सब विस्फोटकोंके निकलनेके पहिले ज्वर अवश्य आताहै इसरोगको लोग शीतला कहते हैं २ विस्फोटक के स्वरूप के *लक्षण—रक्त पित्त से उत्पन्न विस्फोटक ज्वर सहित होते हैं ये* अग्निमें जल जानेवाले के फुटकों के आकारके होते हैं देहमें कहीं २ होते हैं अथवा देहभरमें निकल आते हैं वे विस्फोटक कहोतेहैं ३ वातज विस्फोटकों के लक्षण—वातज विस्फोटक के ये लक्षण हैं कि शिरमें पीड़ा होतीहै शूल बहुत उठतीहै ज्वर होता पिपासा वहुत लगती है सव जोड़ोंमें पीड़ाहोती है कुछ कालापन लिये देहके रंगके तुल्य फोड़े होतेहैं ४ पित्तज विस्फोटक के लक्षण ये हैं कि ज्वर दाह पीड़ा वहना पाकना तृष्णा इनसे फोड़े युक्त होते हैं पीले लाल मिलेहुये रंग के फोड़ेहोते

लोहितवर्णंच पित्तविस्फोटलक्षणम् ५ छर्द्यरोचकजा
ड्यानि कण्डूकाठिन्यपाण्डुता ॥ अवेदनश्चिरात्पाकी
सविस्फोटःकफात्मकः ६ कण्डूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतैस्तुक
फपैत्तिकः ॥ वातपित्तकृतोयस्तुकुरुतेतीव्रवेदनाम् ७
कण्डूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातजम् ॥ मध्येनिम्नो
न्नतोन्तेच कठिनोल्पाप्रपाकवान् ८ दाहरागतृषामोह
च्छर्दिमूर्च्छारुजाज्वरः॥ प्रलापोवेपथुस्तंद्रा सत्वसाध्य
स्त्रिदोषजः ९ रक्तारक्तसमुत्थानागुंजाफलनिभास्तथा॥
वेदितव्यास्तुरक्तेन पैत्तिकेनतुहेतुना ॥ नतेसिद्धिंसमा
यांति सिद्धैर्योगवरैरपि १० एकदोषोत्थितस्साध्यः कृ

हैं ५ कफज विस्फोटक के लक्षण—इसमें वमनहोता अरुचि हो-
ती अंगोंमें जड़ता आजाती है खजुली अधिक उठती फोड़ों में
कड़ापन रहता पाण्डु रंगके होते हैं पीड़ा कुछ भी नहीं होती व
वहुत दिनों में पकते हैं ६ कफ पित्त मिलेहुये विस्फोटक के
लक्षण—इनमें खजुली होती दाह और ज्वर होता व वमन होता
है व जो वात पित्तज होते हैं उनमें वड़ीभारी पीड़ाहोती है ७
कफ वातज विस्फोटक उनको जानना चाहिये जिन में खजुली
मन्दता व भारीपनहो व जिस विस्फोटकके फोड़ों में बीच में
खाली होजाताहै व किनारे २ ऊंचा होता है व कड़ापन रहता
पाकतेकम हैं ८ दाह ललाई पिपासा मोह वमन मूर्छा ज्वर
पीड़ा अनर्थ वकना कांपना झपान ये लक्षण होतेहैं वह असा-
ध्य होता है क्योंकि यह तीनों दोषों से उत्पन्न होता है इससे
सान्निपातिक होताहै ९ रक्तज विस्फोटकका रंगलालहोता है
जैसे कि घुंघुचीकारंग होताहै यह रक्त वा पित्तके दुष्टहोनेसेहोता
है इसमें चाहें सैकड़ों सिद्ध औषधें कोईकरे पर यहरोग सिद्ध
नहीं होता असाध्यही होताहै १० साध्य असाध्य विचार—एक

च्छ्रसाध्योद्विदोषजः॥ सर्व्वदोषोत्थितोघोरस्त्वसाध्यो भूर्य्युपद्रवः ११॥ इतिस्फोटनिदानम् ॥

कट्वम्ललवणक्षार विरुद्धाध्यशनाशनैः ॥ दुष्टनिष्पावशाकाद्यैःप्रदुष्टैःपवनोदकैः १ क्रुद्धग्रहेक्षणाच्चापिदेहेदोषाःसमुद्धताः २॥ जनयन्तिशरीरेस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः२मसूराकृतिसंस्थाना पिडिकास्स्युर्मसूरिकाः ३ तासांपूर्वंज्वरःकंडूर्गात्रभंगोरुचिर्भ्रमः ॥ त्वचिशोफःसवैवर्ण्यो नेत्ररागस्तथैवच ४ स्फोटाःकृष्णारुणारूक्षास्तीं

दोषसे उत्पन्न विस्फोटक साध्यहोतेहैं व दो दोषोंसे उत्पन्नकष्टसाध्यहोते हैं व सब दोषोंसे उत्पन्न बड़ा घोरहोताहै इससे असाध्य होताहै क्योंकि इसमें बहुत उपद्रव होते हैं हुचकी श्वास अरुचि पिपासा अंगोंका टूटना हृदयमें पीड़ा विसर्प ज्वर जीमचलाना ये सब विस्फोटकोंके उपद्रव हैं ११ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेविस्फोटकनिदानं सप्तपञ्चाशत्तमम् ॥ ५७ ॥

दोहा ॥ अट्ठावनयें महँ मसूरिकारोग निदान ॥
यही शीतलादोषकर भेद अहैनहिं आन १

मसूरिकादोषका निदान—कडू खट्टी नोनखर खारी विरुद्ध पदार्थोंके एकही संग खानेसे दुष्टपलही क्यराबआदिके शाकके खानेसे व दुष्ट वायु जलके सेवनसे १ क्रुद्धग्रहोंकी दृष्टिसे भी देहमें वात पित्त कफ क्रुद्धहोकर व दुष्टरक्तमें मिलकर शरीरमें मसुढ़ीकी तरहकी फुंसियोंको उत्पन्न करते हैं बस मसुढ़ीके डौलकी होनेसे इसरोगकी फुंसियोंको मसूरिका कहते हैं इन्हीं को लोग मसूरिकादेवी वा छोटीशीतला वा छोटी माताकहतेहैं२।३ जब ये मसूरिकायें होनेपर होती हैं तो प्रथम ज्वरआता खजुलीहोती अंगटूटते अरुचिहोती भ्रमहोता खालसूजआती है

श्चवेदनयान्विताः ॥ कठिनाश्चिरपाकाश्च भवंत्यनिल संभवाः ५ संध्यस्थिपर्वणांभेदः कासःकंपोरतिःक्लमः ॥ शोषस्ताल्वोष्ठजिह्वानांतृष्णाचारुचिसंयुता ६ रक्ताःपीताःसिताःस्फोटाःतृष्णादाहरुजान्विताः ॥ मृदवोचिरपाकाश्चपित्तकोपसमुद्भवाः ७ विड्भेदश्चविपाकश्चतृष्णा दाहारुचिस्तथा ॥ मुखपाकोक्षिपाकश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ८ रक्तजायांभवंत्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः ॥ कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवम् । हल्लासःसारुचिनिंद्रातंद्रालस्यसमन्विताः ९ श्वेताःस्निग्धाभृशंस्थूलाः कंडूरामंदवेदनाः ॥ मसूरिकाःकफोत्थाश्च चिरपाकाःप्र

देहकारंग वदलजाता व नेत्र लालहोजातेहैं ४ वातज मसूरिका के लक्षण–वातसे उत्पन्न मसूरिका काली वा लालहोती हैं व रूपी और तीव्रपीड़ासे युक्तहोती हैं कड़ीहोती इससे देरमेंपकती हैं ५ इसरोगवालेके सब संधियों में व सब ग्रन्थियोंमें हड़फूटन होती है खाँसीआती कम्पहोता सुस्तीरहती ग्लानिहोती तालु ओष्ठ और जीभ सूखजाती हैं तृषा और अरुचि दोनोंहोती हैं ६ पित्तज मसूरिकाके लक्षण–इसमें लाल पीले उजले फोड़ेहोते हैं व तृष्णा दाह अरुचि व पीड़ाहोती हैं फोड़े कोमलहोते व शीघ्रही पकजातेहैं ७ इसरोगमें मलपतला उतरता है अन्ननहीं पचता तृष्णालगती दाहहोता व अरुचिहोती मुख और नेत्रपक जाते हैं व अतिदारुण तीव्रज्वर होताहै ८ रक्तज मसूरिकारोग के लक्षण– रक्तज मसूरिकामें पित्तज मसूरिकावाले सब विकार होते हैं व कफज मसूरिकामें मुखसे कफ अधिक गिरता है देह में चटचटाहट शिरमें पीड़ा अंगभारी जीमचलाना अरुचि निंद्रा तन्द्रा आलस्य ९ व मसूरिका उजली चिकनी बहुतभारी खजु-हटवाली व थोड़ीपीड़ावाली होती है व बहुत दिनोंमें पकती हैं

कीर्त्तिताः १० नीलाश्चिपिटविस्तीर्णामध्येनिम्नामहारुजाः ॥ चिरपाकाःपूतिस्रावाःप्रभूताःसर्वदोषजाः ११ कंठरोधोरुचिस्तंद्राप्रलापारतिसंयुताः॥ दुश्चिकित्स्याःसमुद्दिष्टाःपिडिकाश्चर्मसंज्ञिताः १२ रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यःकफपित्तजाः ॥ कासारोचकसंयुक्तारोमांत्योज्वरपूर्विकाः १३ तोयबुद्बुदसंकाशास्त्वगतास्तुमसूरिकाः॥ स्वल्पदोषाःप्रजायन्तेभिन्नास्तोयंस्रवंतिच १४ रक्तस्थालोहिताकाराःशीघ्रपाकास्तनुत्वचः ॥ साध्यानात्यर्थदुष्टाश्च भिन्नारक्तंस्रवंतिच १५ मांसस्थाःकठिनाःस्निग्धा

ये कफज मसूरिकाओं के लक्षणहैं १० सन्निपातज मसूरिका नीली चिपटी बड़ी २ बीचमें खाली किनारे २ ऊँची बड़ीपीड़ा वाली बहुत दिनोंमें पकनेवाली दुर्गन्धियुक्त पीब बहानेवालीव बहुतसी होती हैं क्योंकि ये तीनों दोषोंसे होती हैं ११ चर्म्म पिड़िकाओंके लक्षण—इनमें रोगीका गलारूँधजाताहै अरुचिहोती अनर्थ बकताहै तन्द्राहोती किसी चीज़में मननहीं लगता इससे इनचर्म्म पिड़िकाओंकी औषध बड़ेदुःखसे होसकीहै १२ कफ व पित्तसे उत्पन्न रोमोंके छेदके तुल्य बहुत छोटी लाल २ फुंसियांहोतीहैं इनके होने पर खांसीआती है अरुचि होजाती है व रोमान्ति उनका नाम होता है जब येहोने पर होतीहैं तो ज्वर होता है १३ त्वगमें प्राप्तमसूरिका पानीके बुल्लाके प्रमाण की होती हैं व उनके फूटने पर उनमें से जल बहताहै ये साध्य होती हैं क्योंकि थोड़े दोषसे ये उत्पन्न होतीहैं १४ रक्तगत मसूरिका के लक्षण—रक्तसे उत्पन्न मसूरिका लालहोतीहैं व शीघ्रही पकजाती हैं इनकी खाल बहुत पतली होती हैं ये साध्यहोतीहैं बहुत दुष्ट नहीं होतीं फूटने पर इनमें से रुधिर बहता है१५ मांसगत मसूरिका बहुत कड़ी होती हैं व चिकनी होतीं पर पाक

श्चिरपाकास्तनुत्वचः । गात्रशूलोरतिकंडूमूर्च्छादाह तृषान्विताः १६ मेदोजामंडलाकारा मृदवःकिंचिदुन्नताः ॥ घोरज्वरपरीताश्चस्थूलाःस्निग्धाःसवेदनाः १७ संमोहारतिसंतापाःकाश्चित्ताभ्योविनिस्तरेत् १८ क्षुद्रागात्रसमारूक्षाश्चिपिटाःकिंचिदुन्नताः॥ मज्जोत्थाभृशसमोहवेदनारातिसंयुताः १९ छिन्दन्तिमर्मधामानि प्राणानाशुहरंतिच ॥ भ्रमरेणेवविद्धानि भवंत्यस्थीनिसर्वतः २० पक्वाभाःपिडिकास्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः ॥ स्तैमित्यारतिसंमोह दाहोन्मादसमन्विताः २१

ती बहुत दिनोंमें हैं इनकी भी त्वचा बहुत सूक्ष्म होती है इनके होने पर अंगों में पीड़ा होती है चैन नहीं पड़ती खजुली उठती है मूर्च्छा दाह व तृषा उत्पन्न होतीहै १६ मेदस् में गतमसूरिका गोल होतीं व कोमल होती हैं कुछ ऊपरको उठीहुईहाती हैं इन में ज्वर बड़ा घोर होता है चिकनी होतीं व मोटी २ होतीं पीड़ा बहुतही होती है १७ सम्मोह अप्रीति व सन्ताप बहुत होता है इनसे कोई बचजाता है तो बचता है नहीं तो मरही जाता है १८ मज्जामें गत फुंसियोंके लक्षण—येबहुतछोटी २ होती हैं व इनका रंग देहके रंगही के समान होता है रूपीहोती हैं व चिपटी रहती हैं कहीं २ कुछेक ऊँची भी रहती हैं इन में सम्मोह पीड़ा व अप्रीति होती है १९ ये सुकुमार स्थानों को काटतीहैं व प्राणोंको शीघ्र हरती हैं इनके होने पर देह भर के हाड़ ऐसे पिराते हैं जैसे भवँरोंके काटनेमें पिराते हैं २० शुक्रगत फुंसियोंके लक्षण—जब फुंसियां शुक्रगत होती हैं तो पकीसी चिकनी होती हैं व पीड़ा बहुत होता है शरीरशिथिल होजाता है प्रीतिजाती रहती है मोह दाह और उन्माद होते हैं २१ बस शुक्रज मसूरिका में येही लक्षण होते हैं केवल

शुक्रजायांमसूर्यांतु लक्षणा निभवंतिहि ॥ निर्दिष्टंकेवलं चिह्नं दृश्यतेनतुजीवितम् २२ दोषमिश्राश्चसप्तैता द्रष्टव्यादोषलक्षणैः ॥ त्वग्गतारक्तजाश्चैव पित्तजाःश्लेष्मजास्तथा २३ श्लेष्मपित्तकृताश्चैव सुखसाध्यामसूरिकाः ॥ एताविनापिक्रियया प्रशाम्यंतिशरीरिणाम् २४ वातज्ञावातपित्तोत्थाः श्लेष्मवातकृताश्चयाः ॥ कृच्छ्रसाध्यामतास्तास्तुयत्नादेताउपाचरेत् २५ असाध्याः सन्निपातोत्थास्तासांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥ प्रवालसदृशाः काश्चित्काश्चिज्जंबूफलोपमाः २६ लोहजालनिभाःकाश्चिदतसीफलसन्निभाः ॥ आसांवहुविधावर्णा सायंते दोषभेदतः २७ कासोहिक्काप्रमेहश्च ज्वरस्तीव्रःसुदारुणः ॥ प्रलापश्चारतिर्दाहस्तृष्णामूर्च्छातिघूर्णिता २८

लक्षण तो वतादिये हैं पर रोगीकाजीना इसरोगमें नहीं दिखाई देता है २२ दोषोंके लक्षणों से इनसातो मसूरिकाओं को सब दोषोंसे मिश्रितजानना चाहिये त्वचामें गतरक्तज पित्तज कफज व कफपित्तज ये मसूरिका सुखसाध्यहोती हैं येबिना औषधादि करनेपरभी अपनेआपशान्तहोजाती हैं २३ वातज व वातपित्तज वात कफज येकष्टसाध्यहोतीहैं इससे यत्नसे इनकी औषधकरनी चाहिये २४ सन्निपातसे उत्पन्न मसूरिका असाध्य होतीहैं उनके लक्षणकहतेहैं कोई २ मसूरिका तोमूँगाके तुल्य होती हैं व कोई २ फरेंदेके फलोंके तुल्यहोतीहैं २५ व कोई २ लोहकेजाल के समान होतीहैं कोई २ अलसीकी बोंड़ीके तुल्यहोतीहैं इनके दोषोंके भेदों से नानाप्रकारके रंग होते हैं २६ खांसी हुचकी तीव्रज्वर अति दारुण अनर्थ बकना अप्रीति मूर्छा तृषा दाह घुमनी २७ मुखसे रक्त गिरना व नासिका और नेत्रों से भी रक्त

मुखेनप्रसवेद्रक्तं तथाघ्राणेनचक्षुषा ॥ कंठेघुर्घुरकंकृत्वा श्वसित्यत्यर्थदारुणम् २९ मसूरिकाभिभूतोयो भृशंघ्राणेननिःश्वसेत् ॥ सभृशंत्यजतिप्राणांस्तृष्णार्त्तोवायुदूषितः ३० मसूरिकांतेशोथःस्यात्कूर्परेमणिबंधके ॥ तथांसफलकेचापि दुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ३१ ॥

इतिमसूरिकानिदानम् ॥

स्निग्धासवर्णाग्रथिता नीरुजामुद्गसन्निभा ॥ कफवातोत्थिताज्ञेया बालानामजगल्लिका १ यवाकारासुकठिना ग्रथितामांससंश्रिता ॥ पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यां यवप्रख्येतिसामता २ घनामवक्त्रांपिडिकामुन्नतांपरिमं

का चूना कण्ठमें घुरघुर शब्द करके बड़े कष्टसे श्वासलेना २८ व जो मसूरिका से व्याकुल होताहै वह नासिकासेही श्वास ले सक्ताहै मुखसे नहीं तृष्णा बहुत लगती है ऐसा वायु से दूषित रोगी प्राणोंको त्यागही देताहै २९ जब मसूरिकाके पीछे रोगीके जंघा कलाई कांधेपर जो सूजन होतीहै तो व अतिदारुण होती है इससे बड़ेदुःख से चिकित्सा करने के योग्य होती है ३० ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमसूरिकानिदानमष्टपञ्चाशत्तमम् ५८ ॥

दोहा ॥ उनसठयें महँ कहसकल क्षुद्रकरोग निदान ।
जोहैं विविध प्रकारके विविधनाम बलवान ॥

बालकोंके चिकनी उन्हीं के रंगकी गांठेंसी पीड़ा रहित मूँग भर २ की कफ वातसे उत्पन्न फुंसियां होतीहैंउन्हें अजगल्लिका कहतेहैं १ यवके आकारकी बहुत कठिन गांठें सरीखी मांस के आश्रित कफ और वातसे उत्पन्न फुंसियों को यवप्रख्या कहते हैं २ घनी विना मुखकी ऊँची गोली फुटकियां कफ व वात से होती हैं पीब बहुतही कम निकलती है उनको अन्धालजी वा

डलाम् ॥ अंधालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफवातजाम् ३ विवृतास्यांमहादाहां पक्वोदुम्बरसन्निभाम् ॥ परिमण्डलाम्पित्तकृतां विवृतान्नामतोविदुः ४ ग्रथिताः पञ्चवा षड्वा दारुणाःकच्छपोन्नताः ॥ कफानिलाभ्याम्पिडिकां ज्ञेयाकच्छपिकाबुधैः ५ ग्रीवांशकक्षाकरपाददेशे संधौ गलेवात्रिभिरेवदोषैः ॥ ग्रंथिःसवल्मीकवदक्रियाणां जातःक्रमेणैवगतःप्रवृद्धिम् ६ मुखैरनेकैःस्रुतितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पतिचोन्नताग्रैः ॥ वल्मीकमाहुर्भिषजोविकारं निःप्रत्यनीकंचिरजंविशेषात् ७ पद्मकर्णिकवन्मध्ये पिडिकाभिःसमाचिताम् ॥ इन्द्रविद्धंतुतांविद्याद्वातपित्तोत्थितांभिषक् ८ मंडलंवृत्तमुत्सन्नंसरक्तंपिडिकाचितम् ॥

अँधोरी कहते हैं ३ मुँहखुली हुई बड़े दाहवाली पकीगूलर भर २ की गोली २ पित्तसे जो फोड़ियां होती हैं उनको विवृता कहते हैं ४ गँठिलाई हुई पांच व छः दारुण कछुहेकी पीठके समान ऊँची कफ व बात से जो फोड़ियां होती हैं उनको पण्डितलोग कच्छपिका कहते हैं ५ गला कांधा कांख हाथ पादोंमें वा जोड़ों पर वा गले के जोड़ पर तीनों दोषों से जो ग्रन्थि ब्यमौर वा बामी के आकारकी होती है उसका उपाय न करने से क्रम से बढ़जाती है ६ उस में अनेक मुख होजाते हैं उनसे पीब वा पानी बहता है कोंचने कीसी पीड़ा होती है व आगे को ऊँची होकर विसर्प रोगकी नाईं फैलती जाती हैं इस विकार को वैद्य लोग वल्मीक कहते हैं व औषध न करने से जब यह रोग प्राचीन होजाता है तो फिर नहीं मिटता ७ बात पित्त से उत्पन्न कमल की कली की तरह मध्य में व किनारे २ अन्य फुंसियों से घिरी हुई जो फुँसी होती है उसे इन्द्रवृद्धा कहते हैं ८ बात पित्त से उत्पन्न गोला ऊँचा लाल जो चकंधा पड़ता है व

रुजाकरींगर्दभिकांतांविद्याद्वातपित्तजां ६ वातश्लेष्मस मुद्भूतश्श्वयथुर्हनुसंधिजः ॥ स्थिरोमंदरुजःस्निग्धोज्ञेयः पाषाणगर्दभः १० कर्णस्याभ्यंतरेजातांपिडिकामुग्रवेद नाम् ॥ स्थिरांपनसिकांतांतुविद्याद्वातकफोत्थिताम् ११ विसर्पवत्सर्पतियःशोथःस्तनुरपाकवान् ॥ दाहज्वरकरः पित्तात्सज्ञेयोजालगर्दभः १२ पिडिकामुत्तमांगस्थांवृत्ता मुग्ररुजाज्वराम् ॥ सर्वात्मिकांसर्वलिंगां जानीयादिरवि ल्लिकाम् १३ वाहुपार्श्वांसकक्षेषुकृष्णस्फोटांसवेदनां ॥ पित्तकोपसमुद्भूतां कक्षामित्यभिनिर्दिशेत् १४ एकामे तादृशींदृष्ट्वापिडिकांस्फोटसन्निभाम् ॥ त्वग्गतांपित्त

उसके चारों ओर छोटी २ पिरकियां होती हैं व पीड़ा करती है उसको वैद्य गर्दभिकानाम से प्रसिद्ध जाने ६ व वात कफ से उ-त्पन्न चौहड़ी की सन्धि पर जो शोथ होता है व स्थिर रहताहै पीड़ा उसमें थोड़ी होती है चिकना होताहै उसे पाषाण गर्दभ नाम रोग जानना चाहिये १० व वात कफ से उत्पन्न उग्रपीड़ा वाली फुंसी जो कानके भीतर में होती है उसका पनसिकानाम जानना चाहिये ११ व जो पित्त से उत्पन्न होकर विसर्प रोगके तुल्य इधर उधर फैलता रहताहै शोथ थोड़ाही होता है और प-कतानहीं दाह व ज्वर को करताहै उसे जाल गर्दभरोग कहते हैं कहीं २ के लोग भाषा में इसी को भौंतुआभी कहते हैं १२ वात पित्त कफ तीनों से बड़ीपीड़ा करनेवाली गोल सबदोषों के चिह्नों से युक्त शिर में जो पिटिका होती है जिसमें कि ज्वरभी होता है उसे इरवेल्लिका कहते हैं १३ वाहु कांख कांधे व पशुरियोंमें बड़ी पीड़ा करातीं हुई पित्त के कोप से उत्पन्न काले रंग की फोड़िया होती हैं उसे कक्षा कहते हैं व देश भाषा में उसी को कँखवारि कहते हैं कहीं २ कँखौरी भी कहते हैं १४ जो इसी प्रकार की

कोपेनगन्धनाम्नींप्रचक्षते १५ कक्षाभागेषुयेस्फोटा जा यन्तेमांसदारणाः ॥ अन्तर्दाहज्वरकरादीप्तपावकसन्निभाः १६ सप्ताहाद्वादशाहाद्वा पक्षाद्वाहन्तिमानवम् ॥ तामग्निरोहिणींविद्यादसाध्यांसान्निपातिकीम् १७ नख मांसमधिष्ठाय पित्तंवायुश्चदेहिनाम् ॥ कुर्व्वातेदाहपाकौच तंव्याधिंचिप्पमादिशेत् ॥ तदेवाल्पतरैर्दोषैःकुनखम्परुपंवदेत् १८ गम्भीरामल्पसंरम्भां सवर्णामुपरिस्थिताम्॥ पादस्यानुशयीन्तान्तुविद्यादन्तःप्रपाकिनीम् १९ विदारीकन्दवद्वृत्ता कक्षावंक्षणसन्धिषु ॥ विदारिकाभवेद्रक्ता सर्वजासर्व्वलक्षणा २० प्राप्यमांसंशिराः

एक फुंसी अन्य फोड़ों कीसी खचा परहो व पित्तसे उत्पन्न हुई होतो उसेगन्धनाम्नीकहतेहैं देशभाषामें इसे गँधौलीकहतेहैं १५ कँखरीके आसपास व कँखरीही में जो सन्निपातसे फोड़े उत्पन्न होतेहैं व मांसहो गलादेते हैं व भीतरमेंदाह और ज्वरको करते रहतेहैं व प्रज्वलित अग्निकेतुल्य उष्णहोतेहैं १६ वे सातदिनमें व बारहदिनमें अथवा पन्द्रहदिनमें मनुष्यको मारडालतेहैं उन फोड़ोंको अग्निरोहिणी कहतेहैं यह स्फोटकसमूह असाध्यहोता है १७ वात और पित्त दोनों प्राणियोंकेनखों व मांसमें प्राप्तहोकर दाह व पाकको करतेहैं उसव्याधिको चिप्पकहतेहैं व इसीमें जो कुछ थोड़ेही दोषहोंतो इसीको कुनख कहते हैं १८ पादकेऊपर पैरकेचर्मकेही रंगकी छोटीसी व गहरीफोड़िया होती हैं व उस के भीतर में पकजाता है उसे अनुशयी कहते हैं १९ बिलारीकन्दकीनाईं गोल कांखमें वा जांघोंके पट्ठोंमें अथवा किसी जोड़ पर लालरंगकी व वातादि तीनों दोषों के लक्षणोंसे युक्त होती है उसे विदारिका कहते हैं २० कफ मेदस् और वात मांस व छोटी बड़ी नसोंमें पहुँचकर मधुवृत और वसाके आकारकीगांठ

त्सन्नमरुजं मण्डलंकफरक्तजम् ॥ सहजंलक्ष्मचैकेषां लक्ष्योजंतुमणिस्तुसः ३४ अवेदनंस्थिरंचैवयस्मिन्गात्रेप्रदृश्यते ॥ माषवत्कृष्णमुत्सन्नं वातान्माषकमादिशेत् ३५ नीलानितिलमात्राणि नीरुजानिसमानिच ॥ वातपित्तकफोत्सेकानान्विद्यात्तिलकालकान् ३६ महद्वायदिवास्वल्पंश्यावंवायदिवासितम् ॥ नीरुजम्मण्डलंगात्रेन्यच्छमित्यभिधीयते ३७ क्रोधायासप्रकुपितोवायुः पित्तेनसंयुतः ॥ मुखमागत्यसहसा मण्डलंविसृजेत्ततः ॥ नीरुजंतनुकंश्यावम्मुखेव्यंगंतमादिशेत् ३८ कृष्णमेव

उठा हुआ पीड़ारहित मण्डल जन्मके साथही से मनुष्यमात्र के किसी न किसीअंगपर होताहै उसे कोई लक्ष्म कोई लक्षण कोई लक्ष्य व कोई जन्तुमणि कहते हैं इसका अंग विशेष पर होने से फल विशेषहोताहै ३४ पीड़ारहित स्थिर जहाँ होता है वहीं रहताहै जिसी किसी अंगपर माष अर्थात् उड़दकी नाईं दिखाई देता है बहुधा काला होताहै और ऊपर को उठा हुआहोताहै यह वायुके दोषसे होताहै इसको माष कहते हैं लोक में मसा कहते हैं अंगके अनुसार इसकेभी शुभाशुभ फल होतेहैं ३५ व वात पित्त कफोंके कोपसे काले २ तिलों के समान सम व पीड़ारहित जो शरीरपर होतेहैं उनको तिलकालक कहते हैं व लोकमें तिल कहते हैं ३६ और बड़ा वा अतिछोटा काला वा उजला पीड़ारहित मण्डल जो किसी अंगमें होता है उसे न्यच्छ कहते हैं ३७ पित्तयुक्त वायु क्रोध व श्रमसे कुपित होके मुखमें आकर एकाएकी मुखके ऊपर श्यामता लिये पीड़ारहित मण्डल वा चकँधा करदेता है वह बहुत पतला होता है टोनेसे नहीं जानपड़ता उसे व्यंग कहते हैं व लोकमें भाईं कहते हैं ३८ इसी प्रकारका मण्डल मुखमें वा अन्य किसी अंग में हो

गुणं गात्रे मुखेवा नीलिकांविदुः ३९ मर्द्दनात्पीडनाद्वापि तथैवाप्यभिघाततः । मेढ्रचर्म्मयदावायुर्भजतेसर्व्वतश्चरन् ४० तदावातोपसृष्टत्वात्तच्चर्मपरिवर्त्तते ॥ मणेरधस्तात्कोशस्तु ग्रंथिरूपेण लंबते ४१ सवेदनंसदाहञ्च पाकञ्चव्रजतिक्कचित्॥ परिवर्त्तिकांतुतांविद्यात्सरुजांवातसम्भवाम् ४२ सकंडूःकठिनाचापिसैवश्लेष्मसमुत्थिता ४३ अल्पीयस्स्त्रांयदाहर्षाद्बलाद्गच्छेत्स्त्रियन्नरः ॥ हस्ताभिघातादथवाचर्मण्युद्वर्तितेबलात् ४४ मर्द्दनात्पीडनाद्वापिशुक्रवेगविघाततः ॥ यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकाम्४५वातोपसृष्टेमेढ्रेतु चर्मसंश्रयतेमणिम् ॥ मणिश्चर्मोपनद्धस्तु मूत्रस्रोतोपिनद्धिच ४६ निरुद्धप्र

तो उसे नीलिका कहते हैं ३९ मर्दन करने से व रगड़ने से अथवा किसी प्रकार की चोट लगजानेसे सब कहीं घूमता हुआ पवन लिंगके चर्म्ममें पहुँचता है ४० तब वायुके कुपितहोने के कारण लिंग की खाल कुछ घूमजाती है इससे लिंग के अग्रभाग के नीचे की खाल में गाँठ परके लटकने लगती है ४१ उसमें पीड़ा दाहहोता है कभी २ पकभी जाती है तब अधिक पीड़ा होती है यहरोग वात से होता है व परिवर्त्तिका इसका नाम है ४२ व जिसमें पीड़ा नहीं होती खजुली होती है व कड़ीहोती है वह कफसे होती है वात से नहीं ४३ जबकोई पुरुष नवीन स्त्रीके संग बड़े हर्षसे अचानक बलके साथ मैथुन करने लगताहै अथवा जबरदस्ती किसी स्त्रीके संग भोग करता है उस खींचा खाँची से अथवा किसी कारण कड़े हाथके धक्के के लगजाने से अथवा जोरसे उसके चमड़े के उघारने से ४४ मर्द्दनकरने से वा रगड़ने से अथवा शुक्रके वेगके रोकने से लिंगके ऊपरका चर्म्म फटजाताहै उस रोगको अवपाटिका कहते हैं ४५ पवन के योग से लिंग का

कशेतस्मिन्मन्दधारमवेदनम् ॥ मूत्रम्प्रवर्त्ततेजंतोर्मणि विव्रियतेनच ॥ निरुद्धप्रकशंविद्यात्सरुजंवातसंभवम् ४७ वेगसंधारणाद्वायुर्विहतोगुदसंश्रितः ॥ संरुणद्धि महत्स्रोतः सूक्ष्मद्वारंकरोतिच ४८ मार्गस्यसौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेणपुरीषंतस्यगच्छति ॥ संनिरुद्धगुदंव्याधिमेनंविद्यात्सुदारुणम् ४९ शकृन्मूत्रसमायुक्ते धौतेपानेशिशोर्भवेत् ॥ खिन्नेवास्नाऽथमानेवाकंडूरक्तकफोद्भवा ५० कंडूयनात्ततःक्षिप्रं स्फोटस्रावश्चजायते ॥ एकीभूतंव्रणं घोरंतंविद्यादहिपूतनम् ५१ स्नानोत्सादनहीनस्यमलोष्ठ

चर्म्म सूजजाताहै व शिश्नके अग्रभाग पर बढ़जाताहै इससे लिंग का अग्रभाग जिसे मणि कहते हैं बन्द होजाताहै व वह मूत्रके मार्गको रोंकताहै ४६ जब इस प्रकार मूत्र मार्ग ढकजाता है तो मूत्रकीधार मन्द होजाती है पर पीड़ा नहीं होती थोड़ा २ करके मूत्र उतरता है व मणिका मुख खोलने से नहीं खुलता फिर पीड़ा होने लगती हैं जब कि खाल खींचकर मणि को खोलना चाहते हैं यह रोग बात से उत्पन्न होताहै व निरुद्ध प्रकश इसका नाम है ४७ गुदमें रहने वाला अपान वायु मल के रोंकने पर कुपित होकर गुदके छिद्रको रूँध लेताहै व छोटासा करदेताहै ४८ तो मार्ग छोटे होजानेके कारण बड़े कष्टसे उसका मल बाहर निकलता है इस महादारुणरोग कानाम सन्निरुद्धगुद है ४९ जब बालककी गुद मलमूत्र करनेपर धोई नहींजाती वा लड़का घाममें अधिकफिरताहै वा बहुत शीतजलसे नहाताहै तो रक्त व कफ के कोपसे उसकी गुदमें खजुली उठतीहै ५० तब खुजलाने से शीघ्र फोड़ा होताहै वह फूटकर बहने लगताहै बस सबइकट्ठे होकर घोर घावहोजाताहै उसका अहिपूतन नामहै ५१ जो मनुष्य स्नान के समय अच्छेप्रकार गलहरी का मैल नहीं

षणसंश्रितः ॥ यदाप्रक्लिद्यतेस्वेदात्कंडूंसञ्जनयेत्तदा ५२ कण्डूयनात्ततःक्षिप्रं स्फोटःस्रावश्चजायते ॥ प्राहुर्वृषण कच्छूंतां श्लेष्मरक्तप्रकोपजाम् ५३ प्रवाहिकातिसारा भ्यां निर्गच्छतिगुदंवहिः ॥ रूक्षदुर्बलदेहस्य तंगुदभ्रं शमादिशेत् ५४ सदाहोरक्तपर्यंतस्त्वक्पाकीतीव्रवेदनः कण्डूमान्ज्वरकारीच सस्याच्छूकरदंष्ट्रकः ५५ ॥

इतिक्षुद्ररोगनिदानम् ॥

दन्तेष्वष्टावोष्ठयोश्च मूलेषुदशपञ्चच ॥ कण्ठेत्रय स्सर्वसरा एकषष्टिचतुःपरे १ आनूपपिशितक्षीर दधि

मलकर धोते मल उनके अण्डकोशों में जमजाताहै वह जब गर्मीके कारण पसीना होताहै तो खजुलाने लगताहै ५२ व फिर खजुलाने से शीघ्रही वहांपर फोड़ा होजाताहै व फूटकर बहने लगताहै इसरोगको वृषणकच्छू कहते हैं व कफ रक्त के कोप से यह होती है ५३ रूखी व दुर्बल देहवाले पुरुषको जोर से कांखकर दिशा फिरने से अथवा अतीसार रोगहोने से गुद बाहर को निकल आती है इसरोगको गुदभ्रंश कहते हैं व देशभाषा में कांच निकलना कहते हैं ५४ जो रोग दाह सहितहो व उसके किनारे लालहों त्वचा पकगई हो पीड़ाबड़ी करता हो खजुआता हो व ज्वर भी उसके कारण से आताहो उसे शूकरदंष्ट्र रोग कहते हैं ५५ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादे क्षुद्ररोग निदानमूनषष्टितमम् ॥ ५९ ॥

दो० ॥ सठयें महँ मुखरोग के भाषे सकल निदान ॥
जिन्हें लखत अल्पज्ञहू होते वैद्य सुजान १

मुख रोगों के निदान कहते हैं दांतों में ८ रोग होते हैं व ओठों में भी ८ होते हैं व दांतोंकी जड़ों में १५ तालुमें ९ जीभ

मांषादिसेवनात् ॥ मुखमध्येगदान्कुर्य्युः क्रुद्धादोषाःक फोत्तराः २ कर्कशौपरुषौस्तब्धौ कृष्णौतीव्ररुजान्वितौ ॥ दाल्येतेपरिपाट्येते ओष्ठौमारुतकोपतः ३ चीयेतेपिडिकाभिश्च सरुजाभिःसमन्ततः ॥ सदाहपाकपिडिकापीताभासौचपित्ततः ४ सवर्णाभिस्तुचीयेते पिडिकाभिरवेदनौ ॥ भवतस्तुकफादोष्ठौ पिच्छिलौशीतलौगुरू ५ सकृत्कृष्णौसकृत्पीतौ सकृच्छ्वेतौतथैवच ॥ सन्निपातेनविज्ञेयावनेकपिडिकान्वितौ ६ खर्जूरीफलवर्णाभिः पिडिकाभिर्निपीडितौ ॥ रक्तोपसृष्टौरुधिरं स्रवतःशोणितप्रभौ ७ मांसदुष्टौगुरूस्थूलौ मांसपिण्डवदुद्गतौ ॥ जं

में ५ कण्ठरोधक १७ व सर्व्वसर ३ ये सब मिलकर ६५ रोग गले से ऊपर भाग में होते हैं १ मुखरोगोंकी सम्प्राप्ति जलचारी वा जल के किनारे रहने वाले जन्तुओंका मांस दुग्ध दधि व उर्द की वस्तु आदि एकही संग खाने से कफ की अधिकता से युक्त दोष क्रुद्ध होकर मुखके भीतर रोगोंको करते हैं २ वायु के कोपसे कर्कश कड़े तनेहुये काले तीव्र पीड़ासे युक्त दोनों ओष्ठ होजाते हैं इसहेतु उनमें पीड़ा होने लगती है व फिर फटजाते हैं ३ व पित्त के दोषसे ओठोंपर चारों ओर से पीड़ा सहित फुटके पड़जाते हैं उनमें दाह होने लगताहै व उनका रंग पीला होताहै ४ कफ के दोषसे दोनों ओठोंपर ओठही के रंगके फुटके पड़जाते हैं पर उनमें कुछ पीड़ा नहींहोती व ओठ चिकने शीतल व गरू ये होजाते हैं ५ जब ओष्ठों में अनेक फुटके पड़े व कभी कालेहोजायँ कभीपीले कभीउजले तोउनको सन्निपातसे उत्पन्न जानना चाहिये ६ रक्तकी खराबीसे ओष्ठके खजूरके फलोंके रंगके फुटकों से युक्तहो पीड़ित होते हैं व रुधिर टपकनेलगताहै ओठ रुधिर के रंगके होजाते हैं ७ मांस दुष्ट होजानेसे दोनों ओष्ठ भारीमोटे

तवश्चात्रमूर्च्छंति नरस्योभयतोमुखात् ८ सर्पिर्मण्डप्र तीकाशौमेदसाकण्डुरौगुरू ॥ अच्छंस्फटिकसंकाश मा स्रावंस्रवतोभृशम् ॥ तयोर्व्रणोनसंरोहेन्मृदुत्वंनैवगच्छ ति ९ ओष्ठोपर्य्यवदीर्य्येतेपीड्येतेचाभिघाततः ॥ग्रथि तौचतदायातौ कण्डूक्लेदसमन्वितौ १० शोणितन्दन्त वेष्टेभ्यो यस्याकस्मात्प्रवर्त्तते ॥ दुर्गंधीनिसकृष्णानि प्र क्लेदीनिमृदूनिच ११ दन्तमांसानिशीर्य्यंते पचंतिचपर स्परम् ॥ सीतादोनामसव्याधिः कफशोणितसंभवः १२ दंतयोस्त्रिषुवायस्य श्वयथुर्जायतेमहान् ॥ दंतपुप्पुटको नाम सव्याधिःकफरक्तजः १३ स्रवंतिपूयंरुधिरं चला

मांसके पिण्डकीनाईं ऊँचे होजाते हैं व दोनों ओठों में अथवा एकही में उस मांस पिण्ड में कीड़े पड़जाते हैं ८ जब मेदस् में विकार होजाता है तो उसके कारण दोनों ओठों पर घृत के मॉड़ के तुल्य छाजाताहै इससे ओठ खजुलाने लगते हैं व भारी होजाते हैं व उनसे फिटकरी के तुल्य उज्ज्वलारस बहने चूने ल- गता है व ओठोंकाघाव नहीं पूरता व न उनमें कोमलता आती है ९ व जब ओष्ठोंमें किसीप्रकारकी चोट लगजाती है तो फट- जाते हैं व पीड़ाहोने लगतीहै फिर उनमें गाँठ पड़जाती हैं उन में खजुली उत्पन्नहोती है व कुछ लजभर पानी बहने लगताहै १० जिसके मुसुकुरों से अकस्मात् रुधिर बहता है उसके दांतोंके मांस दुर्गन्धियुक्त काले कोमल व टीसतेरहते हैं ११ व फटजाते हैं फिर परस्पर मिलकर पकउठतेहैं यह रोग कफ और रुधिरके कोपसे होता है व सीताद इसकानामहै १२ जिसके दो वा तीन दांतोंके मसुकुरोंमें बड़ी सूजन होआतीहै उसके कफ व रक्त के कोपसे दन्त पुप्पुटनामसे प्रसिद्ध रोगहोताहै १३ दुष्टरुधिर होनेके कारण दांतोंकीजड़से पीव रुधिर बहनेलगते हैं व दांतहिलनेलग-

दंताभवंतिच॥दंतवेष्टःसविज्ञेयो दुष्टशोणितसंभवः १४ श्वयथुर्दंतमूलेषु रुजावान्कफरक्तजः ॥ लालास्रावीस विज्ञेयः सौषिरोनामनामतः १५ दंताश्चलंतिवेष्टेभ्य स्तालुचाप्यवदीर्यते ॥ यस्मिन्ससर्व्वजोव्याधिर्म्महासौ षिरसञ्ज्ञकः १६ दंतमांसानिशीर्य्यंते यस्मिन्ष्ठीवति चाप्यसृक् ॥ पित्तासृक्कफजोव्याधिर्ज्ञेयःपरिदरोहिसः १७ वेष्टेषुदाहपाकश्च ताभ्यांदंताश्चलंतिच ॥ अवा क्कृताःप्रस्रवंति शोणितं मंदवेदनाः १८ आध्मायंतेस्रु तेरक्तेमुखेपूतिश्चजायते ॥ यस्मिन्नुपकुशोनामपित्तरक्त कृतोगदः १९ धृष्टेषुदंतमूलेषु संरंभोजायतेमहान् ॥ भ वंतिचंचला दंताः सवैदर्भोभिघातजः २० मारुतेनाधि

तेहैं इसरोगका दन्तवेष्टनामहै १४ कफ व रक्त के विकारसे दाँतों की जड़ोंमें पीड़ायुक्त सूजन होतीहै व लार वहनेलगतीहै इसरोग को सौपिर कहते हैं १५ व जिसमें मुसुकुरों से सब दांत हिलने लगते हैं व तालुभी फटजाती है यहरोग वातादिक तीनोंके कोपसे होता है व महासौपिर इसकानामहै १६ जिसरोगमें थूँकने पर रुधिर बहता है उसमें दाँतोंका मांस गलताहै यहरोग पित्त रक्त व कफसे उत्पन्न होताहै व परिदर इसकानामहै १७ जिस रोगमें मुसुकुरों में दाहहो व पक जायँ इनदोनों के कारण दाँत हिलनेलगें व बोलने में कष्टहो व रुधिर सबोंसे बहतारहै पीड़ा थोड़ी २ होतीरहै १८ व रक्त बहजानेके पीछे फिर मुसुकुर सूज आवें व मुख में दुर्गन्धि आनेलगें यहरोग पित्त और रक्तसे उत्पन्नहोता है व उपकुश इसकानाम होता है १९ मुसुकुर परस्पर रगड़जानेसे सूजनहोआतीहै व दाँत हिलने लगतेहैं यहरोगलाठी आदिकी चोटलगनेसे होताहै इसका वैदर्भनामहै २० वायु के योगसे दाँतके ऊपर दूसरादाँत जमआताहै उस में बड़ीपीड़ा

कोदंतो जायतेतीव्रवेदनः ॥ खल्लीवर्द्धनसंज्ञोसौ जाते रुक्चप्रशाम्यति २१ शनैःशनैःप्रकुरुते वायुर्दंतसमाश्रितः ॥ करालान्विकटान्दन्तान्करालोनससिद्ध्यति २२ हानव्येपश्चिमेदंते महाशोफोमहारुजः लालास्रावीकफकृतो विज्ञेयःसोधिमांसकः २३ दंतमूलगतानाड्यः पंचज्ञेया यथेरिताः २४ दार्यमाणेष्विवरुजाः । भृशंदंतेषु जायते ॥ दालनोनामसव्याधिः सदागतिनिमित्तजः २५ कृष्णच्छिद्रश्चलस्स्रावी ससंरम्भोमहारुजः ॥ अनिमित्तरुजोवातात्सज्ञेयःकृमिदंतकः २६ वक्रंवक्रंभवेद्य

होतीहै जब वनाप जमआता है तो पीड़ा बन्द होजातीहै इस रोगको खल्लीवर्द्धन कहतेहैं २१ वायु दाँतोंकी जड़ों में रहता है व धीरे २ दाँतों को टेढ़ेमेढ़े कराल करदेता इसीसे इसनामसे प्रसिद्धरोगहोजाताहै यह करालनाम रोग असाध्य होता है २२ चौहड़ी के पीछेवाले दाँत के पीछे बहुतसा मांस सूजआता है उसमें बड़ीपीड़ा होती है व लार चूती रहती है इस रोगको अधिमांसक कहते हैं व कफाधिक्य से यह होताहै २३ जैसे नाड़ीव्रणके निदान में वात पित्त कफ सन्निपात आगन्तुक नाम से प्रसिद्ध ५ नाड़ी व्रण कहआये हैं वैसेही दाँतोंकी जड़ों में भी ५ प्रकारके नाड़ी व्रणहोते हैं २४ जिससे दाँतों में फटे जातेकीसी पीड़ा होतीहै उसरोग का दालन नाम है और यह सदा गति कहे वायु के निमित्तसे होताहै २५ जिसरोग से दाँत में काला छेद होजाता है वह दाँत हिलने लगताहै व उसमें से कुछ बहता भी रहताहै सूज आता व बड़ी पीड़ा होने लगती है वहपीड़ा योंही विनाकारण के हुआकरती है, यहरोग वातसे होता है व कृमिदन्त इसका नाम है २६ जिसका मुख टेढ़ा होजाताहै व दाँत टूटजाते हैं यहरोग कफ वात से होता है व

स्य दंतभंगश्चजायते ॥ कफवातकृतोव्याधिः सभंजन कसंज्ञितः २७ शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहाद्दि जाः ॥ पित्तमारुतदोषेण दंतहर्षःसनामतः २८ मलोदं तगतोयस्तु पित्तमारुतशोषितः ॥ शर्करेवखरस्पर्शा साज्ञेयादंतशर्करा २९ कपालेष्विवदीर्णेषु दंतानांसैव शर्करा ॥ कपालिकेतिविज्ञेया सदादंतविनाशिनी ३० योसृग्मिश्रेणपित्तेन दग्धोदंतस्त्वशेषतः ॥ श्यावतांनी लतांवापिगतःसश्यावदंतकः ३१ वातेनतैस्तैर्भावैस्तु हनुसन्धिविसंहतः ॥ हनुमोक्षइतिज्ञेयो व्याधिरर्दितल क्षणः ३२ जिह्वानिलेनस्फुटिताप्रसुप्ता भवेच्चशाकच्छ

दन्तभञ्जन इसका नामहै २७ जिस रोगमें शीत रूखा पदार्थ खट्टा इनको दाँत नहीं सहसके उसरोगका दन्तहर्षनाम है व पित्तवात के कोपसे वह होता है २८ जिसरोग में दाँतों का मैल पित्तवातसे सूखजाताहै फिर वालूकीनाईं खिसखिसाने लगताहै उसरोगको दन्त शर्करा कहते हैं २९ जिस दाँतमें ऐसामैल जम जाय कि उसकी खिसखिसाहटसे मानो मुंढही फटाजाताहै इस दन्तनाशक रोगको कपालिका रोग कहते हैं ३० जो दांत रक्तमि-लेहुये पित्त से जलकर सब का सब काला वा नीलाहोजाय वह रोग श्याव दन्तक कहाता है ३१ वातसे वा अन्य २ किसी योग से जिसकी दाढ़ी का जोड़ अपने स्थान से उखड़ जाय उसरोग कोहनुमोक्ष कहते हैं उसके अर्दित रोगके से लक्षण होते हैं ३२ वातसे जब जीभ फटजाती है उसको किसी वस्तुका स्वादनहीं जानपड़ता व शाकके पत्ते के तुल्य वह खरखरी होजाती है यह एक जिह्वा का रोगहै व पित्तके योग से जब जीभपीली होजाती है तो वह जलने लगती है व लम्बेलाल कांटे भी जीभ के ऊपर होजाते हैं व कफसे जब जिह्वा युक्त होती है तो गरू व बड़ी

दनप्रकाशा ॥ पित्तेनपीतापरिदह्यतेचदीर्घैःसरक्तैर पिसंकटैश्च ॥ कफेनगुर्वीबहुलाचिताच मांसोच्छ्रयैःशा ल्मलिकंटकाभैः ३३ जिह्वातलेयःश्वयथुःप्रगाढः सोला ससंज्ञःकफरक्तमूर्त्तिः ॥ जिह्वांसतुस्तम्भयतिप्रवृद्धो मूले चजिह्वाभृशमेतिपाकम् ३४ जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःसजि ह्वामुन्नम्यजातःकफरक्तमूर्त्तिः ॥ लालाकरःकण्डुयुतःस चोषः सातूपजिह्वापठिताभिषग्भिः ३५ श्लेष्मासृग्भ्यां तालुमूलात्प्रवृद्धोदीर्घःशोफोध्मातवस्तिप्रकाशः ॥ तृ ष्णाकाशश्वासकृत्तंवदन्ति व्याधिंवैद्याःकण्ठशुंडीतिना म्ना ३६ शोफःस्थूलस्तोददाहप्रपाकीप्रागुक्ताभ्यांतु ण्डकेरीमतातु ॥ शोफःस्तब्धोलोहितस्तालुदेशे रक्ताज्ज्ञे यस्सोऽध्रुवोरुक्ज्वरश्च ३७ कूर्मोत्सन्नोवेदनोऽशीघ्रज

होजाती है व नीरसहोजातीहै व सेमरके कांटोंकेतुल्यउत्तरऊँचेर मांसके कांटेहोजाते हैं ३३ जीभ के नीचे जो बहुत शोथ होजा- ताहै व जो कफरक्तकी मूर्तिही होताहै उसे अलास कहते हैं यह रोग बढ़जाने पर जीभको रोंकताहै व जीभकी जड़ विशेष करके पाकजाती है ३४जीभके अग्रभाग में जो सूजन होजातीहै व जीभ को उठाकर किनारे ऊंचे और बीचमें खाली करदेती है यहरोग कफ व रक्तसे उत्पन्न होताहै व उसमें लारबहुतबहती है खजुली उठती रहतीहै शोषहोताहै वैद्य लोग इसरोगको उपजिह्वा कहते हैं ३५ अब तालुगत ९ रोग कहते हैं कफ व रक्तसे तालुकीजड़से उत्पन्न बड़ालम्बा चौड़ा शोथ फूलकर पेड़के तुल्य ऊँचा होजाता है उसके ऐसे होने से पिपासा श्वास खाँसी ये उत्पन्न होते हैं इस रोगको वैद्य कण्ठशुण्ठी कहते हैं ३६ व कफ रक्तसे जो उसी स्थानपर शोथहो और उसमें शूल दाह हो व पकउठे तो उसे तु-

न्मा रोगोज्ञेयःकच्छपःश्लेष्मणावा ॥ पद्माकारंतालुमध्ये तुशोफं विद्याद्रक्तादर्बुदंप्रोक्तलिंगम् ३८ दुष्टंमांसंनीरुजंतालुमध्ये कफाच्छूनमांससंघातमाहुः ॥ नीरुक्स्थायीकोलमात्रःकफात्स्यान्मेदोयुक्तःपुप्पुटस्तालुदेशे ३९ शोषोत्यर्थंदीर्यतेचापितालुः श्वासश्चोग्रस्तालुशोषोनिलोत्थः ॥ पित्तंकुर्य्यात्पाकमत्यर्थघोरंतालुन्येवंतालुपाकंवदन्ति ४० गलेनिलःपित्तकफौचमूर्च्छितौप्रदूष्यमांसंचतथैवशोणितम् ॥ गलोपसंरोधकरैस्तथांकुरैः निहंत्यसून्व्याधिरयंतुरोहिणी ४१ जिह्वासमंतादृशवेदनास्तमांसांकुराःकंठनिबंधनाःस्युः ॥ सारोहिणीवात

गिडकेरी रोग कहते हैं व जो शोथ तालु स्थानमें लाल व ऊपर को तना हुआ होताहै व कोंचता रहताहै उसमें पीड़ा व ज्वर भी होतेहैं इसरोगको अध्रुव कहते हैं ३७ व कफसे उत्पन्न कछुवेकी पीठकी नाईं जो रोग ऊपरको उठाहुआ झटपट तालुमेंहो आताहै वह कच्छपरोग कहाताहै व कमलके आकार जो तालुके मध्यमें शोथहोताहै वह रक्तसे होताहै उसके लक्षण—जैसेरक्तार्व्बुद के निदान में कह आये हैं वैसेही जानना क्योंकि इसीसे इसका भी अर्व्बुदही नाम रक्खागयाहै ३८ व कफसे मांस दुष्ट होकर पीड़ा रहित तालुके मध्यमें अंकुर साउठआताहै उसेमांस संघात कहते हैं व तालु देशमें कफ व मेदस् से जो मांसका अंकुर बेर भरका अचलहो व उसमें पीड़ा न होतीहो तो उसे पुप्पुट रोग कहते हैं ३९ व वायुसे तालु अत्यन्त सूजकर उग्र श्वासको उत्पन्न करती है व सूखजाती है उसे तालु शोषरोग कहते हैं व इसी प्रकार यदि पित्त तालु में अत्यन्त शोषकरे व वह फिर पक उठे तो उसरोगको तालुपाक कहेंगे ४० कण्ठगत १७ रोगहोते हैं उनमें के पांचकहते हैं कण्ठ में पवन पित्तकफ प्राप्तहोके मांस

कृताप्रदिष्टा वातात्मकोपद्रवगाढयुक्ता ४२ क्षिप्रोद्गमा क्षिप्रविदाहपाका तीव्रज्वरापित्तनिमित्तजास्यात् ॥ स्रोतोनिरोधीन्यपिमन्दपाका स्थिरांकुरायाकफसंभवासा ४३ गम्भीरपाकीन्यनिवार्य्यवीर्य्या त्रिदोषलिंगात्रितयोत्थितासा ॥ स्फोटैश्चितापित्तसमानलिंगा साध्याप्रदिष्टारुधिरात्मिकातु ४४ कोलास्थिमात्रःकफसंभवोयोग्रन्थिर्गलेकंटकशूकभूतः ॥ खरःस्थिरःशस्त्रनिपातसाध्यस्तंकंठशालूकमितिब्रुवंति ४५ जिह्वाग्ररूपःश्वयथुःकफात्तुजिह्वोपरिष्टादपिरक्तमिश्रात् ॥ ज्ञेयोधिजिह्वःखलु

व रुधिरको दूषितकर गलरूँधनेवाले अंकुरोंको उत्पन्न करतेहैं तो प्राणोंको यह रोहिणीनाम रोग मारडालताहै ४१ व यही रोहिणी रोग जबकेवल वातसेउत्पन्नहो व जीभकी सबओर अत्यन्तपीड़ा करनेवाले मांसके अंकुरोंको उत्पन्नकरे जो कि कण्ठको रूँधलें तो वातात्मक उपद्रवों से युक्त यह वातकृतारोहिणी कहाती है ४२ व जो वही रोहिणी पित्तसे उत्पन्नहो तो वह झटहो आती है व झट दाहकरनेलगती है पकभी झटपट जाती व तीव्रज्वर उत्पन्न करती है उसे पित्तजा रोहिणी कहते हैं कफजा रोहिणी के लक्षण–यह छिद्रोंको रोंकलेती है व पकती कम है अंकुर इसके स्थिर होतेहैं ४३ तीनों दोषों से उत्पन्न रोहिणी के लक्षण–इसमें बहुत गहरा पाक होता है व कोई इसके वीर्य्य को निवारण नहीं करसक्ता व वातपित्त कफ तीनों के चिह्न इस में होतेहैं क्योंकि यह तीनोंसे उत्पन्नहोती है यह प्राणको हरलेती है इसरोगको कंठावरोध भी कहते हैं व यही रोग जब रुधिर से उत्पन्न होता है व उसमें फोड़े बहुत होते हैं व अन्य सब लक्षण पित्त के होते हैं तब यह रोग साध्य कहाजाता है ४४ कंठ शालूकरोगके लक्षण–जो रोग कफसे उत्पन्नहो बेरकी गुँठु-

रोगएव विवर्जयेद्वागतपाकमेनम् ४६ वलासमवायतमु न्नतंचग्रंथिंकरोत्यन्नगतिंनिवार्य्य ॥ तंसर्वथैवाप्रतिवार्य वीर्य्यंविवर्जनीयंवलयंवदंति ४७ गलेतुशोफंकुरुतःप्र वृद्धौ श्लेष्मानिलौश्वासरुजोपपन्नम् ॥ मर्मच्छिदंदुस्तर मेनमाहुर्वलाससंज्ञंनिपुणाविकारम् ४८ वृत्तोन्नतोंतः श्वयथुःसदाहःकंड्वान्वितोऽपाकमृदुर्गुरुश्च ॥ नाम्ने कवृन्दःपरिकीर्तितोसौ व्याधिर्वलासक्षतजप्रसूतः ४६ समुन्नतं वृत्तिममन्ददाहन्तीव्रज्वरंवृन्दमुदाहरन्ति ॥ त च्चापिपित्तक्षतजप्रकोपा द्विद्यात्सतोदम्पवनात्मकञ्च ५० वर्त्तिर्घनाकण्ठनिरोधनीया चितातिमात्रंपिशितप्र

जीभरकी गाँठ गलेमेंहो व काँटेकी नोककी नाईं नुकीले अंकुर उसके ऊपरहों गांठ स्थिर व खरखरीहो तो यह रोग तीक्ष्ण चाकू छुरी आदि से चीरने के योग्य होताहै इसको वैद्यलोग कंठ शालूक कहते हैं ४५ जीभके ऊपर जीभकी फुनगीकी तरहका शोथ कफसे व रक्तसे होताहै इसरोगका अधिजिह्वनामहोताहै जबयह पकजाय तो फिर इसे छोड़देनाचाहिये क्योंकि यह पकने पर फिर नहीं अच्छा होता ४६ कफही लम्बी चौड़ी ऊंची गांठ को अन्नकी गतिको रोंककर करता है यह सर्वथा किसीके रोंक ने के मानकी नहीं होती इससे इसे त्यागदेना चाहिये इसरोग को वलय कहते हैं ४७ कफ वात दोनों जब बढ़जाते हैं तो गलेमें शोथको उत्पन्न करते हैं उस शोथमें पीड़ा होती है व सुकुमार स्थानको यह काटताहै इससे बड़ा दुस्तर रोग होता है निपुण लोग इसे वलासरोग कहते हैं ४८ कफ रक्तसे उत्पन्न गोल ऊंचा भीतर शोथ दाह खजुली युक्त कोमल व गरू होता पकता नहीं है इसका नाम एक वृन्दरोगहै ४६ गलेमें ऊँचा गोल अति दाह युक्त तीव्र ज्वरकारी जो रोग होता है उसे वृन्द कहतेहैं यह पित्त

रोहैः ॥ अनेकरुक्प्राणहरीत्रिदोषाज्ज्ञेयाशतघ्नीतुशत घ्निरूपा ५१ ग्रन्थिर्गलेत्वामलकास्थिमात्रः स्थिरोल्प रुक्स्यात्कफरक्तमूर्तिः ॥ संलक्ष्यतेसक्तमिवासनञ्च स शस्त्रसाध्यस्तुगिलायुसंज्ञः ५२ सर्वंगलंव्याप्यसमुत्थि तोयः शोफोरुजःसन्तिचयत्रसर्वाः ॥ ससर्वदोषोगलवि द्रधिस्तुतस्यैवतुल्यःखलुसर्वजस्य ५३ शोफोमहानन्न जलावरोधी तीव्रज्वरोवायुगतेर्निहन्ता ॥ कफेनजातोरु धिरान्वितेन गलेगलौघः परिकीर्त्यतेसौ ५४ यरतान्यमा

व रक्तके कोपसे होताहै व जो वातके दोषसे होताहै उसमें सुईसे कोंचनेकीसी पीड़ाहोती है ५० कंठमें कुछ लम्बी कड़ी सूजनहोती है वह गलेको रूँधलेती है इसके ऊपर व चारोंओर मांसके अंकुर होते हैं व अनेकप्रकार की पीड़ाओंको करती है यहांतक कि प्राण को हरलेती है क्योंकि यह सन्निपात से उत्पन्न होती है इसका शतघ्नी नामहै क्योंकि जैसे शतघ्नी अर्थात् तोप सैकड़ोंको मार डालती है ऐसेही यह भी सैकड़ों के प्राण लेती है इसी से शत- घ्नी यह अन्वर्थ नाम इसका धरायागया है ५१ गले में जो गांठ अमलेकी गुठलू वा अँठुली के तुल्य स्थिर व थोड़ी पीड़ा वाली कफरक्तसे उत्पन्न होती है इससे भोजन करने में कष्ट विदित होताहै पर अच्छे तीक्ष्णशस्त्र छुरी चाकू नहन्नीछुराआदि- से चीड़ने के योग्य होती है इसका गिलायुनाम होताहै इसीका अपभ्रंश गिलटी शब्द विदित होताहै ५२ जो शोथ सबगलेभर में व्याप्त होकर उठताहै व पीड़ा नानाप्रकार की इस में वात पित्त कफ तीनों के लक्षणोंकी होती है यह तीनों दोषों केहयोग से होती भी है इसका नाम गलविद्रधिहै जैसे सब दोषोंसे उत्पन्न विद्रधि रोगका निदान कह आये हैं वैसेही सब लक्षण गल वि- द्रधिके भी जानने चाहिये ५३ रुधिर युक्त कफ से उत्पन्न जो

नःश्वसितिप्रसक्ताम्भिन्नस्वरःशुष्कविमुक्तकण्ठः ॥ कफो
पदिग्धेष्वनिलायनेषु ज्ञेयःसरोगःश्वसनात्स्वरघ्नः ५५
प्रतानवान्यःश्वयथुःसुकष्टोगलोपरोधंकुरुतेक्रमेण ॥ स
मांसतानःकथितोऽवलंबीप्राणप्रणुत्सर्वकृतोविकारः ५६
सदाहतोदंश्वयथुंसुतीव्रमन्तर्गलेपूतिविशीर्णमांसम् ॥
पित्तेनविद्याद्वदनेविदारीम्पार्श्वेविशेषात्सतुयेनशेते ५७
स्फोटैःसतोदैर्वदनंसमंताद्यस्याचितंसर्वसरःसवातात् ॥
रक्तैःसदाहैःपिडिकैसपीतैर्यस्याचितंचापिसपित्तकोपात्
५८ अवेदनैःकण्डुयुतैस्सवर्णैर्यस्याचितंचापिसवैकफे

वड़ा भारी शोथगले में होता है व अन्न जल दोनोंको भीतर नहीं जाने देता तीव्र ज्वर को करता है व वायु की गतिका भी नाश करता है भीतर से न बाहरको आनेदे न वाहर से भीतर जाने देता है इसरोगको गलौघ कहते हैं ५४ वायु की द्वारा भीतर शब्द आने जाने के मार्गों में जब कफ लपटजाता है वह रोग वायु के फिर न जाने आने से स्वरको भंग करदेता है उस कफ के खींचने के लिये जब मनुष्य जोर से खांसता खँखारता है तो नेत्रोंके आगे अँधेरासा होजाता है व उस श्वास का धक्का लगने से कफ सूखजाता है व कफ के मांठें जो गले में लपटे होते हैं वे गिरते नहीं इसरोगको स्वरघ्न कहते हैं ५५ व गले में जो शोथ होकर धीरे २ सर्व्वत्र गले में फैलजाता है व बड़ेकष्टसे युक्तहोता है गलेभरको रूँधलेता है उसका मांसतान नामहै व प्राणोंका नाशक होता है यह सन्निपात से होता है ५६ गले के भीतर दाह व कोंच सहित अति तीव्र शोथ जो होता है व फूटने पर उसके मांसमें दुर्गन्धि आती है यह पित्त से होता है सो मुख में बहुधा उसी ओर होता है प्राणी जिस करवट से बहुधा सोता है इसरोगका विदारी नाम है ५७ मुख के ऊपरके

न५६ ओष्ठप्रकोपेवर्ज्याःस्युर्मांसकोपप्रकोपजाः॥ दन्तमूलेपुवर्ज्यौतु त्रिलिंगगतिशौषिरौ ६० दन्तेपुचनसिद्ध्यंतिश्यावदालनभञ्जनाः ॥ जिह्वातलेष्वलासस्तुतालव्येष्वर्बुदंतथा ६१ स्वरघ्नोवलयोवृन्दो वलासश्चविदारिका ॥ गलौघोमांसतानश्च शतघ्नीरोहिणीगले ६२ असाध्याः कीर्तिताह्येतेरोगानवदशैवतु ॥ तेषुचापिक्रियांवैद्यःप्रत्याख्यायसमाचरेत् ६३ ॥ इतिमुखरोगनिदानम् ॥

समीरणःश्रोत्रगतोन्यथाचरन्समंततश्शूलमतीवकर्ण

तीन रोगोंका निदान कहते हैं चुनचुनी सहित फुंसियों से युक्त वातसे उत्पन्न मुख के ऊपर जो सर्व्वसर नाम रोगहोता है उस में मुखभर पर छोटे २ फुटके होते हैं व जिसके मुखपर लाल २ दाह सहित छोटे २ फूटके हों व कोई २ पीलेभीहों वह पित्त के कोपका सर्व्वसर रोगहै ५८ व जिसमें पीड़ा रहित खजुली युक्त शरीर के चमड़ेके रंगके फुटके मुखभर परहोते हैं वह कफज सर्व्वसर रोग कहाता है ५६ असाध्य मुखरोगों के लक्षण—ओष्ठज रोगोंमें मांसज रक्तज व त्रिदोष रोग वर्ज्यकहे हैं व दन्तमूलके रोगों में सन्निपात नाड़ी व शौषिर ये दो वर्ज्य हैं ६० व दन्त रोगोंमें श्यावदालन व भञ्ज ये तीन असाध्य होते हैं व जिह्वाके नीचेके रोगोंमें अलास असाध्यहोताहै व तालुरोगमें अर्व्बुद ६१ व गलरोगोंमें स्वरघ्न वलय वृन्द वलास विदारिका गलौघ मांस तान शतघ्नी व रोहिणी ये असाध्य हैं ६२ ये १९ रोग असाध्यहैं विनाऔषधकिये अवश्यही रोगी मरताहै परऔषध करनीचाहिये कदाचित् रोगीबचीजाय इससे वैद्यकोचाहिये कि औषधकरे ६३॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेमुखरोगनिदानंषष्टितमम् ६० ॥

दोहा॥ इकसठयें महँ कर्णगत रोगन केर निदान ॥
देखहिं सुजन लगायचित सकलऋद्धेबलवान १

योः ॥ करोतिदोषैश्चयथास्त्रमावृतः सकर्णशूलःकथितोदुरासदः १ कर्णस्रोतःस्थितेवातेशृणोतिविविधान्स्वरान् ॥ भेरीशंखमृदंगानां कर्णनादःसउच्यते २ यदाशब्दवहंस्रोतो वायुरावृत्यतिष्ठति ॥ शुद्धश्लेष्मान्वितोवापि वाधिर्यंतेनजायते ३ वायुःपित्तादिभिर्युक्तो वेणुघोषोपमंस्वनम् ॥ करोतिकर्णयोःक्ष्वेडं कर्णक्ष्वेडःसउच्यते ४ शिरोभिघातादथवानिमज्जतो जलेप्रपाकादथवापिविद्रधेः ॥ स्रवेद्धियूयंश्रवणोनिलार्दितः सकर्णसंस्रावइतिप्रकीर्त्तितः ५ मारुतःकफसंयुक्तःकर्णकण्डूंकरोतिच ॥ पि

कर्णशूलरोगका निदान—वायुकानों के भीतर में आकर कफ पित्त व रक्तमें मिलके इधर उधर घूमताहै तव कानोंमें अत्यन्त शूल करताहै इस रोगको कर्णशूल कहते हैं यह दुःखसाध्यहोता है १ कर्णनाद रोगका निदान—जब वात कानों के छेदों में भर होताहै तो नगारे मृदंग शंखकेसे विविध प्रकारके शब्द सुनाई देतेहैं इस रोगको कर्णनाद कहतेहैं २ जब शब्दपहुँचानेवालीनस में प्रवेशकरके वायु उसे आच्छादित करके ठहरजाताहै सो चाहे अकेला वायु चाहे कफ सहित वायु ठहरताहै तो उससे बाधिर्य रोग कहते हैं इसीको भाषामें बहिरा होजाना कहते हैं ३ पित्तादिकोंसे युक्तहोकर जब वायु कानोंमें बाँसुरीके शब्दकेतुल्यशब्द को करताहै इससे अनेक प्रकारके और भी वर्णात्मक शब्द सुनाई देते हैं उस रोगको कर्णक्ष्वेड कहते हैं ४ शिर में कहीं चोट लगजानेसे अथवा जल में बुड्डी मारकर स्नान करने से वा अन्य किसी कारण से पकजानेसे वा कान में फोड़ा होनेसे तब वातसे पीड़ित कानसे पीब बहने लगती है इसरोगको कर्णसंस्राव कहते हैं ५वकफ युक्त वात कान में खजुली को उत्पन्न करताहै उस रोगको कर्ण कण्डू कहते हैं व पित्त की उष्णतासे जब कफ सूख

स्रोणमशोषितःश्लेष्मा जायतेकर्णगूथकः ६ सकर्णगूथो द्रवतांयदागतोविलायितोघ्राणमुखम्प्रपद्यते ॥ तदास कर्णप्रतिनाहसञ्ज्ञितोभवेद्विकारश्शिरसोऽर्द्धभेदकृत् ७ यदाहिमूर्च्छन्त्यथवात्रजन्तवः सृजन्त्यपत्यान्यथवापिम क्षिकाः ॥ तदञ्जनत्वाच्छ्रवणोनिरुच्यतेभिषग्भिराद्यैः कृमिकर्णकोगदः ८ पतंगाःशतपद्यश्च कर्णस्रोतःप्रवि श्यहि ॥ अरतिंव्याकुलत्वञ्चभृशंकुर्वन्तिवेदनाम् ९ क र्णोनिस्तुद्यतेतस्य तथाफुरफुरायते ॥ कीटेचरतिरुक्तीव्रानिस्पन्देमन्दचेतना १० क्षताभिघातप्रभवस्तुविद्रधि र्भवेत्तथादोषकृतोपरःपुनः ॥ सरक्तपीतारुणमस्रमास्र

जाताहै उससे कानके अन्तमें मैल लपटजाता है इस रोग को कर्णगूथ कहते हैं व इसीको देशभाषामें खूँट कहते हैं ६ जबवही कर्णगूथ अर्थात् खूँट पतला गीला होजाताहै तब नाकमें वा मुख में आजाता है तब उस विकारको कर्णनाह कहतेहैं व वह आधे शिरमें पीड़ा उत्पन्न करताहै इसरोगको आधाशीशी वा अधौखी कहते हैं ७ जब कानके भीतर कीड़े पड़ जाते हैं अथवा मक्खी जाकर अपनेबच्चे वहाँ उत्पन्न करती है उसीसे कीड़े उत्पन्न होकर क्रिमियों कासा लक्षण करते हैं आदिके वैद्यों ने इसे क्रिमिकर्ण नामरोग कहाहै ८ छोटे पतंगे वा खनखजूर जबकहीं कानके भीतर पैठकर पीड़ा व्याकुलता व अत्यन्त वेदनाको करते हैं ९ तो कान में सुई आदिसे कोंचनेकीसी पीड़ा होने लगती है व कान फुरफुराने लगता है जबकीड़ा उसके भीतर चलने लगता है वा काटने लगता है तो तीव्र पीड़ा होती है व जब नहीं चलता न काटता है तब पीड़ा थोड़ी होजाती है १० कानमें ज़ोर से खजुलाने से वा कुछ चोटलगजाने से फोड़ा होजाताहै अथवा उसमें वातादिकों के दोषसे दूसरी वार पकजाता तब उसमें से

वेदप्रतोदधूमायनदाहचोषवान् ११ कर्णपाकस्तुपित्तेन कोथविक्लेदकृद्भवेत् ॥ कर्णविद्रधिपाकाद्वा जायतेचाम्बुपूरणात् १२ पूयंस्रवतिवापूति सज्ञेयःपूतिकर्णकः ॥ कर्णशोफार्बुदार्शांसि जानीयादुक्तलक्षणैः १३ नादोतिरुक्कर्णमलस्यशोषः स्रावस्तनुश्चाश्रवणंचवातात् ॥ शोथस्सरागोदरणंविदाहः सपूतिपीतस्रवणंचपित्तात् १४ वैश्रुत्यकंडूस्थिरशुक्लशोफः स्निग्धाश्रुतिःश्लेष्मभवेतिरुक्च ॥ सर्वाणिरूपाणिचसन्निपातात्स्रावश्चतत्राधिकदोषवर्णः १५ सौकुमार्य्याच्चिरोत्सृष्टेसहसावाविवर्द्धते ॥

काला पीला व लाल रुधिर वहने लगताहै कोंचने कीसी पीड़ाहोती है धुआँ निकलने लगताहै दाह व उष्णता होती है इसरोग को कर्ण विद्रधि कहते हैं ११ पित्तसे वा कर्ण विद्रधि के फोड़ेसे अथवा कान में पानी भरजाने से कान सड़जाता है व चिलकने लगता है इसरोग को कर्णपाक कहते हैं १२ व जिस कान से दुर्गन्धियुक्त पीव वहती है उसे पूतिकर्ण रोग कहते हैं कर्णशोथ कर्णार्बुद कर्णार्श अर्थात् कान सूजना कानमें गुलथी व कानमेंसे ववासीर की नाईं रुधिर वहना इन तीनों रोगोंके लक्षण जैसे पहिले कहआये हैं वैसे जानना १३ वातज कर्ण रोगमें कुछ संसनाहट व शब्द विदित होताहै पीड़ा बहुत होती है कानकामल सूख जाता है व पतला २ थोड़ासा वहताहै व सुनाई नहीं पड़ता पित्तज कर्ण रोग में कानमें सूजनहोती है व ललाई रहती है व चीड़नेकीसी पीड़ा होतीहै दाह उठता व पीली २ दुर्गन्धि सहित पीव वहती है १४ कफज कान पीड़ामें कुछका कुछ सुनाई देताहै खजुली उठतीहै कड़ाशोथ उजली चिकनी पीव वहती है व बड़ीपीड़ा होती है सन्निपातज कानके रोगमें वातज पित्तज कफज आदि सवदोषोंके

कर्णशोथोभवेत्पाल्यां सरुजःपरिपोटवान् ॥ कृष्णारुण निभस्तब्धः सवातात्परिपोटकः १६ गुर्वाभरणसंयोगा त्ताडनाद्घर्षणादपि ॥ शोफःपाल्यांभवेत्श्यावो दाहपा करुजान्वितः १७ रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पातःसगदो मतः ॥ कर्णबलाद्वर्द्धयतःपाल्यांवायुःप्रकुप्यति १८ कफं संगृह्यकुरुते शोफंस्तब्धमवेदनम् ॥ उन्मंथकःसकंडू को विकारःकफवातजः १९ संवर्द्धमानेदुर्विद्धे कंडूदाह रुजान्वितः ॥ शोफोभवतिपाकश्च त्रिदोषोदुःखवर्द्ध नः २० कफासृक्क्रमिसम्भूतस्सविसर्प्पन्नितस्ततः ॥

लक्षणहोते हैं पर जिसदोषकी अधिकता होती है वहते उसी के लक्षणके अनुसारहैं १५ सुकुमारतासे कानका छेद जब छोड़दियाजाताहै उसमें सींकआदि नहीं डालीजाती व फिर जब एकाएकी बढ़ाना चाहते हैं तो कानमें सूजन होआती है व कानकेऊपरीभागमें काली २ फुंसियाँ निकल आती हैं व जो काली वा लाल फुंसियाँ कानमें वातसे निकल आती हैं उनको परिपोटक कहतेहैं १६ गरूभूषण धारणकरनेसे पीटनेसे वा घिसने रगड़नेसे कानकी कोंचिया सूजआतीहै वहसूजन ताम्रकेरंगकीहोती है उस में दाहहोता पकजाती व पीड़ाहोती है, १७ व रक्त पित्तके योगसे जो सूजन होतीहै वह लालहोती है इसरोगको उत्पातरोग कहते हैं व जबरदस्ती कानके छेदको बढ़ाने से कानकी कोंचियाका वायु कोप करताहै १८ वह कफसे युक्तहोकर शोथ करदेताहै वह शोथ कड़ाहोताहै पर पीड़ा नहीं करता खजुली होतीरहतीहै इस कफ वातजरोगको उन्मन्थक कहते हैं १९ टेढ़ामेढ़ा नसपर जब कान छेददियाजाताहै तो उसमें खजुली दाह व पीड़ाहोती है सूजनहोती व पकभी उठताहै यहरोग सन्निपात से होताहै व दुःख बर्द्धन इसकानामहै २० कफ व रक्तके योगसे ऐसे छिदेहुये

लिहेत्सशष्कुलींपालीं परिलेहीतिसस्मृतः ॥ २१ ॥

इतिकर्णरोगनिदानम् ॥

आनह्यतेयस्यविशुष्यतेच प्रक्लिद्यतेधूप्यतिचैवनासा ॥ नोवेत्तियोगंधरसांश्चजंतुर्जुष्टंव्यवस्येत्सतुपीनसेन १ तंचानिलश्लेष्मभवंविकारं ब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिंगम् ॥ दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूले संमूर्च्छितोयस्यसमीरणस्तु ॥ निरेतिपूतिर्मुखनासिकाभ्यां तंपूतिनस्यंप्रवदन्तिरोगम् २ घ्राणाश्रितंपित्तमरूंषिकुर्याद्यस्मिन्विकारेबलवांश्चपाकः ॥ तन्नासिकापाकमितिव्यवस्येद्विक्ले

कानकी कोंचियामें छोटासा कीड़ा उत्पन्नहोजाताहै वह इधर उधर चलता फिरता रहताहै उसके इधर उधर चलने से वह सूजन पकजाती है फिर वह कीड़ाकानभर चालडालताहै इस रोगको परिलेही कहते हैं २१ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेकर्णरोगनिदानं मेकषष्टितमम् ॥ ६१ ॥

दो० ॥ बासठयें महँ नासिका रोग निदान बहूत ॥ भाषे माधवनेत्लपहिं सकललोगकर बूत १

नासिकाके रोगोंका निदानकहते हैं उनमें प्रथम पीनसरोग के लक्षण कहतेहैं जिसकी नाक सिकुड़जाय फिर सूखजाय व पानी सा उसमें से बहता रहै व जलती रहे व फिर वह गन्ध के रसों को न जाने उसपुरुषको पीनस रोगसंयुक्त जाननाचाहिये व इस विकारको वातकफसे उत्पन्न कहना चाहिये इसके और श्लेष्मा होगये के लक्षण कुछ २ समानहोते हैं १ गले और तालुमें पित्त रक्तादि दोषोंसे दूषितहोकर दुष्टवायु मुख व नाकसे दुर्गंधि को बहाताहै इसरोगको पूतिनस्यकहते हैं २ पित्त नासिकामें टिककर घाव करदेताहै जिस विकारमें बलवान पाकहोताहै इसरोग को

दकोथावथवापियत्र ३ दोषैर्विदग्धैरथवापिजंतोर्ललाट देशेभिहतस्यतैस्तैः ॥ नासास्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रं तंपूय रक्तंप्रवदन्तिरोगम् ४ घ्राणाश्रितेमर्मणिसंप्रदुष्टो यस्यो निलोनासिकयानिरेति ॥ कफानुयातोबहुशःसशब्दस्तं रोगमाहुःक्षवथुंविधिज्ञाः ५ तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतो वा भावान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा ॥ सूत्रादिभिर्वातरुणा स्थिमर्मण्युद्घाटितेन्यःक्षवथुर्निरेति ६ प्रभ्रश्यतेनासि कयाहियस्य सांद्रोविदग्धोलवणःकफस्तु ॥ प्राक्संचि तोमूर्द्धनिसूर्यतप्ते तंभ्रंशथुंरोगमुदाहरन्ति ७ घ्राणेभृशं दाहसमन्वितेतु विनिश्चरेद्धूमइवेहवायुः ॥ नासाप्रदीप्ते वचयस्यजंतोर्व्याधिंतुतन्दीप्तमुदाहरंति ८ उच्छ्वासमार्गे

नासिका पाकरोग कहनाचाहिये इसमें पीवसी नाक वहाकरती है ३ दोषादिकों के दुष्टहोजाने से अथवा प्राणीके लिलारमें चोट लगनेसे नाकसे रक्तमिली पीव वहने लगती है उस रोगको पूय रक्त कहतेहैं ४ घ्राण इन्द्रियके सुकुमार स्थानदोनों भौहों के बीच का वायु जब दुष्ट होजाताहै तो नाककी होकर बाहर आता है उसके पीछे कफभी अवश्य थोड़ा बहुत गिरता है व बड़ा भारी शब्दहोताहै इस साधारण रोगको चवथु वा छिका अथवा छींक कहते हैं ५ किसी तीक्ष्ण पदार्थ मरिच आदिकी झारसे वा किसी ऐसेही पदार्थ के बहुत सूँघने से अथवा सूर्य्यकी ओर दे- खने से वा नासिका में सूतकी वत्ती आदि डालने से अथवा त- रुण हाड़ोंके सुकुमार स्थानको किसी वस्तुसे खुरखराने से छींक आती है ६ सूर्य्य से अत्यन्त तपाये हुये माथे वाले पुरुषकी ना- सिका से पहिलेका सञ्चित गाढ़ा व लुनखर कफ गिरताहै उसे भ्रंशथु नाम रोग कहते हैं ७ नासिका के अत्यन्त सन्तप्त होने पर उससे धुआँसा वायु निकले व फिर उस प्राणीकी नाक उस

न्तुकफःसवातोरुंध्यात्प्रतीनाहमुदाहरेत्तम् ९ घ्राणाद्‌घनःपीतसितस्तनुर्वादोषःस्रवेत्स्रावमुदाहरेत्तम् १० घ्राणाश्रितेस्रोतसिमारुतेनगाढंप्रतप्तेपरिशोषितेच ॥ कृच्छ्राच्छ्वसेदूर्ध्वमधश्चजंतुर्यस्मिन्सनासापरिशोषउक्तः ११ शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासास्रावस्तनुस्वरः ॥ क्षामःष्ठीवत्यथोऽभीक्ष्णमामपीनसलक्षणम् १२ आमलिंगान्वितःश्लेष्मा घनश्चाप्सुनिमज्जति ॥ स्वरवर्णविशुद्धिश्चपक्वपीनसलक्षणम् १३ संधारणाजीर्णरजोतिभाष्यक्रोधर्तुवैषम्याशिरोभितापैः ॥ प्रजागरस्वप्नवाम्बुशी

को जलगईसी जानपड़े उस रोगको दीप्त कहते हैं ८ श्वासलेने के मार्गको वात सहित कफ जब रोंकले तो उस रोगको प्रतीनाह कहना चाहिये ९ जिस रोगमें नासिकासे गाढ़ा पीला वा उजला वा पतला कफ गिरे उसको नासास्राव कहना चाहिये १० जब नासिका की सूँघने वाली नसको पवन अत्यन्त सन्तप्त करदेता है व घनाय सुखादेताहै तब प्राणी बड़ेकष्टसे ऊँचे वा नीचेको मुखकरके श्वासलेताहै वह रोग नासापरिशोष कहाता है ११ शिरका भारी रहना अरुचि पतलापानी नाकसे बहना स्वर स्पष्ट न निकलना व बार २ नासिका से पानी बहना ये सब कच्चे पीनस रोगके लक्षण हैं १२ पकेहुये पीनस रोगके लक्षण-कच्चे पीनस के लक्षणसे युक्त जब श्लेष्मा गाढ़ाहोकर बाहर न निकले नाक के भीतर बनारहै व स्वर अक्षर की शुद्धता बनीरहै उसमें अन्तर न पड़े तो वह पके हुये पीनस का लक्षण है १३ प्रतिश्याय श्लेष्मा वा खड़ज़ुड़ पांच प्रकार का होता है उन सबोंकी सम्प्राप्ति के कारण बताते हैं-मल मूत्रके वेग के रोंकने से अजीर्ण से नासिका में धूलिजाने से अधिक चिल्लाकर बोलनेसे क्रोधकरनेसे ऋतुओं की उदला बदली से शिरमें बहुत

ता वश्यायैर्मैथुनवाष्पसेकैः । १४ ।संस्त्यानदोषेशिर सिप्रवृद्धो वायुः प्रतिश्यायमुदीरयेच्च ॥ चयंगतामूर्द्धनि मारुतादयः पृथक्समस्ताश्चतथैवशोणितम् ॥ प्रकु प्यमानाविविधैःप्रकोपनैस्ततःप्रतिश्यायकराभवंति १५ क्षवप्रवृत्तिः शिरसोभिपूर्णतास्तम्भोङ्गमर्दः परिहृष्टरोम ता ॥ उपद्रवाश्चाप्यपरेपृथग्विधानृणांप्रतिश्यायपुरः सराःस्मृताः १६ आनद्धापिहितानासा तनुस्रावप्रसेकि नी ॥ गलताल्वोष्ठशोषश्च निस्तोदःशंखयोस्तथा १७ भवेत्स्वरोपघातश्च प्रतिश्यायेनिलात्मके ॥ उष्णः स- पीतकः स्रावो घ्राणात्स्रवतिपैत्तिके १८ कृशोतिपांडुः सं

घाम लगनेसे रात्रिमें वहुत जागनेसे व दिनमें सोनेसे नया पानी पीनेसे शीतल जलमें अधिक स्नान करनेसे मैथुन करने से धुआं लगनेसे १४ अधिक सोनेसे व मूलके कफके शिरमें इकट्ठे होनेसे वायु कुपितहोकर प्रतिश्याय रोगको उत्पन्न कराताहै शिरमें वात पित्त कफ व रक्त ये सब इकट्ठे होकर अथवा अलग २ होकर कोप करके प्रतिश्याय रोगको करते हैं यह उसीका दूसरा लक्षणहै १५ इस खरजुड़ वा प्रतिश्याय रोग का पूर्व्वरूप यों होताहै छींक काआना शिरभारीहोना देहभारी देहकाटूटना रोमोंकाखड़ेहोना इत्यादि वहुत से उपद्रव जब प्रतिश्याय होने पर होता है तो मनुष्यों के होते हैं १६ जब वातज प्रतिश्याय होता है तो ना- सिका में मलभरारहताहै व वहुत सहराने पर कुछ पतलापा- नी वहताहै गला तालु और ओष्ठ सूखजातेहैं दोनों कनपटियों में कांटेसे कोंचने लगतेहैं बोल कुछखरखरासा होजाताहै व गला बैठजाता है पित्तज प्रतिश्यायमें उष्ण और पीला कफ नासिका से गिरताहै १७ उससे मनुष्य कुछ दुर्व्वलहोजाता है व पीला पड़जाताहै उसका शरीर कुछ जलता रहताहै क्योंकि उष्णता

तप्तो भवेदुष्णाभिपीडितः ॥ सधूममग्निंसहसावमनी वचनासया १६ घ्राणात्कफःकफकृतशुक्लश्शीतः स्रवेद्बहु ॥ शुक्लावभासःशूनाक्षो भवेद्गुरुशिरानरः २० गलताल्वोष्ठशिरसां कंडूभिरभिपीडितः ॥ भूत्वाभूत्वाप्रतिश्यायो योकस्माद्विनिवर्त्तते ॥ संपक्वोवाप्यपक्वोवा ससर्वप्रभवःस्मृतः २१ प्रक्लिद्यतेपुनर्नासा पुनश्चपरिशुष्यति ॥ पुनरानह्यतेचापि पुनर्विव्रियतेतथा २२ निश्वासश्चातिदुर्गंधो नरोगंधंनवेत्तिच ॥ एवंदुष्टप्रतिश्यायं जानीयात्कृच्छ्रसाधनम् २३ रक्तजेतुप्रतिश्याये रक्तस्रावः

के कारण पीड़ित होजाता है ऐसा जानपड़ताहै कि मानों धुआं सहित अग्नि नासिका से उगिलना चाहताहै १८ व कफज प्रतिश्यायमें नासिकासे उजलाठण्ढा बहुतसाकफगिरताहै इससे वह रोगी उजलासा दिखाई देताहै नेत्रोंके नीचे फरफराने लगताहै व शिरभारी बनारहताहै १६ कण्ठ तालु शिरमें खजुहट उठती है इससे पीड़ित होताहै जिसका प्रतिश्यायहो २ कर अपने२ आप बार २ निवृत्तहोजाय चाहें पक्काहो वा कच्चा वह प्रतिश्याय बात पित्त कफ तीनोंसे उत्पन्न समझाजाताहै २० दुष्टप्रतिश्यायके लक्षण–जिस प्रतिश्यायमें बार २ नासिकासे कफबहे व बार २ नासिका सूखजायाकरे बार २ नासिकामें कफजकड़जाय व बार २ खुलजाय २१ श्वास जो ले उसमें दुर्गन्धि आवे परन्तु उसको कुछभी दुर्गन्धि न जानपड़े इसप्रकारके दुष्टप्रतिश्यायको कष्टसाध्य समझना चाहिये २२ रक्तज प्रतिश्यायके लक्षण–रक्तज प्रतिश्यायमें नासिकासे रक्त चूने लगता है व प्राणीके नेत्रलाल होजातेहैं छाती पिराने लगतीहै उससे अत्यन्त पीड़ित होताहै उसके सब श्वास दुर्गन्धियुक्तही आतेहैं पर वह गन्धको नहीं जानता २३ प्रतिश्यायके असाध्य लक्षण–जितने

प्रवर्त्तते ॥ ताभ्याक्षश्चभवेज्जन्तुरुरोघातप्रपीडितः॥दुर्गन्धोच्छ्वासवदनो गंधानपिनवेत्तिसः २४ सर्वएवप्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः ॥ दुष्टतांयांतिकालेन तदाऽसाध्याभवंतिहि २५ मूर्च्छंतिकृमयश्चात्रश्वेताःस्निग्धास्तथाणवः ॥ कृमिजोयःशिरोरोगस्तुल्यंतेनास्यलक्षणम् २६ बाधिर्य्यमांध्यमघ्रत्वं घोरांश्चनयनामयान् ॥ शोफाग्निसादकासांश्च कृद्धाःकुर्वंतिपीनसाः २७ अर्बुदंसप्तधाशोपाश्चत्वारोर्शश्चतुर्विधम् ॥ चतुर्विधंरक्तपित्तमुक्तंघ्राणेपितद्विदुः २८ ॥ इतिनासारोगनिदानम् ॥

उष्णाभितप्तस्यजलप्रवेशाद्दूरेक्षणात्स्वप्नविपर्ययाच्च ॥

प्रतिश्यायहैं औषधादि न करनेवाले रोगीके काल पाकर दुष्टता को प्राप्त होजाते हैं व असाध्य होजाते हैं २४ । २५ बहुतदिनों के प्रतिश्यायमें उजले २ छोटे चिकने कीड़े पड़जाते हैं जो कृमिज शिर का रोगहै उसीके तुल्य इसके भी लक्षण होते हैं २६ इसीप्रतिश्याय में जब कीड़े पड़जातेहैं तब पीनस रोग होजाताहै जब कीड़े बहुत बढ़जाते हैं व वृद्धहो जाते हैं तो मनुष्यको बहिरा अन्धा न सूँघनेवाला करदेतेहैं व नानाप्रकारके घोररोगनेत्रोंमें करदेते हैं देह शोथजाताहै अग्निमन्द होजाताहै खाँसी आदि रोगहो आतेहैं २७ सात प्रकार के अर्बुद रोग चारप्रकार के शोथरोग व चार प्रकार के बवासीर रोग चार प्रकार के रक्तपित्त ये पहले कह आये हैं इनरोगोंको नासिका के रोगों में भी कहना चाहिये २८ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादे नासिकारोगनिदानं द्विषष्टितमम् ६२ ॥

दोहा ॥ तिरसठयें महँ नेत्र के रोग निदान बखान ॥
बिबिधभाँतिके बहुत जो उनके सुनहुप्रमान १

नेत्ररोगों के निदान प्रथम उनके कारण घाम से अति सन्तप्त

स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्च छर्देर्विघाताद्वमनातियोगात १ द्रवान्नपानादतिसेवनाच्च विण्मूत्रवातक्रमनिग्रहाच्च ॥ प्रसक्तसंरोदनशोककोपाच्छिरोभिघातादतिमद्यपानात् २ तथाऋतूनाञ्चविपर्ययेण क्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च ॥ वाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्च नेत्रेविकाराञ्जनयंति दोषाः ३ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यंदश्चतुर्विधः ॥ प्रायेणजायतेघोरः सर्वनेत्रामयाकरः ४ निस्तोदनस्तंभनरोमहर्षसंहर्षपारुष्यशिरोभितापाः ॥ विशुष्कभावःशिशिराश्रुताच वाताभिपन्नेनयनेभवंति ५ दाहप्रपा

होकर मनुष्य के अतिशीतल जलमें देरतक रहनेसे दूरके पदार्थ के देखनेसे दिनमें सोने से व रात्रि में अधिक जागने से नेत्रों में पसीना भर होने से वा धूलिपड़ने से अधिक धुआं लगने से व मन केरोंकने से वा अधिक वान्तहोनेसे १ पिघले हुये पतले अन्नखाने व पीनेसे मलमूत्र व अधोवायु के बेगके रोंकने से बहुत रोदन करने व अधिक शोक कोप करनेसे शिरमें चोट लगने से व अत्यन्त मदिरा पानकरने से २ व ऋतुओंकी उलटा पलटी से क्लेशों की चोटलगने से अतिमैथुन करने से आँशुओं के रोंकने से व सूक्ष्म वस्तु छोटे अक्षर आदिके देखने से वात पित्त कफ आदि दोष नेत्रमें विकारों को उत्पन्न कराते हैं ३ ये नेत्ररोग सब छिहत्तर होते हैं १० वातसे १० पित्तसे १३ कफसे १६ रक्तसे २५ सन्निपातसे २ और बाहर से वात पित्त कफ व रक्त इनचारों से बहुधा चार प्रकार के नेत्र उठते हैं यही घोर रोग सब रोगोंको करताहै ४ अभिष्पन्द रोग अर्थात् आंखों का आना वा उठना वातज अभिष्पन्दके लक्षण—वातसे नेत्रउठनेमें सुई के कोंचनेकीसीपीड़ा होती है नेत्रमें भारीपन होता है रोमखड़ेहो २ जाते हैं नेत्रों में कंकरोंरीसी गड़ती हैं नेत्रोंमें रुखाई होआती है शिरमें पीड़ाहोती

कौशिशिराभिनन्दो धूमायनंवाप्यसमुच्छ्रयश्च ॥ उष्णा श्रुतापीतकनेत्रताच पित्ताभिपन्नेनयनेभवन्ति ६ उष्णा भिनंदोगुरुताक्षिशोफः कंडूपदेहावतिशीतताच ॥ स्रावोबहुःपिच्छलएवचापि कफाभिपन्नेनयनेभवंति ७ ताम्राश्रुतालोहितनेत्रताच राज्यःसमंतादतिलोहिताश्च ॥ पित्तस्यलिंगानिचयानितानि रक्ताभिपन्नेनयनेभवंति ८ वृद्धैरेतैरभिष्यंदैर्नराणामक्रियावताम् ॥ तावंतस्त्वधिमंथाःस्युर्नयनेतीव्रवेदनाः ९ उत्पाट्यतइवात्यर्थं नेत्रंनिर्मथ्यतेतथा ॥ शिरसोर्द्धंचतंविद्यादधिमंथंस्वलक्षणैः १०

है नयन सूखेरहतेहैं नेत्रसे ठण्ढेआंशु गिरते हैं ५ पित्तसे जब नेत्र उठता है वा आताहै तो नेत्रमें दाह होता व पकउठताहै उसमें शीतल वस्तुलगवाने से आनन्द जानपड़ता है व नेत्रोंसे धुआंसा निकलताहै नेत्रमें सूजननहींहोती उष्ण आंशु बहते हैं नेत्रपीले होजाते हैं ६ कफसे जब नेत्र उठते हैं तो उष्णवस्तु के लगाने से आनन्द जान पड़ता है नेत्रोंमें भारीपन रहता आंखें सूजआती हैं खजुली उठती है चटचटाहटहोती है नेत्र बहुत ठण्ढेरहते हैं पानी बहुत टपकता है वहभी चिकना ७ रक्त के दोपसे नेत्र उठने में लालभर आंशु गिरते हैं व नेत्र भी लालही रहते हैं व बरौनियां भी सब ओर से लालही होजाती हैं व जितने पित्तसे उठेहुये नेत्र में लक्षण कह आये हैं वे सब इस रक्तजमें भी होते हैं ८ इन प्रकारों से आंख उठने पर औषधादि न करने वाले मनुष्यों के उतनेही अधिमन्थ रोग होतेहैं जिनमें कि नेत्रों में तीव्र पीड़ायें होतीहैं ९ अधिमन्थ रोग का दूसरा लक्षण यह है कि जानो कोई नेत्रको उखाड़ेही लेता है व इसीप्रकार जानो उसमें कोईसराई आदि डालकर मथताहै व आधाशिर पिराता है इसके लक्षण वातसे उठेहुये नेत्रों के से होते हैं १० कफ के

हन्याद्दृष्टिंश्लेष्मिकःसप्तरात्राद्योधीमंथोरक्तजः पंचरात्रात् ॥ षट्रात्राद्वावातिकोवैनिहन्यान्मिथ्याचारात्पैत्तिकस्सद्यएव ११ उदीर्णवेदनंनेत्रंरागोद्रेकसमन्वितम् ॥ घर्षनिस्तोदशूलाश्रुयुक्तमामान्वितंविदुः १२ मंदवेदनताकंडूस्संरंभाश्रुप्रशांतता ॥ प्रसन्नवर्णताचाक्ष्णोस्सम्पक्वंदोषमादिशेत् १३ कंडूपदेहाश्रुयुतः पक्वोदुंबरसंनिभः ॥ संरंभीपच्यतेयस्तु नेत्रपाकः सशोफजः ॥ शोथहीनानिलिंगानि नेत्रपाकेत्वशोथजे १४ उपेक्षणादक्षियदाधिमंथोवातात्मकः सादयतिप्रसह्य ॥ रुजाभिरु

कोपसे जब आँख में अधिमन्थरोग होताहै तो वह सात दिन में नेत्रको फोड़ताहै व ऐसेही रक्तजअधिमन्थ पाँचदिनमें व वातज अधिमन्थ६ दिनमें व पित्तज तुरन्तफोड़ताहै परन्तु ये सबमिथ्याचारसेही अर्थात् इसरोगमें उपास करनेसे वाकुछकी कुछ औषध करनेसेही यह समयका नियम पूरा होताहै ११ नेत्ररोग के निदान अब कहते हैं—जिसनेत्ररोगमें जबतक पीड़ा अधिकहो व ललाई अधिकहो करकरानाहो नेत्रमेंकोंचनेकीसी पीड़ाहो आँशुबहतेहों तबतक जानना चाहिये कि अभी नेत्रके दोषपकेनहीं हैं किन्तुकच्चेहैं १२ नेत्र अच्छे होनेके लक्षण—जब पीड़ा कमहोजाय व खजुलानेलगे सूजन थोड़ीहोचले आँशुओंका बहनाकम होनेलगे ललाई छँटकर स्वच्छता आनेलगे तब जाननाचाहिये कि अब दोषपरिपक्व होगया १३ सूजन सहित नेत्रपकेहुये के लक्षण—जब खजुली होनेलगे व सूजेहुये नेत्रसे आँशु बहनेलगें व आँखपकीहुई गूलरकेतुल्य लालहो व बड़े ज़ोरसे नेत्रपकआवें तो उसको नेत्रपाकरोग कहतेहैं व वह शोथसे होताहै १४ जिसनेत्रपाकमें शोथ नहींहोता अन्य सब चिह्नहोते हैं उसको अशोथज नेत्रपाक जानना चाहिये जब अधिमन्थरोगकी उपेक्षा

ग्राभिरसाध्यएकहताधिमंथःखलुनेत्ररोगः १५ वारंवारं चपर्य्येतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः ॥ रुजश्चविविधास्तीव्राः सज्ञेयोवातपर्य्ययः १६ यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्मसंदह्यतेवाविलदर्शनंयत् ॥ सुदारुणंयत्प्रतिबोधनेचशुष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि १७ यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थोमन्यागतोवाप्यनिलोन्यतोवा ॥ कुर्याद्रुजंवैभ्रुविलोचनेचतमन्यतोवातमुदाहरंति १८ श्यावंलोहितपर्यंतंसर्वंचाक्षिप्रपच्यते॥सदाहशोथंससावमम्लाध्युषितमम्लतः १९ अवेदनावापिसवेदनावायस्याक्षिराज्योहिभवंतिताम्राः ॥ मुहु

कीजाती है औषधादि नहीं कियेजाते व वह वातज होता है तो वह ठहरकरके उग्रपीड़ा करता है व असाध्य होजाताहै व तबउस रोगको हताधिमन्थ कहने लगते हैं १५ जब बार २ भौंहों में व नेत्रों में वात लौटता पलटताहै तो विविधप्रकारकी कठिन पीड़ायेंहोती हैं व वह रोग वातपर्य्यय कहाताहै १६ जो नेत्र खुलतानहीं व उसकी पलक दारुणहोकर रूखी होजाती है व जलने लगती है व बड़ी कठिनतासे कुछढमैल्ले रंगका देखपड़ता है व जिसके उघारनेमें बड़ी कठिनता पड़ती है बस उसको जानना चाहिये कि यह नेत्र शुष्काक्षिपाक रोगसे उपहत होगया है १७ दूसरे वातजपाक का लक्षण—जिसकी पलकें कान मस्तक चौहड़ी ग्रीवाके ऊपरकीनसें इनस्थानोंमें वातरहै वा अन्यहीकिसी स्थानमेंरहै व वह भौंहमें व नेत्रमें पीड़ाकरे तो उसरोगको अन्यतो वात वा दूसराधात कहते हैं १८ अम्लाध्युषित नेत्ररोग के लक्षण—जबनेत्र बीचमें कुछ काला हो व अन्यत्र सबलाल हो जाय व सब नेत्र पकउठे दाह शोथ व आंसुओं का बहना भी हो तो उसे अम्लाध्युषित रोग कहते हैं यह रोग खटाई अधिक खानेसे होताहै इससे इसका अम्लाध्युषित नाम अन्वर्थकहै १९

विरज्यंतिचयास्सतादृग्व्याधिःशिरोत्पातइतिप्रदिष्टः ॥ २० मोहाच्छिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगःसशिराप्रहर्षः॥ताम्राश्रुमस्रंस्रवतिप्रगाढंतथानशक्नोत्यभिवीक्षितुंच २१निमग्नरूपंतुभवेद्धिकृष्णेसूच्येवविद्धप्रतिभातियद्वै। स्रावंस्रवेदुष्णमतीवयच्चतत्सव्रणंशुक्रमुदाहरंति २२दृष्टेस्समीपेनभवेत्तुयच्च नचावगाढंनचसंस्रवेद्धि ॥ अवेदनंवानचयुग्मशुक्रं तत्सिद्धिमायातिकदाचिदेव २३ स्पंदात्मकंकृष्णगतंसचोषं शंखेन्दुकुन्दप्रतिमावभासम् ॥ वैहायसाभ्रप्रतनुप्रकाशमथाव्रणंसाध्यतमंवदन्ति २४ ग-

चाहे पीड़ा सहितहों वा पीड़ा रहित जिसकी बरौनियां लाल होजायँ व उसपरभी कभी २ बहुतहीलालहोजाया करें ऐसेरोग को शिरोत्पातकहते हैं २० व जोकोई मोहबश होकर इसशिरोत्पातरोगकी उपेक्षा करताहै औषधादि नहीं करता तोफिर उसी केस्थानपर शिराप्रहर्ष नामरोगहोजाताहै इसमें नेत्र से ऐसेगाढ़े लाल आंशु गिरते हैं कि उसे फिर कुछ दिखाई नहीं देता २१ नेत्रके काले भाग में जो लाल रंगकी फूली पड़जाती है व उसी काले भाग में डूबीरहतीहै अथवा उसीकाले भागमें सुई के छेद के समान छेद होजाताहै व उससे उष्ण बहुत से आंशु गिरते हैं उसको सव्रण शुक्ररोग कहते हैं २२ यह शुक्ररोग अर्थात् फूली का रोग जो तिलके समीप न हो व बहुत गाढ़ा न हो व कुछ वहता नहो पीड़ा न होतीहो व उसमें मिहीन छेद न हों तोवह फूली औषध करने से कदाचित् सिद्धही होजाय इससे उसकी औषध करनी चाहिये २३ अव्रण शुक्र अर्थात्विना छेदकी फूली के लक्षण-आंख उठनेपर जोफूली नेत्रकेकाले भागमेंहो व अपने स्थान परसे कुछचलती रहै व उसकारंग शंख चन्द्रमा वा कुन्दके फूलके तुल्य उजलाहो आकाशके विना जलके वादर के तुल्य

म्भीरजातंबहुलंचशुक्रं चिरोत्थितं चापिवदन्तिकृच्छ्रम् विच्छिन्नमध्येपिशिताश्रितंवा चलंशिरासूक्ष्मसदृष्टिकृच्च २५ द्वित्वग्गतंलोहितमन्ततश्च चिरोत्थितंचापिविवर्जनीयम् ॥ उष्णाश्रुपातःपिडिकाचनेत्रे यस्मिन्भवेन्मुद्गनिभंचशुक्रम् २६ तदप्यसाध्यंप्रवदन्तिकेचिदन्यच्चयत्तित्तिरपक्षतुल्यम् ॥ श्वेतःसमाक्रामतिसर्वतोहि दोषेण यस्यासितमंडलंतु ॥ तमक्षिपाकात्ययमक्षिपाकंसर्वात्मकं वर्जयितव्यमाहुः २७ अजापुरीषप्रतिमोरुजावान् सलोहितोलोहितपिच्छलाश्रुः ॥ विगृह्यकृत्स्नंप्रचयोभ्युपैतित

उजली दिखाईदे व छोटीसी हो इस रोगको सुखसाध्य कहते हैं २४ व यही रोग जब बहुत गहरे में दूसरे वा तीसरे पर्त्त में हो व बड़ाहो व बहुत दिनोंका होजाय तो फिर कष्टसाध्य होजाता है वही अव्रण शुक्र वा फूली जब बढ़ेहुये मांस से घिरजाती है वा उसका बीच कुछ खाली होजाता है व वह चलती रहती है व देखनेवाली नसमें छिदी होती है व देखने नहीं देती २५ व दूसरी खालमें हो व भीतर में लालहो व बहुत दिनों की होगई हो तो असाध्य होने के कारण त्याज्य है व जिस फूली वाले के गरमआंशु गिरते हों व नेत्रमें फुंसीहो व फूली मूँगभरकी हो तो २६ उसे भी कोई २ असाध्यही कहते हैं व जो तितिरके पंख के रंगकी फूली होतो वह भी असाध्य होती व जिसके नेत्रके काले भागभरपर दोष से सफेदी दौड़जाय कहींकाला दिखायही न पड़े उसको अक्षिपाकात्यय नाम अक्षिपाक कहते हैं यहसन्निपातसे होताहै इससे यह वर्जित कहा जाताहै २७ अजका जात नाम रोगके लक्षण—जिसनेत्रमें छगड़ी की लेंड़ी के समान का रोगहो व वह ललाई लिये हो व लाल चिकने आंशु उस नेत्रसे गिरते हों व काले भागभरको मूँदकर वह रोगऊँचा होगया

ञ्जाजकाजातमितिव्यवस्येत् २८ प्रथमेपटलेदोषोयस्यदृ ष्टिव्यवस्थितः ॥ अव्यक्तानिसरूपाणिकदाचिदथपश्य ति २९ दृष्टिर्भृशंविक्लतिद्वितीयेपटलेगते ॥ मक्षिकाम शकान्केशान्जालकानिचपश्यति ३० मण्डलानिपता काश्चमरीचीन्कुंडलानिच ॥ परिप्लवांश्चविविधान्वर्ष मभ्रंतमांसिच ३१ दूरस्थानिचरूपाणि मन्यतेचसमीप तः ॥ समीपस्थानिदूरेचदृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ३२ यत्नवा नपिचात्यर्थंसूचीपाशंनपश्यति ॥ ऊर्ध्वंपश्यतिनाधस्ता त्तृतीयेपटलेगते ३३ महांत्यपिचरूपाणिछादितानीव

होतो उसरोगको अजकाजात कहनाचाहिये २८ जिसके पहिले पर्दे में वातादि दोष होताहै वह दृष्टिको रोंकताहै इसलिये उसे विविध प्रकार के रूप दिखाई देते हैं जैसे कि वायुका दोष होताहै तो नीला काला दिखाई देता है पित्तका दोष होता है तो पीला कफका होताहै तो उजलासा व रक्तका दोष होताहै तो सबलाल ही लाल दिखाई देताहै व सन्निपातके दोषसे होतो अनेक रंग दिखाई देते हैं २९ व जव रोग नेत्रके दूसरे पर्दे में होताहै तो दृष्टि अत्यन्त विह्वल होजाती है व तवरोगी मक्खी मसे केश व मकड़ी का जालासा नेत्रोंके आगे देखताहै ३० व मण्डल पताका कि- रण कुण्डल व विविध प्रकार के चञ्चल पदार्थ वर्षा वादल व अन्धकार देखता है ३१ दूरके पदार्थों को समीप मानता है व समीप वालोंको दूर यह दृष्टिके भ्रम से ऐसा दिखाई देताहै ३२ व चाहे वहुत यत्नकरे पर सुई में डोरा नहीं डाल सक्ता क्योंकि उसका नाका तो उसेदिखाईही नहींदेता व जिसकेनेत्रके तीसरे पर्देमें रोग होताहै वह ऊपरके पदार्थों को तो देखताहै औरनीचे वालोंको नहींदेखता ३३ बड़े २ रूपवालेभी पदार्थ उसेवादलसे घिरेहुये से दिखाईदेते हैं व सवको वहरोगी काननाक नेत्रसे राहित

वर्चांवरैः ॥ कर्णनाशाक्षिहीनानि विकृतानिचपश्यति ३४ यथादोषंचरज्येत दृष्टिर्दोषेबलीयसि ॥ अधःस्थि तेसमीपस्थ न्दूरस्थंचोपरिस्थिते ३५ पार्श्वस्थितेतथा दोषे पार्श्वस्थन्नैवपश्यति ॥ समन्ततःस्थितेदोषेसंकुला निचपश्यति ३६ दृष्टिमध्यगतेदोषे महद्ध्रस्वञ्चपश्य ति ॥ द्विधास्थितेद्विधापश्येद्बहुधाचानवस्थिते ३७ दोषेदृष्टिस्थितेतिर्य्यगेकंद्वैमन्यतेद्विधा ३८ तिमिराख्यः सविज्ञेयश्चतुर्थपटलंगतः ॥ रुणद्धिसर्वतोदृष्टिं लिंग नाशमनःपरम् ३९ अस्मिन्नपितमोभूते नातिरूढेमहा गदे ॥ चन्द्रादित्यौसनक्षत्रा वन्तरिक्षेचविद्युतः ४० निर्मलानिचतेजांसि भ्राजिष्णूनिचपश्यति ॥ सएवलिं

ही विकृतरूप देखताहै ३४ जिस बलवान् दोषसे उसकी दृष्टिरँग जाती है उसीके अनुसार वह देखताहै जब दृष्टिकेनीचेकी ओर कोईपदार्थहोताहै तो समीपकी वस्तुनहींदिखाईदेती वजोऊपर की ओरहोतो दूरकी वस्तुको नहींदेखता ३५ व जोदोष पास में स्थितहोताहै तोरोगी पासकी वस्तुको नहीं देखता व जोसब ओर दोषस्थितहोता है तो उसे मण्डलाकारही दिखाईदेताहै ३६ जब दृष्टिके बीचोंबीच में दोष होताहै तोबड़ा पदार्थ छोटा दिखाई देताहै व जबदो ठिकाने दृष्टिमें दोषहोताहै तो एकपदार्थ के दो दिखाई देते हैं व जो दोषका नियम एकत्र न रहै चलता फिरता रहे तो एकपदार्थ को रोगी बहुतसे देखता है ३७ जोदोष दृष्टि मेंटेढ़ास्थितहोताहै तोरोगी एकपदार्थको दोखण्ड करके मानता है ३८ जब तिमिर नाम रोग चौथे पर्दे में जाताहै तो सबओर से दृष्टिको रूंधलेताहै तबवह लिंगनाशरोग होजाताहै ३९ व यह लिंगनाश नाम महारोग अन्धकार रूप होकर जो बहुत बढ़न गयाहो तो चन्द्रमा सूर्य नक्षत्र बिजुली ४० येपदार्थ आकाश

गनाशस्तुनीलिकाकाचसंज्ञितः ४१ तत्रवातेचरूपाणि भ्रमन्तीवसपश्यति ॥ अविलान्यरुणाभानि व्याविद्धानीवमानवः ४२ पित्तेनादित्यखद्योतशक्रचापतडिद्गणान् ॥ नृत्यतश्चैवशिखिनःसर्वंनीलञ्चपश्यति ४३ कफेनपश्येद्रूपाणि स्निग्धानिचसितानिच ॥ सलिलप्लाविता नीव परिजाड्यानिमानवः ४४ पश्येद्रक्तेनरक्तानि तमांसिविविधानिच ॥ मसितान्यथकृष्णानि पीतान्यपिचमानवः ४५ सन्निपातेनचित्राणि विप्लुतानिचपश्यति ॥ बहुधावाद्विधावापि सर्वाण्येवसमन्ततः ४६ हीनाधिकां

में वहुत निर्म्मल प्रकाशित दिखाई दें व वही लिंगनाश रोग जब वहुत दिनों का होजाताहै तो नीलिका व काच रोग के नामसे प्रसिद्धहोजाता है कोई २ लोग ऐसा अर्थ करते हैं कि काचनामरोग जब चौथेपर्दे में आताहै तो लिंगनाश व नीलिका नाम रोग होजाता है परन्तु यह अर्थ श्लोकके अन्वय से नहीं आता इससे हमने वही लिखा है जो अन्वय से आता है ४१ वातज नेत्ररोगी सबरूपोंको घूमते हुये देखताहै व उसे सब रूप मटमैले कुछ लाल टेढ़ेसे दिखाई देते हैं ४२ व जिसके नेत्र में पित्तके दोषसे रोगहोताहै वह सूर्य्य जुगुनू इन्द्रधन्वा बिजुली नाचतेहुयेमोर व सब नीलेही पदार्थ देखता है ४३ व जिसके नेत्रों में कफके दोषसे रोगहोताहै वह मनुष्य चिकने उजले जलमेंडूबेहुये से व जड़ता युक्तरूपोंको देखता है ४४ व जिसके नेत्रमें रक्तके दोष से रोगहोता है वह मनुष्य लाल २ व विविध प्रकार के काले पदार्थ उजलाई लिये हुये व काले पीले भी रूपदेखताहै ४५ व जिसके नेत्रमें सन्निपातके दोषसे विकारहोताहै वह मनुष्य चित्र विचित्र उछलतेहुते एकही पदार्थ बहुत से वा एकके दो ऐसे सब को चारों ओरों से देखता है ४६ और

गान्यथवाज्योतींष्यपिचपश्यति ॥ पित्तंकुर्यात्परिम्लायि मूर्च्छितंरक्ततेजसा ४७ पीतादिशस्तथोद्योतान्वीनपिचपश्यति ॥ विकीर्य्यमाणान्खद्योतैर्वृक्षांस्तेजोभिरेवच ४८ वक्ष्यामिषड्विधंरागैर्लिंगनाशमतःपरम् ॥ रागोरुणोमारुतजःप्रदिष्टो म्लायीचनीलश्चतथैवपित्तात् ॥ कफात्सितश्शोणितजस्तुरक्तः समस्तदोषप्रभवोविचित्रः ४९ अरुणंमण्डलंदृष्ट्यां स्थूलकाचारुणप्रभम् ॥ परिम्लायिनिरोगेस्यात् म्लायिनीलंचमण्डलम् ५० दोषक्षयात्कदाचित्स्यात्स्वयंतत्रप्रदर्शनम् ॥

कोई रूप उसे हीनांग कोई अधिकांग दिखाई दें व नानाप्रकार के प्रकाशित पदार्थ उसे दिखाई दें तो रक्तके तेज में मिलकर पित्त परिम्लायि नाम तिमिर को उत्पन्न करता है ४७ तब रोगी को सब दिशा सूर्य्य व जुगुनू पीले व प्रकाशित दिखाई देते हैं वृक्ष सब तेजों से व जुगुनुओंसे युक्त दिखाई देते हैं ४८ अबरंगों के भेदसे लिंगनाशरोग इसके पीछे ६ प्रकार के कहते हैं वातसे जो लिंगनाश रोग होताहै वह लाल रंगका होताहै इस से उसमें सब लालही लाल दिखाई देताहै व पित्तसे उत्पन्न वालेका रंग मैला व नीला होता है इससे इस में येही रंग दिखाई देते हैं कफ के दोषवालेका रंग उजलाहै इससे उसमें उजलादिखाई देता व रक्तसे जो उत्पन्न होता वह अतिलाल होताहै इससे इसमें लालही दिखाई देताहै व सन्निपात से उत्पन्न लिंगनाशरोगका विचित्ररंग होताहै इससे उसमें सब पदार्थ विचित्ररंग के दिखाईदेते हैं ४९ वातजरोग के विशेष लक्षण कहते हैं—परिम्लायिरोगमें दृष्टिके आगे मोटेकाचकी ललाई के लालरंग का मण्डल दिखाई देता है अथवा मटमैला और नीला मण्डल दिखाई देताहै ५० व दोषके क्षय होजाने से जब

अरुणंमण्डलंवाताच्चञ्चलम्परुषन्तथा ५१ पित्ततो मण्डलंनीलं कांस्याभंपीतमेवच ॥ श्लेष्मणावहुलंस्निग्धं शंखकुन्देन्दुपाण्डुरम् ५२ चलत्पद्मपलाशस्थः शुक्लोविन्दुरिवाम्भसः ॥ मृद्यमानेचनयने मण्डलंत द्विसर्पति ५३ प्रवालपद्मपत्राभंमण्डलंशोणितात्मकम्॥ दृष्टिरागोभवेच्चित्रो लिंगनाशेत्रिदोषजे ५४ यथास्वं दोषलिंगानिसर्वेष्वेवभवन्तिहि ॥ षड्लिंगनाशाःषडिमे चरोगा दृष्ट्याश्रयाःषट्चषडेवचस्युः ५५ पित्तेनदुष्टे नविदग्धदृष्टिः पीताभवेद्यस्यनरस्यदृष्टिः ॥ पीतानिरूपाणिचतेनपश्येत्समानवः पित्तविदग्धदृष्टिः ५६ प्राप्तेतृ

जिसकादोष अधिकरहजाताहै तब वही रंग दिखाई देने लगता है व वात के दोपसे चञ्चल कड़ा और लाल मण्डलदेखपड़ता है ५१ व पित्तके दोपसे जब दृष्टि में विकार होताहै तो कुछ काला व कांस्यके रंगका व पीलारंग दिखाई देता है व कफके दोप से बहुत चिकना व शंख कुन्द चन्द्रमाके रंगका उजला रंग दिखाई देताहै ५२ व उसी लिंगनाश रोगमें कमल के पत्ते पर स्थित चलायमान जल के बूँदकासा शुक्लरंग दिखाई देताहै व नेत्रोंके मींजनेपर वह मण्डल इधर उधर फैलने व दौड़ने लगताहै ५३ व जब रक्तके दोपसे लिंगनाश रोग होताहै तो मूँगाव लाल कमल के पत्ते के रंगका मण्डल रोगी देखताहै व त्रिदोपज लिंगनाश रोगमें चित्र विचित्र दृष्टिका रंगहोजाता है ५४ व अपने २ दोपके रंग के चिह्न सबोंमें होते हैं प्रथमके कहे हुये ६ लिंगनाश रोग व दृष्टि के आश्रित ये ६ लिंगनाश सब मिलकर छ व छ वारह होतेहैं ५५ जिसरोगीकी दृष्टि दुष्ट पित्त के बढ़ने से पीली होजाती है उससे वह सब रूपोंको पीलेहीदेखताहै व उसरोगी का नाम पित्त विदग्धदृष्टि होजाताहै ५६

तीयेपटलेतुदोषे दिवानपश्येन्निशिवीक्षतेच ॥ रात्रौस शीतानुगृहीतदृष्टिः पित्ताल्पभावादपिवानपश्येत् ५७ तथानरः श्लेष्म विदग्धदृष्टिस्तान्येवशुक्लानिच मन्यते तु ॥ त्रिषुस्थितोयःपटलेषुदोषो नक्तांध्यमापादयति प्रसह्य ५८ दिवासमूर्य्यानुगृहीतदृष्टिः पश्येत्तुरूपाणिक फाल्पभावात् ॥ शोकज्वरायामशिरोभितापैरभ्याहताय स्यनरस्यदृष्टिः ५९ सधूमकान्पश्यतिसर्वभावात्सधूम दर्शीतिनरःप्रदिष्टः ॥ योह्रस्वजात्योदिवशेषुकृच्छ्रात्ह्र स्वानिरूपाणिचतेनपश्येत् ६० विद्योततेयस्यनरस्यदृ ष्टिर्दोषाभिपन्नानकुलस्ययद्वत् ॥ चित्राणिरूपाणिदिवा चपश्येत्सवैविकारोनकुलांध्यसंज्ञः ६१ दृष्टिर्विरूपाश्व

जब नेत्ररोगी के तीसरे पर्देमें दोष पहुँचजाता है तो वह फिर दिनमें नहीं देखता रात्रिमें देखताहै क्योंकि रात्रिमें दृष्टिमें शीतलता आजाती है व पित्तकी अल्पता होजाती है इसी रात्रिमें वह रूपोंको देखनेलगता है ५७ व वैसेही जब मनुष्य कफ विदग्ध दृष्टि होताहै तो सबरूपोंको शुक्लवर्ण मानताहै जिसरोगी के तीनों पटलों में कफ व्याप्त होजाताहै उसको जबरदस्तीवह रात्रिमें नहींदेखनेदेता इसरोगीकोरात्र्यन्धकहतेहैं व रोगको रतौंधी ५८ व दिनमेंसूर्य्यकी अनुग्रह दृष्टिसे वहदेखताहै दिनमेंउष्णताके कारणसे कफकीअल्पता होजातीहै शोकज्वर अतिपरिश्रम व शिरमें अत्यन्त घामलगनेसे जिस मनुष्यकी दृष्टि अत्यन्त हत होजाती है ५९ तबवह सबपदार्थों को धूमलेरंगके देखने लगताहै तबवह नर धूमदर्शी अर्थात् धूमिल देखनेवाला कहाने लगता है जो ह्रस्वदृष्टि पुरुष है जिसकी लम्बीदृष्टि नहीं है वहदिनमें सबरूपों को छोटे २ देखता है ६० जिस मनुष्य की दृष्टि दोष से युक्त होकर न्योरेकी सी होजाती है वह दिन में

सनोपसृष्टा संकोचमभ्यंतरतस्तुयाति ॥ रुजावगाढंच तमक्षिरोगंगंभीरकेतिप्रवदंतितज्ज्ञाः ६२ वाह्यौपुनर्द्वौ विहसंप्रदिष्टौ निमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च ॥ निमित्तत स्तत्रशिरोभितापात् ज्ञेयस्त्वभिष्पंदनिदर्शनस्सः ६३ सुरर्षिगंधर्वमहोरगानांसंदर्शनेनापिचभास्करस्य ॥ हन्ये तदृष्टिर्मनुजस्यचैवं सोलिंगनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः ६४ तत्राक्षिविस्पष्टमिवावभाति वैदूर्यवर्णाविमलाचदृष्टिः ॥ प्रस्तार्यर्म्मतनुस्तीर्णश्यावंरक्तनिभंसिते ॥ सश्वेतंमृदुशु क्लार्म्मशुक्लेतद्वर्द्धतेचिरात् ६५ पद्माभंमृदुरक्तार्मयन्मांसं

चित्रविचित्र रूप देखता है इसविकारको नकुलान्ध्य कहते हैं ६१ जिसकी दृष्टि वात रोगसे युक्तहोनेसे भीतरको सिकुड़जाती है व नेत्रमें पीड़ा बड़ी होती है इस नेत्र रोग को उसके जानने वाले लोग गम्भीर दृष्टिकहते हैं ६२ अभिघातज लिंगनाश दो प्रकारके होते हैं वे बाहरी कहाते हैं उनमें एक किसी निमित्तसे होता है व दूसरा विना निमित्तसे योंही होआता है उनमें निमित्तसे जो होता है वह शिरमें बड़ाघाम वा आँच लगनेसे होता है अथवा कभी नेत्र के उठने से होता है ६३ जिस मनुष्यकी दृष्टि देवता ऋषि गन्धर्व अजगर तक्षकादि महासर्पों के देखने से वा सूर्य्य को बहुत देखनेसे इनसबोंके तेजसेहत होजाती है वह लिंगनाश अनिमित्त कहाताहै ६४ इसमें नेत्र वैदूर्य्य मणिके तुल्य निर्म्मल नीलरंगका दिखाईदेताहै व दृष्टि विमलहोजाती है वस दृष्टिज दोषहोगये नेत्रके श्वेतभागमें पतला लम्बा श्याम रंगका वा लालरंगका कुछ उजलाई लिये कोमल अथवा शुक्ल हरिंगका मसा जो झट पट बढ़आवे तो उसे प्रस्तारि अर्म्मरोग कहते हैं ६५ व जो उसीनेत्रके उजले भागमें कमलके रंगका कुछलाल कोमल मसाहोतो उसे रक्तार्म्म रोग कहते हैं व जो

वीयतेसिते ॥ पृथुमदधिमांसामेवहुलंचयकृन्निभम् ६६ स्थिरंप्रस्तारिमांसाढ्यंशुक्लंस्नाय्वर्मपंचमम्॥ श्यावाःस्युः पिशित निभाश्चविंदवोयेशुक्त्याभासितसिताः सशुक्ति संज्ञाः ६७एकोयःशशरुधिरोपमश्चविंदुःशुक्लस्थोभवति तदर्जुनंवदंति ॥श्लेष्ममारुतकोपेनयच्छुक्लेमांसमुन्नतं ॥ पिष्टवत्पिष्टकंविद्धिमलाक्तादर्शसन्निभम्६८जालाभः क ठिनशिरोमहांसरक्तः संतानस्मृतइहजालसंज्ञितस्तु ॥ शुक्लस्थासितपिडिकाः शिरावृतायास्ताब्रूयादसितसमी पजाःशिराजाः ६९ कांस्याभोमृदुरथवारिविन्दुकल्पोवि ज्ञेयोनयनसितेवलासकाख्यः ७० पक्वःशोथःसंधिजः प्र

मसाउसी उजले भागमें यकृत्की तरह कुछलाल कुछकाला मिलाहुआ चौड़ा मोटा कोमलहो उसेअधिमांसार्म्म कहतेहैं व जो बड़ा यकृत्कीतरहका कुछलाल कालामिलाहुआ ६६ स्थिर बहुत फैलाहुआ मांससेयुक्त सूखामसाहो उसे स्नाय्वर्म्म कहते हैं यह पाँचवां है शुक्तिरोग सूँतीके डौलके काले वा मांसकेरंगके बूँद स्थिर जो नेत्रके उजलेभागमें होते हैं वह रोग शुक्तिनाम कहाताहै ६७ व नेत्रके उजलेभागमें जो एकही विन्दु चौगड़ा वा खरगोशके रुधिरके रंगकाहो उसरोगको अर्ज्जुन कहतेहैं व कफ और बातके कोपसे नेत्रके उजलेभागमें पीठाके तुल्य मांस ऊँचाहोजाताहै उसका पिष्टकनाम होताहै इसका रंगप्रायःमैले दर्प्पणकासा होताहै ६८ नेत्रके उजलेही भागमें नसों का जाल सा बनकर बड़ाभारी तनजाताहै व उसका लालरंग होता है ऐसेरोगको जाल कहतेहैं जो नेत्रके कालेभागके समीप उजले भागमें नसोंसे घिरीहुई उजली फुंसियाँ होती हैं उनको शिरा- जा कहतेहैं ६९ नेत्रके उजलेभागमें काँसेके रंगका कोमलजल के छोटे विन्दुकेतुल्य जो होताहै उसे बलासरोग कहते हैं ७०

स्रवेद्यःसांद्रंपूयंपूतिपूयालसंस्यः ॥ ग्रन्थिर्नाल्पोदृष्टिसं धावपाकीकंडूप्रायोनीरुजस्तूपनाहः ७१ गत्वासंधीनश्रु मार्गेणदोषाःकुर्युःस्रावान्लक्षणैःस्वैरुपेतान् ॥ तंहिस्राव नेत्रनाडीतिचैकेतस्यालिंगंकीर्त्तयिष्येचतुर्धा ७२ पाकः संधौसंस्रवेद्यस्तुपूयंपूयास्रावोसोगदःसर्वजस्तु ॥ श्वेतं सांद्रंपिच्छिलंयः स्रवेद्धि श्लेष्मास्रावोनीरुजःसंप्रदिष्टः ७३ रक्तास्रावःशोणितोत्थोविकारस्स्रावेदुष्णंतत्ररक्तम्प्र भूतम् ॥ हारिद्राभंपीतमुष्णंजलंवापित्तास्रावः संस्रवे त्संधिमध्यात् ७४ ताम्रातन्वीदाहपाकोपपन्नाज्ञेयावैद्यैः

नेत्रके सन्धिसे उत्पन्न शोथ जिसमें सुईसे कोंचनेकीसी पीड़ा हो व उसमेंसे दुर्गन्धियुक्त पीबबहै उसरोगको पूयालस कहते हैं नेत्रके काले और उजलेके जोड़पर नीलीगाँठ जो हो व नतो पाके न पीड़ाकरे केवल खजुलातीरहै उसको उपनाहरोग कहते हैं ७१ वात पित्त कफ रक्त ये चारोदोष आँशुओं के मार्गमें होकर नेत्रके सन्धियोंमें जाकर अपने २ लक्षणोंसे युक्त पदार्थों कोचु- आते हैं उसरोगको नेत्रस्राव वा नेत्रनाड़ी कहतेहैं इसके चिह्न चारप्रकारके होते हैं उन्हें हमकहेंगे ७२ जो नेत्र सन्धिमें पाका होकर पीबको चुआवे उसरोगको पूयास्रावकहते हैं वहवात पि- त्त कफ रक्त चारोंकेयोगसे उत्पन्नहोताहै व जिस पकेहुयेसे उज ली गाढ़ी व चिकनी पीबबहै उसे कफास्राव जानो ७३ व जो रुधिरसे विकारहोताहै उसे रक्तास्राव कहते हैं उसमें उष्ण रक्त बहुतसा चूताहै व जो पित्तजसन्धिमें विकारहोताहै उसमेंसे ह- रिद्राके रंगका पीलाउष्णजल निकलताहै इससे उसे पित्तास्राव कहते हैं ७४ नेत्रके काले व उजले जोड़पर लाल २ छोटीसी दाहयुक्त पकीहुई गोलसूजन होतीहै उसे पर्वणी कहते हैं व उसीकाले व नीलेके जोड़पर जो वात पित्त कफ रक्तके चिह्नों

पर्वणीवृत्तशोफा ॥ जातासन्धौकृष्णशुक्लेऽलजीस्यात्तस्मि न्नेवख्यापितापूर्वलिङ्गैः ७५ कृमिग्रन्थिर्वर्त्मनःपक्ष्मण श्चकंडूंकुर्युःकृमयःसंधिजाताः ॥ नानारूपावर्त्मशुक्लांत संधौचरंत्यंतर्नयनंदूषयंतः ७६ अभ्यंतरमुखीताम्रावा ह्यतोवर्त्मनश्चया ॥ सोत्संगोत्संगिपिडिकासर्वजास्थूल कंडुरा ७७ वर्त्मांतेपिडिकाध्माता भिद्यंतेधःस्रवंतिच ॥ कुम्भीकवीजसदृशाः कुंभीकाःसन्निपातजाः ७८ स्रावि ण्यःकंडुरागुर्व्योरक्तसर्षपसंनिभाः ॥ पिडिकाश्चरुजावं त्यःपोथकाइतिताःस्मृताः ७९ पिडिकायाः खरास्स्थूलाः सूक्ष्माभिरभिसंवृताः ॥ वर्त्मस्थाशर्करानामासरोगोवर्त्म दूषकः ८० एर्वारुबीजप्रतिमाःपिडिकामंदवेदनाः ॥ श्ल

सेयुक्त छोटीसी फुंसी होती है उसे अजली कहते हैं ७५ वरोनी व पलकों के सन्धिमें जो छोटे २ कीड़ेउत्पन्न होजाते हैं व उस स्थान में खजुहट उत्पन्न करते हैं व नानाप्रकारके रूपोंसे नेत्रके बीचको दूषित करतेहुये चलते रहते हैं इसरोगको क्रिमिग्रन्थि कहते हैं ७६ वर्त्मरोग अर्थात् पलक परके रोग वरौनियोंके बा- हर भीतर को मुख किये हुई लालरंग की फुँसी ऊँचीहो उसको उत्संगपिड़िका कहते हैं यह वातादिसब दोषोंसे उत्पन्न होती है व उसमें खजुहट उठती है ७७ वरौनी के किनारे पर फुंसीहो फूलकर पकती व फूटती हैं व बहने लगती हैं ये कुम्भी के बी- जके तुल्य चपटी होनेके कारण कुम्भीका कहाती हैं व सन्नि- पात से उत्पन्न होती हैं ७८ लालसरसों भर २की फुंसियां पीड़ा युक्त खजुली सहित जो वरौनियोंकी जड़ में होती हैं उनमें से कुछ जलसावहा करताहै उन्हें पोथकियां कहते हैं ७९ नेत्रकी पलकों के ऊपर मोटी फुंसी जो अन्य २ छोटी २ फुंसियों से घिरीहुई होती है व खरखरी होती है इसरोगको वर्त्मस्था शर्करा

क्ष्णाःखराश्चवर्त्मस्थास्तदर्शोवर्त्मकीर्त्यते ८१ दीर्घांकुरःखरःस्तब्धोदारुणोभ्यंतरोद्भवः ॥ व्याधिरेषोतिविख्यातःशुष्कार्शइतिसंज्ञितः ८२ दाहतोदवतीताम्रापिडिकायातुवर्त्मजा ॥ मृद्वीमंदरुजासूक्ष्मा ज्ञेयासांजननामिका ८३ वर्त्मोपचीयतेयस्य पिडिकाभिःसमंततः ॥ सवर्णाभिःस्थिराभिश्चविद्याद्बहलवर्त्मच ८४ कंडूमताल्पतोदेन वर्त्मशोथेतयोनरः ॥ नसंप्रच्छादयेदक्षि यत्रासौवर्त्मबन्धकः ८५ मृद्वल्पवेदनंताम्रंयद्वर्त्मसममेवच ॥ अकस्माच्चभवेद्रक्तं क्लिष्टवर्त्मेतितद्विदुः ८६ क्लिष्टंपुनःपित्तयुतं शोणितंविदहेद्यदा ॥ ततःक्लिन्नत्वमापन्नमुच्यते वर्त्मकर्दमः ८७ वर्त्मजोबाह्यतोंतश्चश्यावंशूनंसवेदन

कहते हैं व यह पलकों को दूषित करदेताहै ८० ककड़ी के बीज के तुल्य थोड़ी पीड़ावाली चिकनी व खरखरी भी फुंसियां जो पलकके ऊपर उभड़ आती हैं वह रोग अर्शोवर्त्म कहाता है ८१ पलकपर लम्बा अँखुआसा खरखरा कड़ा दारुण होताहै यह भीतरसे उत्पन्न होताहै इसरोगको शुष्कार्शस् कहते हैं ८२ पलक के ऊपर दाह व कोंचनेकीसी पीड़ासे युक्त लाल फुंसी कोमल थोड़ी पीड़ावाली व सूक्ष्म होती है उसे अञ्जना कहते हैं ८३ जिसकी पलक सबओर से पलककेही रंगवाली फुंसियोंसे युक्त होजाय उसरोगको बहल वर्त्म कहते हैं ८४ खजुलीयुक्त थोड़ीसीकोंचनेकी पीड़ासे भी युक्त सूजनसे जो मनुष्य नेत्रको बराबर न मूँदसके उसरोगको वर्त्म बन्धक कहते हैं ८५ जोपलककोमल थोड़ी पीड़ासे युक्त लाल व समानहो पर अकस्मात् बहुतलाल होजाय उसरोगको क्लिष्ट वर्त्म कहते हैं ८६ वही क्लिष्टवर्त्म रोग जब पित्तसे युक्त होताहै तो ललाईको जलादेताहै तबवह कुछ गीलासा होजाताहै इससे उसकानाम वर्त्म कर्दम कहाजाता

म् ॥ तदाहुःश्यामवर्त्मेति नेत्ररोगविशारदाः ८८ अरु
जंबाह्यतःशूनं वर्त्मयस्यनरस्यहि ॥ प्रक्लिन्नवर्त्मतद्विद्या
त् क्लिन्नमत्यर्थमंततः ८९ यस्यधौतान्यधौतानि संनह्य
न्तेपुनःपुनः ॥ वर्त्मान्यपरिपक्वानि विद्यादक्लिन्नवर्त्मतत्
९० विमुक्तसंधिनिश्चेष्टं वर्त्मयस्यनमील्यते ॥ एतद्वा
ताहतंकर्म जानीयादक्षिचिंतकः ९१ वर्त्मान्तरस्थंविष
मं ग्रन्थिभूतमवेदनम् ॥ आचक्षीतार्बुदमिति सरक्त
मविलंबितम् ९२ निमेषणिःशिरावायुः प्रविष्टोवर्त्मसं
श्रयः ॥ चालयत्यतिवर्त्मानि निमेषमितितंविदुः ९३ यः
स्थितोवर्त्ममध्येतुलोहितोमृदुरंकुरः ॥ तद्रक्तजंशोणिता
र्शः छिन्नंछिन्नंप्रवर्द्धते ९४ अपाकीकठिनःस्थूलो ग्रन्थि

है ८७ जो पलक वा पपोटा भीतर व वाहर से सूजकर श्याम
व पीड़ासहितहो पलकोंके रोगों के जानने में चतुरलोग उसे
श्याववर्त्मरोग कहते हैं ८८ जिस पुरुषकी पलक ऊपर सूजीहो
पर पीड़ा न होती हो व भीतर कीचर आदि से अत्यन्त गीली
रहती हो उसरोगको प्रक्लिन्न वर्त्म कहते हैं ८९ जिसकीपलक
वरौनियाँ वार २ धोई जायँ व वार २ विनाधोई होजायँ तुरन्त
लासा कीचर लपट जायाकरे व अन्य वरौनियां सव वनाय परि-
पक्व होगईहों उसरोगको अक्लिन्न वर्त्म जानना चाहिये ९० जि-
सनेत्र का सन्धि कुछ हटजाय पर उघर मूँद न सके नेत्रकी चि-
न्ता करनेवाला वैद्य इसरोगको वातहत वर्त्म जाने ९१ जिसकी
पलक के भीतर टेढ़ी पीड़ा रहित गांठ लालहो व वढ़ने में शी-
घ्रताकरतीहो उसरोग को अर्व्बुद कहते हैं ९२ पलक में टहरा
हुआ वायु पलक मारनेवाली नसमें प्रवेशकरके जो वार२ पलक
को उघारे मूँदे उसको निमेष रोग कहते हैं ९३ रक्तके विकार से
नेत्रके पपोटेके भीतर जो लाल २ कोमल अंकुर निकले व का-

वर्त्मभवोरुजः ॥ संकण्डूःपिच्छिलःकोला प्रमाणोलग
णस्तुसः ९५ त्रयोदोषाबहिःशोथंकुर्युश्छिद्राणिवर्त्मनोः॥
प्रस्रवन्त्यन्तरुदकं विशवद्विशवर्त्मतत ९६ वाताद्याव
र्त्मसंकोचञ्जनयन्तियदामलाः ॥ तदाद्रष्टुन्नशक्नोतिकु
ञ्चनन्नामतद्विदुः ९७ प्रचालितानिवातेन पक्ष्माण्य
क्षिविशन्तिहि ॥ घृष्यन्त्यक्षिमुहुस्तानि संरम्भञ्जनयं
त्यपि ९८ असितेचसितेभागे मूलकोशात्पतन्तिहि ॥
पक्ष्मकोपःसविज्ञेयोव्याधिःपरमदारुणः ९९ वर्त्मपक्ष्मा
शयगतं पित्तंरोमाणिशातयेत् ॥ कण्डूदाहञ्चकुरुते प
क्ष्मशातन्तमादिशेत् १०० ॥

इतिनेत्ररोगनिदानम् ॥

टने पर फिर २ बढ़ा करे उसे शोणितार्शस् रोग कहते हैं ९४
पपोटे में उत्पन्न कड़ी मोटी पीड़ा सहित गांठ जो पड़ती है व
पकती नहीं चिकनी होती व बेरभर होती है व उसमें खजुहट
उठती रहती है इसरोगको लगण कहते हैं ९५ वात पित्त कफ
ये तीनों पलकोंके ऊपर सूजन करें व उसमें फिर छोटे २ छेद
करदें जिनमेंसे कमलकी जड़में जो पतले २ सूतसे होते हैं वैसी
पतली धारसे पानी बहावें तो उसरोगको विशवर्त्म कहते हैं ९६
वातादिक दोष जब पलकको सिंकोरलेतेहैं तो वह फिर देखनहीं
सक्ता ऐसेरोगको कुञ्चन कहतेहैं ९७ वातसे चलाईहुई बरौनि
यां जब नेत्रके भीतर घुँसजाती हैं व नेत्रमें बार २ घिसती हैं उ
ससे सूजन उत्पन्न कराती हैं ९८ वह सूजन चाहे नेत्रके काले
भागमेंहो वा उजलेभागमेंहो व बरौनियोंकी जड़में वे घूमकर
घुँसती चलीजाती हैं यह परम दारुण रोगहोता है इसका नाम
पक्ष्मकोपहै ९९ पपोटे व बरौनियोंके आशयमें जाकर दुष्ट पित्त
बरौनियों को सूक्ष्मकर देता है अर्थात् गिरादेताहै व खजुली

शिरोरोगाश्चजायंते वातपित्तकफैस्त्रिभिः ॥ संनिपातेनरक्तेन क्षयेनकृमिभिस्तथा १ सूर्य्यावर्त्तानन्तवाताद्धावभेदकशंखकैः॥यस्यानिमित्तंशिरसोरुजश्च भवन्ति तीव्रानिशिचातिमात्रम् ॥ बन्धोपतापैःप्रशमश्चयत्र शिरोभितापःससमीरणेन २ यस्योष्णमंगारचितंतथैव भवेच्छिरोदाह्यतिवाक्षिनासा ॥ शीतेनरात्रौचभवेच्छमश्च शिरोऽभितापस्सतुपित्तकोपात् ३ शिरोभवेद्यस्यकफोपदिग्धं गुरुप्रतिष्टब्धमथोहिमञ्च ॥ शूनाक्षिकूटंवदनंचयस्य शिरोभितापःसकफप्रकोपात् ४ शिरोऽभिता

और दाह करता है इसरोगको पक्ष्मशात कहनाचाहिये १०० ॥
इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेनेत्ररोगनिदान
न्त्रिषष्टितमम् ॥ ६३ ॥

दोहा ॥ चौंसठयें महँ सकलशिर रोग निदान बखान ॥
देखहिं विज्ञलगाय चित ये कैसे बलवान १

अब शिरके रोगोंके निदान कहतेहैं—शिरके रोग वात पित्त व कफ तीन तो इनसे होते हैं व सन्निपात रक्त क्षय व क्रिमियोंसे चार ये होते हैं सूर्य्यावर्त्त अनन्तवात अर्द्धावभेदक व शंखक सब मिलकर ११ होते हैं १ वातज शिरोरोगके लक्षण जिसके शिरमें विना कारण के तीव्र पीड़ायें होती हैं वे रात्रि में अधिक होती हैं वे बांधनेसे अथवा सेंकनेसे अच्छी होजाती हैं उसे वातिकशिरोरोग कहते हैं २ पैत्तिक शिरोरोगके लक्षण—जिसका शिर अंगारों के समान उष्ण होजाय नेत्र व नासिका जलने लगे शीत चन्दनादि लगानेसे अथवा रात्रिमें शान्त होजायाकरे उस शिरोऽभितापको पित्तज जानना ३ जिसका शिर कफसे युक्त होताहै भारी रहताहै बँधाहुआ जान पड़ताहै ठण्ढा रहता नेत्र व मुखपर भभरीछाजाती है बस ऐसे शिरोरोगको कफकेकोपसे जाननाचा-

पेत्रितयप्रवृत्ते सर्वाणिलिंगानिसमुद्भवन्ति ५ रक्तात्मकः पित्तसमानलिंगः स्पर्शासहत्वंशिरसोभवेच्च ॥ असृग्वसाश्लेष्मसमीरणानांशिरोगतानामिहसंक्षयेण ६ क्षत्रप्रवृत्तिःशिरसोभितापः कष्टोभवेदुग्ररुजोतिमात्रम् ॥ संस्वेदनच्छर्दनधूमनस्यैरसृग्विमोक्षैश्चविवृद्धिमेति ७ निस्तुद्यतेयस्यशिरोतिमात्रं सम्भक्ष्यमाणंस्फुरतीविचान्तः ॥ घ्राणाच्चगच्छेद्रुधिरंसपूयं शिरोभितापःकृमिभिः सघोरः ८ सूर्योदयंयाप्रतिमन्दमन्दमक्षिभ्रुवंरुक्समुपैतिगाढा ॥ विवर्द्धतेचांशुमतासहैव सूर्यापवृत्तौविनिव

हिये ४ सन्निपातक शिरकी पीड़ा में वात पित्त कफतीनों के सब लक्षण होते हैं ५ रक्त के कोपसे जो शिरमें पीड़ा होती है उसमें सबपित्त के कोपवाली पीड़ा के लक्षण होते हैं उससे अधिक इसमें यह होता है कि शिर किसीसे छुआया नहीं जासक्ता रक्त वसा कफ पवन जो सदा शिरमें रहते हैं जब इनका नाशहोजाता है तो शिर में अत्यन्त पीड़ा होती है ६ इस में छींकें बहुत आती हैं शिर में पीड़ा होती और जलता है ऐसा कष्ट व ऐसी पीड़ा होती है कि रहा नहीं जाता इसे क्षयज शिरोरोग कहते हैं इस में पसीना निकालनेसे वमनकराने से धुआँकी नास देने से व रुधिर निकालने से अधिक पीड़ा होती जाती है ७ क्रिमिज शिरके रोगके लक्षण—जिसके शिरमें सुईआदि के कोंचने कीसी अत्यन्त पीड़ा हो व ऐसा जानपड़े कि शिरका भीतर कोई खायेलेता है इससे फूट जाया चाहताहै व नासिकासे पीव सहित रक्त बहाकरे ऐसे शिरोरोगको क्रिमियों के योगसे जानना चाहिये ८ सूर्यावर्त शिरोरोगके लक्षण—सूर्योदयहोते २ नेत्र और भौहोंमें पहिले धीरे २ पीड़ाहोनेलगती है फिर जैसे २ सूर्य ऊपरको चढ़ते आते हैं उन के साथही साथ पीड़ा बढ़ती जाती

र्त्ततेच ९ शीतेनशान्तिंलभतेकदाचिदुष्णेनजन्तुस्सु
खमाप्नुयाद्वा ॥ सर्वात्मकंकष्टतमंविकारंसूर्यापवृत्तन्तमु
दाहरन्ति १० दोषास्तुदुष्टास्त्रयएवमन्यांसंपीड्यगाढं
सरुजांसतीव्राम् ॥ कुर्वन्तिसाक्षिभ्रुविशंखदेशे गतिंकरो
त्याशुविशेषतश्च ११ गण्डस्यपार्श्वेतुकरोतिकम्पंहनुग्र
हंलोचनजांश्चरोगान् ॥ अनन्तवातन्तमुदाहरंति दो
षत्रयोत्थंशिरसोविकारम् १२ रूक्षाशनात्यध्यशनप्रा
ग्वातावश्यमैथुनैः ॥ वेगसंधारणायास व्यायामैःकुपितो
निलः १३ केवलःसकफोवार्द्धं गृहीत्वाशिरसोबली ॥ म

है व दोपहरके पीछे जैसे २ सूर्य्य नीचे को जाते हैं उनके साथ
ही साथ निवृत्त होती जाती है ९ कभी शीतवस्तु के लगाने से
पुरुष शान्तिको पाताहै व कभी उष्णवस्तु के लगाने परभी यह
विकार सन्निपात के कारण से होता है व इसको सूर्य्यावर्त्त अथवा
सूर्य्यापवृत्त कहते हैं १० अनन्त वात नामक शिरके रोगके ल-
क्षण—वात पित्त कफ तीनों दोष दुष्टहोकर गर्द्दनको पीड़ित करके
अति तीव्र गाढ़ी पीड़ासे युक्त करते हैं व नेत्र भौंहैं कनपटियों
में स्थित होकर उनमें विशेष पीड़ा करते हैं ११ व कानके पास
फरफराहटको करतेहैं चौहड़ीको जकड़देते हैं नेत्रमें अनेक रोग
उत्पन्न करते हैं इस सन्निपात से उठे हुये शिरके विकार को
अनन्त वात कहते हैं १२ अधोखी व आधाशीशीके लक्षण—बहुधा
रूखेही अन्नों के अधिक खानेसे भोजन करके फिर तुरन्तही भो-
जनकरने से पुरवाई बहने से अत्यन्त मैथुन करने से मल मूत्र
वमनादि वेगों के रोंकनेसे परिश्रम करने से अधिक दण्ड मुद्गरादि
करने घुमाने से कुपित होकर वायु १३ केवल आपही अथवा
कफ युक्त होकर आधे शिरको ग्रहण करके वह बलवान् गर्द्दन
कनपटी कान नेत्र व ललाट इनके आधेमें तीव्र वेदनाको

न्याभ्रूशंखकर्णाक्षिललाटेर्द्धेतिवेदनाम् १४ शस्त्रारणिनि भांकुर्यात्तीव्रांसोर्द्धावभेदकः ॥ नयनंवाथवाश्रोत्रमभिवृद्धोविनाशयेत् १५ पित्तरक्तानिलादुष्टाः शंखदेशेविमूर्च्छिताः ॥ तीव्ररुग्दाहरागंहि शोथंकुर्वन्तिदारुणम् १६ साशिरोविषवद्वेगी निरुध्याशुगलंतथा ॥ त्रिरात्राज्जीवितंहन्ति शंखकोनामनामतः १७ त्र्यहाज्जीवतिभैषज्यं प्रत्याख्यायास्यकारयेत् १८ ॥ इतिशिरोरोगनिदानम् ॥

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च॥ यानाच्चशोकादतिकर्शनाच्च भाराभिघाताच्छयनाद्दिवा

करता है १४ सो भी सामान्य पीड़ा नहीं करता किन्तु मानों कोई कुल्हाड़ी आदिसे चीरे डालताहै ऐसी पीर होती है इसरोग को अर्द्धावभेदक कहते हैं बहुत अधिक बढ़जानेसे यह रोग जिस ओर पीड़ा करता है उधर के नेत्रको वा कानको फोड़ डालता है १५ शंखकरोगके लक्षण-पित्त रक्त वायु दुष्ट होकर कनपटियों में जाते हैं तब वहां तीव्र पीड़ा दाह ललाई व दारुण सूजनको करते हैं १६ यह रोग विषके समान वेगसे शिरको रूँधकर झट गलेको भी रूँध लेताहै बस तीन रात्रिमें प्राण हरलेताहै इस रोगको शंख कहते हैं १७ जब इसरोग में रोगीतीन दिनतक जीता बचे तो औषध करना चाहिये व प्रथम से भी करतारहै तो अच्छाही है १८ ॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेशिरोरोग निदानञ्चतुष्षष्टितमम् ॥ ६४ ॥

दोहा ॥ पैंसठवें महँ प्रदरप्रथ रोग निदान कहेव ॥
यह नारिन का रोग है भाषे ताके भेव १

अब स्त्रियोंके रोग कहतेहैं उनमें प्रथम प्रदररोगके लक्षण-यह रोग विरुद्ध भोजन करनेसे मदिरा पीनेसे अजीर्ण में फिर भोजन

च. १ तंश्लेष्मपित्तानिलसन्निपातैश्चतुःप्रकारंप्रदरंवद
न्ति ॥ असृग्दरंभवेत्सर्वंसांगमर्दंसवेदनम् २ तस्याति
वृद्धौदौर्बल्यं श्रमोमूर्च्छामदस्तृषा ॥ दाहःप्रलापःपाण्डु
त्वं तन्द्रारोगाश्चवातजाः ३ आमंसपिच्छाप्रतिमंसपां
डुपुलाकतोयप्रतिमंकफात्तु ॥ सपीतनीलासितरक्तमुष्णं
पित्तार्त्तियुक्तंभृशवेगिपित्तात् ॥ रूक्षारुणंफेनिलमल्पम
ल्पंवातार्त्तिवातात्पिशितोदकाभम् ४ सक्षौद्रसर्पिर्हरिता
लवर्णंमज्जाप्रकाशंकुणपंत्रिदोषम् ॥ तच्चाप्यसाध्यंप्रवदं
तितज्ज्ञानतत्रकुर्वीताभिषक्चिकित्साम् ५ मासादपिच्छ

करनेसे गर्भपात होनेसे अति मैथुन करनेसे अधिकचलनेसेअति
शोकसे अतिदुबराने से भारी बोझा उठाने से दिनमें सोनेसे १
इन कारणों से प्रदररोग उत्पन्न होताहै वह वातपित्त कफ व
सन्निपातोंके योगसे चार प्रकारका होताहै सब प्रकार के प्रदरों
में योनि से रुधिर वहताहै व पीड़ा सहित शरीर ऐंठता है व
हाथ पैरों में कुछ सूजनभी आजाती है २ प्रदर रोगके उपद्रव
प्रदररोग के अत्यन्त बढ़जानेपर शरीरमें दुर्व्वलता श्रम मूर्च्छा
मद पिपासा दाह अनर्थ वकना पीला होजाना तवांना व सब
वातज रोगहोतेहैं ३ कफजप्रदरके लक्षण–कफके प्रदररोगमें आँव
के तुल्य चिकना उजला व मांड़ वा पसावनके रंगका वि-
कार गिरता है.व पित्तके में पीला नीला काला लाल पित्त के
रंगका उष्ण पीड़ा सहित व पित्त के विकारोंसे युक्त अधिक व-
हताहै वातजप्रदरके लक्षण–इसमें रूखा लाल फेनायुक थोड़ा२
मांसके धोवन के रंगका वहताहै व वातज विकारों सहित होता
है ४ सन्निपातसे उत्पन्न प्रदरके लक्षण–मधु घृत व हारिताल के
रंगका व मज्जाके रंगका दुर्गन्धि युक्त विकार वहताहै इसरोग
को उस विद्याके जानने वाले असाध्य कहते हैं इससे वैद्यइस

दाहार्त्तिपंचरात्रानुबंधिच ॥ नैवातिबहुलन्नाल्पमार्तवंशु
द्धमादिशेत् ६ शशासृक्प्रतिमंयच्च यद्वालाक्षारसोपम
म् ॥ तदार्त्तवंप्रशंसंति यच्चाप्सुनविरज्यते ७ ॥
इतिप्रदर निदानम् ॥
विंशतिर्व्यापदोयोनेर्निर्दिष्टारोगसंग्रहे ॥ मिथ्याचारे
णताःस्त्रीणां प्रदुष्टेनार्त्तवेनच १ जायंतेबीजदोषाच्च दैव
द्वाश्रृणुताःपृथक् ॥ सफेनिलमुदावर्त्ता रजःकृच्छ्रेणमुंच
ति २ वंध्यांदुष्टार्त्तवांविद्याद्विप्लुतांनित्यवेदनाम् ॥ परि
प्लुतायांभवतिग्राम्यधर्मेणरुग्भृशम् ३ वातलाकर्कशास्त

रोगकी चिकित्सा न करे ५ विशुद्ध रजोदर्शन के लक्षण—जो म-
हीना भरकेपीछे चिकनाई दाह व पीड़ा से रहित रुधिरगिरे अ-
र्थात् वह रूपाहो वहुत गरम न हो न उसके होनेमें कुछपीड़ा
हो ऐसा रुधिर जो निकलताहै वह शुद्धार्त्तव कहाता है ६ व
जोरुधिर चौगड़ा वा खरगोशकेरक्तकेरंगकाहो अथवा जो महाउर
के रंगकाहो अर्थात् जो लाह वा लाखके रंगकाहो व उसका रंग
जल से धोने से छूटजाय दाग बनारहे ऐसे ऋतु धर्म्मको शुद्ध
कहते हैं ७ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेप्रदररोगनिदानम्पञ्चषष्टि
तमम् ॥ ६५ ॥

दोहा ॥ छासठयें महँ योनिगत रोगनिदान बखान ॥
कीन माधवाचार्य्य तिन देखहिं लोगमहान १ ॥

योनिके रोगोंका निदान—रोगों के संग्रह में योनिके बीसरोग
कहे गयेहैं वे स्त्रियों के मिथ्या आहार विहार करने से वा आ-
र्त्तवधर्म्म के दुष्टहोने से होतेहैं १ व बीजके दोषसे और भाग्यसे
भी होते हैं उनको अलग २ सुनो जो योनिफेना सहित कष्ट से
रुधिरको छोड़तीहै वह उदावृत्तायोनि कहातीहै २ जिस योनिमें

ध्याशूलनिस्तोदपीडिता ॥ चतसृष्वपिचाद्यासु भवंत्य निलवेदनाः ४ सदाहंक्षीयतेरक्तं यस्यांसालोहितक्षया ॥ सवातमुद्गिरेद्वीजं वामिनीरजसान्वितम् ५ प्रस्रंसिनीस्रंशतेत्तु क्षोभितादुःप्रजायिनी ॥ स्थितंस्थितंहंतिगर्भं पुत्रघ्नीरक्तसंक्षयात् ६ अत्यर्थंपित्तलायोनिर्दाहपाकज्वरान्विता ॥ चतसृष्वपिचाद्यासुपित्तलिंगोच्छ्रयोभवेत् ७ अत्यानंदानसंतोषं ग्राम्यधर्मेणगच्छति ॥ कर्णिन्यांकर्णिकायोनौश्लेष्मासृग्भ्यांप्रजायते ८ मैथुनाचरणात्पूर्वं

नित्यपीड़ाहुआकरे व मास २ पर मासिकधर्म्म न हुआकरे उस दुष्ट ऋतुधर्म्मवालीयोनिको वन्ध्याजानना चाहिये जिस योनिमें सदा पीड़ा हुआ करे उसे विप्लुता कहते हैं व जिस में मैथुनके समय वड़ीपीड़ाहो उसेपरिप्लुता कहतेहैं ३ जो योनिकर्कशकड़ी शूल व कोंचनेकीसी पीड़ासे पीडित हो उसे वातला कहते हैं व प्रथमवाली उदावृत्ता वन्ध्या विप्लुता और परिप्लुता इनचारों योनियों में वातज पीड़ा सदाहोती है ४ जिस योनिसे जलता हुआ रुधिर सदा बहतारहै उसे लोहितक्षया कहतेहैं जिसयोनि से रजवीज वात सहित निकले उसे वामिनी कहते हैं ५ जिस योनि से गर्भस्थान वाहर निकलआवे उसे प्रस्रंसिनी कहते हैं उसके संग पुरुष का प्रसंग होनेपर भी पुत्रादि नहीं होता जिस योनिसे रक्त सदा बहता रहताहै इस से गर्भ नहीं ठहरता उस योनिको पुत्रघ्नी कहते हैं ६ जिस योनिमें अत्यन्त दाह पकना व ज्वर वने रहते हैं उसे पित्तला कहते हैं इन में से प्रथम की चार योनियों में अर्थात् लोहित क्षया वामिनी प्रस्रंसिनी व पुत्रघ्नी में पित्तके लक्षणों की उच्चता होतीहै ७ जो योनि वड़े वेगसेमैथुन करनेपर भी नहीं सन्तुष्टहोती उसे अत्यानन्दा कहते हैं व जिसयोनिमें कफ व रक्तके रहने के स्थानमें कमल के फूल

पुरुषादतिरिच्यते ॥ बहुशश्चातिचरणातयोर्वीजंनवि दति ६ श्लेष्मालापिच्छिलायोनिःकंडूयुक्तातिशीतला ॥ चतसृष्वपिचाद्यासु श्लेष्मलिंगोच्छ्रयोभवेत् १० अन। र्त्तवास्तनीषंढीखरस्पर्शाचमैथुने ॥ अतिकायगृहीताया स्तरुण्याअंडिनीभवेत् ११ विवृतातिमहायोनिःसूचीव क्त्रातिसंवृता॥सर्वलिंगसमुत्थानासर्वदोषप्रकोपजा १२ चतसृष्वपिचाद्यासु सर्वलिंगनिदर्शनम् ॥ पञ्चासाध्या

के भीतर के झुमके की नाईं मांसका एक झुमका बनजाता है उस योनिको कर्णिनी कहते हैं ८ व मैथुन करनेपर जो योनि पुरुष से पहिलेही बीज को चुआदेवे उसे चरणा कहते हैं जिस योनिमें मैथुनके पीछे स्त्री पुरुष दोनों का बीज न ठहरसके सब का सब गिरपड़े उस योनिको अतिचरणा कहते हैं ६ जो योनि बहुत चिकनी होती व खजुलाती बहुत है व सदा अतिठण्ढी बनी रहतीहै उस योनिको श्लेष्मला कहतेहैं इसमें बहुत चिक- ने होनेके कारण बीज नहीं ठहरता इससे गर्भाधान नहींहोस- का इनमें प्रथम की चारों योनियों में अर्थात् अत्यानन्दा कर्णिनी चरणा व अतिचरणा में श्लेष्माके चिह्नोंकी अधिकता रहती है १० जिस स्त्री के मासिकधर्म्म नहींहोता व जिसके स्तन नहीं होते व मैथुनकरनेमें अति सूक्ष्म छिद्रके कारण लिंगप्रवेश में महाकठिनता होती है उसको षण्ढी अर्थात् हिजरी कहते हैं जिसस्त्रीके बड़ेमोटे लिंगवाले पुरुष के सम्भोग करनेसे योनिसे अण्डासा निकलआताहै उसकी योनिको अण्डिनी कहतेहैं ११ जो योनि बहुत फैलीहो उसे महायोनि कहतेहैं व जो योनि ब- हुत संकीर्ण मुखकी हो उसे सूचीवक्त्रा कहते हैं जिसयोनि में सब वातादि दोषों के चिह्नहों वह योनिसन्निपातिनी है १२ प- हिलेकी चारपाण्ढिनी अण्डिनी महायोनि व सूचीवक्त्रा इनमें

भवंतीहयोनयःसर्वदोषजाः १३ ॥ इतियोनिनिदानम् ॥

दिवास्वप्नादतिक्रोधाद्व्यायामादतिमैथुनात् ॥ क्षतच्चनखदंताद्यैर्वाताद्याः कुपितामलाः १ पूयशोणितसंकाशं लकुचाकृतिसंनिभम् ॥ उत्पद्यतेयदायोनौ नाम्नाकन्दस्तुयोनिजः २ रूक्षंविवर्णंस्फुटितं वातिकंतंविनिर्दिशेत् ॥ दाहरागज्वरयुतं विद्यात्पित्तात्मकंतुतम् ३ नीलपुष्पप्रतीकाशं कंडूमंतंकफात्मकम् ॥ सर्वलिंगसमायुक्तं संनिपातात्मकंवदेत् ४ ॥ इतियोनिकन्दनिदानम् ॥

सवदोषों के चिह्नहोतेहैं इससे ये सब सन्निपातिनी हैं इसलिये ये चार व पीछेवाली सन्निपातिनी ये पाँचों योनियाँ सन्निपातज होती हैं इससे असाध्य हैं १३ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेयोनिनिदानंपट्पष्टितमम् ६६ ॥

दोहा ॥ सरसठयें महँ कविकह्यो योनीकन्द निदान ॥
लखहिं सुजनदै दृष्टिपुनि उनकाकरहिं प्रमान १ ॥

अब योनिकन्दका निदानकहते हैं—दिनमें बहुत सोनेसे अति क्रोधकरनेसे बहुतजोरकरनेसे अति मैथुनसे नख दांत आदि के घावलगजानेसे वात कफ पित्तकोप करके १ पीव व रुधिरके रंग का व बड़हरके फलके डौलका मांसका लुथड़ा योनि के बाहर लटकादेते हैं उसे योनिकन्द कहते हैं २ जो कन्द रूपा मांससे भिन्न अन्य किसीरंगका फूटाफाटाहो उसे वातिक योनिकन्दकहतेहैं जो योनिकन्द दाह ललाई व ज्वर से युक्तहो उसे पित्तात्मक योनिकन्द जानना चाहिये३ जो योनिकन्द नीलके पुष्पके रंग काहो व खजुआताहो उसे कफज योनिकन्द कहते हैं व जिसमें वातादिक सबों के लक्षण होते हैं उसे सन्निपातात्मक योनिकन्द कहना चाहिये ४ ॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेयोनिकन्दनिदानंसप्तपष्टितमम् ॥ ६७ ॥

भयाभिघाततीक्ष्णोष्ण पानाशननिषेवणात् ॥ गर्भे पततिरक्तस्य सशूलंदर्शनंभवेत् १ आचतुर्थात्ततोमा सात्प्रस्रवेद्गर्भविद्रवः॥ ततःस्थिरशरीरस्य पातःपंचम षष्ठयोः २ गर्भोभिघातविषमाशनपीडनाद्यैः पक्वंद्रुमा दिवफलंपततिक्षणेन ॥ मूढःकरोतिपवनःखलुमूढगर्भं शूलंचयोनिजठरादिषुमूत्रसंगम् ३ भुग्नोनिलेनविगुणे नततःसगर्भः संख्यामतीयबहुधासमुपैतियोनिम् ॥ द्वा रंनिरुद्ध्यशिरसाजठरेणकश्चित्कश्चिच्छरीरपरिवर्तित कुब्जदेहः ४ एकेनकश्चिदपरस्तुभुजद्वयेन तिर्य्यग्ग

दोहा ॥ अरसठयें महँ कहुसुकबि मूढगर्भ नीदान ॥
लखहिं वैद्य शोचहिं बहुरि यहगद कैसअजान १ ॥

मूढगर्भकेनिदान कहतेहैं-उसमेंप्रथम गर्भपातकेलक्षण-भय से किसी लाठी आदिकी चोट लगजाने से अति तीक्ष्ण व बहुत उष्ण अन्नजलके खानेपीनेसे गर्भ गिरपड़ताहै तब पीड़ासहित रुधिर गिरने लगताहै १ जबतक चारमासकागर्भ होताहै व इसी बीचमें गिरताहै तो रुधिरहीके तुल्य कोमल गाढ़ासा कुछआकार युक्त गिरता है उसके पीछे फिर पांचयें छठे मास में जब स्थिर शरीरहोजाताहै तो शरीरवान् गर्भपातहोताहै २ किसी प्रकार की चोटलगनेसे खाले ऊंचे विषम आसन पर चढ़ने उतरनेसे व जोरसे मलने से क्षणमात्रमें गर्भवृक्षसे जैसे पकाफल गिर पड़ताहै वैसेही गिरपड़ताहै जो गर्भ डोलतानहीं उसे मूढगर्भ कहते हैं सो मूढ़पवन उसगर्भको मूढ़ करता है कहीं चलनेनहीं देता व पेटकमर आदि में पीड़ाभी करता है व मूत्रकोभी कुछरो कताहै ३ मूढगर्भकी आठप्रकारकी गति होतीहै विगुण वायु से मोड़ाहुआ गर्भ दशमास बिताकर नीचेको मुखकर के बहुतप्र- कारों से योनिके मुहड़ेपर आताहै वे प्रकार आठ हैं कोई मूढ गर्भ

तोभवतिकश्चिदवाङ्मुखोन्यः ॥ पार्श्वप्रवृत्तगतिरेति तथैवकश्चिदित्यष्टधागतिरियंहिपराचतुर्द्धा ५ संकीलकःप्रतिखुरःपरिघोथबीजस्तेषूर्ध्ववाहुचरणैःशिरसाच योनिम् ॥ संगीचयोभवतिकीलकवत्सकीलो दृश्यैःखुरैःप्रतिखुरःसहिकायसंगी ६ गच्छेद्भुजद्वयशिराःसचबीजकाख्यो योनौस्थितः सपरिघःपरिघेणतुल्यः७ अपविद्धशिरायातु शीतांगीनिरपत्रपा ॥ नीलोद्धतशिराहंति सा गर्भसचतांतथा ८ गर्भास्पंदनमाषीनां प्रणाशःश्यावपां

तो शिरसे योनिके द्वारको रूंधलेताहै तबबड़ी कठिनतासेबाहर आताहै कोई पेटसे रूंधकर कोई अपने शरीरको दुनैकर कुबड़ा होजाताहै उसी कूबड़ से योनिकेद्वारको रूंधदेताहै ४ कोई एक हाथसे कोई दोनों हाथों से कोई आप तिरछाहोजाताहै कोई नीचेको मुख करलेताहै कोई पशुलियोंको घुमाकर करवटलिये योनिद्वार को रूंधताहै बसयह आठप्रकारकी गतिहुई इनकेविशेष चारप्रकारकी गतिऔरहै ५।१ संकीलक २ प्रतिखुर ३ परिघचौथा बीज उनमें जो हाथ पैर ऊपरकोउठाये उन्हीं के बीचमें शिर किये इनपांचोंसे आकरयोनिके द्वारको कालसमान बन्दकरले वह संकीलककहाताहै व जो प्रथम अपने पैर कुछबाहर दिखादे व आपफिर भीतरही अड़जाय वह प्रतिखुर कहाताहै ६व जोदो हाथ व शिर साथही पहिले दिखावे वहबीजककहाताहै व जो गर्भ परिघ अर्थात् घरनेके तुल्यआकर बेंड़ा २ योनिमें अड़जाय वहपरिघ कहाताहै ७ असाध्य मूढ़गर्भ व असाध्य गर्भिणीके लक्षण–जिस गर्भिणीके लड़केका मुख नीचे को होगयाहो व उसके अंग ठण्ढे होगयेहों व मारे पीड़ाके उसकी लज्जा जाती रहीहो देहका सँभाल उसे नहो व उसके शरीरकी नसें नीली होकर फूल आईहों और लड़काकोपमें अड़ाहो तो वह स्त्री अपने

डुता ॥ भवेदुच्छ्वासपूतित्वं शूनतांतर्मृतेशिशौ ९ मान
सागंतुभिर्मातुरुपतापैःप्रपीडितः ॥ गर्भोव्यापद्यतेकुक्षौ
व्याधिभिश्चप्रपीडितः १० योनिसंवरणंसंकुःकुक्षौमक
ल्लएवच ॥ हन्युःस्त्रियंमूढगर्भोयथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः ११

इतिमूढगर्भनिदानम् ॥

अंगमर्दोज्वरःकम्पः पिपासागुरुगात्रता ॥ शोफःशू
लातिसारोच सूतिकारोगलक्षणम् १ मिथ्योपचारात्सं

गर्भको मारडालती है और वहगर्भ उसे मारडालताहै अर्थात् दोनों मरजाते हैं ८ जब गर्भका हिलना चलना बन्दहोजाय व प्रसवकालकी पीड़ाभी बन्दहोजाय व गर्भिणी गोरीभीहोतो भी सांवलीहोजाय अथवापीलीहोजाय व उसकेश्वासोंमेंदुर्गन्धिआने लगे व पेट फूलता चलाआताहो तो जानना चाहिये कि लड़का भीतरही मरगयाहै ९ जबगर्भिणीस्त्रीमनकेदुःखोंसे अथवा आने वालेदुःखोंसे अत्यन्त पीड़ित होती है तो गर्भ पेटहीमें मरजाता है अथवा गर्भही रोगोंसे पीड़ित होजाताहै तो भीतरहीमरजाता है १० वायुके योग से योनिसंकीर्णहोजाने से व कड़ी होजाने से व कोषि में शूलहोनेसे वा शिलाजीत लपटजानेसे अथवा ऊपर के उपद्रवों के होनेसे अथवा मूढ़गर्भहोनेसे स्त्री मृतकहोजातीहै ये सब मारडालते हैं ११ ॥ इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादे गर्भिणीरोगादिनिदानमष्टषष्टितमम् ६८ ॥

दोहा ॥ उनहत्तरयें महँ कह्यो सकल प्रसूता रोग ॥
तिन निदान पुनि कविकह्यो करिकै वहुत नियोग १ ॥

प्रसूतिका के रोगोंका निदानकहते हैं—अंग टूटना ज्वरआना कम्पहोना पिपासालगना अंगोंका भारीपन शोथ आजाना शूल उठना दस्त होना वस ये सब सूतिका के रोग के लक्षण हैं १ मिथ्या आहार व्यवहारसे दोष उत्पन्न करनेवाले अन्नोंके भोजन

क्लेशाद्विषमाजीर्णभोजनात् ॥ सूतिकायाश्चयेरोगा जायन्तेदारुणास्तुते २ ज्वरातिसारशोफाश्च शूलानाहबलक्षयाः ॥ तन्द्रारुचिप्रसेकाद्याः कफवातामयोद्भवाः ३ कृच्छ्रसाध्याहितेरोगाःक्षीणमांसबलाग्नितः ॥ तेसर्वेसूतिकानाम्ना रोगास्तेचाप्युपद्रवाः ४ ॥

इतिसूतिकारोगनिदानम् ॥

सक्षीरौवाप्यदुग्धौवादोषःप्राप्यस्तनौस्त्रियाः ॥ प्रदूष्यमांसरुधिरेस्तनरोगायकल्पते १ पञ्चानामपितेषां हि रक्तजंविद्रधिंविना ॥ लक्षणानिसमानानि बाह्यविद्रधिलक्षणैः २ ॥ इतिस्तनरोगनिदानम् ॥

से व जून कुजून विषम भोजन से व अजीर्ण में भोजन करने से सूतिकाके जो रोग होते हैं वे दारुण होते हैं २ ज्वर अतीसार शोथ शूल पेटफूलना बलक्षय झॅपानपड़ना अरुचि मुख में पानीछूटना इत्यादि रोग कफ व बातसे होते हैं ३ जिस स्त्री के मांस बल व अग्नि क्षीण होगये हों उसके ये रोग कष्टसाध्य हैं उनमें सूतिका के नाम से जो प्रसिद्ध हैं वे सूति रोग हैं अन्य ज्वर अतीसारादिक उनके उपद्रव हैं ४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेसूतिकारोगनिदानमून सप्ततितमम् ॥ ६९ ॥

दो० ॥ सत्तरयें महँ हैं कहे सब कुच रोग निदान ॥
देखहिं सुजन लगाय चित कैसे हैं बलवान १

अब स्तनरोग निदान कहते हैं चाहे दूधवाली स्त्री के हों वा बिनादूधवाली स्त्री के स्तनों में प्राप्तहोकर वातादिदोष मांस व रुधिरको दूषित करते हैं वही स्तनरोग होजाताहै इस रोग को थन्दैलरोग कहते हैं १ ये स्तनरोग पाँचप्रकारके होते हैं रक्तज

गुरुभिर्विविधैरन्नैर्दुष्टैर्दोषैःप्रदूषितम् ॥ क्षीरंधात्र्याः कुमारस्य नानारोगायकल्पते १ कषायंसलिलप्लावित्त न्यम्मारुतदूषितम् ॥ कट्वम्ललवणम्पीत राजिमत्पित्त संज्ञितम् २ कफदुष्टंघनंतोये निमज्जतिसुपिच्छिलम् ॥ द्विलिंगन्द्वन्द्वजंविद्यात्सर्वलिंगंत्रिदोषजम् ३ अदुष्टंचां बुनिक्षिप्तमेकीभवतिपाण्डुरम् ॥ मधुरंचाविवर्णंचप्रसन्न न्तद्विनिर्द्दिशेत् ४ ॥ इतिस्तन्यरोगनिदानम् ॥

विद्रधिरोगकोछोड़कर उनमेंअन्यविद्रधियोंके लक्षणहोतेहैं २॥

इतिश्रीमाधवनिदाने भाषानुवादेस्तनरोगनिदानं सप्ततितमम् ॥ ७० ॥

दोहा ॥ इकहत्तरयें महँ कहे स्तनभव दुग्ध निदान ॥
लपहिंसुजनमनलायके पुनितिनकरहिंप्रमान १

विविधप्रकार के भारी अन्य दोषों से दूषितहोकर दूधपिलाने वालीस्त्रीका दूध बालकके रोगके लिये होताहै १ जो दूध वात से दूषितहोजाताहै वह कसैलापन लुटहा होजाताहै व जो कड़ू ख- ट्टा लुनखर व पीली २ लकीरों से युक्त होजाता है वह पित्तसे दू- षित कहाताहै २ व जो कफके दोषसे दूषित होजाताहै वह स्त- नका दूध गाढ़ा व बहुत चिकना होजाता है और पानी में डालनेसे डूबजाताहै व जिसमें दो दोषोंके लक्षण मिलें उसे द्वन्द्व- ज जानना चाहिये जिसमें तीनोंके लक्षण मिलें उसे त्रिदोषज अर्थात् सन्निपातज जानना चाहिये ३ शुद्ध दुग्ध के लक्षण—जो दूध दोषरहित होताहै वह पानीमें डालदेनेसे उसीमें मिलजाता है व उजला होताहै मीठाहोता व जैसा दूधकारंग चाहिये वैसा हीहोताहै बस ऐसेही दूधको प्रसन्न वा शुद्धकहना चाहिये ४ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेधात्रीस्तनदुग्धनिदान मेकसप्ततितमम् ॥ ७१ ॥

त्रिविधः कथितो बालः क्षीरान्नोभयवर्त्तनः॥ स्वास्थ्यन्ताभ्यामदुष्टाभ्यां दुष्टाभ्यां रोगसंभवः १ वातदुष्टाशशुःस्तन्यं पिबन्वातगदातुरः॥ क्षामस्वरः कृशांगःस्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः २ स्विन्नोभिन्नमलोबालः कामलापित्तरोगवान्॥ तृष्णालुरुष्णसर्वांगःपित्तदुष्टंपयःपिबन् ३ कफदुष्टंपिबन्क्षीरं लालालुःश्लेष्मरोगवान्॥ निद्रार्दितो जडःशूनःशुक्लाक्षश्छर्दनःशिशुः ४ शिशोस्तीव्रामतीव्रां च रोदनाल्लक्षयेद्रुजम्॥ सयंस्पृशेद्भृशन्देशंयत्रच

दोहा॥ कहे बहत्तरयें महँ बालक रोग निदान॥
देखनयोग्य सुवैद्यके जो शिशुपालनध्यान १

बालकोंके रोगोंके निदान—प्रथम बालक तीन प्रकारके होतेहैं एक वे जो केवल दुग्धहीपीते हैं दूसरे वे जो अन्नहीखाते हैं तीसरे वेजो दूधपीतेहैं व अन्नभीखातेहैं सो दूध व अन्नदोनों जहां दुष्टनहीं होते वहां बालक अच्छारहता है व जहां दोनों दुष्टहोजाते हैं वहां बालक के रोग उत्पन्नहोताहै १ वातसे दुष्टदूधपीने से बालक वायु के रोगोंसेआतुरहोजाता है उसकाबोलधीराहोजातादुर्बलहोजाताहै व मल मूत्र व अधोवायु बँधजातेहैं खुलकर नहीं होते हैं २ पित्त से दूषित दूधके पीने से बालक के पसीना बहुत आनेलगताहै उसका मल पतला होजाताहै व कामल रोग होताहै व पित्तका रोग होता पियासा अधिक लगती है सब अंग काले पड़ जाते हैं ३ व कफसे दूषित दुग्धपीने से बालक के राल बहुत बहती है व कफके सबरोग होते हैं व नींद बहुत आती है देह जकडासा होजाताहै सूजन हो आती है नेत्र उजले होजाते हैं व वमन करने लगताहै ४ बालक के रोनेसे अधिक व थोड़ी पीड़ा का ज्ञान करना चाहिये व बालक जिस अपने अंगके ऊपर अपना हाथ वार २ लेजाताहो अथवा जिस अंगके छूनेपर अधिक

नसंज्ञावानतिरोदिति ॥ पूयशोणितगंधिस्वंस्कंदापस्मारलक्षणम् २३ स्रस्तांगोभयचकितोविहंगगंधिःसास्राववणपरिपीडितःसमंतात् ॥ स्फोटैश्चप्रचिततनुःसदाहपाकैर्विज्ञेयोभवतिशिशुःक्षतःशकुन्या २४ व्रणैस्फोटैश्चितंगात्रंपंकगंधस्रवेदसृक् ॥ भिन्नवर्चाज्वरीदाहीरेवतीग्रहलक्षणम् २५ अतीसारोज्वरस्तृष्णातिर्यक्प्रेक्षणरोदनम् ॥ नष्टनिद्रस्तथोद्विग्नस्त्रस्तःपूतनयाशिशुः २६ छर्दिकाशोज्वरस्तृष्णावसागन्धोतिरोदनम् ॥ स्तन्यद्वेषोतिसारश्चअंधपूतनयाभवेत् २७ वेपतेकासतेक्षीणोनेत्ररोगोविगंधिता ॥ छर्द्यतीसारयुक्तश्चशीतपूतनयाशिशुः २८ प्रसन्नवर्णवदनः शिराभिरिवसंवृतः ॥ मूत्रग

आवे बस यह स्कन्दापस्मार का लक्षण है २३ जिस बालकके अंग सब गलजायँ भयसे चकड़ाया करे अंगमें पक्षियों कीसी गन्धि आवे अंगोंमें सब ओरसे घाव होजायँ व बहते रहें फोड़े देह भरमें हों उनमें दाह होताहो व सब पकगयेहों बस इस लक्षणसे युक्त बालक को शकुनि ग्रहसे पीड़ित जाननाचाहिये २४ जिस बालकके अंगोंमें घाव व फोड़े होगयेहों देहकी गन्धि कीचड कीसी हो रुधिर घावोंसे बहताहो मल पतला उतरताहो ज्वर वा दाह बना रहताहो बस ये रेवती ग्रहके लक्षणहैं २५ पूतना ग्रहके लक्षण—पूतना ग्रहपीड़ित छोटे बालकके अतीसार ज्वर तृष्णा तिरछीनजर रोना नींद न आना ऊबना गलजाना ये सब होते हैं२६ अन्धपूतना नामग्रहसे पीड़ित बालकके वमन खांसी ज्वर तृष्णा वसाकीसीगन्धि बहुतरोना दूध न पीना अतीसार ये लक्षणहोते हैं २७ शीत पूतनाग्रहसे पीड़ित बालक कांपता खांसता क्षीणरहता नेत्ररोगी होता दुर्गन्धि आना वमनहोना अतीसार इन उपद्रवों से युक्तहोताहै २८ मुखमण्डिका ग्रहसे पीड़ित बालक प्रसन्नरंग

तेबालःक्षणात्त्रस्यतिरोदिति॥ १७ नखैर्दन्तैर्दारयति धात्रीमात्मानमेवच॥ ऊर्ध्वंनिरीक्ष्यतेदंतान्खादेत्कूजतिजृम्भते १८ भ्रुवौक्षिपतिदंतोष्ठंफेनंवमतिचासकृत्॥ क्षामोतिनिशिजागर्त्ति शूनांगोभिन्नविट्स्वरः १९ मांसशोणितगंधिश्चनचाश्नातियथापुरा॥ सामान्यंग्रहजुष्टानांलक्षणंसमुदाहृतम् २० एकनेत्रस्यगात्रस्यस्रावःस्यंदनकंपनम्॥ अर्द्धदृष्टयानिरीक्ष्येतवक्रास्योरक्तगन्धिकः २१ दन्तान्खादतिवित्रस्तःस्तन्यंनैवाभिनन्दति॥ स्कन्दग्रहगृहीतानांरोदनञ्चाल्पमेवच २२ नष्टसंज्ञोवमेत्फे

क क्षणभर में ऊबने लगे व क्षणमें डरने व रोने लगे १७ व नहँ और दांतोंसे दूध पिलाने वाली को व अपने कोभी जो नोचेकाटे ऊपरको देखता रहे दांत कटकटावे कुहुरु २ करे व जँभोई लेता रहे १८ भौहैं इधर उधर करता रहे दांत व ओठ भी फरफराता चलाता रहे बार २ मुहँसे फेना निकालताहो दुर्बल होगया हो व रात्रिमें सोता न हो देहमें सूजन आगई हो मल पतला आताहो गला खरखरा होगया हो १९ व मांस रक्त कीसी दुर्गन्धि उसके पास आवे जैसा पहिले खाता रहाहो वैसा न खाय ये सब सामान्य ग्रह के पकड़े हुये बालकोंके लक्षण हैं २० स्कन्दग्रहके पकड़े हुये बालक के लक्षण–एक नेत्रसे बालक के पानी बहे व एकही ओरके अंगसे पानी चले व फरफराय और कांपे एकही ओरके नेत्रसे देखे मुख टेढ़ा होगया हो रक्त कीसी गन्धि आती हो २१ दांत बार २ कटकटाताहो देह ढील होगयाहो दूध पीना न चाहताहो व थोड़ासारोता हो बस स्कन्दग्रहके पकड़े हुये बालकों के येही लक्षण होते हैं २२ स्कन्दापस्मार रोग के लक्षण-मूर्च्छित पड़ारहे मुहँसे फेना बहताजाय मूर्च्छा जागने पर बहुत रोदन करे पीब व रुधिरकी दुर्गन्धि उसके अंगों में

नसंज्ञावानतिरोदिति-॥ पूयशोणितगंधिश्चस्कंदापस्मा रलक्षणम् २३ स्रस्तांगोभयचकितोविहंगगंधिःसास्रा वव्रणपरिपीडित समंतात् ॥स्फोटैश्चप्रचिततनु सदाह पाकैर्विज्ञेयोभवतिशिशुःक्षतःशकुन्या २४ व्रणैस्फोटैश्चि तंगात्रंपंकगंधंस्रवेदसृक् ॥ भिन्नवर्चाज्वरीदाहीरेवतीग्र हलक्षणम् २५ अतीसारोज्वरस्तृष्णातिर्यक्प्रेक्षणरोद नम् ॥ नष्टनिद्रस्तथोद्विग्नस्त्रस्तःपूतनयाशिशुः २६ छ र्दिकाशोज्वरस्तृष्णावसागन्धोतिरोदनम् ॥ स्तन्यद्वेषो तिसारश्चअंधपूतनयाभवेत् २७ वेपतेकासतेक्षीणोने त्ररोगोविगंधिता ॥ छर्द्यतीसारयुक्तश्चशीतपूतनयाशि शुः २८ प्रसन्नवर्णवदनः शिराभिरिवसंवृतः ॥ मूत्रग

आवे वस यह स्कन्दापस्मार का लक्षण है २३ जिस बालकके अग सब गलजायँ भयसे चकडाया करे अंगमें पक्षियो कीसी गन्धि आवे अंगोंमें सब ओरसे घाव होजायँ व वहते रहें फोड़े देह भरमें हों उनमें दाह होताहो व सब पकगयेहों वस इस लक्षणसे युक्त बालक को शकुनि ग्रहसे पीड़ित जाननाचाहिये २४ जिस बालकके अंगोंमें घाव व फोडे होगयेहों देहकी गन्धि कीचड कीसी हो रुधिर घावोंसे वहताहो मल पतला उतरताहो ज्वर वा दाह बना रहताहो बस ये रेवती ग्रहके लक्षणहैं २५ पूतना ग्रहके ल- क्षण—पूतना ग्रहपीड़ित छोटे बालकके अतीसार ज्वर तृष्णा ति- रछीनजर रोना नींद न आना उबना गलजाना ये सब होते हैं२६ अन्धपूतना नामग्रहसे पीड़ित बालकके वमन खांसी ज्वर तृष्णा वसाकीसीगन्धि बहुतरोना दूध न पीना अतीसार ये लक्षणहोते हैं २७ शीत पूतनाग्रहसे पीड़ित बालक कांपता खांसता क्षीणरहता नेत्ररोगी होता दुर्गन्धि आना वमनहोना अतीसार इन उपद्रवों से युक्तहोताहै २८ मुखमण्डिका ग्रहसे पीड़ित बालक प्रसन्नरंग

न्धिश्चवक्राशीमुखंमण्डिकयाभवेत् २९ छर्दिस्पंदनकंठास्यशोषंमूर्च्छाविगंधिता॥ ऊर्ध्वंपश्येद्दशेद्दंतान्नैगमेयग्रहंवदेत् ३० ॥ इतिबालरोगनिदानम् ॥

स्थावरंजंगमंचैवद्विविधंविषमुच्यते ॥ मूलात्मकन्तदाद्यंस्यात्परंसर्पादिसंभवम् १ निद्रांतंद्रांक्लमंदाहंमपाकंलोमहर्षणम्॥ शोफंचैवातिसारंचकुरुतेजंगमंविषम् २ स्थावरंतुज्वरंहिक्कांदंतहर्षंगलग्रहम् ॥ फेनच्छर्द्यरुचिश्वासंमूर्च्छांचकुरुतेभृशम् ३ इङ्गितज्ञोमनुष्याणांवाक्चेष्टामुखवैकृतैः ॥ जानीयाद्विषदातारमेतैर्लिङ्गैश्चबुद्धिमान् ४ नददात्युत्तरंपृष्टोविवक्षुर्मोहमेतिच ॥ अपार्थंव

प्रसन्नमुख मानों नसों से घेरा मूत्र कीसी गन्धि व बहुतभोजन इनसे युक्त रहता है २९ नैगमेय ग्रहसे पीड़ित बालक वमन कांपना गला मुख सूखना मूर्च्छा दुर्गन्धि आना ऊपरको देखना दांतकटकटाना इन उपद्रवों से युक्त रहताहै ३० ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेबालरोगग्रहनिदानन्द्विसप्ततितमम् ॥ ७२ ॥

दो० ॥ तिहत्तरयें महँ कहे विष निदान बहुभांति ॥
देखहिं त्यागहिं तिन्हेंबुध गोन २ उनकी पांति १

अबविषोंके निदान कहते हैं विष दोप्रकारके होते हैं एकस्थावर दूसरे जंगम किसी वृक्षकामूल विष होताहै वह स्थावर विषहै व सर्पादिकों से जो विष उत्पन्न होताहै वह जंगमविष कहाताहै १ जंगमविषसे व्याकुल पुरुष निद्रा भ्रम ग्लानि दाह पक न जाना रोमखड़ेहोना शोथ अतीसार इनसे युक्तहोताहै २ स्थावर विष ज्वर हुचकी दांतघिसना गलारुँकना फेनाडाकना अरुचि श्वास व मूर्च्छा इनको करताहै ३ बुद्धिमान् वैद्य बोलसे मुखउदास होजानेसे विष खिला देनेवाले को पहिचाने ४ जो पूंछनेपर

हुसंकीर्णं भाषतेचापिमूढवत् ५ हसत्यकस्मात्स्फोटयत्यंगुलीर्विलिखेन्महीम् ॥ वेपथुश्चास्यभवतित्रस्तश्चान्योन्यमीक्षते ६ विवर्णवक्त्रोध्यामश्चनखैःकिंचिच्छिनत्त्यपि आलभेतासनन्दीन.करेणचशिरोरुहम् ॥ वर्त्ततेविपरीतंचविषदाताविचेतनः ७ उद्वेष्टनंमूलविषैःप्रलापोमोह एवच ॥ जृम्भणंवेपनंश्वासोमोह.पत्रविषेणतु ८ मुष्कशोथःफलविषैर्दाहोन्नद्वेषएवच ॥ भवेत्पुष्पविषैश्छर्दिराध्मानंश्वासएवच,९ त्वक्सारनिर्यासविषैरुपयुक्तैर्भवंतिहि ॥ आस्यदौर्गन्ध्यपारुष्यशिरोरुक्कफसंस्रवाः १० फेनागमः

कुछउत्तर न देताहो कुछ कहनेपर जैसेहो मोहित होजाय बोले तो अप्रमाण बहुत संकीर्ण बात कहे वह भी जैसे कोई महामूढ कहताहै ५ अकस्मात् हसने लगे तालबजानेलगे अँगुलीसेपृथ्वी खोदने लगे शरीर कांपने लगे भयव्याकुलहो परस्पर मुखदेखने लगे ६ मुखकारंग औरका और होजाय कुछ शोचनेलगे नहों से खरखोंटने लगे दुःखीसाएकस्थानपर बैठजाय हाथसे शिरके बाल खजुआनेलगे चेष्टारहित होजाय बस बिपदेने वालेके ऐसे लक्षण होते हैं वैद्य इन्हीं लक्षणों से जानले ७ मूलादि विप के लक्षण हाथ पैरफटके अनर्थ बकै मोहित होजाय जो ऐसाहो जानों कि किसीविपारी वृक्षकीजड़ इसनेखाई है जिसको जंभोई आवे कांपता रहै ऊर्ध्व श्वासले मोहितहो जानोकिइसनेकिसी विपारी वृक्षकी पत्ती खाईहै ८किसी विपारी वृक्षकाफलखानेसे मुखमें सूजनआजाताहै दाहहोता अन्नखानेमें प्रीति नहीं रहती बिप पुष्पोंकेखानेसे वान्त,पेटफूलना व श्वासअधिकचलनेलगते हैं ९ बकला सायर व गोंद इनविपोंसे मुखमें दुर्गंधिआतीहै देह खरखरा होजाताहै शिरमें शूल मुखसे कफगिरना ये सब होते

क्षीरविषैर्व्विड्भेदोगुरुजिह्वता ॥ हृत्पीडनन्धातुविषैर्म्मूर्च्छादाहश्चतालुनि ११ प्रायेणकालघातीनि विषाण्येतानिनिर्दिशेत् ॥ सद्यःक्षतंपच्यतेयस्यजंतो स्रवेद्रक्तंपच्यतेचाप्यभीक्ष्णम् ॥कृष्णीभूतंक्लिन्नमत्यर्थपूतिक्षतान्मांसंशीर्य्यतेयस्यचापि १२ तृष्णामूर्च्छाज्वरदाहौचयस्य दिग्धाहतंतंमनुजंव्यवस्येत् ॥ लिंगान्येतान्येवकुर्यादमित्रैर्व्रणेविषयस्यदत्तंप्रमादात् १३ वातपित्तकफात्मानोभोगिमंडलिराजिलाः ॥ यथाक्रमंसमाख्याताद्व्यंतराद्वंद्वरूपिणः १४ दंशोभोगिकृतःकृष्णसर्ववातविकारकृत्॥पीतो

हैं १० विषारी वृक्ष के दूधके पीने से मुखसे फेना गिरताहै मल पतलाआताहै जीभ गरूहोजातीहै हृदयमें पीड़ाहोती है धातुके विषमें मूर्च्छाआती तालुमेंदाह होताहै बहुधा ये सब विषकालान्तरमें प्राणघातक होते हैं ११ विषमें बुझायेहुये अस्त्र शस्त्रादिकोंसे उत्पन्न घावोंके लक्षण—जिस प्राणीका घाव तुरन्त पकउठे व उससे रुधिरवहे व बार २ पकता फूटतारहे व घावकालाहो जाय व पचपचातारहे दुर्गन्धि बहुतआवे घावसड़ता चलाजाय १२ व पिपासा मूर्च्छा ज्वर दाहहों ऐसे मनुष्यको जानना चाहिये कि इसके विषमें बुझेहुये अस्त्रादि का घावहै ये सबचिह्नहोते हैं व यह काम बहुधा शत्रुलोग करते हैं व घाववालेकी असावधानतासे विषलगवाकर शत्रुलोग साधारण घावपर पट्टी बँधादेतेहैं तो भी ऊपरके लिखेहुये चिह्नहोते हैं १३ अबसर्प्प का विषसबसे अधिकहोताहै इससे उसकी जातोंका वर्णनकरते हैं—वात पित्त कफ शरीरी क्रमसे भोगी मण्डली व राजिल ये तीनसर्प्प होते हैं भोगी कालासर्प्प वातप्रकृतिक मण्डली जिसके ऊपरचँकधेहोते हैं पित्तप्रकृतिक राजिल डोमहरा कफप्रकृतिकहोताहै इनके विशेष अन्य सर्प्प द्वन्द्वरूपी होते हैं अर्थात्

मंडलिजःशोथो मृदुःपित्तविकारवान् १५ राजिलोत्थोभ वेद्दंशः स्थिरशोथश्चपिच्छिलः ॥ पाण्डुस्निग्धोतिसां द्रासृक्सर्वश्लेष्मविकारवान् १६ अश्वत्थदेवायतनश्म शानवल्मीकसन्ध्यासुचतुष्पथेषु ॥ याम्येचदष्टाःपरिव र्जनीया ऋक्षेशिरामर्मसुयेचदष्टाः १७ दर्वीकराणांविष माशुहन्ति सर्वाणिचोष्णेद्विगुणीभवन्ति ॥ अजीर्णपि त्तातपपीडितेषुबालेषुवृद्धेषुबुभुक्षितेषु॥क्षीणाक्षतेमेहिनि कुष्ठजुष्टेरूक्षेबलेगर्भवतीषुचापि १८शस्त्रक्षतेयस्यनरक्त मस्ति राज्योलताभिश्चनसम्भवन्ति ॥ शीताभिरद्भि

उनकीमाता अन्य जातिकी व पिता अन्य जातिका होताहै १४ भोगी सर्पके काटने से जहां काटताहै काला होजाताहै व बात के सब बिकार होतेहैं मण्डलीके काटनेकाघाव पीलाहोजाताहै शोथआता व कोमलरहता व पित्तके सब विकारहोतेहैं १५ राजिलके काटनेकाघाव चिकना व शोथ कड़ाहोताहै व उजला होता व रक्तगाढ़ा और चिकना निकलताहै वे कफके सब विकार उस प्राणी के होतेहैं १६ जो सर्प पीपलके नीचे वा देवालयमें श्मशानभूमिमें वा व्यमौरी बामी में सन्ध्यासमय में चौरहामें भरणी आर्द्रा आश्लेषा मघा मूल व कृत्तिकानक्षत्रों में मोटी नसमें वा किसी सुकुमारस्थान में काटे तो वर्ज्जनीयहै अर्थात् असाध्यहोताहै १७ कालेसर्पोंका विप तुरन्त प्राणी को मारडालताहै व अन्य सब सर्पोंके विष उष्णताके योगसे अपनी शक्तिसे दूने२ होजातेहैं अजीर्ण रोगी पित्त प्रकृतिक घाम से पीड़ित बाल वृद्ध भूँखे क्षीणशरीर घावलगेहुये प्रमेहरोगी कोढ़ी रूखे निर्बल व गर्भवती स्त्री के जब सर्पकाटताहै तो ये अवश्यही मरजातेहैं१८ जिस सर्पकाटेहुये प्राणीके शस्त्रसे काटने से रक्त न निकले व कोड़ा आदि के मारनेसे जिसके वर्त्त न पड़आवें व शीतल जल

श्चनरोमहर्षो विषाभिभूतपरिवर्जयेत्तम् १९ जिह्मंमुखं यस्यचकेशशातोनासावसादश्चसकण्ठभंगः ॥ कृष्णः सरक्तःश्वयथुश्चदंशेहन्वोःस्थिरत्वंसविवर्जनीयः २० वर्त्तिर्घनायस्यनिरेतिवक्त्राद्रक्तंस्रवेदूर्ध्वमधश्चयस्य ॥ दंष्ट्राभिघाताश्चतुरश्चयस्य तञ्चापिवैद्यःपरिवर्जयेत्तु २१ उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतञ्चहीनं स्वरंवाप्यथवाविवर्णम् ॥ सारिष्टमत्यर्थमवेगिनञ्च जह्यान्नरन्तत्रनकर्मकुर्यात् २२ जीर्णंविषघ्नौषधिभिर्हतंवादावाग्निवातातपशोषितंवा ॥ स्वभावतोवागुणविप्रहीनंविषंहिदूषीविषतामु

डालनेपर रोम न खड़े होजायँ ऐसे बिष पीड़ित प्राणीको त्याग देना चाहिये १९ जिस विष युक्तका मुख टेढ़ा होजाय बाल गिर पड़ें नासिका टेढ़ी होजाय बोलबन्द होगयाहो व लाल काला मिला शोथ काटने के स्थान पर होआवे चौहड़ी बैठजाय बस वह असाध्य होजाताहै इससे औषधादि करनेके योग्य नहीं रहता २० जिस सर्प के काटनेपर मनुष्यके मुख से रालकी गाढ़ी धार वत्तीकीतरह निकले व मुख गुद दोनोंकी रुधिर बहताजाय व जिसके चार दांतोंके घावहों ऐसे को भी वैद्यवरादे औषध न करे क्योंकि वह असाध्य होजाताहै २१ व जो सर्पके डँशने पर उन्मत्तसा होगयाहो व उठ २ भागताहो वा ज्वरादि से पीड़ित होगयाहो वा जिसका बोल बन्द होगयाहो अथवा देह का रंग कुछ का कुछ बदल गयाहो अथवा नाकटेढ़ी होगई हो वा और कोई मरण सूचक अरिष्ट होगये हों व मलमूत्रका होना बन्द होगयाहो ऐसे पुरुषको त्याग देना चाहिये औषध न करनी चाहिये २२ जो बहुत दिनों का पुराना बिषहोजाताहै अथवा जो बिष नाशक औषधियोंसे हत होगयाहो अथवा जो दावाग्नि वायु वा घाम से सुखाडाला गयाहो वा उसका स्वभाव बदल गयाहो

पैति २३ वीर्य्याल्पभावान्ननिपातयेत्तत्कफान्वितंवर्षगणानुबन्धि ॥ तेनार्दितोभिन्नपुरीषवर्णो विगन्धवैरस्ययुतःपिपासी २४ मूर्च्छाभ्रमन्गद्गदवाग्वमित्वं विचेष्टमानोरतिमाप्नुयाद्वा ॥ आमाशयस्थेकफवातरोगी पक्काशयस्थेनिलपित्तरोगी ॥ भवेत्समुद्धस्ताशिरोरुहांगोविलूनपक्षस्तुयथाविहंगः २५ स्थितंरसादिष्वथवायथोक्तान्करोतिधातुप्रभवानप्ररोगान् ॥ कोपञ्चशीतानिलदुर्दिनेषु यात्याशुपूर्वंश्रृणुतस्याचिह्नम् २६ निद्रागुरुत्वञ्च विजृम्भणञ्च विश्लेषहर्षावथवांगमर्दः ॥ ततःकरोत्यन्नमदा

व गुणही वदलगयाहो उस विपको दूपीविप कहते हैं २३ जव दूपी विपहोजाताहै तो पराक्रम थोड़े होजाने के कारण वह फिर मार नहीं सक्ता क्योंकि कफके कारण से उसका वल अल्प होजाताहै केवल वर्पभरके पीछे एक बार विपका जोर होआता है तव उससे पीड़ित मनुष्यके मल पतला होने लगता है व वर्ण भी कुछ का कुछ होजाता है कुछ और प्रकारकी महक उसके अंगोंसे आने लगती हे व देह नीरस होजाता है पिपासा वहुत लगती है मूर्च्छा आजाती है भ्रम होता वोललरवराजाताहै वमन होने लगताहै उलटे सीधे काम अस्त व्यस्त करनेलगता व चित्त किसी में नहीं लगता २४ विपजव आमाशयमें प्राप्तहोजाताहै तो कफके व वातके रोग उत्पन्न करताहै व जव पक्वाशय में स्थित होता है तो वात व पित्तके रोग होतेहैं उसरोगमें नेत्र शिरआदि के वाल गिर पड़ते हैं तव पक्ष उखाड़ेहुये पक्षी के तुल्य मनुष्य दिखाई देता है २५ रसादिक धातुओंमें विप पहुंचकर उसधातुके विकाररसे उत्पन्न रोगोंको करताहै व जिसदिन वहुत ठण्ढाहोता वा वायु अधिक वहताहै वा वदरी वहुत होतीहै उस दिनभटफट कोप करता है अव उसका लक्षणसुनो २६ दूपी विप में निद्राभंग

विपाकावरोचकम्मण्डलकोढजन्म २७ मांसक्षयंपादकर प्रशोफं मूर्च्छान्तथार्द्दिमथातिसारम् ॥ दूषीविषंश्वास तृषोंचकुर्य्याज्ज्वरप्रवृद्धिञ्जठरस्यचापि २८ उन्मादम न्यज्जनयेत्तथान्यद्दाहन्तथान्यत्क्षपयेच्चशुक्रम् ॥ गाद्गद्य मन्यज्जनयेच्चकुष्ठन्तांस्तान्विकारांश्चबहुप्रकारान् २९ दूषितन्देशकालान्नादिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ॥ यस्मात्स न्दूषयेद्धातूंस्तस्माद्दूषीविषंस्मृतम् ३० सौभाग्यार्थस्त्रि यःस्वेदंरजोनानांगजान्मलान् ॥ शत्रुप्रयुक्तांश्चगरान्प्र यच्छन्त्यन्नमिश्रितान् ३१ तैःस्यात्पांडुःकृशोल्पाग्निर्ज्व रश्चास्योपजायते ॥ मर्मप्रधमनाध्मानंहस्तयोःशोथल

भारी जँभुआई अंगों का अलग २ होना रोम खड़े होना अंगोंका टूटना इसके पीछे अन्नखाने की इच्छाहो परखाने पर अन्न न पचे अरुचि होजाय अंगोंमें चकते पड़ें व खांसी उधराय २७ मांस की क्षयहोजाती है हाथों पैरों में शोथ होआता है मूर्च्छा वमन व अतीसार श्वास पिपासा ज्वर वहुत व पेट का भी फूलना ये सब होते हैं २८ उन्माद को उत्पन्न करता दाह को करता प्रमेह करता बोल लरवर करदेता कुष्ठरोगोंको उत्पन्नक- रता इसप्रकार दूषी विप नानाप्रकारके विकारों को करताहै २९ जिससे कि देशकाल अन्न दिनमें सोने आदि से दूषित पुरुपको दूषितकरता व उसके धातुओं को दूषित करताहै इससे इसका दूषीविपनाम हुआ है ३० कोई २ दुष्ट स्त्रियां पति के सब धन की स्वामिनी होनेके लिये उसको अपना पसीना ऋतुधर्म का रुधिर व अपने अनेकअंगों के मल अन्नमें मिलाकर व शत्रुओं के प्रेरित विपभी अन्नमें मिलाकर खिलादेती हैं ३१ इन सब कारणों से पतिपीला दुर्व्वल मन्दाग्नि होजाता व उसके ज्वर भी होनेलगताहै सुकुमार स्थानों में पीड़ा होती पेट फूलता

क्षणम् ३२ जठरंग्रहणीदोषो यक्ष्मगुल्मक्षयज्वराः ॥ एवंविधस्यचान्यस्य व्याधेर्लिंगानिनिर्दिशेत् ३३ साध्यमात्मवतस्सद्यो याप्यंसंवत्सरोषितम् ॥ दूषीविषमसाध्यंतुक्षीणस्याहितसेविनः ३४ यस्माल्लूनंतृणम्प्राप्तामुनेःप्रस्वेदविंदवः ॥ तस्माल्लूतास्तुभाष्यंते संख्ययाताश्चषोडश ३५ ताभिर्दष्टदंशकोथःप्रवृत्तिःक्षतजस्यच ॥ ज्वरोदाहोतिसारश्चगदाःस्युश्चत्रिदोषजाः ३६ पिडिकाविविधाकारा मण्डलानिमहांतिच ॥ शोफामहांतोमृदवोरक्तश्यावाश्चलास्तथा ३७ सामान्यंसर्वलूतानामेतद्दंशस्यलक्षणम् ॥ दंशमध्येतुयत्कृष्णं श्यावंवाजालकाततम् ३८ ऊर्ध्वाकृतिभृशंपाकं क्लेदकोथज्वराग्नि

हाथ सूजजाते हैं ३२ उदरके रोग ग्रहणीदोष राजयक्ष्मा गुल्म क्षयी व ज्वर आदि अनेक रोगों के लक्षण दिखाई देने लगते हैं ३३ दूषी विष उदरमें जाने से तुरन्त उपाय करने से साध्य हो जाताहै जब वर्षभर बीतजाता है तो कष्ट साध्यहोता है व क्षीण पुरुष और अपथ्य करनेवाले पुरुषका दूषीविष असाध्य होता है ३४ वशिष्ठकी धेनु विश्वामित्र हरलेगये थे तब मुनि के कोप से पसीने के बूंद जिस से कि काटेहुये तृणोंपर गिरे उनसे उत्पन्न होनेके कारण वे विष लूताके नामसे प्रसिद्ध हुये वे लूता १६ होतीहैं ३५ उनके काटने के लक्षण—जब लूता काटती हैं तो घाव सड़जाता है व रुधिर बहने लगता है ज्वर दाह अतीसार व तीनोंदोषोंसे उत्पन्न रोग होते हैं ३६ विविधप्रकार की फुंसियां होती हैं व बड़े २ मण्डल शरीर में पड़जाते हैं व कोमल बड़े २ शोथ होते हैं व रक्तकाला होजाता है व फुंसियां फैलती चलीजाती हैं ३७ सामान्यरीतिसे यह सब लूताओं का लक्षण है काटेहुये घावके बीचमें जो काला व तामड़ेरंगका चिह्नहोजाय

तम् ॥ दूषीविषाभिर्लूताभिस्तद्दष्टमितिनिर्दिशेत् ३६ सर्प्पाणामेवविण्मूत्र, शवक्कोथसमुद्भवाः ॥ दूषीविषा प्राणहरा इतिसंक्षेपतोमताः ४० शोफाःश्वेतासितार क्ताः पीताःसपिडिकाज्वराः ॥ प्राणांतिकाभिर्जायन्ते दाहहिक्काशिरोग्रहाः ४१ आदंशाच्छोणितम्पाण्डुम ण्डलानिज्वरोरुचिः ॥ लोमहर्षश्चदाहश्चाप्याखुदूषि विषार्दिते ४२ मूर्च्छांगशोफवैवर्ण्य, क्लेदोमंदश्रुति ज्वरः ॥ शिरोगुरुत्वंलालासृक्छर्दिश्चासाध्यमूषकैः ४३ काष्र्ण्यंश्यावत्वमथवानानावर्णत्वमेवच ॥ व्यामोहोवर्च्च सोभेदोदष्टेस्यात्कृकलासकैः ४४ दहत्यग्निरिवादौतुभि

व वह जाल से घिरा हो ३८ व बहुत पकजाय पचपचाता रहै फूटकर पीव बहै ज्वरहो ऐसे घावको दूषी विषातास लूताओंका डशाहुआ जानना चाहिये ३९ प्राण हरलूता के लक्षण—सर्पों के मलमूत्र व मरेहुये सर्प्प के सड़जाने से उत्पन्न दूषी विषप्राण हरलूता कहाती हैं यह संक्षेपसे हमने कहा ४० इन प्राणहरालू ताओं से शोथ श्वेत काले लाल पीलेरंगकी फुंसियां ज्वर दाह हुचकी शिरभारी ये रोग होते हैं ४१ विषवाले मूषक के काटने से उस स्थान से पाण्डुरंग का रुधिर बहता है शरीर पर चकँधे पड़जाते हैं रोम खड़े होजाते हैं व दाह होता है बस यही आखुदूषी विष कहाता है ४२ असाध्य अर्थात् प्राणहरा मूषकों के काटने से मूर्च्छा अंगों में शोथ शरीरका रंग कुछका कुछ गीलासा कम सुनाईदेना ज्वर शिर भारी राल व रुधिरमि ला वमन ये लक्षण होते हैं ४३ गिरगिटों के काटनेसे अंगकाला नीला वा तामड़ा वा नानाप्रकार के रंगकाहोजाता है भ्रमहोता व अतीसार होताहै ४४ बीछीके विषके लक्षण—जब बीछी मार ती है तो पहिले अग्नि के समान जलने लगताहै व जानो ऊपर

न्तीवोर्द्ध्वमाशु च ॥ वृश्चिकस्यविषंयाति देशेपश्चात्तिष्ठति ४५ दष्टोऽसाध्यस्तुहृद्घ्राणरसनोपहतोनरः ॥ मांसैः पतद्भिरत्यर्थंवेदनार्त्तोजहात्यसून् ४६ विसर्पः श्वयथुः शूलंज्वरश्छर्दिरथापिवा ॥ लक्षणंकणभैर्दष्टेदंशश्चैव विशीर्य्यते ४७ हृष्टरोमोच्चिटिंगेन स्तब्धलिंगोभृशार्त्तिमान् ॥ दष्टःशीतोदकेनैवसिक्तान्यंगानिमन्यते ४८ एकदंष्ट्रार्दितश्शूनः सरुजःपीतकस्तृषा ॥ छर्दिर्निद्राचसविषैर्मंडूकैर्दष्टलक्षणम् ४९ मत्स्यास्तुसविषाः कुर्युर्दाहंशोफं रुजंतथा ॥ कंडूशोथंज्वरंमूर्च्छांसविषास्तुजलौकसः५० विदाहंश्वयथुंतोदं स्वेदंचगृहगोधिका ॥ दंशेस्वेदंरुजं दाहंकुर्याच्छतपदीविषम् ५१ कंडूमान्मशकैरीषच्छोफः

को अंगोंको फाड़तीहुई चढ़ाये लियेजाती है फिर अन्तमें जहाँ डंकमारती है वहीं विपरहजाताहै ४५ स्थान विशेषके कारण बीछी के असाध्य लक्षण—हृदय नासिका जीभमें बीछीके डँशने से इनस्थानोंका मांसगलकर गिरपड़ताहै तब अत्यन्त पीड़ासे युक्तहोकर प्राणी प्राणों को छोड़देताहै ४६ कणभनाम कीड़ों के काटने से (विसर्प) फैलना शोथ शूल ज्वर वान्त ये होते हैं व जहाँ काटते हैं वहाँ सड़जाताहै ४७ उच्चिटिंग नामकीड़े केकाटनेसे रोम खड़ेहोजाते हैं लिंगखड़ा व कड़ा होजाताहै पीड़ा अधिक होती है जिसके काटताहै वह अपने अंगोंको शीतल जलसे सींचेहुये मानताहै ४८ विषवाले मेड़कके काटनेसे उनके एकही दाँतके लगनेसे सूजनहो आतीहै पीड़ाहोती व सूजनका रंग पीला होताहै उसे प्यासलगती वमनहोता व नींद अधिक आतीहै ४९ विषवाली मछलियों के काटने से दाहशोथ व पीड़ाहोती है व विषवाली जोंकके काटनेसे खजुली शोथ व ज्वर मूर्च्छा होती है ५० विषयुक्त घूसके काटनेसे दाह शोथ कोंचनेकी पीड़ा व पसीना

स्यान्मन्दवेदनः ॥ असाध्यकीटसदृशमसाध्यंमशकक्ष तम् ५२ सद्यःप्रस्राविणीश्यावादाहमूर्च्छाज्वरान्विता ॥ पिडिकामक्षिकादंशेतासांतुस्थविकासुहृत् ५३ चतुष्पाद्भिर्द्विपाद्भिर्वानखदन्तक्षतंतुयत् ॥ शूयतेपच्यतेवापिस्रवतिज्वरयत्यपि ५४ प्रसन्नदोषंप्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकांक्षंसममूत्रविट्कम् ॥ प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टं वैद्योवगच्छेदविषंमनुष्यम् ५५ ॥ इति विषनिदानम् ॥

पित्रोरत्यल्पवीर्य्यत्वादासेक्यःपुरुषोभवेत् ॥ सशुक्रम्प्राश्यलभते ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् १ यःपूतियोनोजा

होताहै खनखजूरके काटनेसे पसीना पीड़ा दाहहोताहै ५१ मसों के काटनेसेखजुआताहै कुछसूजनहोती व मन्दपीड़ाहोतीहै पर्वतादिपरके असाध्य मसों के काटने से असाध्य कीड़ोंके काटने के तुल्य असाध्य घावहोताहै ५२ विषवाली मधुमक्खियोंकेकाटनेसे तुरंत घावहोकर वहने लगते हैं व छोटी २ कालीदाह मूर्च्छा ज्वरयुक्त फुंसियाँ होआती हैं मक्खियों के वीचमें जो स्थविकाहोती है वह प्राणहरलेती है ५३ व्याघ्रादि चौपायों के व वानरादि दो पायों के नखों व दाँतों में जो विष होताहै वह सूजन करता पकाता फूटकर पीव वहाता व ज्वर उत्पन्न करताहै ५४ जव किसी प्रकारके विषसे पीड़ित मनुष्य के वातादिक दोष प्रसन्न होजायँ अपने स्थान पर ठीक होजायँ व रस आदि धातुभी अपने २ स्वभावसे युक्त होजायँ उनमें कुछ विकार न रहजाय अन्न खाने की इच्छाहो मल मूत्र पीड़ा रहित अच्छे प्रकार होनेलगें देहका रंग यथावस्थित होजाय इन्द्रियां व मन भी प्रसन्न होजायँ तो वैद्य उस मनुष्य को विष रहित जानले ५५ ॥

इतिश्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेविषनिदानन्त्रिसप्ततितमम् ७३॥

येतससौगंधिकसञ्ज्ञितः ॥ सयोनिशेफसौगंधमाघ्रायल्ल भतेबलम् २ स्वेगुदेब्रह्मचर्य्याद्यस्स्त्रीषुपुंवत्प्रवर्त्तते ॥ कुम्भीकस्सतुविज्ञेयईर्ष्यकंशृणुचापरम् ३ दृष्ट्वाऽव्यवाय मन्येषांव्यवायेयःप्रवर्त्तते ॥ ईर्ष्यकस्सतुविज्ञेयोदृग्यो निरयमीर्ष्यकः ४ योभार्य्यायामृतौमोहादंगनेवप्रवर्त्त ते॥ तत्रस्त्रीचेष्टिताकारोजायतेषण्ढसञ्ज्ञितः ५ ऋतौ पुरुषवद्वापिप्रवर्त्तन्तेऽङ्गनायदि ॥ तत्रकन्यायदिभवेत्सा भवेन्नरचेष्टिता ६ ॥ इतिषाण्ड्यनिदानम् ॥

शुनश्श्लेष्मोल्ल्वणादोषास्सञ्ज्ञां सञ्ज्ञावहाश्रि- ताः ॥ मुष्णन्तःकुर्व्वतेक्षोभन्धातूनामतिदारुणम् १ लालावानन्धवधिरस्सर्व्वतस्सोऽभिधावति ॥ स्त्रस्तपु च्छहनुस्कन्धश्शिरोदुःखीनताननः २ दंशस्तेनविदष्ट स्य सुप्तःकृष्णंक्षरत्यसृक् ॥ हृच्छिरोरुग्ज्वरस्तम्भतृ ष्णामूर्च्छोद्भवोऽनुच ३ अन्येनान्येऽपिबोधव्या व्या लादंष्ट्राप्रहारिणः ॥ शृगालाश्वतराश्वर्क्ष द्वीपिव्याघ्र वृकादयः ४ कण्डूनिस्तोदवैवर्ण्यसुप्तिक्लेदज्वरभ्रमाः ॥ विदाहरागरुक्पाक शोफग्रन्थिविकुञ्चनम् ५ दंशावद रणंस्फोटाः कर्णिकामण्डलानिच ॥ सर्व्वत्रसविषेलिङ्गं विपरीतन्तुनिर्व्विषम् ६ दष्टोयेनतुतच्चेष्टा रुतंकुर्व्वं न्विनश्यति ॥ पश्यंस्तमेवचाकस्मादादर्शसलिलादिषु ७ योऽद्यस्त्रस्येद्दष्टोऽपिशब्दसंस्पर्शदर्शनैः ॥ जलस न्त्रासनामानन्दष्टन्तमपिवर्ज्जयेत् ८॥ इत्यलर्कविषनिदानम् ॥

शाखासुकुपितोदोषस्सोऽस्त्रंकृत्वाविसर्प्पवत् ॥ भिन त्तितक्षतेतत्र सोष्ममांसंविशोष्यच १ कुर्यात्तन्तुभिन

ऽज्ञीवं वृत्तंसितद्युतिम्बहिः ॥ शनैश्शनैःक्षतायातिच्छे दात्कोपमुपैतिच २ तत्पाताच्छोफशान्तिस्स्यात्पुनस्था नान्तरेभवेत् ॥ सस्नायुकेतिविख्यातः क्रियोक्तातुविस र्पवत् ३ वाह्नोर्य्यदिप्रमादेन जंघयोस्तुटयतेक्वचित् ॥ सं कोचंखञ्जतांचैवच्छिन्नोजन्तुःकरोत्यसौ ४ ॥

इतिस्नायुकनिदानम् ॥

ज्वरोदाहोभ्रमोमोहो ह्यतीसारोवमिस्तृषा ॥ अनि द्रामुखशोषश्च तालुजिह्वाचशुष्यति १ ग्रीवायाम्परिद श्यन्तेस्फोटकास्सर्षपोपमाः ॥ धृताशनात्स्वेदरोधान्मंथ रोजायतेनृणाम् २ ॥ इतिमन्थरकज्वरनिदानम् ॥

ज्वरातिसारौग्रहणीअर्शोजीर्णविषूचिका॥ अलसश्च विलम्बीचक्रिमिरुक्पांडुकामलाः १ हलीमकंरक्तपित्तंराज यक्ष्माउरःक्षतम् ॥ कासोहिक्कासहश्वासःस्वरभेदस्त्व रोचकः २ छर्दिस्तृष्णाचमूर्च्छा च रोगाःपानात्ययादयः॥ दाहोन्मादावपस्मारःकथितोऽथानिलामयः ३ वातरक्त

दोहा ॥ चौहत्तरयें महँ कह्यो जितनेरोग निदान ॥
अनुक्रमणिका सबनकी देखहिं लोग महान १

जितने रोगोंके निदान इसग्रन्थ में कहे हैं उनकी अनुक्रमणी कहते हैं ज्वर १ अतीसार २ ग्रहणी ३ अर्शस् ४ अजीर्ण ५ विषूचिका ६ अलस ७ विलम्बी ८ क्रिमि रोग ९ पाण्डु १० कामल ११ ॥ १ ॥ हलीमक १२ रक्तपित्त १३ राजयक्ष्मा १४ उरःक्षत १५ कास १६ हिक्का १७ श्वास १८ स्वरभेद १९ अरोचक २० ॥ २ ॥ वमन २१ तृषा २२ मूर्च्छा २३ पाना-त्ययादि २४ दाह २५ उन्माद २६ अपस्मार २७ वातरोग २८ ॥ ३ ॥ वातरक्त २९ ऊरुस्तम्भ ३० आमवात, ३१ शूल ३२

मुरुस्तंभश्रामवातोथशूलरुक् ॥ पंक्तिजंशूलमानाहउदावर्तोथगुल्मरुक् ४ हृद्रोगोमूत्रकृच्छ्रश्चमूत्राघातस्तथाश्मरी ॥ प्रमेहोमधुमेहश्च पिडिकाश्चप्रमेहजाः ५ मेदस्तथोदरंशोथोवृद्धिश्चगलगंडकः ॥ गंडमालापचीग्रंथिरर्बुदंश्लीपदंततः ६ विद्रधिर्व्रणशोथश्च द्वौव्रणौभग्ननाडिके ॥ भगंदरोपदंशौच शूकदोषस्त्वगामयः ७ शीतपित्तमुददेश्च कोढश्चैवाम्लपित्तकः ॥ विसर्पश्च सविस्फोटः सरोमांत्यमसूरिकाः ८ क्षुद्रास्यकर्णनासाक्षि शिरस्त्रीबालकग्रहाः ॥ विषंचेत्ययमुद्देशोरुग्विनिश्चयसंग्रहे ९ ॥ इतिरोगोद्देशः ॥

इतिमाधवनिदानं सम्पूर्णम् ॥

पंक्तिज ३३ अन्यशूल ३४ आनाह ३५ उदावर्त्त ३६ गुल्म ३७ ॥ ४ ॥ हृदयरोग ३८ मूत्रकृच्छ्र ३९ मूत्राघात ४० अश्मरी ४१ प्रमेह ४२ मधुमेह ४३ प्रमेहजपिटिका ४४ ॥ ५ ॥ मेदोरोग ४५ उदररोग ४६ शोथ ४७ वृद्धिरोग ४८ गलगण्ड ४९ गण्डमाला ५० अपची ५१ ग्रन्थिरोग ५२ अर्व्बुद ५३ श्लीपद ५४ ॥ ६ ॥ विद्रधि ५५ व्रणशोथ ५६ भग्नव्रण ५७ नाड़ीव्रण ५८ भगन्दर ५९ उपदंश ६० शूकदोष ६१ त्वचारोग ६२ ॥ ७ ॥ शीतपित्त ६३ उदर्द ६४ कोढ़ ६५ अम्लपित्त ६६ विसर्प ६७ विस्फोट ६८ रोमान्त्य ६९ मसूरिका ७० ॥ ८ ॥ क्षुद्ररोग ७१ मुखरोग ७२ कर्णरोग ७३ नासारोग ७४ शिरोरोग ७५ स्त्रीरोग ७६ बालग्रह ७७ विष ७८ बसइतनेरोगरोगियोंके इसग्रन्थमेंहैं॥९ ॥

हरिगीतिका ॥

वसुजलधिनव शशिशरद सितगुरु श्रमाभाद्र सुमास में ।
माधव निदान विधान पूर्व्वक शाजहाँपुर वास में ॥
पाय परम निदेश नवलकिशोर जी को पावनो ।
भाषानुवाद महेशदत्त कियो सुवैद्य सुहावनो १ ॥

इति श्रीमाधवनिदानेभाषानुवादेश्रीमन्महाशयनवलकिशोर
कारिते वारहवंकीप्रदेशान्तर्गतगोमत्युत्तरतटस्थधना-
वलीनिवासिनासाम्प्रतंशाहजहांपुरस्थराजकीय
बृहत्पाठशालासंस्कृताध्यापकमहेशदत्तश-
र्म्मणाकृतेग्रन्थानुक्रमणिकाध्याय-
श्चतुस्सप्ततितमः ॥ ७४ ॥

ज्वराध्याय के ४६ यें श्लोक कें व्याख्यानमें सन्निपात ज्व
के लक्षण में कहआये हैं कि इसग्रन्थके व अन्य ग्रन्थों के मत
सन्निपात १३ प्रकारके होते हैं उनके लक्षण व नाम ग्रन्थ
अन्तमें कहेंगे सो अब कहते हैं ॥

अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णैः कटुमधुरसुरातापसेवा
षायैः कामक्रोधातिरूक्षैर्गुरुतरपिशिताहारसौहित्यश
तैः ॥ शोकव्यायामचिन्ताग्रहणवनितात्यन्तसंगप्रसं
प्रायःकुप्यंतिपुंसाम्मधुसमयशरद्वर्षणेसन्निपाताः १ ॥

खट्टा चिकना उष्णतीक्ष्ण कडू मीठा मदिरा तापना वा ऊ
वस्त्र वहुत ओढ़ना कसैली वस्तु काम क्रोध अतिरूपा गरिष्ठ भो
जन मांस शीत पदार्थोंका सेवन शोक श्रमकरना चिन्ता ग्रहोंक
उपद्रव व स्त्री का अत्यन्त संग करनेसे वहुधा वसन्त वर्षा व श
रद् काल में सन्निपात कोप कहते हैं १ ॥

सन्निपातों के नाम॥

सन्धिकश्चान्तकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः ॥ शीतांगस्तन्द्रिकःप्रोक्तः कण्ठकुब्जश्चकर्णकः २ विख्यातो भुग्ननेत्रश्च रक्तष्ठीवीप्रलापकः ॥ जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश ३ ॥

सन्धिक १ अन्तक २ रुग्दाह ३ चित्तविभ्रम ५ शीतांग ५ तन्द्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ ॥ २ ॥ भुग्ननेत्र ९ रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ वस ये तेरह सन्निपात होते हैं ३ ॥

सन्निपातोंकी अवधि ॥

सन्धिकेवासरास्सप्त चांतकेदशवासराः ॥ रुग्दाहे विंशतिर्ज्ञेयावह्न्यष्टौचित्तविभ्रमे ४ ॥

सन्धिककी ७ दिनकी अवधि अन्तककी १० दिन रुग्दाहकी २० दिन चित्त विभ्रमकी २४ दिन अवधि होती है ४ ॥

पक्षमेकंतुशीतांगे तंद्रिके२५चविंशतिः ॥ विज्ञेया वासराश्चैव कण्ठकुब्जेत्रयोदश ५ ॥

शीतांगकी १५ दिन तन्द्रिककी २५ दिन कण्ठकुब्जकी १३ दिनकी अवधि होती है ॥ ५ ॥

कर्णकेचत्रयोमासा भुग्ननेत्रेदिनाष्टकम् ॥ रक्तष्ठीवीदशाहानि चतुर्दशप्रलापके ६ ॥

कर्णकी तीनमास भुग्ननेत्रकी ८ दिन रक्तष्ठीवीकी १० दिन प्रलापक की १४ दिन ॥ ६ ॥

जिह्वकेषोडशाहानिकलाभिन्यासलक्षणे ॥ परमायुरिदम्प्रोक्तम्म्रियतेतल्लक्षणादपि ७ ॥

जिह्वककी १६ दिन अवधि अभिन्यास की भी १६ दिन की अवधि होती है यह परमआयु कहीगई है पर मृतक तुरन्तही होजाता है इस अवधि के नांघजाने पर बचजाता है ॥ ७ ॥

सन्धिकस्तंद्रिकश्चैव कर्णकःकण्ठकुब्जकः ॥ जिह्वकश्चित्तविभ्रंशष्षट्साध्यास्सप्तमारकाः ८ ॥

सन्धिक । तन्द्रिक । कर्णक । कण्ठकुब्जक । जिह्वक व चित्तविभ्रंश ये ६ साध्यहोतेहैं अन्य सात मारडालतेहैं ८ ॥

सन्धिकके लक्षण ॥

पूर्वरूपकृतशूलसम्भवंशोषवातबहुवेदनान्वितम् ॥श्लेष्मतापवलहानिजागरंसन्निपातमितिसंधिकंवदेत् ९ ॥

जिस सन्निपात के पूर्वरूप में शूल शोष वातकीबड़ी पीड़ा कफअधिक होना सन्ताप वलहानि व जागना हो उसे सन्धिक सन्निपात कहना चाहिये ९ ॥

अन्तक सन्निपात के लक्षण ॥

दाहङ्करोतिपरितापनमातनोतिमोहंददातिविदधातिशिरःप्रकम्पम् ॥ हिक्काङ्करोतिकसनञ्चसमाजुहोतिजानीहितंविबुधवर्ज्जितमंतकाख्यम् १० ॥

जो सन्निपात दाह करताहै तापको बढ़ाताहै मोहदेताहै शिरको कँपाता है हुचकी करता है खांसीको बुलाता है पण्डितों के त्यागनेके योग्य उसे अन्तकनाम सन्निपात जानना चाहिये १०॥

रुग्दाहके लक्षण ॥

प्रलापपरितापनप्रबलमोहमांद्यश्रमः परिभ्रमणवेदनाव्यथितकण्ठमन्याहनुः॥निरंतरतृषाकरश्श्वसनकासहिक्काकुलस्सकष्टतरसाधनोभवतिहान्तिरुग्दाहकः ११

अनर्थवकना परितापहोना प्रबलमोह मन्दता श्रम करवटलेनेमें पीड़ा गला ग्रीवाका ऊपरी भाग व ठोढ़ी में पीड़ा सदा प्यास बनीरहे श्वास खांसी हुचकी से व्याकुल रहना इनलक्षणों से युक्त सन्निपात को रुग्दाह कहते हैं वह कष्टतर साध्यहोताहै नहीं तो मारडालताही है ॥ ११ ॥

चित्तविभ्रमकेलक्षण ॥

यदिकथमपिपुंसाञ्जायतेकायपीडा भ्रममदपरितापो मोहवैकल्यभावः ॥ विकलनयनहासोगीतनृत्यप्रलापो ऽगिदधततमसाध्यञ्चेऽपिचित्तभ्रमाख्यम् १२ ॥

जब किसीप्रकार से मनुष्योंके शरीरमें पीड़ाहोतीहै भ्रमयुक्त मदका परिताप होताहै मोहकी विकलता का भावहोता नेत्र विकलहोते हँसीआती गाना नाचना अनर्थवकना ये सब लक्षण होते हैं तो चित्तभ्रम सन्निपात कहाता है उसे कोई २ असाध्य कहते हैं १२ ॥

शीतांगकेलक्षण ॥

हिमसदृशशरीरोवेपथुश्श्वासहिक्का शिथिलितसकलांगोऽच्छिन्ननादोग्रतापः ॥ क्लमथुदवथुकासच्छर्द्यतीसारयुक्तस्त्वरितमरणहेतुश्शीतगात्रःप्रभावात् १३ ॥

शरीर पालासा ठण्ढा कम्प श्वास हुचकी सब अंग शिथिल शब्द बहुत नष्ट नहीं उग्रतर भीतरीताप विना श्रम के थकवाही मनमें पीड़ा खांसी वमन व अतीसार इन लक्षणों से जो युक्त हो वह शीतांग सन्निपात कहाताहै व अपने प्रभाव से मरणका हेतु होताहै १३ ॥

तन्द्रिककेलक्षण ॥

प्रभूतातन्द्रार्त्तिज्वरकफपिपासाकुलतरो भवेच्छ्यामाजिह्वापृथुलकठिनाकण्टकवृता ॥ अतीसारश्श्वासःक्लमथुपरितापश्श्रुतिरुजो भृशङ्कण्ठेजाड्यंशयनमनिशन्तन्द्रिकगदे १४ ॥

तन्द्रा अधिक पीड़ा ज्वर कफ पिपासासे अतिव्याकुलता जीभकाली बहुतकड़ी व मोटीकांटोंसेयुक्त अतीसार श्वासग्लानि परिताप कानोंमें पीड़ा कण्ठका अतिजकड़ना व रात्रिदिन बराबरसोते रहना बस ये लक्षण तन्द्रिक सन्निपात में होतेहैं १४ ॥

कण्ठकुब्जसन्निपातकेलक्षण ॥

शिरोऽर्त्तिकण्ठग्रहदाहमोह कम्पज्वरोरक्तसमीरणार्त्तिः ॥ हनुग्रहस्तापविलापमूर्च्छास्यात्कण्ठकुब्जःखलु कष्टसाध्यः १५ ॥

शिरमें पीड़ा गलेसे बोलने में पीड़ा दाह मोह कम्प ज्वर रक्त वातकी पीड़ा चोहड़ीका जकड़ना ताप रोदनकरना मूर्च्छा जिस में ये लक्षण होतेहैं वह कण्ठकुब्जहै व कष्टसाध्यहै १५ ॥

कर्णककेलक्षण ॥

प्रलापश्रुतिह्रासकण्ठग्रहाङ्गव्यथाश्वासकासप्रसेक प्रभावम् ॥ ज्वरन्तापकर्णान्तयोर्गल्लपीड़ाबुधाःकर्णकं कष्टसाध्यंवदन्ति १६ ॥

अनर्थ बकना कमसुनपड़ना गला बैठजाना अंगों में पीड़ा श्वास खांसी लारबहना ज्वर कानों व गालों में पीड़ा जिसमें ये लक्षण होतेहैं पण्डित उसे कर्णक कहते हैं यह कष्टसाध्यहै१६॥

सन्निपातज्वरस्यान्तेकर्णमूलेसुदारुणः ॥ शोथस्सं जायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते १७ ॥

सन्निपात ज्वर के अन्तमें कानकी जड़केलगे जो अतिदारुण बहुत मोटी सूजन होआती है उससेकोई एकपुरुष छूटताहै नहीं तो प्रायः जिस किसीके ऐसीसूजन होतीहै वह मरीजाताहै१७॥

इसका विशेष नियम कहते हैं ॥

ज्वरस्यपूर्व्वंज्वरमध्यतोवा ज्वरान्ततोवाश्रुतिमूल शोथः ॥ क्रमादसाध्यःखलुकष्टसाध्यस्सुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः १८ ॥

वह सूजन जो ज्वरहोने के पहिले हो तो असाध्य होतीहै व ज्वर के बीच में होतीहै तो कष्टसाध्य होती है व ज्वर के अन्त में होतीहै तो सुखसे साध्यहोतीहै यह मुनियोंने कहाहै १८ ॥

भुग्ननेत्र नाम सन्निपात के लक्षण ॥

ज्वरबलापचयस्स्मृतिशून्यता श्वसनभुग्नविलोच नमोहितः ॥ प्रलपनभ्रमकम्पनशोफवांस्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्नदृक् १६ ॥

ज्वर बहुत न आवे पर स्मरण बनायजातारहे श्वास अधिक चलने लगे नेत्रटेढ़े होजायँ अचेत होजाय अनर्थ जो पावे बकने लगे भ्रम होजाय शरीर कांपनेलगे व शोथ होआवे तो रोगी शीघ्रही प्राण छोड़दे इस सन्निपात को भुग्ननेत्र कहते हैं १६ ॥

रक्तष्ठीवी सन्निपात के लक्षण ॥

रक्तष्ठीवीज्वरवमितृषामोहशूलातिसाराहिक्काध्मानभ्रमणदवथुश्वाससञ्ज्ञाप्रणाशः ॥ श्यामारक्ताधिकतररसनामण्डलोत्थानरूपा रक्तष्ठीवीनिगदितइहप्राणहंता प्रसिद्धः २० ॥

मुख से रुधिर गिरना ज्वर वमन पिपासा मोह शूल अतीसार हुचकी पेट फूलना चित्तघूमना तापहो श्वासें बहुत आवें ज्ञान ऐसा नष्टहोजाय कि किसी को पहिचान न सके जीभ अधिकतर काली वा लाल होजाय अथवा जीभ के ऊपर मण्डलाकार चकँधे पड़जायँ इस लक्षण से युक्त सन्निपात को रक्तष्ठीवी कहते हैं यह प्राणहन्ता होता है यह बात प्रसिद्ध है २० ॥

प्रलाप के लक्षण ॥

कम्पप्रलापपरितापनशीर्षपीड़ा प्रौढ़प्रभावपवमानपरोऽन्यचिन्ता ॥ प्रज्ञाप्रणाशविकलप्रचुरप्रवादः क्षिप्रम्प्रयातिपितृपालपदम्प्रलापी २१ ॥

जिस सन्निपात में कम्प अनर्थ बकना सन्ताप होना शिरमें पीड़ा बल अधिक करना पवित्रतामें तत्पर अन्य लोगोंकी चिंता बुद्धिकानाश विकलता बहुत बकना ये सब लक्षणहों उसे प्रलापी कहतेहैं इसमें फँसकर प्राणी यमराजके स्थानको जाताहै २१ ॥

जिह्वकनाम संनिपात के लक्षण ॥

श्वसनकासपरितापविह्वलः कठिनकण्टकवृतातिजि ह्वकः ॥ वधिरमूकवलहानिलक्षणो भवतिकष्टतरसाध्य जिह्वकः २२ ॥

श्वास खांसी सन्तापसे विह्वल होजाना कड़े २ कांटों से जी का युक्त होना बहिरा गूँगा वलहीन होना जिसमें ये लक्षणहों उसे जिह्वक कहते हैं यह सन्निपात अतिशय कष्टसाध्य होता है २२।

अभिन्यास नाम सन्निपात के लक्षण ॥

दोषत्रयस्निग्धमुखत्वनिद्रा वैकल्यनिश्चेष्टनकष्ट वाग्मी ॥ वलप्रणाशश्श्वसनादिनिग्रहोऽभिन्यासउक्तो ननुमृत्युकल्पः २३ ॥

वात पित्त कफों के दोष से मुख में चिकनाई लासासी वनी रहे दिन रात्रि निद्रा वनी रहे विकलता से चेष्टाका वदलना वड़े कष्टसे कुछ बोलसकना वल का नाश श्वास आदिका रुकजाना वस जिस में ये लक्षण हों उसे अभिन्यास कहते हैं यह मृत्यु से कुछेकही न्यून होता है २३ ॥

हारिद्रक नाम सन्निपात के लक्षण ॥

हारिद्रदेहनखनेत्रकरांघ्रितापनिष्ठीवनादिकसनैरुप लक्षितोयः ॥ हारिद्रकस्सकथितःकिलसन्निपातस्साध्यो नचैषभिषजांज्वरकालरूपः २४ ॥

जिस में देह नख नेत्र हाथ पैर हरिद्रासे रँगे से होजाते हैं ज्वर थूँक खांसी इनसे युक्त होजाता है वह सन्निपात हारिद्रक कहाता है यह वैद्यों से साध्य नहीं होता क्योंकि यह ज्वर रूप कालही होता है २४ ॥

सद्यस्त्रिपंचसप्ताहादशाहाद्द्वादशादपि॥एकविंशादि नैश्शुद्धस्सन्निपातीसुजीवति २५ ॥

सन्निपात होने पर जो तुरन्तही शुद्ध होजाताहै अथवा ३ । ५ । ७ । १० । १२ । वा २१ दिनपर जो शुद्ध होजाता है वह फिर अच्छे प्रकार जीता है २५ ॥

त्रिदोषज ज्वरों की मर्य्यादा ॥

सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा ॥ एषात्रिदोष मर्य्यादामोक्षायचवधायच २६ ॥

सप्तमी नवमी एकादशी वा इनकी दूनी मर्य्यादा वात पित्त कफके दोषोंकी है अर्थात् ७ । वा १४ । ९ वा १८ । ११ वा २२ दिन की मर्य्यादा सन्निपात के छोड़देने वा मारडालने की है २६ ॥

पित्तकफानिलवृद्ध्यादशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् ॥ हन्तिविमुंचतिपुरुषन्त्रिदोषजोधातुमलपाकात् २७ ॥

पित्त कफ वात की वृद्धि से क्रम से १० दिन १२ दिन ७ सात दिन में पुरुष को कितो मारही डालता है वा छोड़ही देता है त्रिदोषज धातुके पकजाने पर तो मारडालता है व केवल मल के पकने से छोड़देता है २७ ॥

धातुपाकके लक्षण ॥

निद्रानाशोहृदिस्तम्भोविष्टम्भोगौरवारुची ॥ अरति र्व्वलहानिश्चधातूनाम्पाकलक्षणम् २८ ॥

नींद का नाश हृदय का जकड़ना मल मूत्रका बन्दहोजाना देहभर भारी होजाना अरुचि स्वस्थ न रहना बलकी हानि बस ये धातु पकजाने के लक्षण हैं २८ ॥

मल पकने का लक्षण ॥

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः ॥ इन्द्रियाणा. ञ्चवैमल्यन्दोषाणाम्पाकलक्षणम् २९ ॥

दोषोंके स्वभावका बदलजाना । ज्वर व देहका हलका होना इन्द्रियोंका निर्म्मल होना बस यही मलपाकका लक्षणहै २९ ॥

इति